# यशपाल के उपन्यासों में नारी पात्रों का आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी फिल् उपाधि हेतु प्रस्तुत)

शोध - प्रबन्ध

- *शोधकर्ता* -

निधि सक्सेना
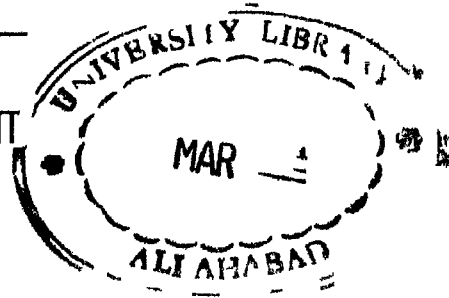
- *निर्देशक* -

डॉ॰ जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव

हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

सन् - 2002

पूजनीय स्वर्गीय श्वसुर

***स्व० श्री कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव***

की स्मृति मे समर्पित प्रतीक

पुष्पाजलि

# प्राक्कथन

उपन्यास एक ऐसी कला है जिसमे मनुष्य सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से निरूपित होकर सामने आता है। उपन्यास की कला मे मौजूद मनुष्य के समाज सम्बद्ध और इतिहास सापेक्ष रूप को आसानी से पहचाना जा सकता है।

भारत मे उपन्यास का जन्म अभिशप्त स्थितियो मे हुआ उस अभिशाप की छाया भारतीय उपन्यास पर लम्बे समय तक पडती रही उससे मुक्ति के लिए उपन्यास विधा को कठिन सघर्ष करना पडा भारत मे उपन्यास का जन्म १६वी शती के मध्य मे तब हुआ जब देश मे अग्रेजी राज्य था।

स्वतन्त्रोत्तर पश्चात् हिन्दी उपन्यास साहित्य पर सामाजिक सास्कतिक एव राजनैतिक रूप से गहरा प्रभाव पडा है आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद अथवा पारम्परिक जीवन मूल्यो की जगह प्रगतिशील जीवन मूल्यो की व्यापक रूप से प्रतिष्ठान हुआ है। प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारो मे अपनी विशिष्ट विचारधारा और सृजनात्मक शक्ति के कारण यशपाल ने स्वतत्र आदर्शवाद से बहुत कुछ मुक्त हो कर जिस यथार्थवादी दृष्टिकोण को ग्रहण किया था उसकी परम्परा को आगे बढाने का श्रेय यशपाल को है जो उपन्यास साहित्य जगत मे आधुनिकता गतिशीलता और परिवर्तनशीलता का बोध कराती है।

हिन्दी उपन्यास मानव चरित्राकन का अन्यन्तम माध्यम रहा है। मानव जीवन के दो पहलु है जिसमे नर–नारी दो ध्रुवो के समान विद्यमान है। जिसमे नारी की

जीवन मूल्यो एव आधुनिकतावादी विचारधारा के कथाकार यशपाल ने अपने उपन्यासो मे उकेरा है।

यशपाल ने नारी के चरित्रगत विशिष्ट पहलुओ को सदा ही विशेष महत्व दिया है। नारी का जीवन समाज मे कम सघर्षशील नहीं रहा न जाने कितने उत्थान–पतन के दौरो से गुजरती हुई आज वर्तमान मे नारी अपनी स्थिति को सुदृढ बना सकी। नारी से व्यक्तिगत एव समाज मे उसकी स्थिा का विशद विवेचन लेखको ने अपने–अपने दृष्टिकोणो से किया। हिन्दु धर्म ग्रन्थो ने एक ओर नारी की प्रशसा का प्रचुर है दूसरी ओर नारी निन्दा भी कम नही की गई। नारी भगवान की ही अद्भूत कति नही है वरन् मानव की भी अद्भुत सृष्टि है। वैदिक काल मे भारतीय समाज मे नारी का सशक्त व्यक्तित्व सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है किन्तु उसकी दशा उत्तरोत्तरहीन होती चली जाती है। वैदिककाल मे आत्मिक विकास की सृष्टि से स्त्रिया पुरुषो के साथ एक ही छत्र मे विचरण करती थी। धार्मिक क्षेत्र मे भी उनको पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त थे किन्तु बाद मे धीरे–धीरे उनका अधिकार अभिशाप बन गया। उपनिषदो और ब्राह्मणो के युग मे स्त्रियो के धार्मिक अधिकार समाप्त प्राय कर दिये गये। सूत्रो महाकाव्यो स्मृतियो बौद्धकालीन समाज और मध्ययुग तक आते–आते स्त्री बिल्कुल पगु हो गयी। जो अपने अधिकारो के प्रति प्रतिरोध न कर सकी बल्कि चुपचाप अन्याय को सहती रही।

आधुनिक युग मे नवचेतना का प्रचार–प्रसार हुआ। कुछ धर्म सुधारको ने स्त्री के जीवन को दुर्दशाग्रस्त बनाने वाली कुप्रथाओ का उग्र रूप मे विरोध करते हुए अनेक धर्म सुधार आन्दोलन चलाये। इन आन्दोलनो मे नारी ने सक्रिय भूमिका निभायी जो नारी नव जागरण के लिए विशेष महत्व रखता है। महिलाओ ने प्रत्येक क्षेत्रो राजनीतिक सामाजिक सास्कृतिक आदि मे भाग लेकर अपनी मन स्थिति को

नवचेतना से प्रस्फुटित करते हुए नारी स्वातत्र्य विचार को विशिष्टता प्रदान की है। यही कारण है कि आधुनिक नारी मे नई चेतना का विस्तार दिनो दिन बढता ही जा रहा है ये है नारी जागृति का विकासोन्मुख युग। जहॉ स्त्रियॉ भी पुरुष के बराबर है की भावना जन्म ले रही है।

उपन्यासकार यशपाल की दृष्टि मे नारी का यही स्वरूप आरम्भ से अन्त तक जागृत हुआ है। नारी घर के भीतर केवल उपभोग की वस्तु न होकर समाज के विकास मे भी अग्रसर हो यही उनकी मान्यता है। यशपाल के उपन्यासो की बुनियाद मानव जीवन है। इसलिए यशपाल ने अपनी कतियो मे सामाजिक बोध से जागृत चेतना के साथ आधुनिकता के माध्यम से नारी के अर्न्तमन मे छिपी मनोभाव को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया।

यशपाल के जीवन मे चित्रित जीवन से बधे घट के पानी जैसा नही हे। सतत् प्रवाहमान नदी की तरह गतिमान है।

अवलोकनार्थ मृदुलागर्ग के शब्दो मे –– स्त्री मात्र देह नही वह मॉ विचारपुज सस्कति पोषक दया करूणा लालन–पालन आदि तत्वो से ओत–प्रोत है तभी तो बुद्ध क्राइस्ट गॉधी दया करूणा तथा पोषक तत्वो के लिए महान पुरूषो को जन्म दिया स्त्री केवल बच्चे को ही जन्म नहीं देती बल्कि उसका लालन पालन कर उसे सही दिशा निर्देशन भी करती है। हमारी भारतीय सस्कृति का हाल नदियो जैसा हो गया है।

यशपाल ने अपने उपन्यासो मे इस जीवन प्रवाह की दिशाओ और मोडो को देख–परखकर सुरूचिपूर्ण अन्वेषित करने का प्रयास उपन्यास जगत मे किया है। इसलिए मुशी प्रेमचन्द बाद बाद के विशिष्ट उपन्यासकारो की अग्रिम पक्ति मे

यशपाल का स्थान सर्वोपरि है। इन्होने अपने उपन्यासो मे आर्थिक आत्मनिर्भरता सामाजिक स्थिति शिक्षा–दीक्षा तथा नारी गतिशीलता के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। जो आज के सन्दर्भ मे बहुत उपयोगी जान पडती है। इनके उपन्यासो मे नारी चाहे दादा कामरेड की (शैल) देशद्रोही (चन्दा) पार्टी कामरेड (गीता) मनुष्य के रूप (मनोरमा) झूठा–सच की (तारा कनक) और मेरी तेरी उसकी बात (ऊषा) आदि सभी स्त्रियॉ शिक्षित है जो अन्याय को बिल्कुल बर्दाश्त नही करती बल्कि उसका खुलकर विरोध करती है।

अत स्पष्ट है कि यशपाल नारी को एक नवीन दृष्टिकोण से देखा और परखा है जो समाज मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हुई नारी आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन का विषय बन कर विजय यात्रा की दिशा की उन्मुख होती नजर आती है।

यशपाल ने नारी का बहुत ही व्यापक और सुरूचिपूर्ण पहचान का सागोपाग निरूपण करते हुए नारी के चरित्र के ऊपर उठाने मे अभूतपूर्ण योगदान दिया है।

हिन्दी साहित्य जगत मे यशपाल पर काफी शोध कार्य हो चुके हैं–जैसे यशपाल का समग्र मूल्याकन (सुनील कुमार लवटे) यशपाल और हिन्दी कथा साहित्य (सुरेन्द्र तिवारी) यशपाल के उपन्यासो का मूल्याकन (सुदर्शन मल्होत्रा) यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व (सरोज गुप्ता) यशपाल का उपन्यास साहित्य (सरोज बजाज) यशपाल के उपन्यासो की मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (मधु जैन) यशपाल के उपन्यासो मे सामायिक चेतना (ह श्री साने) मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल (पारसनाथ मिश्र) आदि सभी ने यशपाल के विषय मे शोध कार्य किये।

यशपाल के उपन्यासो का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण डॉ मधु जैन ने अपने शोध मे उन मनोवैज्ञानिक पहलुओ का अध्ययन प्रस्तुत किया है जो उपन्यास के प्रत्येक पात्रो को मनोवैज्ञानिक स्तर तक ले जाते है और उनका सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार यशपाल के उपन्यासो मे सामायिक चेतना ह श्री साने ने भी यशपाल के उपन्यासो मे विभिन्न क्षेत्रो जैसे सामाजिक सास्कृतिक राजनैतिक एव आर्थिक चेतना का प्रवाह प्रत्येक पहलुओ व पात्रो पर अकित किया है। मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल–डॉ पारसनाथ मिश्र ने भी यशपाल को पूर्णत मार्क्सवादी प्रभाव से प्रभावित बताकर उनके प्रत्येक पात्रो पर इसका प्रभाव अकित करके उन्हे मार्क्सवादी दृष्टिकोण से चित्रित करने का प्रयास किया।

यशपाल व्यक्तित्व और कतित्व सरोज गुप्ता ने भी यशपाल के व्यक्तित्व और उनकी रचनाओ मे अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ यशपाल का व्यक्तित्व और कतित्व नामक विषय पर शोध कार्य करके उनको समाज के समक्ष एक नये रूप से लाकर खडा किया। यशपाल का समग्र मूल्याकन सुनील कुमार लवटे ने भी यशपाल के विषय मे मूल्याकन प्रस्तुत किया।

मैने उपरोक्त सभी का अध्ययन किया और अपने विषय यशपाल के उपन्यासो मे नारी–पात्रो का आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन नामक शोध विषय मे यह प्रस्थापित करने का प्रयत्न किया है कि यशपाल के उपन्यासो की नारियॉ पुराने बन्धनो को तोडकर समाज मे अपना स्थान बनाना चाहती है। आधुनिक युग मे स्वय अपना अस्तित्व चाहती है। यशपाल ने नारी को एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया वह यह कि उनकी दुनिया घर के चहारदीवारी तक ही सीमित नही है बल्कि समाज मे भी वह खुली हवा मे सास ले सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि जब तक

अपने भीतर आत्मनिर्भर बनने की चाह उत्पन्न नही करेगी तब तक वह पुरुष पराधीनता मे जकडी अपनी स्वतत्रता की बलि देती जायेगी।

समाज स्त्री और पुरुष दोनो के योग से बना है इसलिए समाज मे नारी का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि यशपाल की नारी आधुनिकता के सन्दर्भ मे अनुशीलन का विषय बन जाती है। जिसका यथार्थपूर्ण चित्रण करना ही नारी के महत्त्व का यथावश्यक रूप बन गया है तथा स्त्री–पुरुष के अनुशीलनता का सम्यक रूप यशपाल के उपन्यासो मे परिलक्षित किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे यशपाल की नारी आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन नामक विषय का अध्ययन छ अध्यायो मे विभक्त किया गया है।

पहला अध्याय मे यशपाल के उपन्यासो की सक्षिप्त रूपरेखा का वर्णन किया गया है जिसमे यशपाल के क्रमागत उपन्यास दादा कामरेड से मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास तक की राजनीतिक समस्याओ परम्परागत नैतिक मान्यताओ एव सामाजिक गतिविधियो के यथार्थवादी चिन्तन के प्रति दृष्टिकोण को विश्लेषित किया गया है। विशिष्ट उपन्यास मनुष्य के रूप मे मनुष्य की हीनता और महानता के यथार्थवादी दृष्टिकोण को पिरोते हुए नारी मनस्थिति का रूपायित किया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दिव्या उपन्यास व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति का चित्रात्मक रूप को दिखलाया गया है। ऐतिहासिक उपन्यासो की श्रृखला मे उपन्यास अमिता व अप्सरा का श्राप मे अमिता के माध्यम से हिसा पर अहिसा की विजय को विश्लेषित किया गया है तथा अप्सरा के श्राप मे मेनका नारी पात्र को नवीन दृष्टिकोण से परम्परावादी व रूढिवादिका के विरोध को शाकुन्तला के माध्यम से अभिव्यक्ति किया गया है। इसी विकास क्रम मे झूठा–सच मे चित्राकन

तारा व कनक नारी पात्रो के सामाजिक व राजनैतिक जीवन का उन्मेष नवीन जीवन मान्यता तथा समाजवादी समाज व्यवस्था के आह्वान को निरूपित किया गया है। अतिम उपन्यास श्रृखला मेरी–तेरी उसकी बात मे दो पीढियो से क्रान्ति की वेदना को अदम्य बनाते उपन्याराकार ने व्यैक्तिक सामाजिक पारिवारिक विषमताओ का स्पष्टीकरण करते हुए ऊषा नारी पात्र द्वारा सामाजिक जर्जर रूढियो का खण्डन धर्म और जाति की सकीर्णताओ को पार करना परिवार पति के बन्धनो से मुक्त होकर राजनैतिक क्रान्ति मे कार्य करना परिलक्षित किया गया है।

दूसरा अध्याय के अन्तर्गत यशपाल के उपन्यासो मे मार्क्सवादी नारी चेतना का साहित्य मे प्रतिफलन अकित किया गया है। जिसके अन्तर्गत मार्क्सवादी चिन्तन मार्क्सवादी परिवेश और यशपाल प्रगतिशीलता और यशपाल की परिदृष्टि और मार्क्सवाद और यशपाल की नारी परिकल्पना पर गहराई से अध्ययन किया गया है।

तीसरा अध्याय मे यशपाल के उपन्यासो मे नारी पात्रो का आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन के अन्तर्गत प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासो मे नारी के पारम्परिक आयाम आधुनिकतावाद की बोधगम्यता प्रगतिशील उपन्यासकार यशपाल और नारी के प्रतिमान तथा विशिष्ट उपन्यासो मे नारी का चित्राकन को उद्घाटित करते हुए नारी पात्रो जैसे शैल चन्दा दिव्या गीता सोमा अमिता तारा कनक विनी जैनी मेनका शकुन्तला मोती ऊषा आदि को पात्रयोजना के माध्यम से सामाजिक राजनैतिक एव आर्थिक परिवर्तनो को दिखाकर आधुनिकता की ओर रूपायित किया गया है।

चौथा अध्याय मे यशपाल के उपन्यासो मे स्त्री–पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध

को दृष्टिगत रखते हुए नर–नारी के सम्बन्ध को मूलत सृष्टि से जुडा मानकर नारी शोषण करने वाली प्रवृत्तियो का विरोध कर उसे सामाजिक सकीर्णताओ से निकाल कर युगीन चेतना के अनुरूप एक स्वस्थ भाव भूमि पर सामाजिक एव आर्थिक रूप से नारी को लाकर उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व की पुरानी मान्यताओ और नये आदर्शो पर प्रगति के विकास की ओर अग्रसरित करते हुए विषय विवेचन किया गया है।

पॉचवॉ अध्याय मे यशपाल का व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रतिमान का अवशीलन एव अवलोकनार्थ है। इसके अन्तर्गत जीवन यात्रा एव उपन्यासकार के रूप मे यशपाल का मूल्याकन एव उपलब्धियो महत्ता और स्थान की व्याख्या को मानव जीवन के विकास मे यशपाल ने झॉकी प्रस्तुत करते हुए जीवन के विविध पक्षो एव परिस्थितियो का उद्घाटन और विवेचन अपने साहित्य सृजन के माध्यम से समाज मे अनुरेखित किया है।

छठा अध्याय उपसहार मे समूचे मूल्याकन की दशाओ और दिशाओ का स्पष्ट विवेचन विश्लेषित किया गया है। इसके अन्तर्गत नारी मुक्ति चेतना की रूपधारणा साहित्य और समाज के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को समन्वयात्मक रूप से व्याख्यापित करते हुए समाज और जीवन से जुडी हुई रचनाधर्मिता को कालजयी रचना बना दिया है। यशपाल ने उपन्यासो के माध्यम से नारी को प्रतिष्ठित समाज मे जीने का अधिकार देकर समाजवादी व्यवस्था की स्थापना को सागोपाग निरूपण किया है।

युग सदर्भ नारी जीवन की परिस्थितियो अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर होने वाली वैचारिक सामाजिक राजनैतिक आर्थिक एव बौद्धिक परिवर्तन इन सबसे कभी जुडकर और कभी कटकर हमारा उपन्यास साहित्य आगे बढता रहा है। फिर वह विकास यात्रा आज भी जारी है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध विद्वद्वरेण्य सत्यनिष्ठ सूक्ष्म अन्वेषक श्रद्धेय गुरुवर डॉ जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव (हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद) के कुशल निर्देशन मे सम्पन्न हुआ। पूज्यनीय गुरुदेव ने आघात शोध प्रबन्ध मे साकार रूप देने के लिए मुझे पग–पग मे अपने अनुभवो व विद्वता की सूक्ष्म गहराई से अवगत कराया। इस पुनीत कार्य हेतु आदरणीय गुरुजी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ।

मैं हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद के उन सभी गुरुजनो के प्रति विशेष रूप से डॉ राजेन्द्र कुमार (विभागाध्यक्ष) डॉ योगेन्द्र प्रताप सिह डॉ मीरा दीक्षित डॉ शैल कुमारी पाण्डेय डॉ सत्य प्रकाश मिश्र डॉ मालती तिवारी डॉ मीरा श्रीवास्तव एव विभागीय अन्य प्राध्यापको के प्रेरणाप्रद व्यक्ति के प्रति अपना प्रणति निवेदन करती हूँ, जिनका आर्शीवाद एव सहयोग मुझे अकिचन को प्राप्त होता रहा है ये विद्वद्वतजन बिन्दु मेरे लिए सम्बल है।

मैं आर्यकन्या डिग्री कालेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ कल्पना वर्मा के प्रति भी अपार श्रद्धा की ऋणी हूँ जिन्होने मुझे पूर्ण सहयोग दिया। ओर शोध को पूर्ण करवाने मे मदद की।

पारिवारिक सहयोग के बिना कोई कार्य पूर्ण नही होता। शोधकार्य के समय सदैव इसका अनुभव मुझे होता रहा है। मेरी पूजनीया सास श्रीमती सरोज श्रीवास्तव व मेरे पूज्य पिताश्री जगदीश कुमार सक्सेना एव माता जी श्रीमती सुभाषिनी सक्सेना ने मुझे आगे बढने की प्रेरणा दी और उन्ही के आर्शीवाद से मैं आगे बढ सकी। मेरे पति देव श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव का भी मुझे समय–समय पर भरपूर सहयोग मिला उन्होने मुझे लक्ष्य तक पहुँचाने मे पूरी मदद प्रदान की। परिवार के प्रत्येक सदस्यो के प्रति मे हार्दिक रुप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने मेरी मदद

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध विद्वद्वरेण्य सत्यनिष्ठ सूक्ष्म अन्वेषक श्रद्धेय गुरुवर डॉ जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव (हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद) के कुशल निर्देशन मे सम्पन्न हुआ। पूज्यनीय गुरुदेव ने आघात शोध प्रबन्ध मे साकार रूप देने के लिए मुझे पग–पग मे अपने अनुभवो व विद्वता की सूक्ष्म गहराई से अवगत कराया। इस पुनीत कार्य हेतु आदरणीय गुरुजी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ।

मैं हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद के उन सभी गुरुजनो के प्रति विशेष रूप से डॉ राजेन्द्र कुमार (विभागाध्यक्ष) डॉ योगेन्द्र प्रताप सिह डॉ मीरा दीक्षित डॉ शैल कुमारी पाण्डेय डॉ सत्य प्रकाश मिश्र डॉ मालती तिवारी डॉ मीरा श्रीवास्तव एव विभागीय अन्य प्राध्यापको के प्रेरणाप्रद व्यक्ति के प्रति अपना प्रणति निवेदन करती हूँ, जिनका आर्शीवाद एव सहयोग मुझे अकिचन को प्राप्त होता रहा है ये विद्वद्वतजन बिन्दु मेरे लिए सम्बल है।

मैं आर्यकन्या डिग्री कालेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ कल्पना वर्मा के प्रति भी अपार श्रद्धा की ऋणी हूँ जिन्होने मुझे पूर्ण सहयोग दिया। ओर शोध को पूर्ण करवाने मे मदद की।

पारिवारिक सहयोग के बिना कोई कार्य पूर्ण नही होता। शोधकार्य के समय सदैव इसका अनुभव मुझे होता रहा है। मेरी पूजनीया सास श्रीमती सरोज श्रीवास्तव व मेरे पूज्य पिताश्री जगदीश कुमार सक्सेना एव माता जी श्रीमती सुभाषिनी सक्सेना ने मुझे आगे बढने की प्रेरणा दी और उन्ही के आर्शीवाद से मैं आगे बढ सकी। मेरे पति देव श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव का भी मुझे समय–समय पर भरपूर सहयोग मिला उन्होने मुझे लक्ष्य तक पहुँचाने मे पूरी मदद प्रदान की। परिवार के प्रत्येक सदस्यो के प्रति मे हार्दिक रुप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने मेरी मदद

की व जिनके साथ मैं ये शोध कार्य पूर्ण कर सकी। इस सबके अतिरिक्त मे डॉ अशोक प्रियदर्शी के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने अपना अमूल्य समय निकालकर अपनी दूरदर्शिता से मुझे विषय वस्तु समझने का पूर्ण सहयोग प्रदान किया। उनके सहयोग को मैं सदैव आजीवन ऋणी रहूँगी।

शोध प्रबन्ध की पूर्णतया मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद हिन्दुस्तान एकेडमी पब्लिक लाइब्रेरी विश्वविद्यालय लाइब्रेरी केन्द्रीय पुस्तकालय काशी विश्वविद्यालय वाराणसी के शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित सामग्री प्राप्त हुई। इसलिए वहॉ के अधिकारियो एव कर्मचारियो को सहृदय धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

श्रीमती प्रकाशवती पाल और श्रीमती मीना पाल से भी मै अपकत हुई हूँ। उन्होने मेरे लिए विप्लव की फाइले उपलब्ध करा दी जिससे मुझे बहुत मदद मिली मैं उनकी भी ऋणी हूँ।

विनयागत होकर मे यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर रही हूँ। मुझे आशा ही नही बल्कि विश्वास है कि विद्वद्ववतजन इसमे हुई त्रुटियो को क्षमा करेगे। यदि शोध प्रबन्ध यशपाल के उपन्यासो मे नारी पात्रो का आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन के प्रति किचित भी ध्यानाकर्षित करता है तो मैं अपना अथक प्रयास सफल समझूँगी।

विनयावनती

निधि सक्सेना

हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

सन - २००२

# अनुक्रमणिका

# अनुक्रमणिका

# प ,ला अध्याय

# “यशपाल के उपन्यासो की सक्षिप्त रूपरेखा”

## क्रमागत उपन्यास

## क दादा कामरेड (१६४१ ई०)

यशपाल का पहला उपन्यास दादा कामरेड मे राजनीतिक समस्याओ के साथ–साथ प्रेम और रोमास के प्रसग को भी लेखक ने अपने दृष्टिकोण से दर्शाया है। इस उपन्यास मे लेखक ने परम्परागत नैतिक मान्यताओ को न केवल पीछे छोडा बल्कि आधुनिकता के आज के सन्दर्भ मे एक पूर्वाभास भी प्रस्तुत किया।

इस उपन्यास की कथावस्तु आज के सन्दर्भ मे बहुत समीप है दादा कामरेड राष्ट्रीय सघर्ष की कथा है। प्रस्तुत उपन्यास मे सघर्ष मुख्यत भारतीय क्रान्तिकारी दल और अग्रेजी साम्राज्यवादी तथा पूँजीवादी शक्तियो के बीच चित्रित हुआ है। उपन्यास का नायक हरीश जो देश की स्वतत्रता के लिए लड रहा है। एक रात अचानक ही पुलिस की हिरासत से भागकर पूँजीपति अमरनाथ के घर घुस जाता है। अमरनाथ की पत्नी यशोदा अत्यन्त भयभीत हो जाती है किन्तु फिर भी उसे अपने घर रात छिपने की पनाह देती है। जिस समय उसको घर मे छिपने की पनाह मिली वह समय एक भारतीय स्त्री (यशोदा) के लिए बहुत ही कष्टमय होता है। स्वय यशोदा सोचती है मौत के मुँह से भागता हुआ एक व्यक्ति जान बचाने के लिए उसके पैरो के पास आ पडा।[१]

१ दादा कामरेड–यशपाल पृष्ठ - ४

इस तरह की मानवतावादी नैतिकता के धरातल पर वह क्रान्तिकारी को शरण ही नहीं मिला अपितु प्रात काल उसे भगाने मे भी मदद भी करती है इस तरह वह युवक के अनुरोध पर इन्ही कपडो पर बाहर जाना ठीक न होगा पहचान लिया जाऊँगा।[१] आप मुझे एक छोटा या कोई पुराना कपडा ओढने के लिए और चार–पॉच रुपये सुबह बाहर जाने के पहले दे सके तो बडी सहायता होगी।[२]

यही से कथा का विस्तार प्रारम्भ होता है। उपन्यास के मूलरूप मे क्रान्तिकारी के साथ–साथ ही रोमाच की भी अभिव्यजना की गयी है। उपन्यास की नायिका शैल जी लाला ध्यानचन्द की इकलौती पुत्री है। अत्यन्त स्वतत्र विचारवाली महिला है। वह एम ए की छात्रा और देश के राजनीतिक आन्दोलन मे भी भाग लेती है। हरीश उसका साथी है जो समाजवादी दृष्टि से सम्पन्न था। हरीश का नेतृत्व स्वय लेखक कर रहे थे। इसलिए नायक के विचार स्वय लेखक के विचार थे। क्रान्तिकारी दल के विस्फोटक वर्ग के नेता चन्द्रशेखर आजाद के रूप मे उपन्यास की कथा मे दादा दिखायी देते हैं।

इस उपन्यास के प्रारम्भ मे क्रान्तिकारी दल की विस्फोटक शक्तियॉ ही अधिक प्रबल रूप से दिखायी देती है हरीश पहले तो इससे प्रभावित होता है किन्तु समाजवादी चेतना से उत्पन्न विचारो से धीरे–धीरे उसकी आस्था डकैती हत्या और लूटपाट से उठ जाती है। हरीश का मानना है इन चीजो से समाज मे क्रान्ति नही लायी जा सकती। उसके ह्रदय मे जैसे ही इस परिवर्तन की नींव पडती है पार्टी के अन्य सदस्य उसके दुश्मन बन जाते हैं। वह जानता है कि उसे किसी भी क्षण मार दिया जायेगा इसलिए वह सामान्य जनता को शोषण अन्याय अत्याचार के

---

**१ दादा कामरेड–यशपाल पृष्ठ - ७**

**२ दादा कामरेड–यशपाल पृष्ठ - ७**

प्रति जागरूक करने के प्रयास मे अपने चेहरे तक को भी विकल कर लेता है और सुल्तान के नाम से समाज मे मजदूरो के न्याय के प्रति लडता है। वह कहता है कि मजदूर भाइयो यह मिले तुम्हारी और तुम्हारे भाइयो से बनी है तुम्हारे बिना यह मिल एक सेकेण्ड भी नही चल सकती मजदूर भाइयो हम सूखी रोटी के निवाले मॉग रहे हैं और बल्कि लोग अपने ऐसो–इशरत के लिए जिद कर रहे हैं हम मर जायेगे परन्तु पीछे नहीं हटेगे।

इस तरह से सुल्तान के रूप मे हरीश पूँजीपतियो के प्रति घोर घृणा दर्शाता है और अपने शरीर की परवाह न करके भी मजदूरो की लडाई लडता है स्वय उसका शरीर दिनभर धूप मे घूमने से नाक से खून बहने लगता है। केवल चने और पानी पर रहने से उसे पेचिश हो गयी थी परन्तु वह फिर भी भूत की तरह चक्कर लगाता रहता है।[१]

इस सघर्ष मे शैल उसका साथ देती है जो आधुनिक विचारो की पक्षपाती है। शैल इतनी आधुनिक है कि जब से होश सम्भाला तब से उसके जीवन मे प्रेम रहा। उसके जीवन मे कई पुरुष आते हैं लेकिन कोई भी उसके विचारो मे जचता नही अन्त मे वह हरीश के विचारो से वह इतना प्रभावित होती है कि उसके अश तक को भी अपने भीतर समेट लेती है फलस्वरूप उसको घर छोडना पडता है और स्पष्टत अपने पिताजी से कह देती है कि पिताजी स्त्री होने के नाते जो मेरा प्राकतिक अधिकार है उससे कुछ अधिक मैंने नहीं किया है मैं मनुष्य हूँ, मनुष्य बनी रहना चाहती हूँ।[२]

शैल विवाह की विरोधी है इसलिए स्वतत्र रूप से पुरुषो के साथ विचरण करती है। उसका मानना है कि विवाह स्त्री के स्वतत्रता के मार्ग की सबसे बडी

---

**१ दादा कामरेड–यशपाल पृष्ठ - ११६**

**२ दादा कामरेड–यशपाल पृष्ठ - १४५**

बाधा है। उसका मानना है कि 'स्त्री को किसी की बनकर ही रहना है तो उसको स्वतत्रता का अर्थ ही क्या हुआ ? स्वतत्रता शायद इसी बात की है कि स्त्री एक बार अपना मालिक चुन ले परन्तु गुलाम उसे जरूर बनना है। [1] इस तरह शैल का परिचय ही लेखक ने नये ढग की लडकी के रूप मे दिया है।

इसी उपन्यास की दूसरी मुख्य स्त्री पात्र है यशोदा। जो घर के भीतर ही अपनी दुनिया समेटे हुए है। शैल के प्रोत्साहन से जब वह घर की चहारदीवारी के बाहर निकलती है तो अपने पति (अमरनाथ) का विश्वास खो बैठती है। दोनो के वैवाहिक जीवन मे न मिलने वाली दरार पड जाती है। अमरनाथ के मस्तिष्क पर इस बात का प्रभाव पडता है। वह अपनी पत्नी यशोदा के विषय मे सोचते हैं कि न जाने उनका सम्बन्ध (हरीश) से कहाँ तक बढ चुका है ? परपुरुष से अपनी स्त्री के शारीरिक सम्बन्ध की कल्पना सोचते ही सिर चकराकर उसकी ऑखो मे खून उतर आता है। यशोदा भी सोचती है कि बिना वजह का शक उसके आठ साल के वैवाहिक जीवन को एक बारगी धूमिल कर रहा है' उसे केवल दुख था आठ बरस मे इन्होने मेरा ऐसा कौन काम देखा कि मुझ पर सदेह करने लगे।[2] इस तरह उपन्यास मे जहाँ शैल जैसी आधुनिक स्त्री का प्रसग लेखक ने रखा वही यशोदा के माध्यम से उन्होने पुरानी रूढिग्रस्त महिला का चित्रण भी अपने उपन्यास मे किया।

वस्तुत दादा कामरेड की रूपरेखा बदलते युग के राजनीतिक एव सामाजिक स्वरूप से सम्बन्धित अनेक सार्थक तथा महत्वपूर्ण प्रश्न उठाने और उनका सटीक चित्रण एव विश्लेषण करने के अतिरिक्त लेखक के मध्यवर्गीय सस्कारो के कारण अपने सही उद्देश्य के साथ सामने नहीं आ सकी है। इसके विपरीत यह रोमास

---

१ दादा कामरेड—यशपाल पृष्ठ २०

२ दादा कामरेड—यशपाल पृष्ठ ६३

एव क्रान्तिकारी लगने वाली सतही एव अतिवादी दलदल मे फसकर रह गयी है। कथावस्तु मे राजनीतिक एव रूमानी भूमिका के मिश्रण का लेखक का दावा तो ठीक है किन्तु इस मिश्रण मे राजनीतिक रोमास का तत्त्व ही प्रमुख बनकर सर्वत्र छा गया। यही कथानक की मुख्य रूपरेखा है।

## ख देशद्रोही (१६४३ ई०)

यह उपन्यास सन् १६४२ ई की राजनीतिक–सामाजिक गतिविधियो का एक यथार्थवादी चिन्तन है। इस उपन्यास मे लेखक ने द्वितीय महायुद्ध के समय भारतीय जन–जीवन मे राजनीतिक चेतना और सामाजिक को मुख्य केन्द्र बिन्दु मे पिरोकर समाजवादी भूमिका के प्रति अपनी आस्था का परिचय दिया है। इसके साथ ही साथ सन् १६४२ ई मे कम्यूनिस्टो पर लगाये गये देशद्रोह के आरोप को भी गलत प्रमाणित किया तथा उपन्यासकार यशपाल ने कम्यूनिस्ट पार्टी की इस नीति के स्पष्टीकरण के लिए देशद्रोही' की कथा का सयोजन इस उपन्यास मे किया है।

द्वितीय महायुद्ध के समय भारतीय जन–जीवन मे व्याप्त राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था छिन–भिन्न हो गयी थी। कम्यूनिस्ट अग्रेजी साम्यवाद के विरूद्ध तो थे परन्तु जर्मनी और जापान के फैसिज्म को उससे भी बडा शत्रु समझते थे। जर्मनी की पराजय और रूस की विजय से उन्हे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे समाजवादी प्रजातत्र शक्ति के सबल होने की आशा थी। सन् १६४२ ई मे जनता काफी तनावग्रस्त थी और इसी को कथा का आधार मानकर उपन्यास की रचना की गयी।

इस उपन्यास के नायक डॉ भगवानदास खन्ना का कुछ वजीरियो द्वारा अपहरण कर लिया जाता है। सीमाप्रान्त से खन्ना की मृत्यु का समाचार सुनकर

उसकी पत्नी राजदुलारी को इतना दु ख पहुँचता है कि वह पागल–सी हो जाती है। कुछ दिन बीत जाने के उपरान्त वजीरी खन्ना को गजनी मे व्यापारी के हाथ बेच देते हैं अचानक एक दिन मौका पाकर खन्ना व्यापारी के लडके नासिर के साथ भाग जाते हैं। वह विदश आदि देशो मे भटकते हुए भारत लौट आते हैं। कानपुर मे डॉ वर्मा के नाम से खन्ना पुन कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यक्रमो मे भाग लेते हैं यही पर डॉ खन्ना को अपनी पत्नी राजदुलारी की बहन चन्दा से पता चलता है कि उसकी पत्नी ने काग्रेसी नेता बद्री बाबू से विवाह कर लिया है। राजदुलारी भी क्या करती पति की मृत्यु का समाचार पाकर वह नि सहाय हो गयी और तभी कम्यूनिस्ट नेता बद्री बाबू से उसका परिचय होता है। बद्री बाबू भी राजदुलारी के दु ख–दर्द को समझते हैं और इसीलिए उनके हृदय मे राजदुलारी के लिए सहानुभूति और करुणा उमड पडती है। वे दूसरे काम मे हानि सहकर भी दूसरे दिन राज की खबर लेने आते हैं सात्वना देकर दुश्चिता दूर करने का प्रयत्न करते हैं।[1] यह जानकर डॉ खन्ना को बहुत दु ख पहुँचता है। उन्हे इस समय सहारे की आवश्यकता होती है। चन्दा अपनी आत्मीयता से डॉ खन्ना को सम्भाल लेती है लेकिन इधर चन्दा का पति राजाराम दोनो की घनिष्ठता को सदेह की दृष्टि से देखते हैं। इसका मुख्य कारण भारतीय सस्कार है जो अपनी पत्नी को केवल अपनी सम्पत्ति समझते हैं लेकिन मानवतावादी अवधारणा लोगो मे विद्यमान रहती है और शायद इसी कारण चन्दा डॉ खन्ना से आत्मीयता का रिश्ता कायम रखती है चन्दा की आत्मीयता से खन्ना का आत्मरक्षा तटस्थता और सावधानी का भाव अस्थिर हो गया खन्ना के लिए परिस्थिति असहाय हो रही थी अन्याय स्वय उस पर होने के बावजूद उसे अनुभव हो रहा था चन्दा को दु खीकर रूला देने का कारण स्वय वही है।[2]

---

**१ देशद्रोही – यशपाल पृष्ठ स २४**

**२ देशद्रोही – यशपाल पृष्ठ स १३४**

तत्कालीन समाज मे राजनीतिक उथल–पुथल से जीवन त्रस्त था विश्व के परिप्रेक्ष्य मे जर्मनी का रूस पर आक्रमण होता है। डॉ खन्ना भी इस युद्ध मे अपनी भागीदारी निभाते हैं और अपनी राजनीतिक गतिविधियो मे अधिक सक्रिय हो जाते हैं। मजदूर नेता शिवनाथ डॉ खन्ना का घोर विरोधी हो जाता है किन्तु डॉ खन्ना इससे तनिक भी भयभीत नही होते। शिवनाथ चन्दा के पति राजाराम के घर जाकर धमकी भी देते और कहते हैं कि उनका फिर यहॉ आना ठीक न होगा। खन्ना जी के लिए कहा है कि उनके विचार यदि काग्रेस के इस आन्दोलन से नही मिलते और कम्यूनिस्ट आन्दोलन से अलग रहना चाहते हैं तो बेशक अलग रहे। आजादी के लिए हमारे प्रयत्न मे साथ न देना हो तो न दे परन्तु सरकार की ओर से हमसे लडने तो न आये।[१] वह शिवनाथ की एक गुप्त योजना को विफल करने के प्रयास मे बुरी तरह घायल हो जाते है। चन्दा डॉ खन्ना के जीवन को बचाना चाहती है। वह घायलावस्था मे ही उसे उसकी पत्नी राजदुलारी के पास ले जाती है किन्तु राजदुलारी खन्ना से मिलने से इन्कार कर देती है और कहती है कि मैं डॉ खन्ना से नहीं मिल सकती। इस तरह चन्दा मजबूर होकर डॉ खन्ना को वापस ले जाती है। रास्ते मे ही उसका पति राजाराम मिल जाता है और डॉ खन्ना को बदमाश देशद्रोही कहते हुए अपनी पत्नी चन्दा को मारते–पीटते घर ले जाता है। मृत्यु के समीप डॉ खन्ना आखिरी बार शक्ति बटोर कर यही कहते हैं कि चन्दा मैं देशद्रोही नहीं। सक्षेप मे यही उपन्यास का सक्षिप्त रूपरेखा है।

इस उपन्यास मे कथानक के विकास के साथ ही साथ डॉ भगवानदास के व्यक्तित्व का भी विकास होता गया। उपन्यास के मुख्य नायक के रूप मे ही नही वरन् महान् त्यागी कम्यूनिस्ट नेता और पार्टी प्रवक्ता के रूप मे वह कथानक को

---

**२ देशद्रोही – यशपाल। पृष्ठ स ११८**

एक नयी दिशा देते हैं। देशद्रोही सही अर्थो मे एक राजनीतिक उपन्यास है क्योकि इसकी रचना ही एक प्रमुख राजनीतिक दल पर लग जाने वाले एक झूठे आरोप का निराकरण देने के उद्देश्य से हुई है। इस उपन्यास के प्राय सभी पात्र इतने क्षीण और लघु व्यक्तित्व के हैं कि स्पष्ट हो जाता है कि कम्युनिस्ट समाज मे सचमुच समाज की सर्वग्रासी सत्ता व्यक्तित्व के विकास और प्रसार को कुण्ठित कर देगी। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से राजनीतिक एक सरसता से बचाने के लिए जिस प्रकार उसमे रोमास के तत्त्वो की बुनावट की है उसी प्रकार कुछ सामाजिक महत्त्व के प्रश्नो को भी उठाया है।

महापडित राहुल सास्कृत्यायन ने इस उपन्यास से सतुष्ट होकर लिखा है यशपाल की परतूलिका उतावलेपन के लिए नहीं स्थायी मूल्य की चीजो के लिए है। इस उपन्यास को ससार की किसी भी उन्नत भाषा के उपन्यासो की श्रेणी मे तुलना के लिए रखा जा सकता है।

## ग दिव्या (१६४५ ई०)

बौद्धकालीन कथानक के आधार पर दिव्या ऐतिहासिक उपन्यास का सृजन है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति और गति का चित्र है। लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र मे ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रग देने का प्रयत्न किया है। दिव्या मे यशपाल ने कला को जीवन का उपकरण मात्र माना है– कला केवल उपकरण मात्र है। कला जीवन के लिए और उसकी पूर्ति मे ही है। [१]

---

**१ दिव्या – यशपाल। पृष्ठ स १५७**

दिव्या उपन्यास मे दिव्या ही सम्पूर्ण उपन्यास की आत्मा है। दिव्या की जीवन सरिता मे दारा और अशुमाला के रूप मे दो धाराएँ आकर मिलती हैं। त्रिवेणी मे गगा की जलधारा यमुना और सरस्वती का जल ग्रहण कर जब काशी पहुँचती है तब यह बताना नितान्त कठिन हो जाता है कि इस जलधारा मे कितना जल गगा का है और कितना यमुना या सरस्वती का है उसी प्रकार दिव्या की जीवन गगा मे भी दारारूपी यमुना और अशुमाला रूपी सरस्वती का जल मिल जाता है अर्थात् दिव्या के समग्र जीवन का यही विभिन्न पक्ष है। दिव्या का जीवन एक तीव्र व्यग्य से पूर्ण है। वह एक नारी जीवन की करुण कहानी है।

दिव्या धर्मस्थ पडित देवशर्मा के ज्येष्ठ पुत्र की कथा है अर्थात देवशर्मा की प्रपोत्री है उसके उज्ज्वल भविष्य के विश्वास से ही उसे दिव्या पुकारा गया लेकिन दुर्भाग्य से जन्म के बाद ही माता–पिता पितामह दैवीय प्रकोप से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। प्रपितामह देवशर्मा के वात्सल्य के रूप मे दिव्या का लालन–पालन हुआ। प्रपितामह देवशर्मा आस्था नगर मे ज्ञानमय वातावरण से परिपूर्ण थे इसी वातावरण मे पोषित होकर दिव्या ज्ञान कला और सस्कति मे उसी प्रकार सुपूर्ण थी जैसे कमल जल से भींगा न रहने पर भी जल से रचा रहता है उसकी विशेष रुचि सगीत एव नृत्य मे थी[1] और दिव्या इसी मे रमी रहती और अपने नृत्यकला की प्रशसा सुनकर प्राय मुग्ध हो जाती और सोचती कि यही कला उसके जीवन के लिए अनिवार्य है प्रसाद मे उपस्थित वृद्धजन और कुल स्त्रियॉ कला मे उसकी दिव्या' आदित्य क्षमता के लिए साधुवाद देकर आशीर्वाद देते थे। अभिजात युवक और कुल स्त्रियॉ उसकी स्तुति करती थी। उस प्रसशा से उसे उत्साह और सतोष प्राप्त होता था।[2] सरस्वती पुत्री का सम्मान पाकर दिव्या ने सागल उपन्यास की कथा का

---

१ दिव्या – यशपाल। पृष्ठ सं २२

२ दिव्या – यशपाल। पृष्ठ स २८

प्रारम्भ भद्र राज्य की सागल गणपरिषद द्वारा आयोजित मधुपर्व से होता है। इस आयोजन मे सागल के द्विज कुल की कन्या महापण्डित देवशर्मा की प्रपोत्री और राजनर्तकी मल्लिका की शिष्या दिव्या को सर्वश्रेष्ठ नृत्यकला के प्रदर्शन पर सरस्वती पुत्री तथा दास पुत्र पृथुसेन को सर्वश्रेष्ठ खडगधारी की उपाधि से सम्मानित किया जाता है यही वह अवसर होता है जब दिव्या पृथुसेन के प्रति आकर्षित होती है। पृथुसेन और दिव्या के लिए यही प्रेम की पृष्ठभूमि तैयार होती है। पृथुसेन दिव्या का हाथ अपने हाथ मे लेकर क्षोभ से कहा प्रिय देख लिया तुमने यह है युद्ध के लिये आयोजन दिव्या ने अधीर होकर उत्तरीय से नेत्र ढक लिये। इस तरह दोनो ही प्रगाढ प्रणय–सूत्र मे बध जाते हैं। इसी बीच यवन नृपति केदस का आक्रमण होता है पृथुसेन को युद्ध मे जाने का आदेश मिलता है जाने से पूर्व वह दिव्या से मिलता है और विवाह का वचन देता है। यह वह अवसर रहता है जब दिव्या बिना विवाह किये ही पृथुसेन के अश को स्वीकार कर लेती है। विवाह की विधि से पृथुसेन को पाये बिना अपने शरीर मे उपस्थित पृथुसेन की अश की रक्षा वह विरोधी दृष्टियो से किस प्रकार करे ? यह उसके जीवन की सम्पूर्ण महत्त्वाकाक्षा और माधुर्य कलक और अपराध माना जा रहा था। पृथुसेन की सतान धारण करने के लिए ही पृथुसेन से उसका विवाह होगा। फिर वही विषय अब इतना प्राणात क्यो बन गया।[१]

युद्ध से लौटने के पश्चात् पिता की आज्ञा के सामने पृथुसेन को सीरो से विवाह करने पर विवश होना पडता है। इधर दिव्या पृथुसेन द्वारा प्रदत्त गर्भधारण कर चुकी थी अत उसे जब पृथुसेन के विवाह की खबर सुनाई देती है तो उसे गहरा आघात लगता है। वह उससे मिलने प्रेस्थ प्रसाद मे जाती है और सूचना देती है

---

**१ दिव्या – यशपाल। पृष्ठ स ६०–६१**

कि दिव्या आयी है लेकिन उसको उत्तर मिलता है– आर्य इस समय प्रमदोद्यान मे गणपति की प्रपोत्री आयुष्मती सीरो की सगति मे है आर्य क्षमा निवेदन करते हैं वे अस्वास्थ्य के कारण सगति लाभ करने मे असमर्थ हैं दिव्या के कानो ने उत्तर सुना परन्तु ह्रदय ने विश्वास न किया उसे पृथुसेन के उत्तर ने झोके से सहसा बुझा दिया।[1] लज्जा और ग्लानि के कारण वह सागल छोडकर चली जाती है यही से दिव्या के जीवन की नरकीय यात्रा प्रारम्भ होती है। दास प्रतूल के हाथो मे पडकर वह एक दूसरे व्यक्ति के हाथ बेची जाती है। वह अपने जीवन मे अनेक यत्रणाए और अत्याचार भोगती है। वह इस जीवन से इतनी त्रस्त हो जाती है कि अपना जीवन समाप्त करने के लिए नदी मे कूद पडती है किन्तु नर्तकीय रत्नप्रभा द्वारा बचा ली जाती है फिर दिव्या का नया रूप अशुमाला नर्तकी के रूप मे समाज मे मन बहलाने के साधन बन जाने के लिए बाध्य हो जाता है। उसकी कथा यही समाप्त नहीं होती और कालचक्र उसे एक बार फिर सागल ले जाता है। सागल का अभिजात्य समाज दिव्या को एक वेश्या के रूप मे स्वीकार नहीं करता। निराश होकर दिव्या एक पाथशाला मे शरण लेती है जहॉ आचार्य रूद्रधीर पृथुसेन (जो बौद्धभिक्षु बन चुका था।) और दार्शनिक मारिश पहुँच कर दिव्या के समक्ष प्रणय निवेदन करते हैं रूद्रधीर दिव्या को महारानी बनाने का प्रलोभन देता है पृथुसेन उसके समक्ष बौद्ध सघ मे आने का प्रस्ताव रखता है और मारिश उसे दु ख–सुख की सगिनी के रूप मे स्वीकार करना चाहता है दिव्या जो अब तक काफी भटक चुकी थी पत्नी का दर्जा न ही पृथुसेन को सकी न ही रूद्रधीर को वह अत्यन्त थकी हुई–सी जीवन का जो लक्ष्य खोजती फिरती है वह मारिश के निवेदन मे मिलता है। यही कारण है कि दिव्या मारिश के निवेदन को ही थके–हारे हुए जीवन

---

१ दिव्या – यशपाल। पृष्ठ स ६७

का सार तत्त्व दिखायी देता है। अतएव दिव्या भित्ति का आश्रय छोड दोनो बाहो फैलाकर आर्द्र स्वर मे कहती है आश्रय दो आर्य।[१] और यही उपन्यास की मूलकथानक की सक्षिप्त रूपरेखा है।

## घ गीता पार्टी कामरेड (१९४६ ई०)

यशपाल कत गीता पार्टी कामरेड सन् १९४६ ई का आम चुनाव और मुम्बई का नाविक विद्रोह है। लेखक ने अपने इस उपन्यास मे कम्यूनिस्ट विचारधारा को उच्चतर रखने के उद्देश्य से तथा कांग्रेसियो मे व्याप्त अनैतिकता का पर्दाफाश करने के लिए आम चुनावो की घटना को कथानक की पृष्ठभूमि मे रखा है। इस उपन्यास मे कम्यूनिस्ट कार्यकर्त्ताओ की सच्ची लगन निष्ठा ईमानदारी और आजादी के लिए उनकी व्याकुलता दिखाकर पार्टी के ऊपर लगाये गये आरोपो का खण्डन करना है।

उपन्यास की नायिका गीता पार्टी की परिश्रमी व ईमानदार सदस्या है जो पार्टी मे छपी पत्रिका का विक्रय करती हुई दिखायी देती है वह कालेज मे भी पढती है। अखबार बेचने के लिए पुकारने से उसका चेहरा गुलाबी हो रहा था [२]

कथा का विकास सूत्र अब तक इस लक्ष्य को भी लेकर चलता है कम्यूनिस्ट पार्टी के महत्त्व को सिद्ध करने के उद्देश्य से लेखक ने स्थान–स्थान पर भावाजी और राम गोपाल के माध्यम से कांग्रेसियो के आडम्बर को व्यवहार और स्वार्थपूर्ण नीतियो पर गहरा प्रहार किया है। कम्यूनिस्ट युवती गीता के प्रभाव से खुँखार गुण्डे भावरियो का आजादी के लिए जुलूस का नेतृत्व करना उसके जीवन मे हुए

---

**१ दिव्या – यशपाल। पृष्ठ स २२०**

**२ गीता पार्टी कामरेड – यशपाल। पृष्ठ स १३**

परिवर्तन की ओर लाना आदि घटनाएँ मुख्य रूप से चित्रित इस उपन्यास मे की गयी है। भावरियो के जीवन मे आरम्भ से ही घर मे पिता का भय मन मे भगवान का भय और स्कूल मे मास्टर के बेत का भय पद्मलाल भावरिया को जीवन असहाय जान पडने लगा उसके लिए पुरुष के लिए उन्माद और सामर्थ्य की चरम साधना है नारी। उसमे बन्धन और सीमा क्या ? [१]

पार्टी कामरेड उपन्यास मे पदमलाल भावरिया के आमोद–प्रमोद पूर्ण जीवन मे सहसा परिवर्तन प्रतिक्रियाकरण का परिणाम है। बाल्यावस्था मे उसके पिता भगत जी ने यमलोक के दण्ड का भय दिखाकर उसे चोरी करने जुआ खेलने नशा आदि कामो से विरक्त करने का प्रयास किया था। उन्होने मन्दिर पर इन दृश्यो को खुदवा रखा था। इन भयकर दृश्यो को देखकर पद्मलाल भावरिया का मन दहल जाता है। कुछ दिनो तक वह ऐसा सहमा–सहमा से रहता जैसे बिल्ली को देखकर चूहा सहम जाता। पुजारी जी पद्मलाल भावरिया को उपदेश देते हैं (मनुष्य चौरासी लाख योनियो मे दु ख भोगता है। कुछ दिनो तक इस आतक से उसने घर से बाहर निकलना छोड दिया। उसे सब ओर पाप ही पाप दिखायी देता था और धर्म केवल भय मे। भय को इस अतिशयता की प्रतिक्रिया यह होना स्वाभाविक था और हुई भी। कुछ दिनो तक इस आतक का प्रभाव उस पर रहा भी किन्तु थोडे समय मे ही पद्मलाल के मन से यह आतक निर्बल हो ऐसा उड गया जैसे कच्चा रग दूध मे फीका पडने लगता है। वह जिस ओर आकर्षित होता उसी ओर पाप का भय था। पर पूरा समाज उसी पापमय दुनिया की ओर बहा जा रहा था। भावरिया भी कैसे न इस ओर बहता। उसके जीवन मे बदलाव आया तो वह गीता के सामीप्य से। गीता के प्रभाव से खूँखार गुण्डे भावरिया का आजादी से जिस जुलूस का नेतृत्व

---

**१ गीता पार्टी कामरेड – यशपाल। पृष्ठ स १५–१८**

करना और आखिरी मे घायल होकर स्वाधीनता की बलिवेदी पर उसका अन्त हो जाना आदि कथानक की प्रमुख घटनाएँ हैं। एक खूँखार व्यक्ति को स्त्री के सामीप्य से सुधार लाना लेखक की लेखनी की सबसे बडी कला है। जो भावरिया अपने जीवन मे अन्य किसी बातो को महत्त्व नहीं देता वही सारे बुरे काम छोड पार्टी मे अपनी अहम् भूमिका निभाता है। गीता को जब भावरिया के घायल होकर मृत्यु का समाचार मिलता है तो वह "उमडती हुई हिचकी को गीता पी गई। पलको मे ऑसू भर जाने के कारण वह कुछ स्पष्ट देख नही पा रही थी। मन से उठते आवेश को दबाये रखने के लिए दॉतो को ओठो से काट रही थी। परन्तु गालो पर से ऑसुओ की धाराएँ बहती गयी। सहसा सुनाई दिया (कामरेड अटेन्शन) [१] इस तरह भावरिया का इस लोक से जाना गीता को काफी दु ख पहुँचाता है।

लेखक ने इन घटनाओ का चित्रण अपने कथानक की सिद्धि के लिए ही किया है उन्होने कथ्य के अनुसार कथानक मे अनेक मोड भी उपस्थित किया। माटुगा क्लब की घटना के पश्चात् भावरियॉ मे आया अचानक हृदय परिवर्तन और कथानक के अन्त मे उसका गोली का शिकार होकर पार्टी के लिए शहीद हो जाना लेखक की लक्ष्यवादिता को ही प्रस्तुत करते हैं। हृदय परिवर्तन का यह मोड बुर्जुआ नैतिकता और समसमायिक गॉधीवादी हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त की अनजाने स्वीकृति का द्योतक है। उपन्यास मे पार्टी कार्यकर्त्ताओ का सामाजिक बोध और न्याय भावना भी सही नही कही जा सकती। पार्टी के प्रति गीता का आकर्षण वैयक्तिक अनुभव से अधिक सिद्धान्तो के कारण है। यही उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य विषय है।

---

१ गीता पार्टी कामरेड – यशपाल। पृष्ठ स १११

# ङ मनुष्य के रूप १६४६ ई०

मनुष्य के रूप उपन्यास मे मनुष्य की हीनता और महानता के यथार्थवादी दृष्टिकोण को पिरोते हुए नारी मन स्थिति को रूपायित किया है।

मनुष्य के रूप फिल्मी तकनीक पर विरचित उपन्यास है। लेखक ने 'सोमा के चरित्र को कल्पना के इन्द्रधनुषी रगो से अलकत करने का उपक्रम किया है। सोमा का परिचय मनुष्य के रूप के प्रारम्भिक अशो मे ही रहस्यमय ढग से दिया गया है। धनसिह के अप्रत्याशित सम्पर्क को माध्यम बनाकर सोमा के चारित्रिक विकास को उद्घाटित किया है। सोमा की दो बहने एव एक भाई था। सयोगवश सोमा विधवा हो गयी और यहीं से उसके जीवन मे समस्याएँ पनपने लगी। सोमा धनसिह को फ्लैश बैक या पूर्व दीप्त सी के माध्यम से विगत जीवन से अवगत कराती है।

भारत मे नारी स्वातत्र्य की अनुशसा कदापि नहीं की गयी है। स्वतत्रता नारी को अर्द्धभ्रस्ट करती है। आधुनिक समय मे नारी इस व्यवस्था को चुनौती दे रही है। पुरुष की भॉति नारी भी स्वच्छन्द जीवन जीना चाहती है। वैधत्व आज नारी के जीवन जीने मे बाधक नहीं है। सोमा नारी पात्र इसी चितन के वशीभूत होकर मोटर–चालक धनसिह की सहानुभूति पाकर उसके साथ रहने का निर्णय लेती है। सोमा का निर्णय उसके लिए सुखद और कामान्ध नही रह पाता। चूँकि सोमा धनसिह की परिणीता नहीं थी इसलिए समाज ने उसे 'सोशल सेक्शन नही प्रदान किया। धनसिह दण्डित होता है और पुलिसकर्मी उसकी असहाय अवस्था का लाभ उठाकर उसका कायिक शोषण करते हैं। इस प्रकरणोपरान्त सोमा का जीवन एक

---

अभिनव करवट लेता है। कामरेड भूषण सोमा की सहायता करता है। उसे एक सम्पन्न परिवार मे जीवन यापन करने के लिए सशक्त बना देता है। अपने अप्रतिम रूप-सौन्दर्य के कारण वह बैरिस्टर जगदीश सलोरा को अपनी ओर अनजाने ही आकर्षित कर लेती है। उसकी निजी आर्थिक विषमता उसे रखैल बनकर रहने के लिए विवश करती है।

इसलिए वह वैरिस्टर साहब की ऑखे खोलते ही भोलेपन और सकोच की अदा से रिझा देती सोमा पलके झुकाए बैरिस्टर के लिए चाय बनाने लगी बैरिस्टर साहब को सन्तुष्ट कर लेना इस घर मे विशेष सुधरता का प्रमाण समझा जाता।[१]

यह प्रेम प्रसग शीघ्र ही अनावृत्त हो जाता है। बैरिस्टर के घरवाले इस अवैध सम्बन्ध को स्वीकति नहीं प्रदान करते। स्वभावत बैरिस्टर के आवास पर उखाड–पछाड होने के कारण सोमा पुन दुर्भाग्य और दुर्गति का शिकार होती है। इस प्रकार समुचे उपन्यास मे लेखक एक ओर मनुष्य के मुख पर लगे कत्रिम मुखौटे को हटाकर मनुष्य का वास्तविक रूप उद्घाटित करता चलता है दूसरी ओर सोमा के जीवन मे नव्यतर रस–रग घोलता चलता है। कथा साहित्य की पुरानी पहचान जिज्ञासा कौतूहल विस्मयकारी समस्याओ से सम्प्रक्त थी। यशपाल का मनुष्य के रूप इसी प्रकार आरोह–अवरोह से जुडे किन्तु प्रशस्त राजमार्ग पर अग्रसर रहता है।

सोमा पुन बैरिस्टर के ड्राइवर (बरकत) के हाथो की कठपुतली बनती है। फिल्मी पैटर्न पर लिखित होने के कारण सोमा ड्राइवर के साथ फिल्म नगरी मुम्बई पहुॅच जाती है। बनवारी उस अपरूप सौन्दर्य की प्रतिमा को देखकर उसका परिचय फिल्म जगत के निर्माताओ से करा देता है। सोमा की मोहक छवि का जादू फिल्म निर्माताओ के सिर पर चढकर बोलता है। अब तक सोमा अपनी भुवन

१ मनुष्य के रूप – यशपाल। पृष्ठ स ७५

मोहिनी काया का मूल्य ऑक चुकी होती है। वह अपनी रूप छवि को समर्थ लोगो के सम्मुख दॉव पर लगाकर उसका भरपूर लाभ उठाती है। सोमा एक सामान्य नारी होकर भी फिल्म अभिनेत्री बनने मे समर्थ होती है। यह बताने की आवश्यकता नही कि इस व्यापार मे उसे कही हानि नही होती वह कभी समाज की उपेक्षिता थी किन्तु उसकी लोक प्रसिद्धि उसे जन–जन का कठहार बना लेती है। यही पर उसकी मुलाकात फिल्म एजेन्ट सुतलीवाला से होती है। वह मनोरमा का नपुसक पति है। वह मनोरमा को मात्र अपने फिल्मी व्यापार के लिए लाता हे और अन्त मे उसका तलाक हो जाता है। मनोरमा से तलाक मिल जाने के पश्चात वह सोमा को अपने जाल मे फॅसाता है। नारी उसके लिए मात्र खिलौना मात्र है।

नारी के लिए प्रेम का परिणाम रक्त है। हृदय का रक्त अथवा शरीर का रक्त पुरुष केवल ठोकर मार कर चला जाता है यही नारी का भाग्य हे और यही उसका गौरव भी है।[१]

उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक सोमा के चरित्र को केन्द्र मे रखकर निर्मित हुआ है। सोमा का सम्पूर्ण जीवन परिस्थितियो के अनुकूल बदलता ही जाता है। वह अपने ससुराल वालो के अत्याचारो से मुक्त होने के लिए ही मोटर चालक धनसिह के साथ भागती है। यही से उसके जीवन मे शोषण और अत्याचार का नया सिलसिला प्रारम्भ होता है। धनसिह को सोमा के भगाने के जुर्म मे सजा हो जाती है और सोमा पुलिसवालो की वासना का शिकार होती है। यही से उसका परिचय कामरेड भूषण से होता है वह उसे एक सम्पन्न परिवार मे पहुॅचा देता है किन्तु यहॉ भी सोमा को अपने आश्रयदाता बैरिस्टर जगदीश सलोरा की वासना तृप्ति का साधन बनना पडता है और उसकी भूमिका मात्र रखैल बनकर रह जाती है। एक

---

**१ मनुष्य के रूप – यशपाल। पृष्ठ स ७६**

दिन घरवालो के विरोध के कारण उसे घर छोडना पडता है अब उसके जीवन की बागडोर बैरिस्टर साहब के चालक बरकत के हाथ मे पहुँच जाती है। वह उसे भगाकर मुम्बई ले जाता है। यहाँ सोमा का साथ देता है बनवारी जो फिल्म क्षेत्र मे काम करता है। वह सोमा का परिचय भी फिल्म निर्माताओ से करा देता है। फिल्म निर्माता भी यद्यपि सोमा को भोग की भूमिका के अन्तर्गत ही स्वीकार करते हैं तथापि इसके मूल्य पर वे सोमा को एक फिल्म अभिनेत्री भी बना देते हैं। एक साधारण स्त्री से उठकर सोमा पहाडन सिने अभिनेत्री के नाम से विख्यात हो जाती है दूसरी ओर सोमा को भगाने पर उसके चरित्र की रक्षा करने के आरोप मे धनसिह पुलिस की हिरासत से छूट तो जाता है किन्तु राजनीतिक आन्दोलन मे भाग लेने तथा आजाद हिन्द फौज का सिपाही बन जाने के कारण पुन जेल जाता है।

महायुद्ध के बाद जेल से छूटकर वह भूषण की सहायता से सोमा से मिलने का प्रयास करता है किन्तु सफल नही हो पाता। मुख्य कारण इसका यह है कि सोमा जीवन के कटु यथार्थों को इतना भोग चुकी थी कि अब वह किसी भी प्रकार का खतरा मोल लेने को तैयार न थी। वह स्पष्ट शब्दो मे धनसिह को पहचानने और स्वीकार कर लेने से मना कर देती है इतना ही नहीं फिर एजेन्ट सुतली वाला से विवाह करने का निश्चय करती है जबकि सुतलीवाला नारी का शोषण करनेवालो मे प्रमुख व्यक्ति है।

मनुष्य के रूप की सोमा के जीवन मे उसकी चेतना और अन्तत· उसके जीवन–मूल्यो मे जो भी परिवर्तन दिखायी पडता है वह आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण ही है। गरीबी से घुटती हुई सोमा विधवा होने पर धनसिह के साथ भाग जाने मे कुछ भी अनुचित नहीं समझती। वही सोमा फिल्म

जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री हो जाने पर अपने पूर्व प्रेमी धनसिह को पहचानती तक नही क्योकि उसके लिए किसी एक के साथ बन्धकर रहने वाली नैतिकता व्यर्थ प्रतीत होती है।

इसके अतिरिक्त अनेक प्रासगिक कथाएँ भी उपन्यास मे विद्यमान हैं जिनमे भूषण और मनोरमा की कथा विशेष उल्लेखनीय है। भूषण एक सामान्य परिवार का व्यक्ति है। उसकी आस्था मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति है। वह कम्यूनिस्ट पार्टी का सक्रिय कार्यकर्त्ता है। मनोरमा ठेकेदार ज्वाला सहाय की इकलौती लडकी है। पूँजीवादी सस्कारोवाले परिवार से सम्बन्धित होने के बाद भी मनोरमा न केवल भूषण से प्रेम करती है बल्कि विवाह भी करना चाहती है। वह भी मार्क्सवादी विचार धारा से प्रभावित है। अपनी सामान्य स्थिति के कारण भूषण मनोरमा को प्रेम और विवाह के सम्बन्ध मे कोई प्रोत्साहन नही देता फलस्वरूप निराश और पारिवारिक कलह के कारण मनोरमा फिल्म एजेण्ट सुतलीवाला से विवाह कर मुम्बई आ जाती है। सुतलीवाला से पुरुषोचित प्रेम न पाकर उसका दाम्पत्य जीवन लडखडाने लगता है।

'वह सोचती है कि क्वॉरे जीवन मे वह कौन–सा अभाव था जो अब पुरा हो रहा है ? लडकियॉ विवाह के बाद कैसी हॅसी–भरी गुदगुदाई–सी जान पडती है जैसे कोई रहस्य उनके होठो पर आकर फूट जाना चाहता हो।[1]

जिसकी परिणति अन्तत तलाक मे होती है। मनोरमा अब स्वतत्र रूप से भूषण के साथ कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यक्रमो मे भाग लेती है उसके साथ रहकर ही सतोष प्राप्त करती है। यह स्थिति अधिक दिनो तक नहीं रह पाती। एक दुर्घटना मे घायल

---

**१ मनुष्य के रूप – यशपाल। पृष्ठ सं १४७**

होकर भूषण की मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार उपन्यास मे भूषण मनोरमा की असफल प्रेमगाथा अपना विशिष्ट महत्व रखती है। मुख्य कथा एव पात्रो से सम्बद्ध होने के कारण इसका परिचय आवश्यक जान पडता है।

कथानक के अन्तर्गत भारतीय समाज के बदलते हुए रूप भी दिखायी पडते हैं। लेखक ने सामती वातावरण से छुटते हुए गॉवो का बडा ही यथार्थ चित्रण उपन्यास मे अकित किया है इन्ही गावो मे सोमा जैसी अनेक नारियो को दिन–रात घुटना पडता है उन्हे स्वय को समाप्त कर परिवार की इच्छाओ और आदेशो का पालन का मात्र अधिकार प्राप्त है। अग्रेजी साम्राज्यवाद मे नगरो की हालत भी कुछ अच्छी नही थी। हमारे नगर उन दिनो शासको की नीति के कारण पीसते हुए दिखायी पडते हैं।

रक्षककर्मी भी भक्षण के रूप मे समाज मे मुख्य रूप से फैले हुए हे जो समयानुसार उसका फायदा उठाते हैं। धनसिह क साथ सोमा का भगाने के जुर्म मे जब पकडती है तो धनसिह दस रुपये जमादार को देता है वह लेने से इन्कार कर देता है किन्तु स्त्री को भोग्या की वस्तु के रूप मे स्वीकार करता है। [1]

उपन्यास के मूल मे लेखक ने यह स्पष्ट करना चाहा कि व्यक्ति की चेतना और उसके जीवन मूल्यो को बदलने मे आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियो का विशेष योग रहता है। परिस्थितियो के समक्ष मनुष्य विवश हो जाता है।

यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा के कथाकार हैं एक मार्क्सवादी लेखक के नाते यशपाल से यह अपेक्षा थी कि वह परिस्थितियो के प्रभाव मे बहते हुए मनुष्य और उसके बदलते हुए रूपो को अवश्य प्रस्तुत करते। मार्क्सवाद के अनुसार समाज

---

**१ मनुष्य के रूप – यशपाल। पृष्ठ स ४५**

विकास का समूचा इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि परिस्थितियो के साथ मनुष्य भी बदलता रहा है। मनुष्य का यह बदला हुआ रूप सदैव एक उच्चतर भूमिका की ओर सकेत करता है। मार्क्सवाद मनुष्य को परिस्थितियो का दास नहीं मानता। इन बातो से स्पष्ट है कि यशपाल ने उपन्यास के अन्तर्गत मार्क्सवादी विचारधारा का सही प्रतिनिधित्व नहीं किया। उपन्यास मे परिस्थितियॉ मनुष्य पर न केवल गहरा दबाव डालती अपितु उसे नियत्रित भी करती है। मनुष्य के रूप की कथावस्तु घटना प्रधान है। उपन्यास घटनाओ का एक जाल–सा बुना हुआ है और उसी के बीच लेखक ने फॅसे हुए मानव जीवन का रूप प्रस्तुत किया है। कथावस्तु की इस घटना प्रधानता ने अनेक स्थलो पर अस्वाभाविकता का भी आभास दिया है। उपन्यास की कथावस्तु बहुत रोचक है। यशपाल व्यापक अनुभवो से सम्पन्न कथाकार हैं। उन्होने मानवीय जीवन को गहराई के साथ दूर–दूर तक देखा है। समाज के निचले वर्गो के जीवन से वे जितना परिचित हैं ऊँचे कहे जानेवाले लोगो के जीवन का भी उन्हे निकट का बोध है। यही कारण है कि उन्होने उपन्यास मे अपने इन अनुभवो को और अपने इस जीवन सम्बन्धी परिचय को बडी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है। अन्य उपन्यासो की भॉति इस उपन्यास मे भी लेखक ने राजनीतिक सामाजिक एव आर्थिक जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रश्नो के साथ प्रेम सेक्स और रोमास की विशेष प्रमुखता दी है। उपन्यास की नायिका सोमा के जीवन मे कई पुरुष आते हैं। लेखक ने सुरुचिपूर्वक नायिका के साथ उनके सम्बन्धो को प्रस्तुत किया है।

सोमा के अतिरिक्त उपन्यास की दूसरी प्रमुख नारी पात्रा मनोरमा है। सोमा नीच कही जानेवाली वर्ग की नारी है जबकि मनोरमा का सम्बन्ध अभिजात्य वर्ग से है।

---

यशपाल ने कथानक मे गाधीवादी आन्दोलन से मार्क्सवादी आन्दोलन को श्रेष्ठतर सिद्ध करने का प्रयास किया है। अपनी इस सोद्देश्यता के कारण ही उपन्यास की अनेक घटनाओ को मनमाने ढग से सचालित किया है। यदि ऐसा न होता तो कोई आवश्यक नही था कि सोमा फिल्म जगत् की प्रसिद्ध अभिनेत्री बनती और कामरेड भूषण की उपन्यास के अन्त मे कारुणिक मृत्यु होती। [1] कुल मिलाकर लेखक ने तत्कालीन भारतीय समाज के विभिन्न आयामो का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। यह निसदेह स्थान की भी विशिष्ट उपलब्धि है।

# च अमिता (१९५६ ई०)

अमिता' का मूल कथ्य हिसा पर अहिसा की विजय है। अमिता अबोध बालिका के रूप मे उपन्यास मे प्रस्तुत की गयी है जिसमे असीम सरलता निश्छलता और प्रेम समाया हुआ है। अपने इन वाक्यो से किसी से छिनो मत किसी को डराओ मत किसी को मारो मत के वाक्य से अशोक जैसा क्रूर सम्राट भी नत मस्तक हो जाता है। वस्तुत अशोक के समर्पण मे प्रेम और अहिसा के सामने हिसा और युद्ध की भयकरता का समर्पण दिखाया गया है लेखक ने अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो के कारण विश्व शान्ति के लिए व्यग्र और प्रयत्नशील है इसीलिए वह इसमे मार्क्सवादी सिद्धान्तों से काफी दूर हटा दिखायी देते हैं।

उपन्यास का कथानक कलिग पर अशोक के आक्रमण से होता है कलिग नरेश करवेल ने युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं। प्रस्थान के एक दिन पूर्व ही महारानी नन्दा एक पुत्री को जन्म देती हैं। पुत्री के जन्म पर राजज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी कि महाराज के विजय अभियान मुहूर्त मे राजकुमारी अमित के

---

**१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारसनाथ मिश्र पृष्ठ स – १४४**

अक्षय वैभव और प्रतापी होने का सुयोग्य है अमित वैभव और पराक्रम की स्वामिनी होने के विश्वास मे राजकुमारी का नाम अमिता रखा गया था।[१]

भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है। कलिग नरेश करवेल युद्ध मे विजयी अवश्य होते हैं किन्तु रण मे गम्भीर रूप से घायल हो जाने से उनकी मृत्यु हो जाती है। मृत्यु से पूर्व अपने वश की रक्षा का भार सकुल शर्मा महासेनापति आर्यभटट कीर्ति तथा धर्मस्थ आर्य प्रजित के हाथो मे सौंपकर वे अबोध बालिका को अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हैं।

पराजित अशोक कलिग पर आक्रमण करने की पुन योजना बनाता है। युद्ध की तैयारियो मे कलिग भी सक्रिय होता है किन्तु जब परिषद् के सदस्यगण युद्ध की आवश्यक तैयारियो की अनुमति के लिए महारानी नन्दा के पास जाते हैं तो वे उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर देती हैं और युद्ध और हिंसा के प्रति अपनी घृणा प्रगट करते हुए भगवान की शक्ति पर विश्वास करो[२] का उपदेश देती हैं।

युद्ध की आवश्यक तैयारियो के अभाव मे कलिग की सेना पराजित होती है और विजय के उन्माद मे अशोक के सैनिक सम्पूर्ण नगर मे लूट–पाट तथा अग्निकाण्ड प्रारम्भ कर देते हैं।

राज्य उद्यान मे क्रीडारत बालिका अमिता जब अपनी सखी परिचायिका हिता से अशोक द्वारा किये जानेवाले अत्याचार का समाचार सुनती है तो अपने पालतू कुत्ते बभ्रु की जजीर लेकर अशोक को बॉधने चल देती है।

महारानी जजीर लेकर अशोक को बॉधने जा रही हैं यह सुनकर गोपाल को अपने कानो पर विश्वास न हुआ परन्तु उसके कानो ने फिर प्रासाद की छत पर से

---

**१ अमिता – यशपाल। पृष्ठ स – १४–१५**

**१ अमिता – यशपाल। पृष्ठ स – १८**

कलिग के सैनिको को पुकारते सुना महारानी जजीर लेकर अशोक को बॉधने जा रही है।[1]

अशोक के सम्मुख वह अपना परिचय प्रजा की माता के रूप मे देती है और अशोक से पूछती है तुम प्रजा से छीनते क्यो हो ? तुम प्रजा को डराते क्यो हो ? तुम प्रजा को मारते क्यो हो ? तुम्हे क्या चाहिए ?[2] कलिग सम्राज्ञी के रूप मे एक [illegible] देख[illegible] अशोक [illegible] भर उठता है। अन्त मे अमिता अशोक को एक ऐसे राजभवन मे ले जाती है जहॉ खिलौने सिहासन मुरझाये हुए फूल और बर्तनो मे मिष्ठान रखे हुए थे अमिता अपनी बाहे फैलाकर चारो आरे पडे इस धन की ओर सकेत कर अशोक से बोली बोलो तुम्हे क्या चाहिए।[3] पहले तो अशोक विवश अप्रतिभ मौन–भाव से खडे रहते हैं फिर सिहासन की ओर सकेत करते हुए कहते है कि हमे कलिग का सिहासन चाहिए। अमिता अत्यन्त सहज भाव से पूछती है क्या तुम्हारे पास राजसिहासन नही है फिर कहती है तुम इसे ले जाओ हम दूसरा ले लेगे। अमिता के इस भोलेपन पर अशोक का पाषाण हृदय जो एक लाख से भी अधिक सेनिको के रक्तपात से द्रवित न हो पाया था पिघल जाता है। वे अपनी तलवार जमीन पर रखकर अमिता को गोद मे उठा लेते हैं और कहते हैं कलिग की महारानी मगध का विजयी सम्राट हार गया। तुमने विजय पायी।[4]

अमिता उससे किसी का कुछ न छिनने प्रजा को न डराने और प्रजा को न मारने का वचन लेती है। अशोक प्रतिज्ञा करते हैं कि वे किसी से छिनेगे नही किसी को डरायेगे नही किसी को मारेगे नही तथा युद्ध का त्याग कर निश्छल प्रेम से ससार के हृदयो को जीतेगे।

---

**१ अमिता – यशपाल। पृष्ठ स – १६१**

**२ अमिता – यशपाल। पृष्ठ स – १६४**

**३ अमिता – यशपाल। पृष्ठ स – १६४**

सक्षेप मे उपन्यास का यही कथानक है। कथानक का दूसरा प्रमुख अक हिता और मोद का प्रेम प्रसग है। हिता जो अमिता की सखी और विशेष परिचायिका होने के साथ–साथ एक दासी भी है। हिता और मोद के प्रसग द्वारा लेखक ने तत्कालीन शोषित समाज की पीडाओ को चित्रित किया है। दोनो एक दूसरे से प्रेम करते हैं। और विवाह करना चाहते हैं पर दास होने के कारण उन्हे विवाह करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। वे विवाह तभी कर सकते हैं जब वे दास जीवन से मुक्ति पा जायॅ। परन्तु स्वतत्र नागरिक होने के लिए या तो राजाज्ञा उनकी सहायक बन सकती है या उनके स्वामियो को उन पर व्यय किये गये धन को देकर उन्हे मुक्त किया जा सकता है।

हिता अपने प्रेमी मोद को पति रूप मे पाने के लिए सेठ सौमित्र के षडयत्र का शिकार बनती है और महामात्य महासेनापति आदि की उपेक्षाकर राजेश्वरी अमिता को राजमाता के समीप ले जाती है और महारानी से कहती है कि महारानी ने वरदान देने की प्रतिज्ञा की थी वह उनके प्रत्यागमन की प्रतिक्षा मे है।[१]

अमिता मे दासो के प्रति होनेवाले अमानुषिक व्यवहार को दिखाया गया है। व्यापारी विटठल मोद को इसलिए खिलाता–पिलाता है क्योकि उसके द्वारा उसे अधिक लाभ की सम्भावना है।

सेठ सौमित्र को अपने व्यापार और धन की चिन्ता है इसलिए वह हमेशा आचार्य और महासेनापति की योजनाओ को विफल बनाने का सफल प्रयास करता है तथा आचार्य द्वारा आयोजित महाबलि यज्ञ को बन्द करवाने के लिए महास्थविर जीवक से मिलकर महारानी नन्दा से निषेधाज्ञा प्रसारित करवाता है।

---

१ अमिता – यशपाल। पृष्ठ स – १३०

कथानक मे ब्राह्मणी और बौद्ध भिक्षुओ के वर्ग-सघर्ष को भी दिखाया गया है। वस्तुत तत्कालीन ब्राह्मण सभ्यता भिक्षुओ के कारण अपने विशेषाधिकारो पर प्रहार होते देख क्षुब्ध हो उठी थी और इसलिए महामात्य आचार्य सुकठ राज्यसभा की रक्षा के लिए और साथ ही साथ गुप्त रूप से ब्राह्मण वर्ग की इतर जातियो के ऊपर स्थापित करने के लिए कलिग से बौद्धधर्म प्रभाव को मिटा देना चाहते हैं।

अमिता मे लेखक मार्क्सवादी सिद्धान्तो से हटकर विश्व–शान्ति के उपायो पर चिता करता दिखायी पडता है कथानक की मूल निष्पत्ति के आधार पर वह युद्ध का विरोध प्रेम और अहिसा से सचालित समाज की पक्षधरता करता है यह उपन्यास युद्ध और शान्ति की समस्या पर आधारित है।

लेखक ने इसमे यह प्रतिपादित करना चाहा कि युद्ध हमेशा साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी शक्तियो के स्वार्थो की देन होता है और मानवीय प्रेम के भावो को लेकर ही मानवता अपनी वास्तविक स्वतत्रता का अनुभव कर सकती है और स्वतत्र मानवता स्वरूप विकास को सम्भव बना सकती है। अमिता उपन्यास इसी भाव–धारा को उजागर करती है। लेखक ने अपनी इस मान्यता की अभिव्यक्ति के लिए अशोक के मानव–प्रेम और युद्ध के प्रति उसकी वितृष्णा का दृष्टान्त प्रस्तुत करने वाली तथा उसके हृदय परिवर्तन से सम्बद्ध ऐतिहासिक घटना को केन्द्र मे रखकर उपन्यास का सृजन किया है।

लेखक ने तत्कालीन समाज में शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति को बडी ही मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। दासो पर प्रभुवर्ग कितने घोर अत्याचार करता था तथा उन्हे किस प्रकार अपने स्वार्थसाधन मे लगाये रहता था इसका भी सजीव वर्णन लेखक ने किया है। दास प्रेमी मोद तथा हिता के प्रसग द्वारा इस स्थिति को

लेखक ने विशेष रूप से उजागर किया है।

नेमिचद जैन ने अमिता उपन्यास पर अनेक प्रकार के आरोप लगाये हैं। उनका कहना है कि लेखक ने अशोक को हृदय परिवर्तन की एक छोटी—सी घटना को केन्द्र मे रखकर अन्य घटनाओ का इतना लम्बा जाल फैलाया है कि मूल घटना उसे सभाल नहीं पाती। उनका कहना है कि उपन्यास की अपनी कोई निजी गति नही है और वह घिसटता हुआ चलता है। दासी हिता और दास कलाकार मोद की प्रणय कथा की उपन्यास मे आकर्षण उपस्थिति करती है अन्यथा उपन्यास को अत तक पढना भी कठिन हो जाता है। उन्होने जैसा कि हम प्रारम्भ मे सकेत कर चुके हैं लेखक द्वारा तत्कालीन समाज के चित्रण पर भी आपत्ति उठायी है और कहा है कि लेखक ने आज के बहुत से विचार और पूर्वग्रह उस युग के समाज पर आरोपित किये हैं। इस सन्दर्भ मे उनका इशारा लेखक द्वारा चित्रित वर्ग सघर्ष की ओर है। उनका यह भी कहना है कि लेखक उपन्यास मे अपने प्रतिपाद्य को सिद्ध नहीं कर पाता।

नेमिचन्द जैन के ये आरोप विचारणीय हैं। उपन्यास मे घटनाओ का अनावश्यक विस्तार अवश्य है किन्तु उपन्यास मे रोचकता बराबर बनी हुई है। तत्कालीन युग के समाज चित्रण के तहत लेखक उस युग के जिस वर्ग सघर्ष या वर्ण सघर्ष का चित्रण किया है आधुनिक युग के प्रभाव के बावजूद वह अप्रामाणिक नहीं है। उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य विश्वशान्ति का समर्थन है और उसका सीधा था सम्बन्ध अशोक के हृदय परिवर्तन की घटना से है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमिवाले इस उपन्यास मे उस युग के सामाजिक जीवन उससे सम्बद्ध दूसरे महत्त्वपूर्ण मुद्दो पर कुछ कहा ही न जाय। वस्तुत यशपाल उपन्यास

की मूल घटना के ईद–गिर्द उस युग के सामाजिक जीवन का ताना–बाना बुनने मे काफी हद तक सफल हुए।

नेमिचन्द जैन की इस बात से सहमत हुआ जा सकता है कि उपन्यास मे किसी सशक्त और सुनिर्मित चरित्र की उद्भावना नही है।

उपन्यास मे यशपाल ने अमिता को अपनी मानवतावादी दृष्टि के प्रतिनिधि के रूप मे चित्रित किया है। छ वर्षीय अमिता शान्तिवादी विचारो को प्रस्तुत करती हे और इस तथ्य को उजागर करती है कि जब तक व्यक्ति अहकारी आर महत्त्वाकाक्षी रहेगा दूसरो को डराकर–मारकर या दूसरो से छीनकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए अपने स्वार्थो की पूर्ति करेगा तब तक मनुष्यता पीडित रहेगी। उसके सम्पूर्ण क्रिया–कलाप उसके इसी आदेश पर आधारित है कि किसी से छीनो मत किसी को डराओ मत किसी को मारो मत। स्वय अशोक इस आदेश की पूर्ति का सकल्प लता ह। यशपाल के इस उपन्यास मे एक भारी परिवर्तन यह भी उजागर होता है कि वे जीवनपर्यन्त गाधीवाद से असहमत रहे है लेकिन अपने इस अमिता उपन्यास मे जिस प्रकार अशोक अहिसा का मार्ग दर्शक बनता है उसी प्रकार मानो यशपाल जी ने भी पहली बार प्रेम अहिसा और हृदय परिवर्तन जैसे गाधीवादी सिद्धान्तो का समर्थन किया है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अमिता के रचना काल मे कम्युनिस्ट ससार उदार होने लगा था विश्व-शाति का नारा उधर से भी आने लगा था। अतएव अमिता मे उस नारे की अनुगूज सहज और स्वाभाविक प्रतीत होती है। अपने उद्देश्य की प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत करने मे उन्होने काफी हद तक सफलता पायी है।

---

# झ झूठा–सच (१९५८–६० ई०)

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम मे झूठासच एक ऐसा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जो सदियो तक आनेवाली पीढी को हिदुओ के शवो पर खडी की गयी पाकिस्तान की भव्य इमारत का दर्शन कराकर ऑसू बहाने के लिए मजबूर कर देता है।

उपन्यास की कथा एक छोटी-सी गली से बढकर महानगर बन जाने की तीखी यातनाभरी यात्रा की कथा है इसमे एक मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की कहानी को एक बहुत ही बडा आयाम दिया गया है। कथा का प्रारम्भ रामलुभाया की माता की मृत्यु पर विलाप करने के लिए एकत्रित हुई भीड से होता है। रामलुभाया और रामज्वाया दो भाई थे। वृद्धा प्राय अपने बडे लडके रामज्वाया के घर पर ही रहती थी। रामज्वाया रेलवे पार्सल दफ्तर मे नौकर थे दूसरा लडका रामलुभाया एक साधारण अध्यापक थे। दोनो भाइयो के बच्चे थे बडे भाई के बच्चो का विवाह हो चुका था किन्तु रामलुभाया के ऊपर अभी जिम्मेदारी शेष थी। रामलुभाया भोला पाधे की गली मे रहते थे और रामज्वाया उच्ची गली मे। छोटे भाई के एक पुत्र और दो पुत्रियॉ थी बडे भाई के दो लडके और एक लडकी थी। बडे भाई रामज्वाया ने अपने लडके का विवाह कर दिया था और लडकी शिलो की सगाई भी कर दी थी लेकिन रामलुभाया न तो अपने लडके जयदेवपुरी को शादी कर सके और न ही तारा का सुखी वैवाहिक जीवन ही देख सके। जयदेवपुरी प्रथम श्रेणी मे एम ए कर किसी कालेज मे अध्यापक बनना चाहते थे किन्तु १९४२ ई के स्वतत्रता आन्दोलन से प्रभावित होकर राजनीति मे प्रवेश कर जाते हैं। आन्दोलन मे भाग लेने के कारण वह गिरफ्तार हो गया और जेल भेज दिया गया था देश की स्वतत्रता के

लिए बलिदान से मुँह न मोड सका।[१] तारा जयदेवपुरी की स्वतत्र और उदार विचारवाली बहन है। वह एक कम्यूनिस्ट युवक असद से प्रेम करती है किन्तु उसका विवाह एक व्यभिचारी लम्पट और दुराचारी युवक सोमराज से तय हो जाता है और जब उसको पता चलता है कि उसकी मॉ बन्नी हाते के मुहल्ले मे जाकर

\ /

छिप–छिपकर खूब रोई सोचा भाई उसकी इच्छा के विरुद्ध सगाई का समर्थन नही कर सकता था।[२] अनेक विरोधो के बावजूद भी तारा का विवाह सोमराज से ही हो जाता है सुहागरात के दिन तारा का पति उसे बुरी तरह पीटता हे जब उसे यह ज्ञात होता है कि तारा उससे विवाह नही करना चाहती थी तो सोमराज का शक उसके चरित्र पर जाता है और वह तारा से पूछता है किससे है तेरी दोस्ती ? सोमराज का अपने क्रोध पर लगाया हुआ बाध टूट गया। उसने तारा को चोटी से पकडकर पलग के नीचे गिरा दिया दो लाते जमाकर दॉत पीसते हुए

वह गाली दी जो तारा ने कभी किसी भद्र पुरुष के मुख से नही सुनी थी भूखे मास्टर की औलाद तेरी यह हिम्मत की मुझसे शादी के लिए मिजाज दिखाए बी ए मे पढने का बहुत घमण्ड है ? तेरी जैसी बीसियो को मैने देखा है देखूगा तुझे।[3] उसी समय हिदू–मुस्लिम दगो के कारण सोमराज भाग जाता है विवश तारा को भी ऊपर की मजिल से परिस्थितिवश भागना पडता है। मुसलमानो के हाथो मे पडने के कारण उसका सतीत्व नब्बू की पाशविकता का शिकार बन जाता है। वह व्यथाओ और पीडाओ को झेलती हुई पुन असद से मिलती है किन्तु उसकी प्रतिक्षा न करके वह अमृतसर पहुँच जाती है।

जयदेव पुरी कम्यूनिस्ट नेता बनने की चाह मे इधर-उधर भटकता फिरता है।

---

**१ झूठा–सच (पहला भाग) – यशपाल। पृष्ठ स – १६**

**२ झूठा–सच (पहला भाग) – यशपाल। पृष्ठ स – १७**

**३ झूठा–सच (पहला भाग) – यशपाल। पृष्ठ स – १७०**

कनक से भी उसका प्रेम चलता है। कनक प गिरधारीलाल की पुत्री है। कनक का परिचय ही लेखक ने सन् १६४२ ई की राजनीति मे भाग लेनेवाली कालेज की लडकियो मे थी सन् १६४२ ई के आन्दोलन मे वह प्राय सभाओ एव जुलूसो मे सम्मिलित होती थी। महीन खद्दर की सफेद साडी पहने उसका सलोना चेहरा बहुत लोगो की दृष्टियो को खीचता था। जयदेवपुरी ने भी उसे देखा था।[1] पूरी प गिरधारीलाल का सदेश पाकर कनक के साहित्यिक अध्ययन विशेषता हिन्दी की पढाई मे परामर्श देने जाता था। यही से उन दोनो की परिचय प्रेम की प्रगाढता मे परिणित हो जाता है किन्तु कनक का जीजा नैयर इस बात का घोर विरोधी है। नैयर हाईकोर्ट मे वकालत करता था और मॉडल टाउन मे अपने बगले मे रहता था। बॅटवारे के कारण सभी एक दूसरे से बिछड जाते है। यही उपन्यास के प्रथम भाग वतन और देश की सक्षिप्त रूपरेखा है जिसमे उपन्यासकार यशपाल ने बडी ही कुशलता एव सूक्ष्म दृष्टि से देश के विघटन के परिवेश मे कारुणिक कथा का विवेचन किया है।

उपन्यास का दूसरा भाग देश के भविष्य मे तारा कनकपुरी की कथा वतन को छोडकर देश से आरम्भ होती है। विभिन्न कठिनाइयो को झेलती हुई तारा भारत सरकार के मत्रालय मे अण्डर सेक्रेटरी बन जाती है। पुरी एक काग्रेसी नेता सूद के चक्कर मे जीवन के पतन का मार्ग अपनाकर एक समाचार पत्र का सम्पादक बन जाता है। पुरी के जीवन मे उर्मिला का आगमन होता है बिना विवाह किये ही वह उर्मिला के साथ रहता है और जब उर्मिला गर्भवती हो जाती है तो पुरी सोचता है

पुरी ने निश्चय कर लिया कि अब उर्मिला को सम्मानित पत्नी बनाना ही होगा। शहर मे उसका परिचय बहुत हो गया था।[2] पुरी ने धीरे से उर्मिला के कानो मे

---

१ झूठा—सच (पहला भाग) — यशपाल। पृष्ठ स — २६
२ झूठा—सच (पहला भाग) — यशपाल। पृष्ठ सं — २६४

कनक पुरी से प्रेम करती है लेकिन जब पुरी मे वह पहले जैसा कुछ भी नही पाती तो बौद्धिक स्तर पर घृणा करती है। उर्मिला के प्रसग पर वह पुरी से शारीरिक तौर पर घृणा करती है और जब स्थिति असहाय हो जाती है तो विवाह–विच्छेद हो जाता है। भोला पाधे की गली एव तत्कालीन पजाब मे प्राय सभी हिन्दू–सिखो एव भारतवर्ष के असख्य मुसलमानो को वतन परिवर्तन के बाद जो नया जीवन प्रारम्भ करना पडता है वह मात्र इसलिए कि परिवर्तन के नियमो की मॉगे उन्होने अनसुनी कर दी थी। बदले हुए युग के अनुसार उन्होने जीवन को उसकी मान्यताओ/ धारणाओ को धन और सम्प्रदाय बदलने से इन्कार कर दिया था।

विभाजन के बाद देश मे भ्रष्टाचार का जैसे तूफान आ गया। भाई– भतीजावाद रिश्वतखोरी महगाई राजनीतिक नेताओ की धॉधली शरणार्थियो की विवशता से अनुचित लाभ उठाने की नेताओ की भावना शरणार्थी नारियॉ की इज्जत से खेलने की उनकी दुष्ट प्रवृत्ति चुनाव जीतने के लिए हर प्रकार के हथकण्डो का प्रयोग आदि–आदि सैकडो प्रश्न ऐसे हैं जिन्हे उपन्यास के दूसरे भाग देश का भविष्य मे यशपाल ने अभिव्यक्ति दी है और उसके माध्यम से काग्रेसी शासन व्यवस्था पर पूरी शक्ति के साथ प्रहार किया है।

स्वर्गीय प्रधानमत्री प जवाहरलाल नेहरू के भाषणो को आधार बनाकर यशपाल ने जो व्यग्य किया है वह वस्तुत प्रत्येक देशवासी को चिन्तातुर करनेवाला है। जनतत्र मे जनता के हितो का उत्तरदायित्व प्रेस और समाचार–पत्रो पर बहुत अधिक होता है। पर नेताओ और पूँजीपतियो ने अपने पैसो के बल पर इन्हे भी खरीद लिया है। पुरी का 'सूद की इच्छानुसार लिखना इसी बात का उदाहरण है। पुरी बुद्धिजीवी है पर गणतत्र भारत मे बुद्धिजीवियो की अवस्था बिके हुए गुलामो

---

की सी है।

इस प्रकार यशपाल ने झूठासच मे सन् १९४२ ई से लेकर १९५७ ई तक के भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन का यथातथ्य चित्राकन किया है। जीवन के सभी क्षेत्रो मे व्याप्त बुर्जुआ मनोवृत्ति का रहस्योद्घाटन करते हुए सामाजिक उन्मेष का कार्य किया है। नवीन जीवन–मान्यता तथा समाजवादी समाज व्यवस्था अपनाने का आह्वान किया है।

लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से वर्तमान परिवेश का ऐसा चित्राकन किया है कि वह आधुनिकता की चेतना पर बिल्कुल खरा उतरता है। देश का भविष्य मे इसी चिन्ता को लेखक ने तारा पुरी व कनक के माध्यम से अपने विचारो को व्यक्त किया है।

## ज बारह घण्टे (१९६२ ई०)

यह उपन्यास लघु उपन्यास पीठिका के अन्तर्गत आता है। अपने पूर्ववर्ती उपन्यासो मे यशपाल ने राजनीतिक चित्रण के साथ-साथ प्रेम और विवाह जैसे प्रश्नो एव समस्याओ को उठाया है। यह उपन्यास कुछ अलग तरह की भावभूमि लेकर प्रस्तुत हुआ है। इस उपन्यास मे प्रेम और विवाह के ही प्रश्न को लेखक ने उठाया है और अपनी दृष्टि से उसके समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस उपन्यास मे कम-से-कम घटनाओ को कम-से-कम समय की चौखट मे फिट कर अधिक-से-अधिक कथावस्तु को सवेदनशील बनाकर मनोवैज्ञानिक कथा-वस्तु की विशिष्टता को 'बारह घण्टो मे प्रस्तुत किया गया है।[१] इसमे नर-नारी के

---

१ यशपाल का कथा साहित्य – प्रकाशचन्द्र मिश्र। पृष्ठ सं १५६–५७

परस्पर आकर्षण अथवा दाम्पत्य सम्बन्ध को सामाजिकता के कर्त्तव्यो की बेडी लाघकर आधुनिकता बोध की कसौटी पर परखने का प्रयत्न किया गया है। एक ही प्रकार की वेदना से सतप्त जब दो विपरीत लिगी व्यक्ति सही कारणो से एक-दूसरे के सम्पर्क मे आते हैं तो मनोवैज्ञानिक स्तर पर वह वही करते हैं जो साधारण नर-नारी करते हैं। [१] सामाजिक कर्त्तव्यो को मनोवैज्ञानिक तर्कों से सामने झुकना पडता है।

उपन्यास का कथानक सामान्य है। विधवा विनी अपने पति रोमी की समाधि पर फूल चढाने के लिए कब्रिस्तान जाती है। वहॉ फेटम नामक एक प्रौढ विधुर भी बैठा होता है जो अपनी पत्नी शैल की समाधि पर रोज आकर बैठता है। अचानक तभी मौसम खराब होने के कारण बारिश शुरू हो जाती है। विनी और फेटम दोनो को ही मजबूरी के कारण वहॉ रुकना पडता है। उनका आपस मे परिचय होता है। विनी अपने स्वर्गीय पति रोमी के स्वभाव व्यवहार और प्रेम आदि के बारे मे बताती है और फेटम अपनी स्वर्गीया पत्नी शैल की सहृदयता प्रेम व्यवहार आदि के विषय मे बताता है। दोनो समानधर्मी और समानपीडा से पीडित होने के कारण एक-दूसरे के दु ख को भलीभॉति समझते हैं और एक-दूसरे से पूरी सहानुभूति भी व्यक्त करते हैं। बातो का सिलसिला इस तरह शुरू होता है कि उनकी कुछ क्षण की पहचान स्थायी आत्मीयता मे बदल जाती है।

ग्यारह माह पूर्व झील मे डूबकर मरनेवाले अपने प्रियतम पति रोमी नेपियर की कब्र पर फूल चढाने के लिए प्रौढा विनी लखनऊ से नैनीताल आती है। अपनी बहन जेनी के यहॉ समान रखकर फूल मुर्झा न जाये इस आशका से वह तुरन्त सेमेट्री

---

१ हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास – डॉ धनराज मानधाने। पृष्ठ स १८७–८८)

चली जाती है। वही पर उसकी मुलाकात फेटम से होती है जो एक-दूसरे के सच्चे हमदर्द बनते हैं। फेटम की पत्नी शैल टी बी के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाती है और वही पर दफन होती है जहॉ विनी के पति दफनाये गये थे। एक विधवा और एक विधुर एक ही मनस्थिति के दौर से गुजरते हैं। उनकी पीडा-दर्द वही समझ सकता है जो ऐसी विषम स्थिति से गुजरा हो। कहते भी हैं कि घायल की गति घायल जाने। विनी और फेटम ऐसी ही घायल अवस्था के दौर से गुजर रहे थे। दो दुखी व्यक्तियो को एक सामान्य सूत्र मे बॉधनेवाले घावो और मनोदशाओ का अति सूक्ष्म और कलापूर्ण अकन लेखक ने बडी ही निपुणता और कौशल के साथ इस उपन्यास मे प्रस्तुत किया है। प्रिय के वियोग की विह्वलता विनी और फेटम दोनो के हृदय मे एकसाथ उमडती है। दोनो ही अपने प्रिय की स्मृति मे अतीत मे गोते लगाने लगते हैं विनी अपने स्वर्गीय पति का दर्द फेटम के दुख से लगाती है व सोचती है कि आज जैसे फेटम अपनी पत्नी की याद मे इतना उदास दुखी है वैसा ही यदि वह मर गयी होती तो उसका पति रोमी भी इसी तरह असहाय दुखी रहता। ठीक ऐसी ही मनस्थिति फेटम के हृदय मे थी। दोनो अपनी-अपनी स्मृतियो मे इतना डूबते जाते हैं कि विनी अपनी बहन जेनी के घर न जाकर फेटम के घर चली जाती है। यहॉ पर वे अपने मनोभावो को अधिक स्पष्ट रूप मे व्यक्त करते हैं। अत में स्थिति यह आती है कि दोनो एक-दूसरे से अलग नहीं होना चाहते। विनी एक पत्र लिखकर अपनी बहन जेनी को सूचना दे देती है कि वह सुरक्षित है तथा कुछ देर और रूककर आयेगी। इस सूचना के पूर्व जेनी उसका पति पामर और मित्र लारेस विनी के वापस न आने के कारण काफी व्यग्र थे। जेनी अपने पति पामर को इतनी बारिश मे सेमेट्री भी भेजती है। अपने आपको भी बेहद कोसती है कि मैं जेनी के साथ ही क्यो न गयी। अपनी बहन विनी को लेकर वह बहुत ही चिन्तित

है उसे लगता है कि कही उसकी बहन अपने पति के वियोग मे अपना मानसिक सतुलन न खो बैठी हो। विनी का पत्र पाकर तीनो चिन्ता से मुक्त हो जाते हैं। विनी के इस कत्य से जेनी और पामर सहन नहीं कर पाते। वे इसे अनैतिक और अनुचित मानते हैं। लारेस जेनी और पामर के विचारो का विरोध करता हुआ विनी के इस कत्य को स्वाभाविक और उचित सिद्ध करने का प्रयास करता है। वस्तुत उपन्यास का मूल सार यही है।

इस उपन्यास के अतर्गत लेखक ने प्रेम और विवाह के कथ्य को केन्द्र मे रखकर उनके स्वरूप और स्थिति का पूरी गम्भीरता से विचार किया है। विधवा विनी और विधुर फेटम के प्रेम के सन्दर्भ में एक ही डोर एक-दूसरे को बाधे रखती है और वह है एक-दूसरे की वैवाहिक स्मृतियो के चिह्न। फेटम अपनी पत्नी शैल के व्यवहार के ऐसे-ऐसे पहलुओ पर भी वार्ता करता है जिसे कोई व्यक्ति परायी स्त्री के सम्मुख कर नहीं सकता। यूँ तो वह लम्बी सुन्दर और सुडौल थी। रोग से उसके शरीर की अवस्था जो भी हो गयी हो मेरे लिए उसका वही पुराना रूप था ।[१]

फेटम आगे कहता गया कि जब शैली को पता चला कि उसके फेफेडे का टी बी है तो वह उसे चूमने तक न देती थी और वह आग्रह भी करता तो वह धक्का दे देती[२] विनी उसकी बाते सुनते-सुनते अतीत की स्मृतियो मे खो जाती। कारण उसकी भी कहानी फेटम जैसी ही है। बीच-बीच मे उसे जेनी के मर जाने की याद आती है किन्तु फेटम की कहानी का आकर्षण उसे रोके रखता है। कहानी के विकास के साथ-साथ फेटम का दर्द इतना बढता जाता है कि विनी उसके दर्द को दूर करने के लिए दर्देदिल की दवा बनकर उसके साथ हमेशा के लिए रहने

---

१ **बारह घण्टे – यशपाल। पृष्ठ स – ४५**

२ **बारह घण्टे – यशपाल। पृष्ठ स – ६६**

का निश्चय कर लेती है। अपने पति रोमी के लिए जान देनेवाली विनी का केवल बारह घण्टे मे कुतिया बन जाना जेनी को अच्छा नही लगा। विनी यदि वैधव्य और अकेलेपन के कारण बिलखती बिसूरती तो शायद जेनी और उसके दकियानूसी पति पामर को अच्छा लगता और वह उससे सहानुभूति भी रखते। यदि विनी अपने पति की याद मे आत्महत्या कर लेती तो वह उनकी नजरो मे महान बन जाती किन्तु जब वह फेटम के यहॉ सुरक्षा और सन्तोष का अनुभव करती है तो उन्हे क्षोभ होता है। विनी और फेटम के जीवन की सबसे बडी माग प्रेम की थी। दोनो यदि एक-दूसरे के सम्मुख आकर्षित होते हैं तो उसका सबसे बडा कारण उस प्रेम के हनन से है जो जिन्दगी ने उनके जीवन से सदा के लिए छीन लिया था। प्राय प्रेम और विवाह के सम्बन्ध मे परम्परागत धारण इस विश्वास को लेकर चलती है कि प्रेम दो आत्माओ के पवित्र सम्बन्ध पर आधारित होता है। शरीर के सम्बन्ध पर नही अर्थात् प्रेम एक आत्मिक सम्बन्ध है और विवाह ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। उन दोनो के जीवन मे जो रिक्तता आयी है वह आत्मिक प्रेम के कारण उपजी है क्योकि विनी और फेटम के लिए शारीरिक भूख की अपेक्षा परस्पर एक-दूसरे का सहारा बनना ही नितान्त आवश्यक था। उन दोनो के कार्य को हम अनैतिक नही कह सकते। कारण उनके व्यवहार मे हम स्वार्थ और धोखा नही पाते बल्कि वो दर्द पाते है जो एक जीवनसाथी खोकर वे खुद महसूस करते हैं। विनी जो अपने स्वर्गीय पति रोमी को भूल नही पाती थी उसको याद करके वह हमेशा रोती रहती थी यहॉ तक कि वह जीवित नहीं रहना चाहती थी अचानक फेटम के प्रति उसका प्रेम उमड पडता है। इसका मात्र कारण यौन-आकर्षण नही अपितु मानसिक सहारा देना था। दो दुखी व्यक्तियो को एक सामान्य-सूत्र मे बाधनेवाले भावो और

मनोदशाओ का अतिसूक्ष्म और कलापूर्ण अकन यशपाल जी ने बडी सघनता और निपुणता के साथ इस लघु उपन्यास मे प्रस्तुत किया है।

## झ अप्सरा का श्राप (१६६५ ई०)

इस उपन्यास मे यशपाल ने कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कथानक को अपने ढग से ग्रहण करते हुए दुष्यत और शकुतला की परिचित कथा अपने नवीन दृष्टिकोण से व्यक्त किया है। इस उपन्यास मे दुष्यत और शकुतला की परिचित प्रेमकथा ही नही कही वरन् इसके माध्यम से उन्होने नारी–शोषण की समस्या को एक बार फिर से उठाया है। वस्तुत उनके सारे उपन्यासो मे नारी की समस्याओ व उसके प्रगतिशील विचारो की प्रधानता मिलती है। दिव्या और अमिता की भॉति अप्सरा का श्राप के कथानक का निर्माण भी महाभारत की पृष्ठभूमि लेकर तैयार किया गया है। वही युग-युग से चली आती परम्परा जो नारी को लाछित करके उसका शोषण करती आ रही है इस उपन्यास मे भी विद्यमान है। प्राचीन काल से ही नारी को पुरुष की अर्द्धांगिनी तथा सहभागिनी अवश्य कहते रहे हैं पर क्या वह वास्तव मे पुरुष की अर्द्धांगिनी रही ? सीता दमयन्ती पुरुष द्वारा शोषित या छली नहीं गयी ? और क्या आज भी छली नही जा रही ? यशपाल ने अपने इस उपन्यास के कथानक (जो कि शकुन्तला की पतिव्रता धर्म मे निष्ठा की भावना से आप्लावित है) को नवीन विचारो की अभिव्यक्ति का एक नया प्रयास किया है।

स्वय लेखक के शब्दो मे पुरातन आख्यानको को आधुनिक दृष्टि से प्रस्तुत करने का अभिप्राय है पुरुष द्वारा युग-युग से निरकुश स्वार्थ के प्रमाद मे धर्म और

व्यवस्था के नाम पर नारी के शोषण के प्रति ग्लानि और आधुनिक नारी के व्यक्तित्व तथा आत्मनिर्भरता की भावना के प्रति सहानुभूति व्यक्त की जा सके।[१]

शकुन्तला-दुष्यन्त के पुरातन आख्यान को नवीन दृष्टिकोण से औपन्यासिक रूप देने के लिए यशपाल ने कथा का प्रारम्भ महर्षि विश्वामित्र के तप मे मेनका द्वारा विघ्न डालने से किया है। मेनका देवलोक से आकर विश्वामित्र को अपनी काम-शक्ति के द्वारा आन्दोलित कर देती है और विश्वामित्र को सासारिक माया-मोह के जाल मे फॅसने के लिए वह एक पुत्री को भी जन्म देती है। मेनका के जाने के पश्चात् विश्वामित्र के ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं और वह समझ जाते हैं कि उनको देवताओ द्वारा छला गया है। वह पुत्री को महर्षि कण्व और गौतमी के आश्रम के पास सुलाकर छोड जाते हैं और फिर दूबारा तप मे लीन हो जाते हैं। परन्तु उधर मेनका स्वर्ग मे भी पुत्रीमोह को नही छोड पाती और पुत्री की गतिविधियो अवस्था और सुरक्षा का ध्यान रखने के लिए अप्सरा सानुमती को पृथ्वीलोक मे भेजती है। मेनका का सानुमती को भेजकर अपनी पुत्री के प्रति मातृत्व-प्रेम के जाल मे फॅसना ही है। यह सत्य भी है कि ससार की कोई भी मॉ अपने बच्चे को रोता-बिलखता नहीं देख सकती।

सानुमती से पुत्री के समाचार पाकर उसे सन्तोष होता है और वह सोचती है मेरी पुत्री ने मानवी के शरीर मे यौवन प्राप्त किया। वह नारी शरीर के धर्म की प्रेरणा भी अनुभव करेगी। उसी से उसका नारी-जीवन सार्थक होगा। देवताओ की कपा से वह अपने जीवन-धर्म को चरितार्थ कर सके।[२] मेनका के माध्यम से कहे गये यशपाल के ये शब्द ही आगे जाकर कथा का रूप परिवर्तित करते हैं। लेखक ने प्रारम्भ से ही कथा को तर्क- सम्मत और बौद्धिक रूप प्रदान किया है।

---

१ यशपाल आमुख अप्सरा का श्राप।

२ यशपाल – अप्सरा का श्राप। पृष्ठ सं १६

यशपाल के इस उपन्यास मे नारी समस्या प्रधान है। कण्व ऋषि के आश्रम मे विश्वामित्र और मेनका के सहवास से उत्पन्न शकुतला का पालन-पोषण तपोवन की रीति के अनुसार होता है। एक दिन अचानक मृगया के लिए राजा दुष्यत शिकार खेलते हुए आश्रम मे पहुँच जाते है और वही पर रूपसी शकुतला के क्षणिक मिलन पर उस पर मुग्ध हो जाते हैं। उधर शकुतला भी दुष्यत पर मुग्ध होकर अपना सब कुछ उनको सौंप देती है। शकुतला का विरह वर्णन और दुष्यत का शकुतला को पाने के लिए ललायित होने का बहुत ही मार्मिक चित्रण यशपाल ने किया है। शकुतला की विरह-व्यथा का एक चित्र देखिए-

कौंध जाती स्मृति पटल पर
आज याद रह-रह तेरी आती।
काम पीडित गात प्यारा
छल गये सुधि न प्यारा
क्रूर कितने हो अहेरी ? [१]

इसके पश्चात् दुष्यन्त आश्रम मे पुन प्रवेश करते हैं तथा शकुन्तला से पाणिग्रहण की कामना का आश्रमवासियो के सम्मुख निवेदन करते हैं। आश्रमवासी कण्व की अनुपस्थिति मे कोई भी निर्णय लेने को तैयार नही होते पर जब दुष्यन्त राजा के रूप मे परिचय देते हैं तो गान्धर्व विधि से दोनो का विवाह हो जाता है। कालिदास की शकुन्तला के समान ही राजा दुष्यन्त को राजकीय मुद्रा पहचान के लिए देकर तथा उसके गर्भ से उत्पन्न पुत्र को राज्याधिकार देने का आश्वासन देकर लौट जाते हैं।

धीरे-धीरे कई दिन व्यतीत हो जाता है। राजा का कोई समाचार न मिलने के

---

१ अप्सरा का श्राप – यशपाल। पृष्ठ स ५७

कारण शकुन्तला चिन्तित मुद्रा मे अन्यमनस्क बैठी है। दुर्वासा मुनि आश्रम मे आकर आवाज लगाते हैं पर शकुन्तला सुन नहीं पाती। इससे मुनि बहुत ही क्रुद्ध हो जाते हैं। यहॉ तक का प्रसग तो यशपाल ने कालिदास की शकुन्तला के समान ही रखा है पर आगे जाकर आधुनिक परिस्थिति-बोध चिन्तन-विचार के आधार पर यशपाल को दुर्वासा मुनि के द्वारा शापित शकुन्तला की कल्पना करना अश्रद्धा है। अब बहुत ही स्वाभाविक ढग से कथा मे परिवर्तन आ जाता है। दुर्वासा मुनि महर्षि गौतम और कण्व को दुष्यन्त के द्वारा उपेक्षिता शकुन्तला को पतिगृह भेजने का परामर्श देते हैं। इधर शकुन्तला भी श्वसुरगृह जाने की इच्छा प्रकट करती है और गर्भवती होने के आभास से परिस्थितियॉ भी विकट बन जाती हैं।

यशपाल जहॉ ऐतिहासिक तथ्यो तथा स्वय की कल्पना के आधार पर उपन्यास के कथानक को विस्तार दे रहे हैं वहॉ वह समाज पर भी व्यग्य के छींटे कसवाना नही भूले। अनुसूया के माध्यम से यशपाल जैसे स्वय बोल रहे हैं तात और माता यह विचार नही करते कि दहेज के रूप मे सन्तान साथ ले जानेवाली वधू समाज मे निरादर और विद्रूप की पात्र होती है। फिर इस तरह महर्षि कण्व दुर्वासा की सलाह से शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी मे व्यस्त दिखायी पडते हैं। डॉ सरोज गुप्त के शब्दो मे महाभारत के प्रणेता और कालिदास की कल्पना को यशपाल ने बौद्धिक रूप दे दिया। कथानक मे कौतूहल और जिज्ञासा प्रारम्भ हो जाती है क्योकि पाठक लेखक के नवीन दृष्टिकोण को आगामी पृष्ठो मे खोजने के लिए उत्सुक हो जाता है। [१]

शकुन्तला की विदाई आश्रमवासियो के लिए अत्यन्त कठिन बन जाती है। वास्तविकता भी यही है कि लडकी की विदाई के समय कठोर हृदय भी पिघल

---

१ अप्सरा का श्राप – यशपाल। पृष्ठ स ७६

जाता है। यशपाल जहॉ एक ओर नारी की पूर्ण स्वतत्रता के पक्षपाती हैं वहॉ पति सेवा और आज्ञा-पालन को प्रमुखता देना भी नही भूले। गौतमी शकुन्तला की विदाई देते समय समझाती है बेटी पत्नी के लिए सब देवताओ की उपासना पतिदेव की उपासना मे समाहित है तथा पत्नी के सब धर्मो की निष्पति पतिव्रत-धर्म की पूर्ति मे तुष्टि और सन्तोष को ही अपना सुख समझना। [१]

इसी तरह यशपाल ने शकुन्तला के प्रस्थान के समय एकाकी चकवाकी पक्षी का प्रसग लाकर शकुन्तला को अपशकुन से भयभीत बताया हे तो दूसरी ओर अनुसूया बौद्धिक रूप से इस आशका का खण्डन करती दिखायी देती है। इस तरह उपन्यासकार पुरातन का आवरण छोडकर आधुनिकता ओढे हुए नजर आते हैं।

राजा दुष्यन्त राजधानी मे लौट कर रानी लक्षणा के गर्भवती की बात सुनकर चिन्तित हो जाते हैं। वह शीघ्र से शीघ्र शकुन्तला को राजभवन मे बुला लेना चाहते हैं। परन्तु मत्रियो का समर्थन नही मिलता। जब मत्रीगण लोक-निन्दा का भय बताते है तब वह जानबूझकर कण्व के आश्रम मे दिये हुए वचनो को भूला देते है। शकुन्तला के शहर मे आगमन का समाचार सुनकर वह माधव्य और विदूषक की कूटनीति और परामर्श से उन आश्रमवासियो से यज्ञशाला मे मिलने का आदेश देता है। वहॉ पहूँचकर राजा अन्य लोगो के सामने शकुन्तला को पहचानने से इन्कार कर देता है उधर राजा की दी हुई राजकीय मुद्रा भी नदी मे गिर जाती है। अत शकुन्तला के पास उसके शब्दो के प्रतिकार का कोई भी प्रमाण नही रहता। इस तरह शकुन्तला छली जाती है।

---

**१ यशपाल व्यक्तित्व और कतित्व – डा सरोज। पृष्ठ स ११८**

मार्क्सवादी दृष्टिकोण के आधार पर यशपाल यहॉ पर नितान्त नवीन मोड देते हैं। मुद्रा के आभाव मे प्रबधिता शकुन्तला को कालिदास के नाटक की भॉति शारगराव और अनुसूया छोडकर नही चल देते बल्कि वह उसके दुख-सुख के साथी हैं। शोषित और उत्पीडित सर्वहारा वर्ग मे प्रति लेखक की सहानुभूति ने ही यहॉ कथा को एक नवीन मोड प्रदान किया है।

इधर सानुमती से मेनका को अपनी पुत्री का पति से प्रबधिता और निराश्रित होने का समाचार मिलता है। असहाय व्यथा और अपमान की पीडा से उसका आत्महत्या के प्रयास का समाचार पाकर वह और भी विचलित हो जाती है। यशपाल मेनका के द्वारा युग-युग से चले आ रहे नारी-शोषण और लाछन की ओर सकेत करते हैं अनेक समाजो मे पुरुष ने स्वार्थ के प्रमाद मे नारी को अपने निरकुश भोग की वस्तु बना लेने के लिए उसे अपनी पशु सम्पति के समान सबलहीन बना दिया है। पुरुष ने नारी को स्ववश रखने की प्रयोजन से उसकी नारीत्व और व्यक्तित्व को पातिव्रत की धारणाओ से बाधकर उसे पत्नी मात्र बना दिया है। पति पुरुष ने पति-पत्नी के सम्बन्ध मे एकनिष्ठा का धर्म केवल पत्नी पर आरोपित करके स्वय स्वामी बन पत्नी को अधीन बना लिया है। इस तरह पुरुष वर्ग की आलोचना सुनकर पाठक की सारी सहानुभूति शकुन्तला की ओर हो जाती है।

मेनका के आदेश से शकुन्तला की असहायावस्था मे किन्नरी आती है तथा उसके मातृसजात्मक समाज मे जहॉ पुरुष अथवा पति को निरकुश स्वेच्छाचार के लिए अवसर नहीं है ले जाती है। यह लेखक की सर्वथा मौलिक और नवीन कल्पना है। इससे लेखक की मार्क्सवादी भावना का पता चलता है।[१]

---

१ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृष्ठ १७

रानी लक्षण के गर्भ से विकत निष्प्राण सन्तान का जन्म होता है जिससे राजा को अपनी भूल और दोष को स्वीकार करने के लिए विवश हो जाना पडता है। इधर मछुए के पास अँगूठी मिलने पर उसके खो जाने का कारण भी स्वय को मानता है। मेनका दुष्यन्त की दयनीय अवस्था का हाल सुनकर भी द्रवित नही होती बल्कि देवलोक मे भी उसकी आलोचना करती है।

इसके पश्चात् राजा कई दिनो तक अस्वस्थ रहता है। यशपाल ने देवलोक के राजा द्वारा दुष्यन्त को अपनी सहायतार्थ बुलवाया और दुष्यन्त का प्रजापति कश्यप के आश्रम मे दर्शन के लिए प्रस्थान तथा पुत्र भरत और शकुन्तला के पुनर्मिलन के प्रसग से अपने साथ लौटने के लिए निवेदन करता है तथा अपने किये हुए पर क्षमा-याचना करता है। पहले तो शकुन्तला तैयार नहीं होती पर राजा की अनुनय-विनय पर तैयार हो जाती है पर जैसे ही मेनका को यह समाचार मिलता है तो वह विचलित हो जाती है और अपनी बेटी की सहायतार्थ मृत्युलोक मे प्रकट हो जाती है। वह पुत्री से पूछती है कि कहॉ जा रही हो ? शकुन्तला कहती है पति के साथ। तब मेनका बहुत ही रोषपूर्ण शब्दो मे कहती है 'उसका छल-प्रपच पहचान कर उससे पशुवत् निरादर पाकर भी उसे पति कहती हो।

इस तरह मेनका आधुनिक युग के विचारो की अप्सरा बनकर सामने आती है। दादा कामरेड से अप्सरा का श्राप तक अपने समस्त उपन्यासो मे मानक जीवन के उन मूलभूत सिद्धान्तो का प्रतिपादन करने मे समर्थ हुए है जिससे कि त्रस्त मानव जाति कुछ राहत की सॉस ले सके। नारी को यशपाल ने समाज मे सबसे अधिक शोषित माना है यही कारण है कि उनके अधिकाश उपन्यासो मे नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठायी गयी है। डॉ पारसनाथ मिश्र के शब्दो मे भारतीय आदर्श

का श्रेष्ठतम शुद्ध उज्ज्वल रूप प्राचीन आश्रम मे मिल सकता है पर वह आदर्श दर्शन और आध्यात्मिक साधना के सहारे के बावजूद अत्यत दुर्बल है क्योकि भीतर से खोखला है। शरीर के स्वाभाविक आकर्षण के सामने वह पराजित है। महर्षि कण्व के आश्रम मे पली शकुन्तला दुष्यन्त के सामने दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षा को भूलकर सेक्स की पीडा से सतृप्त हो उठती है। शकुतला के समर्पण मे सेक्स की ही प्रधानता दिखायी देती है।

## ञ क्यो फॅसे ? (१६६८ ई०)

क्यो फॅसे ? यशपाल का ११२ पृष्ठो का एक लघु उपन्यास है जिसमे यशपाल ने स्त्री-पुरुष के परम्परागत पारस्परिक सम्बन्धो को अनावश्यक मानते हुए उन्हे नई दिशा मे विकसित होने की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है। उपन्यास के केन्द्रीय आशय की अभिव्यक्ति के लिए उन्होने कालीदास की इस लोकप्रिय उक्ति को उपन्यास के शीर्ष वाक्य के रूप मे उद्घृत किया है कि पुराणमित्येव व साधु सर्वम् [१] अर्थात परम्परा ही सदा श्रेय नहीं होती। स्त्री-पुरुष के बीच प्रेम सम्बन्ध विवाह तथा एक पति या पत्नीव्रत जैसे आदर्शो तथा परम्परा से चली आ रही मान्यताओ पर प्रश्न-चिन्ह लगाते हुए यशपाल ने इस उपन्यास मे नारी मुक्ति का तत्वदर्शन प्रस्तुत किया है। काम प्रेम और विवाह जैसे प्रश्नो पर यशपाल का चिन्तन प्रारम्भ से ही विवादास्पद रहा है। इस उपन्यास ने इस प्रकार को मतव्य की सत्यता को निभ्रति रूप से यशपाल ने सिद्ध कर दिया। उपन्यास के बारे मे हिन्दी कुछ समीक्षको तथा आत्मीयो की विपरीत प्रतिक्रियाओ तथा समीक्षको से प्रेरित होकर यद्यपि यशपाल ने इसके अतिम अशो मे दो-तीन बार फेर-बदल भी की

१ क्यों फँसे ? – यशपाल भूमिका से

माध्यम से ही यौनाचार तथा स्त्री-पुरुष सम्बन्धो के बारे मे अपने नये तत्वदर्शन को प्रस्तुत किया हैं। भास्कर औरतों को आकर्षित करने मे दक्ष है। मोती से पहले भास्कर को अपनी गवार किन्तु जवान मामी के सन्दर्भ मे काम प्रसगो का अनुभव हो चुका हैं मोती को देख कर उसकी इच्छा पुन भडक उठती है। पारिवारिक जीवन मे बीजरूप से पडे मोती के मन की अतिरजित प्रशसा तथा उसकी कला की तारीफ भास्कर इस तरह करता है कि वह पूरी तरह भास्कर की तरफ खिच जाती है। वह पारिवारिको बदिशो को तोड कर भास्कर को अपना शरीर सौंपने मे भी किसी प्रकार का सकोच नही करती। लेखक ने मोती के इस समर्पण को इस आधार पर उचित ठहराने का प्रयास किया है कि नियत राशन से पेट भर सकता है मन नही [१] अर्थात् स्त्री-पुरुषो की यह इच्छा स्वाभाविक है कि वह एक से ही बधे रहने मे एकरसता या मानसिक क्राति का अनुभव करे।

भास्कर के समक्ष ऐसे कई अक्सर आते है जबकि मोती उसके समक्ष शारीरिक समर्पण को पूरी तरह तैयार है किन्तु सस्कारगत लज्जा उसे अपनी ओर से पहले करने से रोकती है। स्वय ही भास्कर के समक्ष पसर जाने के बजाय वह भास्कर के पुरुष द्वारा पहल होते देखना चाहती है। भास्कर इसका अर्थ ये लगाता है कि मोती अतिम समर्पण को उसके सामने नही आने देती। भास्कर के मन मे ये बात घर कर जाती है। और वह मोती से दूरी बना लेता हैं। मोती उसके इस पलायन का अर्थ नहीं समझ पाती पुन्नैया भास्कर को सोसायटी गर्ल्स के पास ले जाता है किन्तु पैसा लेकर शरीर का धन्धा करने वाले उन लडकियो के से भास्कर की सगति नहीं बैठ पाती। मोती और उसके बीच गलत फहमी पैदा हो जाती है और काफी अरसे के लिए दोनो का सम्बन्ध टूट जाता हैं परिस्थितियॉ उन्हे मसूरी मे पुन

---

**१ क्यों फँसे ? – यशपाल। पृ स ५८–५९**

मिलाती है और दोनो पुन कक्ष के एकान्त मे मिलते है। पुन वही सब घटित होता है और एक झटके से मोती से अलग होकर भास्कर बाहर निकल जाता है। इस प्रतिक्रिया से भास्कर कई बार पहले भी मोती से त्रस्त था और फिर से वही सब होने से वह खिसया कर एक सोसायटी गर्ल हेना को अपने कमरे मे लाता है और उससे तुष्टि प्राप्त करता है।

मोती भास्कर के व्यवहार से क्षुभित तो थी ही किन्तु भास्कर को भूल न पाती थी। एक सुबह वह खुद भास्कर से मिलने और अपनी व्यथा कहने होटल के उस कमरे मे जाती है जहॉ रात भास्कर के साथ हेना थी। दरवाजा खोलते ही भासकर के साथ हेना को देखती है। हेना उसे देखते ही कमरे से निकले कर गायब हो जाती है। वह रात को अपने शरीर का पैसा भी नहीं लेती। भास्कर को इसका बडा दु ख होता है कि जिससे उसने कामतुष्टि पायी उसे कुछ दे भी न सका। मोती आवेश मे भास्कर से कहती है- यह क्या है ? हमसे प्यार की बाते हमारी इन्सल्ट दूसरियो से रगरेलिया।[१] भास्कर उसे शान्त करता है- तुमने मजबूर किया। यह मेरी पसन्द नही। तुम पुचकार कर दुत्कार दो तो दूसरा क्या करे ? कहीं तो चैन पाए।[२]

तुम्हे ऐसी खुद पसर जाने वाले बेहया पसन्द है। मोती ने उचककर उसके ओठो पर दॉत गडा दिये। तुम मेरे हो। मार डालो मुझे। किसी रडी को नही छूने दूगी।[3] मोती के द्वारा हेना को रडी कहना भास्कर को नहीं आता। वह मोती से दूसरे दिन मिलने का समय नियत करता है। मोती वचन लेकर आश्वस्त होकर चली जाती है। भास्कर के बमन मे मथन होता है। हेना को वह रात की फीस नहीं दे सका था। उसे वह कहॉ ढूंढे ? हेना के प्रति उसके मन मे सहानुभूति थी और मोती के प्रति विक्षोभ।

---

**१ क्यों फँसे ? – यशपाल। पृ स ८६–८७**

**२ क्यों फँसे ? – यशपाल। पृ स ८८**

इसके पहले कि दूसरे दिन नियत समय पर मोती समर्पण के लिए उसके कमरे मे आए घृणा से अभिभूत वह अपना कमरा छोडकर वापस दिल्ली लौट आता है। मोती के द्वारा हेना के लिए रडी शब्द बार-बार उसके दिमाग मे चोट करता है।

उपन्यास यदि भास्कर पुन्नैया मोती और हेना की ही कथा होता तो कोई खास बात नहीं थी उसे परम्परागत सम्बन्धो से ऊबे हुए मुक्त यौनाचार का समर्थन तथा आचरण करने वालो की कथा मान कर सतोष कर लिया जाता। किन्तु सशपाल ने तो इस उपन्यास मे यह प्रतिपादित किया है कि परम्परागत दमघोटू सम्बन्धो मे स्त्री-पुरुष की वास्तविक मुक्ति उनके दिशानिर्देश मे ही सम्भव है और यही उपन्यास का मुख्य उद्धेश्य है।

## मेरी तेरी उसकी बात

स्वतन्त्रता पूर्व स्थिति मे राजनैतिक सामाजिक पारिवारिक और वैयक्तिक द्वद्व तथा क्रान्ति का सम्यक व व्यापक रुप यशपाल रचित बृहत उपन्यास मेरी तेरी उसकी बात मे उपलब्ध है। प्रस्तुत उपन्यास मे भी नारी द्वारा सामाजिक जर्जर रुढियो का खण्डन धर्म और जाति की सकीर्णताओ को पार करना परिवार पति के बन्धनो से मुक्त होकर राजनैतिक क्रान्ति मे कार्य करना दिखाया गया है। यशपाल की उपन्यास श्रृखला की यह अन्तिम कडी है। उपन्यास मे दो पीढियो से क्रान्ति की वेदना को अदम्य बनाते वैयक्तिक पारिवारिक सामाजिक और साम्प्रदायिक विषमताओ का स्पष्टीकरण भी है। क्रान्ति केवल सडॉध से उत्पन्न व्याधियो और सभी प्रकार की असद्धा बातो का विरोध भी है। पात्रो की मानवीय समस्याओ जीवन की नैसर्गिक उमगो आवश्यकताओ और सस्कारो के द्वन्द्वो का भी है।[1] यशपाल



१ मेरी तेरी उसकी बात यशपाल पृ आवरण

अपने उपन्यास साहित्य मे राजनीति और सामाजिक स्थिति दोनो को साथ लेकर चले है।

मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास मे कथा का विस्तार राजनैतिक विस्फोट से ब्रिटिश शासन से मुक्ति तक ही नही बल्कि देश को अवश रखने के लिए विदेशी नीति द्वारा बोये विष–बीजो के अवशिष्ट प्रभावो पर्यन्त भी है जिनके बिना नर–नारी की युक्ति असम्भव है।

इस उपन्यास मे यशपाल ने चालीस वर्षो का व्योरा देते हुए तीन पीढियो को चित्रित किया है। नर–नारियो की क्रान्ति ही नही बल्कि पात्रो की मानवीय सम्वेदनाओ जीवन की नैसर्गिक उमगो आवश्यकताओ और सस्कारो के द्वन्द्वो की भी चर्चा की है।

मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास मे कथा का आरम्भ पिछली पीढी से होता है। उन्नीसवी सदी का उत्तरार्द्ध तथा बीसवी सदी का पूर्वार्द्ध सयुक्त परिवार का काल है। पहली पीढी की कथाए सेठ रतनलाल धर्मानन्द पण्डित तथा वकील कोहली की है जिसमे सामाजिक साम्प्रदायिक सकीर्णता जातीय दुरभिमान परम्परागत रूख आदि दिखाकर उनके परिवर्तन की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है। दूसरी पीढी की कथाएँ अमर उषा पाठक रजा नरेन्द्र की है जिसमे आधुनिक वातावरण की झलक है। पात्रो की राजनीतिक रुचि एव क्रियाशीलता ने कथा को राजनैतिक बना दिया है नयी पीढी मे परम्पराओ पर प्रहार करने और नयी आस्थाओ का निर्माण करने की ललक स्वाभाविक है। तीसरी पीढी का उल्लेख सकेत मात्र है जो भविष्य की द्योतक है।

---

मेरी तेरी उसकी बात' उपन्यास मे पात्रो के माध्यम से समाजवर्ग रिश्वतखोरी शोषण–नीति बेरोजगारी महगाई जैसी समस्याओ को हल किया है। नारी को आत्मनिर्भर बनाने पर भी बल दिया गया है। नारी मे प्रेम और सन्तति पालन की वृत्तियॉ अधिक प्रबल होती है जबकि पुरुष मे अह वृति तीव्र होती है।[१] यशपाल तो नारी के समाज सेविका या क्रान्तिकारी रुप मे भी उसे ममत्व की व्यापकता के दर्शन करते हैं। उषा के द्वारा उन्होने कहलाया है बिल्कुल फीमेल कान्शेस फीमेल। सचेत प्रबुद्ध नारी अपने समाज के लिए अधिक चिन्ता करेगी पैदा औरत करती है रक्षा की चिन्ता भी उसी को रहेगी।[२] इस प्रकार आधुनिक नारी के अह को यशपाल ने ममत्व से भिन्न नही देखते। उनका विश्वास है कि प्रबुद्ध नारी मे आत्मसम्मान की भावना अवश्य आयी किन्तु वह उनके ममत्व को पराजित नहीं कर सकी। उषा के चरित्र मे वात्सल्य और काम वृत्ति की ही प्रमुखता है। स्वयम उषा के शब्दो मे डियर मुझे क्षमा कर दो सब तरह से तुम्हारी हूँ और रहूँगी परन्तु बेटे के मन से कुण्ठा के सस्कार मिटाये बिना तुम्हारी पत्नी होने का सतोष और वर्ग न पा सकुगी। मुझे उसके लिए जितना सहना पडे जितना समय लग जाये। स्वार्थ मे बेटे को छीनता अनुभव करने देना मुझे असह्य है।[३]

डॉ विवेकी राय के शब्दो मे यशपाल की साम्यवादी दृष्टि राजनीतिक सघर्ष और मूल्यानुसक्रमण युग मे एक सनातन मानवीय मूल्य और नारी को पूर्ण प्रतिष्ठा मे लगी हुई है। समाज धर्म जाति परम्परा पति नैतिकता और व्यवस्था से सघर्ष करती जूझती और सबको तोडती नारी वात्सल्य के सामने मुड गयी बलि हो गयी।[४] एक व्यक्ति के रूप मे उषा अपने परिवेश समाज धर्म जाति विवाह सस्था से सघर्ष करती हुई अपने स्वतत्र अस्तित्व के लिये उषा जितनी तेजी से

---

**१ यशपाल के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक रचना शिल्प – डॉ मधु जैन पृ २६५**

**२ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ ७१८**

**३ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृष्ठ ७६०**

**४ यशपाल व्यक्तित्व और कतित्व – रामव्यास पाण्डे पृ २२**

अपने घर–परिवार माता–पिता धर्म–जाति समाज का विरोध करके पति का चुनाव करती है परन्तु जब उसके स्वतत्र व्यक्तित्व पर पति द्वारा आक्षेप और बधन लगाए जाते हैं तो उतनी ही तेजी से वह पति विवाह सस्था को तोडने के लिए उद्यत हो जाती है। उषा का नरेन्द्र से मेल–जोल उनके दाम्पत्य जीवन मे दरार ला देता है।

पति–पत्नी के बीच नरेन्द्र की उपस्थिति मे अमर बौखला उठता है सौजन्य मानवता सहयोग भावना उड जाती है अमर कहता है तुम माया की तरह पति और मित्र दोनो चाहती हो। अमर के आग्रह पर उषा के सामने जब फिर एक बार चुनाव का प्रश्न आता है तो वह दृढ निश्चय से कहती है इट इज नाट यू। मानसिक तनाव मे उषा घर छोड जाती है और मनोद्वन्द्व मे छटपटाता अमर दुर्घटनाग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उषा स्वतत्र विचार की होने के कारण कभी परिस्थितियो से समझौता नही किया। सदैव उषा स्वतत्र व्यक्तित्व के लिए समाज से द्वन्द्वरत रही है। पति–विवाह और परिवार सख्या की परम्परागत मान्यताओ को विच्छिन्न कर वह अपना व्यक्तित्व राष्ट्र के प्रति अर्पित करती है।

मेरी तेरी उनकी बात उपन्यास मे सन् १६४२ ई (भारत छोडो आन्दोलन) मे देश मे उथल–फूथल का जब माहौल चल रहा था। क्रान्तिकारी देश की आजादी (स्वतत्रा) के लिये इन्कलाब जिन्दाबाद का गूँज सर्वत्र लगाएँ हुए थे उषा का वचन देशप्रेम की भावना के लिए विद्यमान दिखलायी पडता है। हमारे बेताज बादशाह और नेता देश से अग्रेजो को निकालने के युद्ध मे मोर्चे पर बढ युके हैं। करो या मरो की प्रतिज्ञा से हमारे नेता इस युद्ध मे कफन बाधकर मोर्चे पर बढ हैं। हमे भी उनके अनुकरण मे कदम पीछे न हटाने की प्रतिज्ञा से सिर पर कफन बाधकर आगे

---

बढना है। खुली बगावत के लिए महात्मा गाधी के छ आदेशो की सरल व्यावहारिक भाषा मे व्याख्य हमे गुलाब रहकर जिन्दा रहना मजूर नही है। इन्कलाब जिन्दाबाद। लडखडाती सरकार को एक धक्का और दो। और अधिक ऊँचे नारे।[१] उषा ने भारत छोडो सग्राम मे योगदान के लिये आह्वान किया।

यही उषा का आत्मत्याग लक्षित होता है। वह पाठक को बता देत है — निरर्थक मान्यताओ और सस्कारो को स्वीकार नही कर रही हूँ, परन्तु समाज को एक झटके से नही बदल सकती। क्रान्ति लोगो को तोडना नही मोडना है। परन्तु बेटे के मन मे कुण्ठा के सस्कार मिटाए बिना तुम्हारी पत्नी होने का सन्तोष और गर्व न पा सकूँगी। स्वार्थ मे बेटे को हीनता अनुीाव करने देना मुझे असह्य है। मैं बेटे की भावना को अपने सतोष के लिए बलि न होने दूँगी बलि होगी तो मेरी [२] उषा अपने मनोद्वण्द्व को जीत लेती है। उषा जाति धर्म परिवार विवाह पति समाज सरकार के प्रति विद्रोहिाणी नारी है।

डॉ विवेकीराय के शब्दो मे "उषा क्रान्तिकारिणी हैं समाज के लिए विद्रोही सहयोगियो के लिए प्रेरक शक्ति पति के लिए पहेली और पुत्र के लिये शुद्ध माता है।[३]

मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास मे यशपाल ने क्रान्ति का रुप तोड–फोड ध्वस वृत्ति मे नही स्वीकारा है बल्कि उषा पात्र क्रान्ति द्वारा समाज को सही स्थिति तक पहुँचाने मे विश्वास करते हैं। पाठक है "व्यापक मान्यताओ से वैयक्तिक विरोध सफल नहीं होगा केवल व्यक्ति को तोड देगा समाज को भी उसकी गलत मान्यताओ के कारण तोडना नही उसे मोडना ही होगा। क्रान्ति की सफलता तोड

---

१ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ ४५३–४५६

२ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ ४१०

३ यशपाल व्यक्ति और कतित्व – सरोज गुप्ता पृ २७

देने के यत्न मे नहीं मोड सकने मे है।[१] समाज क्रान्ति के लिए नही है बल्कि क्रान्ति समाज के लिए है। व्यक्ति क्रान्ति द्वारा समाज की दारुण व्यवस्था को समाप्त कर स्वरूप समाजवादी व्यवस्था का निर्माण कर सकता है। सम्पूर्ण उपन्यास मे उषा का चरित्र सामाजिक विकतियो और रूढिवादिता से उबरता हुआ दिखलाई पडा है।

इस उपन्यास मे सन् १९१९ से सन १९४६ तक की राजनैतिक गतिविधियो का सम्यक चित्रण उपन्यास मे उपलब्ध है। धनजय वर्मा के शब्दो मे यह उपन्यास समकालीन इतिहास के मानव–अनुभव का एक ऐसा दस्तावेज है जिसमे सिर्फ व्यक्ति की अनुभूतियो और सवेदनाओ की लीला नहीं है बल्कि उन सब सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक ताकतो का भी खेल शामिल है जो इस मानवीय अनुभव को रूपायिक और निर्देशित कर रहा है।[२] उषा का द्वन्द्व सघर्ष एक नारी का द्वन्द्व नहीं रह जाता। बल्कि पूरे समाज के द्वन्द्व का प्रतीक हो जाता है। स्वतत्र व्यक्तित्व एव अस्तित्व के लडती उषा का बाह्य व मनोद्वन्द्व पीडा कसक सकल्प दृढ निश्चय धर्म–जाति सामाजिक व्यवस्था की जकडन और सघर्ष का प्रत्येक आयाम उपन्यास मे सूक्ष्मता से पूरी तरह उभरा है। वस्तुत उपन्यास मे यशपाल की दृष्टि मे क्रान्ति का अर्थ केवल शासकों के वर्ण पोशाक का बदल जाना ही नहीं परन्तु जीवन मे जीर्ण रूढियो की सडाध से उत्पन्न व्याधियो और सभी प्रकार की असह्य बातो का विरोध भी स्पष्टता झलकता है। पूरा उपन्यास आदि से अन्त तक रोचक है। आगामी पचासो वर्षो तक यह उपन्यास भारतीय कथाकारो के लिए मार्ग दर्शक रहेगा। यशपाल की बुद्धि और मूलहानि के समन्वय मे ही मनुष्य का कल्याण देखते हैं। उषा के शब्दो मे बुद्धि विवेक इस्टिक मे सहायक होने चाहिए।[३]

---

**३ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ ५७७**

**२ क्रान्तिकारी यशपाल एक समर्पित व्यक्तित्व – मधुरेश पृ १४२**

**३ मेरी तेरी उसकी बात पृ ७१८**

# दूसरा अध्याय

# उपन्यासकार यशपाल के उपन्यासो मे मार्क्सवादी नारी चेतना

## मार्क्सवादी चिन्तन

उन्नीसवी शताब्दी के क्रान्तिकारी विचारक काल-मार्क्स का जन्म जर्मनी मे एक छोटा सा नगर कत्रियेर मे ५ मई सन् १८१८ ई मे हुआ था।[१] इनका पूरा नाम कार्ल हेनिरिच मार्क्स (Karl Henerich Marx) था जो यहूदी परिवार से सम्बन्धित थे। इनका कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो फरवरी १८४८ ई मे प्रकाशित हुआ मार्क्स की इस घोषणा-पत्र का प्रभाव ससार के मजदूर आन्दोलनो पर पडा और मजदूरो के आन्दोलन ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया। इस घोषणा के बाद मजदूरो मे एक नयी भावना जिसे मार्क्स श्रेणी चेतना का नाम देते हैं पैदा हो गयी। श्रेणी चेतना को हम मार्क्सवाद के क्रियात्मक रूप का बीज कह सकते हैं।

कार्ल-मार्क्स ने जिन सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया कालान्तर मे वही सिद्धान्त मार्क्सवाद की सज्ञा से अभिहित हुए। मार्क्स ने व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओ रोटी-कपडा और मकान पर विचार करना अत्यावश्यक और उचित समझा। उन्होने सामाजिक और आर्थिक समस्याओ पर इतनी गहराई से विचार किया कि अन्तत उसे 'वैज्ञानिक भौतिकवाद का प्रवर्तक बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

---

**१ लेनिन कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा पृ स ६१ प्रगति प्रकाशन मास्को पीपुल्स पब्लिशिग हाउस नई दिल्ली।**

# भौतिकवाद

कार्ल-मार्क्स ने एक ओर विज्ञान (कार्य-कारण) को अपने सिद्धान्तो का मूलाधार बनाया और दूसरी ओर फेवर बारव की भौतिकवादी धारणा को मान्यता प्रदान की। मार्क्स की दृष्टि मे भाववादियो (हीगेलियन) का परम तत्त्व सत्य से बहुत दूर है। मार्क्स ने भाववादी दर्शन का विरोध करते हुए वस्तु आदि दर्शन की स्थापना की।

कैपिटल (दास कैपितोल) के प्रथम खण्ड की प्रस्तावना मे मार्क्स ने हीगेल के भाव को भौतिक सृष्टि के अतिरिक्त और कुछ नहीं माना। वह भौतिक सृष्टि जो मनुष्य को मन के द्वारा प्रतिबिम्बित होकर विचार रूपो मे परिवर्तित हो जाती है।[१]

तात्पर्य यह है कि भौतिक सृष्टि की छाया ही हमारे मानस दर्पण मे विचारो के रूप मे अवतरित होती है। मार्क्स का भौतिकवादी दृष्टिकोण यान्त्रिक भौतिकवादियो के दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न था। मार्क्स हीगेल का अनुकरण करता हुआ समस्त जगत् मे द्वन्द्वात्मक स्थिति को स्वीकार करता है। मार्क्स के दर्शन पूर्ण क्रमबद्वता है एव वर्ग सघर्ष की भावना निहित है।

# द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectic Materialism)

मार्क्स हीगेल के द्वन्द्ववाद और फेवर बारव के भौतिकवाद से प्रेरित होने के कारण द्वन्द्वात्मक भौतिक भी कहा जाता है। द्वन्द्वात्मकता ही उनके सिद्वान्तो को वैधानिक आधार माना। मार्क्स ने पदार्थ जगत् से लेकर मानव जगत् तक परिव्याप्त देखा। इसी के आधार पर उसने अपने चरम लक्ष्य वर्गहीन समाज की कल्पना प्रस्तुत की।

---

१ लेनिन – कार्ल मार्क्स पृ स २३।

मार्क्स ने इस भौतिकवादी दर्शन मार्क्स के अनुसार बाह्यजगत्[1] और मानव चिन्तन दोनो की गति के आम नियमो का विज्ञान है।[1]

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद वह दार्शनिक प्रणाली है जो हमे आन्तरिक नियमो का ज्ञान कराती है जिनके अनुसार इस भौतिक जगत् का विकास होता है द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद दृश्य जगत् की गति के नियमो की व्याख्या करता है।[2] मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद पर हीगल का प्रभाव स्पष्ट है। मार्क्स ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद दो शब्दो से बना है पहला द्वन्द्वात्मक और दूसरा भौतिकवाद द्वन्द्वात्मक शब्द का अभिप्राय विचार विनिमय अथवा वाद-विवाद। मार्क्स के अनुसार चरम सत्ता पदार्थ (भौतिक तत्त्व) है जबकि एगेल्स भी 'ससार की वास्तविक एकता भौतिकता मे मानता है उसके अस्तित्व मे नही। सत्ता का अनिवार्य अग गति को भी मानता है। मार्क्सवाद प्रत्येक वस्तु को निरन्तर गतिशील परिवर्तनशील एव विकासशील मानता है। गतिहीन पदार्थ की कल्पना उसी प्रकार नहीं की जा सकती जैसे पदार्थ रहित गति की"[3] चूँकि पदार्थ निरन्तर गतिशील है अतएव प्रतिक्षण इसमे परिवर्तन अवश्यभावी है।

मार्क्सवाद जीवन और जगत् मे द्वन्द्वात्मक स्थिति को स्वीकार करता है। साहित्य द्वन्द्वात्मकता का प्रस्तेला है। साहित्यकार सामाजिक गतिविधियो का निरन्तर परिवर्तनशील समाज व्यवस्था का चित्रण प्रस्तुत करता है। साहित्य मे गतिशीलता और परिवर्तनशीलता का स्वरूप ही साहित्यकार को दिशा प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप तत्कालीन सामाजिक जीवन पर अमिट प्रभाव देखा जाता है।

---

**१ लेनिन – कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा – प्रगति प्रकाशन मास्को पृ स १५ पीपुल्स पब्लिशिग हाउस (प्रा ) लिमिटेड – नई दिल्ली–११००५५**

**२ आचार्य नरेन्द्र देव – राष्ट्रीयता और समाजवाद पृ ८७**

**३ एगेल्स – ऐंटीड्यूरिंग पृ ८७**

# वर्ग-सघर्ष

मार्क्सवाद वर्ग को दो भागो मे श्रमिक और पूँजीपति के अस्तित्व को स्वीकार करता है। आज उसका लक्ष्य श्रमिक क्रान्ति के द्वारा पूँजीवाद का विनाश और वर्गहीन समाज की रचना है। वर्ग सघर्ष के प्रतिपादन का श्रेय कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक ऐगिल्स को है और इनमे से भी प्रमुख रूप से कार्ल मार्क्स को। इन दोनो लेखको ने १८५६ ई मे दास कैपिटल के अन्तर्गत कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो मे उस सिद्धान्त का उल्लेख किया था।

मैकाइवर के अनुसार किसी वर्ग का अर्थ ऐसी श्रेणी अथवा प्रकार से है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति या व्यक्ति समूह आते हैं। लेनिन के अनुसार वर्ग वह चीज है जो समाज के एक भाग श्रम को हडप लेने का अधिकार बनाती है यदि समाज का एक भाग सारी भूमि हडप लेता है तो समाज मे दो वर्ग जमीदार और किसान बन जाते हैं। यदि समाज का एक तमाम मिलो कारखानो शेयरो और पूँजी पर अधिकार कर लेता है और दूसरा भाग इन कारखानो मे मजदूरी करता है तो समाज मे दो वर्ग पूँजीपति और सर्वहारा वर्ग बन जाते हैं।

मार्क्स ने कम्यूनिस्ट घोषणा पत्र मे लिखा। अभी तक आविर्भूत समस्त समाजो का इतिहास वर्ग सघर्षो का इतिहास रहा है।[१] वर्ग सघर्ष घटनाओ की चालक शक्ति है। मानव जाति के विकास का इतिहास वर्गो तथा वर्ग-सघर्ष के अस्तित्व के साथ जुडा है। अमीरो और गरीबो शोषको और शोषितो की विद्यमानता निरन्तर सघर्ष यह एक एतिहासिक तथ्य है जो दीर्घकाल तक नाना शताब्दियो के दौरान सामाजिक प्रगति की अभिन्न अभिलाक्षणिकता बना रहा।

---

**१ लेनिन – कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा पृ १७**

आधुनिक भारतीय विचारको ने भी वर्ग-सघर्ष पर अपना अभिमत प्रस्तुत किया है। डॉ सम्पूर्णानन्द जी के अनुसार प्रतिस्पर्धा के कारण ही व्यक्तियो और मनुष्यो के समूहो के जीवन बनते बिगडते रहते हैं। इस प्रतिस्पर्धा का नाम ही वर्ग-सघर्ष या वर्गयुद्ध है। मार्क्स ने वर्ग-सघर्ष का मूलाधार आर्थिक माना है किन्तु ससार मे धर्म जाति और राष्ट्रीय आधार पर भी भीषण सघर्ष हुए है जिनका कोई आर्थिक आधार नही रहा।

पूँजीवाद ने आज दुनिया मे मनुष्य के साथ मनुष्य के नग्न स्वार्थ को खुलकर खेलने का अवसर और उन्मुक्त धरातल प्रदान किया है। सर्वहारा वर्ग शोषण से मुक्त यथार्थ मानवी सम्बन्धो की स्थापना मे सक्रियता निभाता है सर्वहारा जीवन के यथार्थ स्वरूप को अकित करने के लिए साहित्यकार को शोषित वर्ग के जीवन के साथ आत्मीयता स्थापित करे।

मार्क्सवाद साहित्य को निरुद्देश्य नही मानता जैसा कि ससार के मजदूर-आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता जार्ज दिमित्रोव' ने सोवियत लेखको की एक सभा मे कहा था कविता उपन्यास आदि कलाकतियो के रूप मे तुम हमे एक तेज हथियार दो जो सघर्ष मे काम आ सके। अपनी कला से क्रान्तिकारी कर्त्ता बनाने मे मदद करो।[१] समाज के ऐतिहासिक विकास ने आज साहित्य को वर्ग-सघर्ष का शक्तिशाली हथियार बना दिया है।

समाज मे होने वाले परिवर्तन आर्थिक सामाजिक एव राजनैतिक कारणो से प्रभावित होते है। उत्पादन और वितरण की व्यवस्था मे आने वाला वैषम्य ही आर्थिक कारणो को जन्म देता है। जैसे-२ उत्पादन शक्तियो का विकास होता रहता है। उत्पादन प्रणाली मे स्वत परिवर्तन देखने को मिला। मार्क्स ने पावर्टी ऑफ

---

**१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारस नाथ मिश्र पृ ६५–६६**

फिलासफी मे लिखा है - हाथ की चक्की उस समाज का निर्माण करती है जिसमे प्रभुत्व सामन्त का होता है। भाप से चलने वाली चक्की वह समाज बनाती है जिसमे प्रभुत्व औद्योगिक पूँजीपति का होता है।

सर्वहारा वर्ग पूँजीवाद से जन्म लेकर उसी की कब्र खोदता है और उसके विनाश के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। सर्वहारा क्रान्ति मजदूर वर्ग के बल पर सम्भव है। सर्वहारा क्रान्ति की सबसे बडी विशेषता होगी। समाज की वर्गीय भावना से मुक्त करके उसके भीतर साम्यवाद का प्रसार।[१] सामन्तयुग मे शोषक सामन्त था और पूँजीवादी युग मे शोषक पूँजीपति है। सक्रमण काल मे सर्वहारा का एक मात्र उददेश्य क्रान्ति के शत्रुओ को सर्वदा के लिए समाप्त कर देना होगा जिससे उसकी सत्ता को चुनौती देने वाला कोई न रह सके। मार्क्स के अनुसार श्रमिक बुर्जुआ वर्ग के विरोध को समाप्त करने के लिए राज्य को अस्थायी रूप से क्रान्तिकारी सस्था के रूप मे स्थापित करते हैं। जिसके फलस्वरूप सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना की जा सके। सर्वहारा अधिनायकत्व मे उत्पादन के समस्त साधनो पर राज्य का अधिकार होगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार काम करना होगा और प्रत्येक श्रमिक को उसके कार्यानुसार वेतन प्राप्त होगा। वितरण की इस व्यवस्था मे मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई भेदभाव नहीं रखता है। यहीं समाजवाद का आधारशिला है। अत हम कह सकते हैं कि उत्पादन का आधार लाभ कमाने की प्रवृत्ति न होकर सामाजिक उपयोगिता होगी।

मार्क्सवाद वर्गविहीन समाज की स्थापना पर विशेष बल देता है। जब सघर्ष और वर्गीय भावना का अन्त होगा तथा समाज मे सबको समान अधिकार प्राप्त होगे

---

२ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारसनाथ मिश्र पृ ४१

और श्रम समाज की सम्पत्ति होगी। उत्पादन व्यवस्था इतनी विकसित होगी कि गॉवो और नगरो की दूरी अपने आप मिट जायेगी।

साम्यवाद (कम्यूनिज्म) - समाज मे वर्गविहीन समाज की स्थापना के फलस्वरूप साम्यवाद दृष्टिगोचर होगा जिसका आर्थिक सूत्र होगा योग्यता के अनुसार कार्य और आवश्यकता के अनुसार वेतन। [१]

मार्क्सवाद को हिन्दी मे हम साम्यवाद भी कहते हैं। कम्यूनिज्म शब्द लैटिन के कम्यूनिज शब्द से व्युत्पन्न हुआ है। कम्यूनिज्म का अर्थ परस्पर सेवा करने के लिए तत्पर रहना। [२] यही कारण है कि फ्रास के तत्कालीन उन्नत नगर स्वशासन और और राजनीतिक अधिकारो को प्राप्त करके अपने को कम्यून कहते थे। कम्यूनिज्म की परस्पर सेवा वाली ध्वनि ही कम्यूनिज्म के मूल मे काम करती रही। साम्यवादी व्यवस्था वर्गहीन समाज की राज्य के स्थान पर सार्वजनिक रूप से कार्य करेगी और राज्य मे एक वर्गीय सगठन न होकर जन सस्था का रूप धारण कर लेगा। वस्तुत राज्य का लोप तभी सम्भव है जब विश्व के सभी देश समाजवादी खेमे मे नही आ जाते।

मार्क्सवाद हर व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार आगे बढने का समान अवसर देने का पक्षपाती है। मार्क्स ने शिक्षा जगत् मे शिक्षा को अधिकारी वर्ग या रूलिग क्लास से मुक्त करने का प्रयासरत है। बच्चें युवा और वृद्धों तथा महिलाओ के अधिकार की बात कही है। सक्षिप्त मे मार्क्सवादियो द्वारा वर्गविहिनी समाज मे हर व्यक्ति को आगे बढने का समान अवसर प्राप्त होगा। अपनी योग्यतानुसार कार्य करना हर व्यक्ति का निजी उत्तरदायित्व होगा।

---

**1 'From each accordıng to hıs abılıty to each accordıng to hıs needs**

**2 Common orıgın doubtful perhaps can together and munıs ready to be of servıce oblıgıng " Englısh Dıctıonary by Annondole**

अत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मार्क्सवादी दृष्टिकोण से साम्यवाद के अन्तर्गत वर्गविहीन समाज की स्थापना ही नवीन समाजवाद का सूचक है जिसमे न कोई धनी होगा न गरीब न कोई अत्यधिक सुख के कारण भोग-विलास मे मग्न होगा और न ही कोई दरिद्र की आग मे झुलसता तडपता और रोता हुआ मिलेगा।

मार्क्सवाद मूलत एक साहित्यिक आन्दोलन नही था लेकिन सभी देशो के साहित्य पर उसका दूरगामी प्रभाव पडा है। साहित्य की भाव धारा और शिल्प विधान को भी उसने परिवर्तित कर दिया। मानव समाज के विकास को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न मार्क्स ने किया था।

मार्क्सवाद ही पहला प्रयत्न था जिसने मनुष्य समाज के विकास को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने का यत्न किया। मार्क्स ने भावुक सुधारको के समाजवादी हवाई हमलो को धुन्ध मे मिटाकर वैज्ञानिक समाजवाद की बुनियाद डाली।[१] दार्शनिको ने केवल जगत् की व्याख्या की है पर मुख्य बात है उसको बदलने की यही मार्क्सवाद का दृष्टिकोण था। मार्क्सवाद समाज मे समता लाने की एक विधि अथवा वैज्ञानिक विचारधारा है।

मार्क्स का सिद्धान्त सामान्यता द्वन्द्वात्मकता भौतिकवाद नाम से जाना जाता है। द्वन्द्वात्मकता से मार्क्स का मतलब विचारो के सघर्ष और गतिशीलता से था। भौतिकवाद शब्द का प्रयोग भी सोद्देश्य था। अपने पदार्थ की सर्वोपरिता को स्वीकारते हैं। कोई पराभौतिक शक्ति के अनुसार इस ससार की गतिविधियॉ सचालित होती है यह मत उनके लिए मजूर नही था।

मार्क्स ने जगत् के मूल मे भौतिक तत्त्व को स्वीकार कर आत्मा मन मस्तिष्क

---

१ मार्क्सवाद – यशपाल पृ स ३५

तथा विचारो को भौतिक पदार्थों से उत्पन्न स्वीकार किया। वे हेगेल के भाववादी दर्शन के विरोध मे उभरे फेवर बारव के भौतिकवाद से काफी प्रभावित थे और अपने इतिहास दर्शन को इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा कहते थे। कार्ल मार्क्स ने मानव समाज के इतिहास का आर्थिक और भौतिक दृष्टिकोण से विवेचन किया है।

वस्तुत मार्क्स ने पहली बार भौतिकवाद का इस्तेमाल सगत ढग से मनुष्य के समाज और इतिहास की व्याख्या करने के लिए किया। उन्होने कहा कि जीवन के उत्पादन की क्रिया और उस क्रिया के दौरान कायम सामाजिक बन्धन समाज की वह बुनियाद है जिस पर राज्य धर्म विचारधारा और कला की इमारत खडी होती है। यह कि मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व का निर्धारण उसकी चेतना नही करती बल्कि चेतना का निर्धारण उसका सामाजिक अस्तित्व करता है।

मार्क्स के दर्शन की एक प्रमुख प्रस्तावना ही थी भौतिकवादी या वैज्ञानिक ढग से यथार्थ के आत्मपरक व्यावहारिक पहलू की खोज। इसके अलावा उन्होने स्पष्ट रूप से कहा विचार जब जनता द्वारा ग्रहण कर लिए जाते हैं तब भौतिक शक्ति बन जाते हैं।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के दूसरे प्रतिपादक और मार्क्स के सहयोगी एगेल्स ने आज तक का सारा दर्शन भौतिकवादी और भाववाद के दो विरोधी खेमो मे बॅटा रहा है। मनुष्य द्वारा उत्पादन और सृजन के हर कर्म मे चेतना और उद्देश्य की अग्रगामी भूमिका होती है इसलिए चेतना शारीरिक श्रम के जरिए निर्मित होने का भ्रम भी पाल लेती है। कुल्हाडी की रूप-रेखा अगर लुहार के दिमाग मे मौजूद हो अगर वह कुल्हाडी का विचार जा सका हो तभी वह कुल्हाडी को वस्तुगत रूप दे

सकता है। यानि वास्तविक कुल्हाडी का निर्माण कर सकता है। लेकिन कुल्हाडी चेतना के भीतर से पैदा नहीं होती। लोहा चेतना से पहल ही प्रकति मे मौजूद होता है। जिसकी तलाश करके और उपयोगिता समझकर मनुष्य उसे अपने उपयोग की भिन्न-भिन्न वस्तुओ मे डाल सकता है। भौतिक पदार्थ का सिर्फ रूप बदला जा सकता है उसका उत्पादन नही किया जा सकता। मैं इस बात से इन्कार नही कर सकता कि मार्क्स के चालीस वर्ष तक इकटठे काम करने से पहले और बाद मे भी मैंने स्वतत्र रूप से आर्थिक सिद्धान्तो की खोज का काम किया है परन्तु हम लोगो के विचारो का अधिकाश भाग विशेषकर जहॉ अर्थशास्त्र इतिहास और क्रियात्मक व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्तो का सम्बन्ध है श्रेय मार्क्स को ही है। इसलिये इन विचारो और सिद्धान्तो का सम्बन्ध भी उसी के नाम से होना चाहिए ।[१]

मार्क्स ने मनुष्य समाज के इतिहास की घटनाओ को कार्यकारण की श्रृखला मे जोड दिया। मार्क्स का कहना था कि प्रकति की तरह मनुष्य समाज के विकास और परिवर्तन के भी नियम है उसी नियम का आधार मानते हुए उपन्यासकार यशपाल ने अपने उपन्यासो मे मार्क्सवाद के सारभूत तत्त्व को पहचानकर अपनी लेखनीय के माध्यम से आधुनिक जीवन मूल्यता को सदर्भित किया है।

मार्क्स और एगेल्स ने अपने दर्शन को औद्योगिक मजदूर वर्ग का विश्व दृष्टिकोण कहा जो आज तक का सबस सगठित प्रौद्योगिकी के सबसे उन्नत औजारो से लैस और सबसे क्रान्तिकारी वर्ग है। वर्ग चेतनायुक्त श्रमिक वर्ग सामाजिक परिवर्तन के लिए क्रान्ति मचाता है। तदन्नतर होने वाले युग दो भागो मे विभाजित रहेगे समाजवादी युग और साम्यवादी युग। साम्यवादी युग मे ऐतिहासिक भौतिकवाद के अनुसार वर्गों का पूरा सत्यानाश नही समता का सूर्योदय होगा

---

**१ मार्क्सवाद – यशपाल पृ स ३५**

जिसका प्रथम चरण समाजवादी व्यवस्था है।

मार्क्सवाद एक प्रकार का नया और वैज्ञानिक मानववाद है जिसे राजनीति और अर्थशास्त्र के क्षेत्र मे द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद और समाजशास्त्र तथा इतिहास के क्षेत्र मे ऐतिहासिक वस्तुवाद कहा जाता है। बेवर के शब्दो मे मार्क्सवाद केवल श्रमिक वर्ग ही बुलन्द आवाज नही है यह वर्तमान समाज के प्रभावो तथा जटिलताओ को निश्चित रूप से समझने की वृहद् प्रणाली है क्रान्तिकारी परिस्थितियो तथा समाज से सम्बन्धित विविध रूपो का अध्ययन करना ही इसका उद्देश्य है।

मार्क्सवादी दर्शन मे पूर्ण क्रमबद्धता है और इस क्रमबद्धता का कारण है उसकी क्रान्तिकारी प्रभावात्मकता क्योकि इसका आधार वर्ग सघर्ष का सिद्धान्त है। जार्ज कैटलीन के अनुसार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद आध्यात्म पर अधारित है। मार्क्सवाद के दर्शन भौतिकवाद अनात्मवाद और निरीश्वरवाद से आशकित होते हैं। मार्क्सवाद इस प्रकार के दो तरगे ढग को अवैज्ञानिक समझता है। आध्यात्मवादी आत्मा को चेतना और बुद्धि से पृथक वस्तु मानते हैं परन्तु विनाश की खोज मे चेतना और बुद्धि से परे कोई वस्तु नहीं है। मार्क्सवाद आत्मा के विश्वास को केवल मानसिक अभ्यास या सस्कार समझते हैं। मार्क्सवाद की नजर मे आत्मा-परमात्मा भूत-प्रेत आदि काल्पनिक वस्तुओ की तरह केवल विश्वास की वस्तु है। आत्मा-परमात्मा पर विश्वास रखने से मनुष्य अपने सामने एक महान और उच्च आदर्श को रखकर महान शक्ति का आश्रय पाकर विकास कर सकता है। मार्क्सवाद कहता है कि जो शक्ति वास्तव मे है ही नही वह मनुष्य को किस प्रकार ऊँचा उठा सकती है और आश्रय दे सकती है। मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार धर्म कर्तव्य और न्याय परिस्थितियो के अनुसार बदलते रहते हैं। मार्क्सवाद मनुष्य के की उन्नति की कोई

सीमा स्वीकार नही करता और न ही किसी लक्ष्य को अतिम आदर्श स्वीकार करता है। वह विश्वास करता है मनुष्य आर उसका समाज उन्नति कर जिस अवस्था को पहुँच जाता है वहीं से आगे उन्नति का एक नया मार्ग शुरू हो जाता है। मार्क्सवाद गहरे परिवर्तन को ही नाश और उत्पत्ति के रूप मानता है और प्रकति के किसी भी अश को परिवर्तन और विकास के नियम से मुक्त नही मानता।

मार्टिन्डेल ने सूत्र रूप मे मार्क्सवाद की व्याख्या करते हुए लिखा है कि - मार्कसिज्म रिप्रजेन्टस ए फार्म आव कान्फिलिक्ट आइडियोलाजी डवलप्ड इन दि नेम आव दि प्रोलेटेरिएट । मार्क्स ने [1] सामाजिक जीवन एव मानव इतिहास की प्रत्येक घटना को वैज्ञानिक एव क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से परखा। मार्क्स के दर्शन को विश्लेषित करते हुए जार्ज कैटलिन ने लिखा है कि दि मार्निसगन फिलासफी इज ए कोइरेन्ट होल। इज मारिसम विकास रिवोलूशनरी ऐक्शन इज बिल्ट अपान क्लास वार थियरी दि क्लास वार अपान दि एकोनामिक थियरी आव सरप्लस वैल्यु दिस एकोनामिक थियरी अपान दि एकोनामिक इन्टरप्रेटेशन आव हिस्ट्री दिस इन्टरप्रेटेशन अपान दि मार्क्स-हिगोलियन लाजिक आर डाइलेक्टिक्स एण्ड दिस अपान का मैटेरियलिस्टिस मेटाफिजिक्स।

मार्क्सवादी सिद्धान्त भौतिक तत्त्वो पर आधारित है। अत उसे वैज्ञानिक भौतिकवाद की सज्ञा से अभिहित किया गया। मार्क्स ने इस ससार को परिवर्तित करने के लिए समाजवादी दर्शन को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। मारिस कार्नफोर्थ ने लिखा है कि भौतिकवाद का अर्थ है ऐसा दृष्टिकोण जो भौतिक जगत् की हर वस्तु की जिसमे मानव जीवन की सभी घटनाए शामिल है व्याख्या स्वय भौतिक तत्त्वो के आधार पर करता है। [2] मार्क्स ने व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक क्षेत्र

---

**१ दि नेचर एण्ड टाइम्स ऑफ सोसियोलाजीकल थियरी – मार्टिन्डेल पृ १६२**

**२ प्रगतिवादी समीक्षा – राम प्रसाद द्विवेदी पृ १८**

मे कल्पना की उड़ाने भरने की बजाय जीवन की यथार्थ आवश्यकताओ के आधार पर सोचने के लिए विवश किया। उसके अनुसार- जगत् के मूल मे भौतिकतत्त्व ही वह विजय है जो विश्व की चरम सजा है। मार्क्स का भू-तत्त्व ही सबका जनक है चेतना उसी से अविर्भूत हुई प्रतिदिन के अनुभव का ससार ही सच्चा ससार है ब्रह्म का या आत्मा का हमारे लिए कोई महत्त्व नही है इसके विपरीत भौतिक पदार्थ जैसे मिटटी पत्थर रक्त मास मज्जा आदि को हम प्रत्यक्ष देखते ही अनुभव करते हैं। अत वे हमारे लिए सत्य एव अतिम है।[१]

मार्क्सवाद मात्र कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तो का सग्रह ही नही है अपितु समाज मे उसका एक गतिशील स्वरूप रहा है इस सम्बन्ध मे एमिल बर्न्स का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि जैसे-जैसे इतिहास की नई-नई तहे खुलती जाती है जैसे-जैसे मनुष्य और अनुभवयुक्त होता जाता है वैसे-वैसे मार्क्सवाद का भी अनवरत[२] विकास किया जा रहा है तथा उसे नये-नये तथ्यो पर लागू किया जा रहा है जो अब प्रकाश मे आते जा रहे है।[२]

मार्क्सवाद विश्व की कम्युनिस्ट पार्टियों का वह घोषित सिद्धान्त है जिसके आधार पर वह अपनी राजनीति आर्थिक सास्कृतिक योजनाओ को निर्मित कर सर्वहारा क्रान्ति की सफलता के उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करती है।[3]

डॉ राम किशन सैनी के अनुसार मार्क्सवादी चितन एक राजनीति अथवा श्रमिक क्रान्ति का कार्यक्रम मात्र नही है अपितु यह एक सर्वव्यापी दृष्टि है। मार्क्सवाद अपने कार्यक्रम मे एक व्यक्ति को नही बल्कि समाज के सब व्यक्तियो के हित को महत्त्व देता है।[४] इसलिए मार्क्सवाद मे स्वार्थ का अभिप्राय केवल

---

**१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारसनाथ मिश्र लोक भारती प्रकाशन**
**२ एमिल बर्न्स मार्क्सवाद क्या है ? – ओम प्रकाश सगल पृ स ५**
**३ आधुनिक हिन्दी साहित्य की विचारधारा पर पाश्चात्य प्रभाव – डॉ हरिकृष्णा पुरोहित पृ २७८**
**४ आधुनिक मार्क्सवाद – यशपाल। पृ ४८**

व्यक्तिगत नहीं बल्कि श्रेणी या समाज के हित से होता है और समाज के लिए निजी स्वार्थ का बलिदान बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता है और समाज को हानि पहुँचाकर सकीर्ण स्वार्थ साधने की चेष्टा सामाजिक दृष्टि से अदूरदर्शिता और मूर्खता है।

मार्क्सवाद के अनुसार आर्थिक उद्देश्य से किये जाने वाले प्रयत्न समाज के सगठन विचारो और शासन का रूप निश्चित करते हैं। पूँजीवादी प्रणाली या प्राचीन विचारो मे विश्वास रखने वाले अनेक लोग ऐतिहासिक आर्थिक दृष्टिकोण को समाज के विकास और इतिहास का आधार मानने मे एतराज करते हैं। उनका कहना है आर्थिक और भौतिक परिस्थितियो को ही मनुष्यो के सब कार्यो का आधार मान लेने से मनुष्य के स्वतत्रतापूर्वक अपने भरोसे पर काम करने का अवसर कही नही रह जाता।

मार्क्सवाद आर्थिक परिस्थितियो को भाग्य की बात नहीं समझता। आर्थिक परिस्थितियो के कारण पैदा हो जाने वाली अडचनो को दूर करने के लिए मनुष्य जो विचार और कार्य करता है मार्क्सवादी उन्हे भी आर्थिक परिस्थितियो का ही अग समझते हैं।

मार्क्स ने श्रम की महत्ता पर विशेष बल देते हुए कहा कि जो अलगाव श्रमिक वर्ग के लिए एक क्रिया है वही शासक वर्ग के लिए जीवन की अवस्था होता है। वस्तुत कर्म की परतत्रता सारे मानव ससार की परतत्रता है।

पूँजीवादी समाज मे अलगाव और अजनबीपन सार्वभौम हो गया है। मार्क्स यह जरूर मानते थे कि मनुष्य परम स्वतत्र नहीं है और हर पीढी अपने से पहले की

---

पीढी से प्राप्त सामाजिक आर्थिक राजनीति धार्मिक एव सास्कतिक ढाचे के आधार पर ही काम शुरू करती है और उसमे कुछ और जोडती है। वस्तुत मानवता का इतिहास श्रम तकनीक और सामाजिक सम्बन्धो के निरन्तर विकास का इतिहास है।

श्रम की महत्ता का प्रतिपादन लेनिन के शब्दो मे जो काम नही करते उन्हे अगर मताधिकार से वचित कर दिया जाए तो सच्ची समानता होगी जो काम नही करे वो खाये भी नहीं ।[१]

मनुष्य को श्रम करना चाहिए ताकि वो जीवित रह सके ट्राटस्की का नारा था। मार्क्स ने दुनिया को बदलने का आह्वान किया उन्होने श्रम के द्वारा बाह्य और आन्तरिक प्राकतिक को बदलने और अनिवार्यता पर काबू पाने मे ही स्वतत्रता देखी उनकी दृष्टि मे वे कर्म और जीवन से मुक्ति नहीं बल्कि कर्म और जीवन से मुक्ति चाहते थे। इन्होने कर्म को जीवन का सार भौतिकवादी दृष्टिकोण से माना जो जीवन के लिए उत्पादन का कर्म ही सारे मानवीय क्रिया कलापो का प्राथमिक और बुनियादी रूप था। श्रम प्रक्रिया ही मनुष्य को अन्य पशुओ से अलग करती है क्योकि घोसला या छज्जा बनाने जैसे जटिल कर्म भी पशु सहज प्रवृत्ति के आधार पर करते हैं जबकि मनुष्य का सारा रचना कर्म एक निश्चित अवधारणा और योजना की मॉग करता है। जिस प्रकार जगलो की जगह खेत और मिटटी से मकान बना दिये गये है। इसके अलावा आन्तरिक प्रकृति को भी बदल दिया है श्रम ही मनुष्य का जीवन और उसकी स्वतन्त्रता की आधारशिला है आज की स्थिति मे पूँजीवाद है तो श्रम प्रतिवाद और इनके सघर्षों से एक नवीन सामाजिक व्यवस्था 'समाजवाद का अभ्युदय होगा ऐसा मार्क्स ने कहा है।

---

**१ लेनिन सोवियत सत्ता क्या है ? — प्रगति प्रकासन मास्को सस्करण सन् १९६७ ई पृ २६**

मनुष्य के विकास के लिए समाजवादी व्यवस्था मे प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति और विकास के लिए समान अवसर प्राप्त होगा और प्रत्येक व्यक्ति को अपने श्रम का पूरा प्रतिफल मिलेगा। समष्टिवाद या कम्युनिज्म मे प्रत्येक मनुष्य अपनी सामर्थ्य भर मेहनत करके अपनी आवश्यकतानुसार पदार्थ प्राप्त कर सकेगा।

मार्क्सवाद के अनुसार तर्क और सिद्धान्त रूप से मध्यम श्रेणी जैसे किसी स्तर का बने रहना सम्भव नहीं परन्तु जीवन की अवस्था के दृष्टिकोण से एक ऐसा स्तर समाज के बुद्धिजीवी लोगो का है जो पैदावार के साधनो से हीन है जो अपनी श्रम शक्ति बेचकर ही जीविका पाते हैं परन्तु उनका श्रम बुद्धि का या कलम चलाने का है हथौडा या हॅसियॉ चलाने का नहीं।[१]

उपर्युक्त कथन मध्यवर्गीय लोगो के अन्तर्गत आता है जो विवशता के दोहरे पाटो के रूपो मे पिसते रहते हैं।

मार्क्सवादी विचारधारा यूरोप के पश्चिम देशो तक सीमित थी परन्तु सोवियत सघ की स्थापना विश्व इतिहास की ऐसी घटना थी जिसने समस्त ससार को मार्क्सवाद की ओर आकर्षित किया।

कला के क्षेत्र मे मार्क्सवाद की कितनी भी कमजोरियॉ क्यो न हो यह बात अवश्य मानना पडता है कि साहित्य को इसने जनवादी बना दिया है। साहित्य को मार्क्सवाद एक प्रकार से बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की दृष्टि से देखता है।

मार्क्सवादी विचारधारा की प्रवृत्तियो मे मुख्यत क्रान्ति मच चेतना शोषित दलितो के प्रति सहानुभूति वर्ग वैषम्य और वर्ग सघर्ष की प्रवृत्ति और शोषण के विरुद्ध हिसा की अभिस्वीकति उपनिवेशवादी विरोध कला जीवन के लिए सिद्धान्त

---

**१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारस नाथ मिश्र पृ १५६**

का समर्थन जनशक्ति मे आस्था श्रम की महत्ता का प्रतिपादन समर्वितरण का सिद्धान्त एव राज्य सजा का लोभ एव आदर्श साम्यवादी की परिकल्पना सभी गुण विद्यमान है।

मार्क्सवाद की मूलभूत यही चिन्तन धारा जब हमारे देश मे स्वीकृति हुई तो उसमे यहॉ की स्थिति के अनुकूल कुछ भी परिवर्तन न कर ज्यो का त्यो ग्रहण कर लिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्थितियाँ मार्क्सवादी देशो के समान थी उनके साथ तो ये मेल खायी किन्तु कुछ स्थितियॉ जो उनसे भिन्न थी उनके लिए यह विचारधारा अनुकूल नही पडी फिर भी उसका समाजवादी दृष्टिकोण सर्वग्रास सिद्ध हुआ। यही कारण है कि हमारे देश का गणतत्र शासन का वही मूल आधार बना जिसे स्वतत्रता पूर्व हमारे देश के क्रान्तिकारियो ने अपना एक मात्र उद्देश्य घोषित किया था।

मार्क्सवादी दर्शन का मूल उद्देश्य वर्गहीन समाज की प्रतिस्थापना है जिसमे जॉति पॉति धर्म श्रेणी आदि मनुष्य के विकास मे बाधक नहीं हो। व्यक्ति की कार्यक्षमता ही उसके स्तर का मापदण्ड हो। धर्म के स्थान पर कर्म की प्रधानता हो। शोषक और शोषित नाम के वर्गो का उन्मूलन कर वह समानता के स्तर पर सामाजिक नियमो को स्वीकार करता है। देश का उपार्जन श्रम और पूँजी की समान महत्ता के द्वारा सबके उपयोग की वस्तु है। इस प्रकार इस विचार के अनुसार हर व्यक्ति की आगे-बढने का समान अधिकार है और कोई व्यक्ति किसी की उन्नति मे बाधक नही बन सकता।

यही मार्क्सवाद की विचारधारा का मूल तत्र है जिसको आधार मानते हुए उपन्यासकार यशपाल ने जीवन मूल्यो विचारो सिद्धान्तो को अपने मार्क्सवादी

दृष्टिकोण द्वारा जैसे उपन्यास-दादा कामरेड देशद्रोही मनुष्य के रूप झूठा-सच आदि उपन्यासो मे सर्वग्राही रूप से अभिव्यक्त करने का पुरजोर रूप से प्रयास किया है एव राजनीतिक सामाजिक एव आर्थिक क्षेत्रो मे भी मार्क्सवादी दर्शन को रूपायित किया है।

## ख मार्क्सवादी परिवेश और यशपाल

उपन्यासकार यशपाल की जीवन दृष्टि मार्क्सवादी चिन्तन से अनुप्राप्ति है। मार्क्सवाद समाज मे समता लाने की एक विधि अथवा वैज्ञानिक विचारधारा है। यशपाल ने इससे अपना घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया है "मैं कम्युनिज्म को सर्वधारण जनता की मुक्ति का साधन वैज्ञानिक विचारधारा समझता हूँ, अपनी सम्पूर्ण शक्ति को उस वाद के प्रति देय स्वीकार करने मे मुझे कोई सकोच नही है।[१]

यशपाल की दृष्टि मे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ही मार्क्सवाद के लिए पर्याप्त है क्योकि वह विचार की एक पद्धति है जो समय और स्थान विशेष मे स्वीकत मान्यताओ की सीमाओ से जकडी हुई नहीं है। वह हमारे नित्य बढते ज्ञान अनुभव के आधार पर परिस्थितियो और सामयिक आवश्यकताओ के अनुसार चिन्तन की प्रेरणा है।[२] यशपाल के इस विचार की पुष्टि मार्क्स की पुस्तक से होती है। यशपाल ऐसे ही उपन्यासकार है जिन पर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव पडा था अपने उपन्यासो मे यशपाल ने सामाजिक यथार्थवाद की अभिव्यक्ति भी दी। सामाजिक यथार्थवाद का मुख्य उद्देश्य पूँजीवाद के नाश और वर्गविहीन समाज की स्थापना मे योग देना है। पाठको पर भी इस विचारधारा का गहरा प्रभाव पडा और उपन्यासो

---

१ देखा सोचा समझा – यशपाल पृ स ११३।
२ धर्मयुग २८ अगस्त १९६६ ई पृ सं ८६

मे भी इसी विचारधारा को खोजने लगे। प्रकाश सक्सेना ने यशपाल के उपन्यासो पर टिप्पणी करते हुये लिखा था यशपाल के उपन्यासो की मुख्य विशेषता उनका तीखा और चुभता हुआ व्यग है प्रेमचन्द का व्यग भी काफी जोरदार से होता है अपने उपन्यासो और कहानियो मे उन्होने धर्म पर सामाजिक कुरीतियो पर मिथ्या विश्वासो पर निर्भर चोटे की हैं परन्तु यशपाल का व्यग उससे भी अधिक कटु और छिदता हुआ है। हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द से मिले व्यगास्त्र को यशपाल ने अपने उपन्यासो मे और अधिक तेज और नुकीला किया है। ऐसे उपन्यासकार यदि भविष्य मे भी हिन्दी का मिलते रहे तो कोई शक नहीं है कि हिन्दी सरलता से विश्व उपन्यास मे अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना सकेगी। इस सजग कलाकार ने हिन्दी कथा साहित्य को बहुत योग बढाया है और अभी तक उसको अबोध गति मे कोई विराम चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं होता है।

यशपाल नारी स्वतत्रता के पक्षधर है वे नारी की समस्या के मूल मे उसकी आर्थिक परतत्रता को स्वीकारते हैं उन्होने विवाह और परिवार के सम्बन्ध मे भी अपनी कृतियो के माध्यम से मार्क्सवादी विचारधाराओ को मूर्तरूप देने का प्रयत्न किया है। यशपाल का आग्रह प्रेम विवाह और परिवार के प्रति इतना प्रबल है कि उनके औपन्यासिक पात्र प्रवृत्ति से विवाह विरोधी है। वे जानबूझकर या अनजाने मे विवाह से कतराते हैं और यदि वैवाहिक बन्धन मे पड जाते हैं तो उसे तोड फेकने के लिए छटपटाते हैं। यशपाल के उपन्यास साहित्य मे अनैतिक मूल्यो सामाजिक व्यवस्थाओ का विरोध मिलता है जो स्वस्थ समाज के विकास मे बाधक है। भारत मे क्रान्तिकारी स्वतत्रता आन्दोलन का चित्रण किया है जो एक द्रष्टा और सहयोगी के चरित्र का अकन भी करता है।

---

यशपाल मे मार्क्सवादी विचारधारा फ्रायड की कामशक्ति से मिलकर चलती है वे पूँजीवादी और गॉधीवाद का विरोध करते हुए समाजवाद का समर्थन करते हैं। वे प्रेम को कामेच्छा मात्र मानते हैं इस सन्दर्भ मे यशपाल के उपन्यास दादा कामरेड (१६४१) पार्टी कामरेड (१६४६) मनुष्य के रूप (१६४६ आदि उल्लेखनीय है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार नाश मे भी सृजन होता है। इसका समर्थन राजेन्द्र यादव ने नाश को ही शिव मान कर किया है हमे उसके साथ नाचना है वह शिव है हम प्रेत है।

यशपाल के उपन्यासो मे सामाजिक पीठिका से जिन पात्रो का उदय हुआ है। उनके माध्यम से लेखक ने सामाजिक रूढियो एव परम्परागत मान्यताओ मे जकडे और घुटन की शिकार पात्रो को प्रस्तुत किया है। इन्हीं सामाजिक पात्रो मे कुछ ऐसे भी पात्र है जो एक ओर सामाजिक रूढियो के बन्धन के कारण अनेक प्रकार की विवशताऍ अनुभव करते हैं और दूसरी ओर उन्हे तोडकर नये जीवन मूल्य की भी स्थापना करते हैं। जैसे झूठासच उपन्यास मे लेखक ने देश विभाजन के अवसर पर अनेक पात्रो को धार्मिक एव साम्प्रदायिक उन्माद के कारण अमानवीय भूमिका निभाते हुए दिखाया है।

राजनैतिक सामाजिक उपन्यासो के अतिरिक्त यशपाल ने ऐतिहासिक एव पौराणिक उपन्यासो की भी सृजना की है। जो इतिहास पुराण न होकर इतिहासिक पौराणिक कल्पना मात्र है। मार्क्सवाद हमारे युग क्रान्ति दर्शन है जिसमे सामाजिक क्रान्ति के लिए वर्ग सघर्ष की भावना दृष्टिगत होती है आधुनिक युग मे यदि प्रगतिशील शक्तियॉ सामाजिक क्रान्ति की ओर उन्मुख हो रही है तो समाज मे व्याप्त विभिन्न प्रक्रियावादी शक्तियॉ उन्हे रोकने के प्रयास मे लगी हुई है।

---

सामाजिक विषमता आर्थिक शोषण को दूर करने के लिए प्रतिक्रियावादी शक्तियो की पराजय आवश्यक है। यशपाल जी अपने उपन्यासो मे इन शक्तियो की परस्पर सघर्ष को चित्रित किया है जो आधुनिक परिवेश मे प्रगतिशीलता का सूचक है।

यशपाल के अनुसार समाजवाद या मनुष्यत्व का आधार विज्ञान द्वारा निर्मित कल-मशीने मनुष्य की सभ्यता का विकास करती है। यदि मनुष्य समाज का विकास नही करेगा तो उसका विनाश और पतन निश्चित होने लगेगा। मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य बढना ही सामाजिक रूप से उसका विकास है। ये विज्ञान की बढती हुई शक्ति पर ही निर्भर है। यशपाल का कहना है कि  यदि गॉधीवाद इसका विरोध करता है या इसे विनाशी सभ्यता का प्रतीक मानता है तो वह पूॅजीवादी प्रणाली या व्यवस्था का ही समर्थन करता है।

यशपाल का विचार है कि  घरेलू उद्योग धन्धे पैदावार को वैयक्तिक ढग से करने का तरीका है और वह सामन्तवादी प्रणाली का अवशेष है। इस ढग से अडना समाज को पुरानी व्यवस्था मे बॉधे रखने का बहाना है। [१]

मार्क्सवाद समाज के लिए ऐसे शासन व्यवस्था को आदर्श समझता है जिसमे किसी भी श्रेणी या वर्ग का शोषण न हो सके। अपने इसी विचारो की अभिव्यक्ति उन्होने अपनी प्रथम उपन्यास दादा कामरेड मे की उपन्यास का नायक हरीश पूॅजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष करते हुए समाजवादी समाज व्यवस्था के निर्माण के लिए प्रयत्नशील दिखायी देता है। अपने जनवादी विचारो के कारण वह जीवन के सभी क्षेत्रो मे क्रान्तिकर दकियानूसी विश्वासो गलत रूढियो जर्जर मान्यताओ को उखाड फेकना चाहता है समाजवादी लक्ष्यो के प्रति वह इस हद तक समर्पित है कि राह मे आने वाली किसी भी बाधा की रचमात्र परवाह नही करता।

**१ गाधीवाद की शव परीक्षा – यशपाल पृ स ६०**

मार्क्सवादी दर्शन के अन्तर्गत समाज दो वर्गो मे बाटा गया है-जिसमे पहले वर्ग पूँजीपति और दूसरा वर्ग मजदूर या सर्वहारा वर्ग। इन्ही दो वर्गो को सघर्ष से समाज के निरन्तर विकास की प्रक्रिया को आधार माना गया है। मार्क्स ने विश्व मच पर मजदूर वर्ग के लिए एक नारा दुनिया के मजदूर एक हो सगठित हो। दिया था इसी को आधार मानते हुए यशपाल ने दादा कामरेड मे मजदूर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए हरीश के शब्दो मे कहा - मजदूर भाइयो यह मिले तुम्हारी और तुम्हारे भाइयो के मेहनत से बनी है। तुम्हारे बिना यह मिले एक सेकेण्ड भी नही चल सकती। इसमे धागे का एक तार भी तैयार नही हो सकता तुम्हारी मेहनत की कमायी से मिलो के मालिक और हिस्सेदार बैठे-बैठे ससार के सब सुख लूटते है मजदूर भाइयो ! हम सूखी रोटी के निवाले मॉग रहे हैं और मालिक लोग अपने एशो-इशरत के लिए सिद्ध कर रहे हैं हम मर जायेगे किन्तु पीछे नही हटेगे।[१]

इस प्रसग मे मजदूर वर्ग या श्रमिक वर्ग को सगठित होने का आहवाहन यशपाल ने मार्क्स के दर्शन से प्रभावित होकर किया है।

मार्क्स ने समाज के विकास क्रम मे मूलभूत विपत्तियॉ प्रभावित कर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद पर आधारित व्यवस्था को आदिकाल से आधुनिक काल तक सामाजिक विकास को अपने उपन्यासो मे यशपाल ने निक्षेपित किया है। वर्ग सघर्ष की भावना को मार्क्स ने अपने दर्शन मे उठाया जिसमे शोषक वर्ग के अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध शोषित वर्ग सदा सघर्ष करता है और शोषक वर्ग उतनी ही निर्ममता के साथ इसका दमन भी करता है मार्क्स ने इसी को वर्ग सघर्ष का नाम दिया। वर्ग-सघर्ष जब अत्यन्त तीव्र ओ उठता है तो समाज मे आकस्मिक परिवर्तन हो जाता है जो क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। क्रान्ति का मूल लक्ष्य होता है

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृ स ११६

पतनोन्मुख रुग्ण प्रतिगामी शक्तियो के हाथ से स्वस्थ प्रगतिशील शक्तियो के हाथ मे सत्ता का सक्रमण। इस प्रकार मार्क्सवाद के अनुसार क्रान्ति विध्वसात्मक न होकर निर्माणात्मक होती है।

यशपाल मार्क्सवादी जीवन दर्शन मे विश्वास रखने वाले कलाकार है। यशपाल का साहित्यकार-कम्युनिज्म की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारधारा का अनुमोदन करता है। उन्होने यह स्पष्ट स्वीकार किया है मैं सर्वसाधारण जनता को शोषित और अन्याय पीडित समझता हूँ इस अन्याय से जनता की मुक्ति का उपाय कम्युनिज्म भी द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारधारा की मानता हूँ। [१]

इस प्रकार यशपाल का लक्ष्य पीडित और दलित मानवता के उद्धार के लिए परिस्थितियॉ उत्पन्न करना है। इनसे उपन्यास डायलेक्टिस वर्ग सघर्ष और सर्वधारा वर्ग की क्रान्ति की आधारभूमि पर खडे दिखलाये पडते हैं। उनके उपन्यासो मे पूँजीवादी समाजवादी समाज व्यवस्था के परम्परागत नैतिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह का भाव जागृत होता है। उनके प्रत्येक उपन्यास मे प्रतिक्रियावादी और प्रगतिशील नारी पात्रो के बीच सघर्ष दिखलायी पडता है। यशपाल ने "मनुष्य के भौतिक परिवेश अथवा आर्थिक सामाजिक परिस्थितियो की ही विचार परिवर्तन एव जीवन मूल्यो मे परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण कारण माना है और साहित्य कला सस्कति धर्म न्याय एव नीति आदि को उस पर आश्रित बताया है।[२]

सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तनशील महत्त्वपूर्ण कारणो मे धर्म और नीति का भी यशपाल साहित्य मे विशेष स्थान है। जो उनके उपन्यासो के माध्यम से पात्रो मे सर्वत्र दिखलायी पडता है।

---

१ देखा सोचा और समझा – यशपाल पृ स ८

२ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारस नाथ मिश्र पृ ११४

मार्क्स के अनुसार धर्म यथार्थ का विकत अथवा काल्पनिक प्रतिबिम्ब मात्र है। हर प्रकार का धर्म मनुष्यो के मस्तिष्क मे उन बाह्य शक्तियो के काल्पनिक प्रतिबिम्ब के सिवा और कुछ नहीं होता जो उनसे दैनिक जीवन को नियत्रित करती है ऐसा प्रतिबिम्ब जिसमे लौकिक शक्तियॉ अलौकिक शक्तियो का रूप धारण कर लेती है।[१] All religion, nowever is nothing but the fantastic reflection in men s minds of those external forces which control their daily life a reflec tion in which the therrestrial forces assume the form of supernatural forces

इसलिए मार्क्सवाद के अनुसार उन सब प्राचीन मान्यताओ जादू-टोने का भी अन्त होना अनिवार्य है। मुक्त समाज मे धार्मिक उपासना के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। क्योकि उसका प्रत्येक सदस्य उस आदिम कालीन बचकाने अन्धविश्वास से मुक्त हो चुका है कि प्रकृति के पीछे अथवा उससे ऊपर कोई प्राणी है जिन्हे बलि चढा के या प्रार्थनाओ के द्वारा खुश किया जा सकता है। वस्तुत समाजवादी व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि वह धार्मिक जादू-टोने के तमाम तामझाम का और उसके साथ-साथ धार्मिक उपासना के समस्त आवश्यक तत्त्वो का अन्त कर दे।[२]

यशपाल ने इसी दृष्टिकोण से अनेक कहानियो की सृष्टि की जैसे - तूफान का दैत्य जादू के चावल अग्रेज का घुघरूँ आदि मे जादू-टोनो की निष्फलता और अधविश्वासो का भण्डा-फोड किया गया है। इसी तरह यशपाल ने भी धार्मिक अन्धविश्वास की भरसक निन्दा की है। यशपाल की दृष्टि मे जीवन का लक्ष्य इहलौकिक न मानकर आध्यात्मिक या पारलौकिक मान लेना सामाजिक समस्याओ

---

**1 Engels Anti Duhring, 1959 P 435 Quoted From V Afanasyev Marxit Philosophy P 370**

**२ मार्क्स और एगिल्स धर्म ड्यूरिंग मत से खण्डन – एंगिल्स से उद्धृत पृ स १६३–१६४।**

और रूढियो को बढावा देना ही है। मार्क्सवाद के अनुसार धर्म कर्त्तव्य और न्याय परिस्थितियो के अनुसार मनुष्य के जीवन मे बदलते रहते हैं। परन्तु अध्यात्मवादियो के विचार मे आत्मा-परमात्मा कभी नहीं बदलते इसलिए परिवर्तन के मार्ग पर चलते हुए समाज को परिवर्तन आशकित करने वाली आध्यात्मिकता सदा पीछे की ओर घसीटती है। जबकि मार्क्सवाद यह सिद्ध करता है कि धर्म विश्वास ने सदा ही नवीन विचारो का विरोध कर सदैव प्राचीन व्यवस्था विश्वास और पद्धति की ही सहायता की है। मार्क्स के अनुसार धर्म उत्पीडित प्राणी की आह है एक हृदय हीन दुनिया का एक हृदय है उसी तरह जिस तरह की आत्माविहीन स्थिति की वह आत्मा है वह जनता की अफीम है जनता के मिथ्या सुख के रूप मे धर्म का उन्मूलन करना उसके वास्तविक सुख के लिए आवश्यक है।[१]

उपन्यासकार यशपाल का धार्मिक दृष्टिकोण मार्क्स के अनुसार यही है। यशपाल की व्याख्या के अनुसार आध्यात्मवादियो का कहना है कि आत्मा-परमात्मा मे विश्वास रखने से मनुष्य अपने एक महान और ऊँचे आदर्श को रखकर महान शक्ति का आश्रय पा सकता है। जबकि मार्क्सवाद कहता है जो शक्ति वास्तव मे है ही नहीं वह मनुष्य को किस प्रकार ऊँचा उठा सकती है और आश्रय दे सकती है। उससे मिलने वाला आश्रय केवल मिथ्या विश्वास होगा।[२]

इस प्रकार धर्म परक और नीति परक सिद्धान्तो के आधार पर मार्क्सवादी परिवेश में उपन्यासकार यशपाल ने अपनी सशक्त लेखनी द्वारा समाजवादी व्यवस्था के भौतिक (आध्यात्मवादी) दृष्टिकोणो पर अपने विचारो की विशद् व्याख्या विभिन्न उपन्यासो जैसे दादा कामरेड देशद्रोही पार्टी कामरेड झूठा सच आदि उपन्यासो मे द्रष्टव्य किया है।

---

धर्म मार्क्स – एंजिल्स पृ स ५१

२ यशपाल व्यक्तित्व और कतित्व – डॉ सरोज गुप्त पृ ६७

मार्क्सवाद के अनुसार मनुष्य के जीवन में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान आर्थिक भी है दूसरे रूप मे यह हम कह सकते हैं कि समाज के इतिहास का आधार आर्थिक है जो मार्क्सवाद के आर्थिक नीव पर कायम रहता है। इसका ये अर्थ नही कि मनुष्य जो कुछ करता है वह धन या द्रव्य की प्राप्ति के उद्देश्य से ही करता है। अर्थ ही समाज के व्यक्तियो के पारस्परिक सम्बन्धो की बुनियाद है। आर्थिक स्थितियो मे परिवर्तन सामाजिक सम्बन्धो मे अनिवार्य रूप से लाता है। मार्क्स के अनुसार - भाई-भाई का पति-पत्नी का बाप-बेटे का राष्ट्र-राष्ट्र का सम्बन्ध अर्थ के ही आधार पर बनता बिगडता है। [१]

तात्पर्य यह है कि सारे सामाजिक सम्बन्ध अर्थ की ही आधारशिला पर ही अवस्थित है। जब की मार्क्सवाद आर्थिक परिस्थितियो को भाग्य की बात नही समझता। आर्थिक परिस्थितियो के कारण पैदा हो जाने वाली अडचनो को दूर करने के लिए मनुष्य जो विचार और कार्य करता है मार्क्सवादी उन्हे भी आर्थिक परिस्थितियो का ही अग समझते है। मार्क्सवादी यशपाल को भी सभी मान्यताएँ मार्क्सवाद की मान्य है। यशपाल के उपन्यासो मे सामाजिक सम्बन्धो का जो विश्लेषण दिखलायी देता है वह उपर्युक्त बातो की पुष्टि करता है। जैसे मनुष्य के रूप की सीमा मनोरमा झूठा-सच का जयदव पुरी आदि का जीवन व्यक्तिगत स्तर पर एक और दासो सामन्तो मजदूरो एव पूँजीपतियो आदि का जीवन सामूहिक रूप से स्पष्ट करते हैं।

वस्तुत यशपाल के उपन्यास सामाजिक सम्बन्धो के सन्दर्भ मे अमूल-चूल से परिवर्तित होते दिखलायी पडते हैं। आज भी हम सामाजिक जीवन मे इसी सच्चाई का अनुभव करते हैं।

---

**१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारस नाथ मिश्र पृ स १२८**

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि मार्क्सवादी परिवेश मे उपन्यासकार यशपाल की यह मान्यता बिल्कुल सटीक आधुनिकतावादी सन्दर्भ मे परिलक्षित होती है।

## ग प्रगतिशीलता और यशपाल की परिदृष्टि

प्रगतिशील उपन्यासकार यशपाल का नाम सुप्रसिद्ध है। उन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से यथार्थवाद का सम्पुष्ट विवेचन अपने उपन्यासो मे किया है। इनके उपन्यास जैसे दादा कामरेड देशद्रोही मनुष्य के रूप झूठा-सच आदि मुख्यत मार्क्सवादी विचारधारा से ओत-प्रोत है ये उपन्यास प्रगतिशील साहित्य भारतीय सामाजिक चेतना के विकास मे स्थान रखता है।

यशपाल प्रगतिवाद के विजय मे कहते हैं प्रगतिवाद क्या है यह बात काफी कूट छानकर देखी जा चुकी है हम यह समझ चुके है कि जो पूँजीवाद एक समय समाज की आवश्यकताओ को पहले की अपेक्षा अधिक परिमाण मे तृप्ति कर सकने के कारण विकासशील या अब इस सीमा पर पहुँच गया है जहाँ वह अपने स्वार्थ के लिए समाज को बर्बाद कर रहा है इसलिए वह विकासशील नही रहा इस पूँजीवादी व्यवस्था मे सामाजिक विकास और प्रगति के लिए अवसर नही। हम यह स्वीकार भी करते हैं कि समाज की वर्तमान अवस्था मे सघटित मजदूर वर्ग ही एक मात्र प्रगतिशील और क्रान्तिकारी शक्ति है जो समाज की इस जीर्ण व्यवस्था से नयी और विकासशील व्यवस्था मे ले जा सकती है। पूँजीवाद की यह व्यवस्था मे बधे समाज मे जो अव्यवस्था और घुटन पैदा हो रही है जो विनाश हो रहा है उसे सगठित और सचेत मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे समाजवादी व्यवस्था लाकर ही दूर

---

किया जा सकता है। हम यह भी मानते हैं कि सामाजिक विकास का मार्ग आर्थिक आधार पर श्रेणीगत सघर्ष ही रहा हैं और भविष्य के लिए भी यह क्रम अनिवार्य है। इस सिद्धान्त से भी विवाद नहीं कि समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था ही जड उत्पादक के साधनो से स्वामित्व अधिकार मे ही जमी हुई है और जर्जर पूँजीवादी व्यवस्था को सुधार के पेवन्द लगाकर समाज के पोषण के योग्य नही बनाया जा सकता। समाज की रक्षा के लिए आवश्यकता है सामाजिक आर्थिक व्यवस्था मे क्रान्ति की। पूँजीवादी शोषक व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी पोषक व्यवस्था लाने की और समाज की भावना की अभिव्यक्ति के रूप मे साहित्य की उपादेयता को इस लक्ष्य की प्राप्ति मे सहायक बनना ही है। परन्तु फिर भी आर्थिक विधान को ही समाज का श्वास माने तो भी हम समाज के स्थूल शरीर की उपेक्षा नहीं कर सकते। समाज की वास्तविकता का परिचय देने के लिए केवल उसकी श्वास गणना या साज़ के फेफडों (आर्थिक व्यवस्था) का एक्सरे चित्र देना ही पर्याप्त नहीं हो सकता। [१] यदि हम अपने प्रगतिशील आलोचना का परिचय देने के लिए जनता के सामने आलोचक का एक्सरे फोटो पेश कर दे तो जनता क्या स्वयम् आलोचक भी अपने आपको शायद नहीं पहचान पायेगा।

मार्क्स का विश्वास था कि सृष्टि अपने जन्मकाल से ही विकासशील रही है। इस विकास के मूल मे प्रगतिवादी और प्रतिक्रियावादी तत्त्वो का पारस्परिक सघर्ष कार्य करता रहा है। जैसे-जैसे प्रगतिवादी तत्त्वो की विजय होती है वैसे ही वैसे ससार भी निरन्तर विकसित होता है। मार्क्स ने ससार को केवल समझना ही नही चाहा था बल्कि मार्क्स तो दुनिया को ही बदल डालना चाहता था। मार्क्सवाद की दृष्टि मे प्रगतिशीलता वर्तमान शोषण असन्तोष एव विषमता आदि के मूल कारणो

---

१ यशपाल के उपन्यासों का मूल्याँकन – सुदर्शन मेहलोत्रा पृ १६५

का उन्मूलन कर विश्व का पुर्निर्माण करना चाहता है।

प्रगतिवादी जीवन की दृष्टि से और साहित्य की भाव-धारा के परिवर्तन के नियम के आग्रह से आधुनिक युग की तात्कालिक आवश्यकता है। प्रगतिवाद का एक निश्चित जीवन दर्शन है।

डॉ सुधीन्द्र के शब्दो मे प्रगतिवाद हिन्दी कविता मे वह नवीन धारा हे जो जनवाद मानववाद आदि विचारधाराओ से प्रेरित और अनुप्राणित है कलाकार को कवि को अपनी कला को स्वान्त सुखाय ही न रहने देकर उसे लोक कल्याण और मगल के महान और उच्च उद्देश्य का एक उपकरण बनाना चाहिए। यहि युग के कवि का धर्म है प्रगतिवाद का आधार यही विचार बिन्दु है।

आधुनिकता के सन्दर्भ मे प्रगतिशीलता का यशपाल के उपन्यासो मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। १६वी शदी के उत्तरार्द्ध मे देश मे नयी जागृति आयी। उस समय पूँजीवाद के निर्मम चक्र से आर्थिक शोषण की प्रक्रिया तीव्रतर होती जा रही थी। आर्थिक आधार पर समाज तीन वर्गों मे बॅटा था पहला वर्ग उच्च वर्ग दूसरा वर्ग मध्यम वर्ग एव तीसरा निम्न वर्ग था। प्रथम उच्च वर्ग जो पूँजीपतियो और जमीदारो का वर्ग था द्वितीय मध्यवर्ग जिसमे समाज का अधिकाश शिक्षित जन समुदाय सम्मिलित था तृतीय निम्न वर्ग जिसके अन्तर्गत किसान मजदूर अथवा इसी स्तर के अन्य लोग थे पूँजी की चोट से सबसे अधिक पीडित समाज के निम्न तथा मध्य वर्ग ही थे वस्तुत इन वर्गों के जीवन एव मरण का प्रश्न था ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा देशी पूँजीवाद और सामन्तवाद के दोहरे-तीहरे प्रहार इन पर हो रहे थे।[1] परन्तु मध्य वर्ग विशेषतय सक्रिय न हो सका लेकिन निम्न वर्गीय किसान

---

१ प्रगतिवादी समीक्षा – डॉ राम प्रसाद द्विवेदी पृ स ६० – ६१

एव मजदूरो ने शोषक सजा को चुनौती देने का मार्ग अपनाया जो मार्क्सवाद के विचारधारा से प्रभावित है।

सन १६३५-३६ ई के पूर्व सामाजिक आर्थिक राजनैतिक उथल-पुथल से होने वाली भारतीय जनमानस ही नही समस्त यूरोपीय जन मानस उद्वेलित हो चुका था उस समय साहित्य के क्षेत्र मे नित्य नये नवीन साहित्यकारो का अविर्भाव हुआ था उन्ही मे से सजग साहित्यकारो ने समाज मे नयी स्वस्थ दिशा प्रदान करने के लिए प्रगतिशील लेखक सघ (प्रोग्रेसिव राइटर्स एशोसियेशन) नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय सस्था की स्थापना की (जिसका प्रथम अधिवेशन पेरिस मे हुआ जिसके अध्यक्ष अग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार ई एम फास्टर थे। इस सम्मेलन का मूल उद्‌देश्य फासिज्म तथा नाजीवाद के फौलादी पखो से साहित्य और समाज की रक्षा करना था।

भारत मे प्रगतिशील लेखक सघ का प्रथम अधिवेशन १६३६ ई मे हुआ। इसके अध्यक्ष प्रेमचन्द थे इन्होने अध्यक्षीय भाषा मे साहित्यकारो का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा "हमारी कसौटी पर केवल वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमे उच्च चिन्तन हो स्वाधीनता का भाव हो सौन्दर्य का सार हो सृजन की आत्मा हो जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो जो हममे गति सघर्ष और बेचैनी पैदा करे सुलाये नहीं क्योकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।[१] कला या साहित्य को प्रेमचन्द जी उद्‌देश्य मानते थे और उसकी सामाजिक उपयोगिता मे उनका दृढ विश्वास था साहित्यकार के लक्ष्यों और कर्त्तव्यो पर विचार करते हुए उन्होने कहा- अब उनका उद्‌देश्य मनोरजक सयोग-वियोग नायक- नायिका की कहानी मात्र का निर्माण करना नहीं है अपितु उन प्रश्नो को भी उठाना है जिनसे समाज या व्यक्ति प्रभावित

---

१ साहित्य का उद्‌देश्य – प्रेमचन्द पृ स ३६

होते हैं।[१]

इस प्रकार प्रगतिवादी साहित्य के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से अनेको अधिवेशन हुए जिसमे अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक सम्मेलन के अतिरिक्त हिन्दी के प्रगतिशील लेखको ने प्रगतिवादी विचारधारा को समाज के सामने प्रस्तुत करने मे अपनी अक्षुण्ण योगदान दिया।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रगतिशील लेखक सम्मेलन की अध्यक्षता (सन् १९४७) करते हुए श्री राहुल सास्कत्यायन ने प्रगतिवाद के वास्तविक स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा - प्रगतिवाद कोई सकीर्ण सम्प्रदाय नहीं। प्रगतिवाद का काम है प्रगतिवादी के रास्ते को खोलना उसके पथ को प्रशस्त करना। प्रगतिवाद कलाकार की स्वतत्रता का नहीं परतत्रता का शत्रु है। प्रगति जिसके रोम-रोम मे भीज गई है प्रगति ही जिसकी प्रकृति बन गई है वह स्वयम् सीमाओ का निर्धारण कर सकता है। उसकी सीमा अगर कोई है तो यहि कि लेखक और कलाकार की कृतियॉ प्रतिगामी शक्तियो की सहायक न बने। प्रगतिवाद कला की अवहेलना नहीं करता। यह तो कला और उच्च साहित्य के निर्माण मे बाधक रूढियो को हटाकर सुविधा प्रदान करता है। यह रूढिवाद और कूप मडूकता का विरोधी है।[२]

प्रगतिशील आन्दोलन के दौरान (१९३६-४२) मे समाजवादी विचारो का सस्थान तत्कालीन प्रगतिशील लेखको मे यशपाल का नाम आता है।

सन् १९३६ मे विश्व की प्रगतिशील चेतना से प्रभावित होकर भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग ने लखनऊ मे एक अधिवेशन आयोजित किया जिसका सभापतित्व प्रेमचन्द ने किया। उस समय भारतीय जनमानस सामान्य रूप से और बुद्धजीवी वर्ग विशेष

---

१ साहित्य का उद्देश्य – प्रेमचन्द पृ स ५

२ प्रगतिवादी काव्य – उमेश चन्द्र मिश्र पृ ३९

रूप से यह अनुभव करने लगा कि प्रगतिशीलता को स्वीकारे बिना स्वाधीनता प्राप्त सम्भव नहीं। उस समय उपन्यासकार यशपाल १६३२ से १६३८ ई तक वह जेल के सीखचो मे बन्द थे। जेल से छूटने के बाद यशपाल प्रगतिशील लेखक सघ के सम्पर्क मे आकर प्रगतिशील चेतना मे निखार लाए। द्वितीय महायुद्ध के दौरान इन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से प्रगतिशीलता को अपने प्रारम्भिक उपन्यासो देशद्रोही मनुष्य के रूप पार्टी कामरेड आदि मे परम्परावाद प्रतिक्रियावाद जातिवाद धार्मिक कटटरता और सडी गली रूढियो के प्रति विद्रोह और दूसरी ओर फासिज्म का विरोध की प्रतिध्वनि एव बिम्ब स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्रगतिशील साहित्य नये दृष्टिकोण नई मान्यताए एव नई विचारधारा लेकर हमारे देश मे आया उसमे त्रुटियॉ होते हुए भी अनेक विशेषताएँ रही। इनके अलावा अनेक विदेशी साहित्यकारो मे जैसे सुप्रसिद्ध रूसी लेखक गोर्की की रचनाओ मे बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही यथार्थवादिनी प्रगतिशीलता के दर्शन होते हैं।

प्रगतिशील शब्द को लेकर आचार्य द्विवेदी एव श्री गगा प्रसाद पाण्डेय ने भी इस प्रगतिशील साहित्य का विरोध किया है प्रगतिशीलता का एक नया वाद आज यहॉ चल पडा है। इस सम्प्रदाय के प्राणी साहित्य को प्रगतिशील बनाना चाहते हैं पर मुझे तो आश्चर्य होता है कि साहित्य प्रगतिशील कब नही रहा ? क्योकि अप्रगतिशील चीज कभी चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकती। इसके अतिरिक्त साहित्य कभी कुम्हार के घडे की भॉति बढाया बनाया नहीं जाता वह तो अपने आप बनता है। वह दिमाग की उत्तेजक उत्पत्ति नही है वरन् वह साधना से सधी तथा अनुभूति से अनुप्राणित वस्तु है उसे ढकेलकर कोई भी प्रगति नही दी जा सकती।

---

प्रगतिशील लेखको ने अपनी कतियो द्वारा समाज की जनवादी और उदारवादी परम्परा को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। इसमे साहित्यिक न्यूनता है किन्तु भविष्य मे हो सकता है कि जीवन के प्रगतिशील मानदण्ड और कलात्मक वैभव से समन्वय स्थापित हो सके।

प्रगतिशील आलोचको के ऐसी प्रवृत्ति में हमे स्वय उनके प्रयत्नो की सार्थकता के विषय मे आशका होने लगती है। साहित्य मे प्रगतिवादी आन्दोलन का लक्ष्य होना चाहिए साहित्य मे प्रगति की चेतना व भावना की वृद्धि परन्तु ये आलोचक अपनी सूझ की प्रगति को कही साहित्य मे इतना आगे न बढा दे कि प्रगति की उष्णता की वृद्धि से साहित्य का सम्पूर्ण जल ही भाप बन कर उड जाए। [१]

उक्त विचारधारा को लेकर क्रान्तिकारी साहित्यकार के रूप मे यशपाल अपने उपन्यास क्षेत्र मे पदार्पण करते हैं। सिहावलोकन (यशपाल की आत्मकथा) से स्पष्ट होता है कि वे गॉधी दर्शन अहिसा आदि मे विश्वास न कर क्रान्ति मे विश्वास करते थे तथा आन्दोलनो मे भाग ले कर अपनी विचारधारा को क्रियात्मक रूप देने मे भी पीछे न रहे।

स्वतत्रता के पश्चात पूँजीपतियो के प्रति विद्रोह की भावना से ओत-प्रोत यशपाल जैसे लेखक ने मार्क्सवादी आधार को लेकर अपने साहित्य जगत् मे प्रवेश किया। यशपाल के प्रारम्भिक उपन्यास दादा कामरेड मे इस क्रान्ति का प्रबल रूप मिलता है। इस उपन्यास के आधार पर यशपाल पूर्णतया समर्थक है। उनके अनुसार समाज मे दो वर्ग हैं एक सर्वहारा और दूसरा शोषक वर्ग। आज के वैज्ञानिक युग मे पूँजीवाद ने समाज को इस वर्ग भेद को और भी अधिक तीव्र और

---

**१ बरगत की बेटी के प्रथम परिचय से**

विशद बना दिया है। इस दृष्टिकोण से यशपाल दादा कामरेड उपन्यास को एक शाश्वत और सार्वदेशिक दर्शन के रूप मे स्वीकार करते हैं।

सर्वप्रथम रचना दादा कामरेड (१६४१) मे रमेश के रूप मे उनका क्रान्तिकारी व्यक्तित्त्व अपने सम्पूर्ण तेज रोष उत्साह और बल के साथ जगमगा रहा है। अदालत मे फॉसी के पूर्व का कथन है हमारा विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने परिश्रम के फल पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य से एक श्रेणी द्वारा दूसरी श्रेणी से एक देश द्वारा दूसरे देश से उसके परिश्रम का फल छीन लेना अनुचित है। अन्याय है अपराध है। यह समाज मे निरन्तर होने वाली भयकर हिसा और डकैती है। इस हिसा और शोषण को समाप्त करना ही हमारे जीवन का उद्देश्य रहा है उसी के लिए हमने प्रयत्न किया है हमे पूर्ण विश्वास है कि न्याय की यह धारणा जो कुछ व्यक्तियो के देश मे आराम के अधिकारो की रक्षा के लिए ६६ ६ फीसदी जनता को जीवन के अधिकारो और साधनो से वचित कर देती है एक दिन बदलेगी और हमारा बलिदान इस प्रयत्न मे सहायक होगा।[1] इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए बलि के अवसर पर थी साम्राज्यवाद के यश तथा ससार से शोषण के नाश के नारे लगते हैं। प्रगतिवादी लेखक कला को आधार मानते हुए कला को कला के लिए न मानकर समाज के लिए माना है। यशपाल भी इसी विचारधारा को अपनी उपन्यास साहित्य मे आधार बनाकर कला जीवन के लिए की अभिव्यक्ति करते हैं। उनका कहना है कला को कला के लिए निर्लिप्त क्षेत्र मे ही सीमित न रख कर मैं उसे भाव या विचारो का वाहक बनाने की चेष्टा कयो करता हूँ ? क्योकि जीवन मे मेरी साध्य केवल व्यक्तिगत जीवन यापन ही नही बल्कि सामाजिक जीवन की पूर्णत है

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृ स १६४

इसलिए कला से सम्बन्ध जोडकर भी मैं कला को केवल व्यक्तिगत सतोष के लिए नहीं समझ सकता। कला का उद्देश्य है जीवन मे पूर्णता का यत्न। बजाय इसके कि कला का यत्न बहककर पैतरे बदलकर शान्त हो जाये क्या ये अधिक अच्छा नही कि वह समाज के लिए आधार प्रस्तुत करे ?

यशपाल ने कला जीवन के लिए इसी दृष्टिकोण का अन्त तक निर्वाह किया है। परन्तु यथार्थ का चित्रण और जीवन का साधन बना लेने पर भी उनकी कला मे छिछलापन और भद्दापन नहीं। उनमें सौन्दर्य है प्रभावोत्मकता और भावो को प्रकट करने की पूर्ण क्षमता है जो अपने आपमें सराहनीय है।

प्रगतिवादी यशपाल ने स्वस्थ मानव प्रवृत्तियो को जिनमे मुख्य क्षुधा और काम को प्रकृति रूप से अपने साहित्य मे स्थान दिया सुन्दरकला के माध्यम से उनका यथातथ्य निरूपण किया। यही कारण है कि दादा कामरेड और पार्टी कामरेड देशद्रोही और दिव्या जैसे रानजीतिक और ऐतिहासिक प्राय सभी उपन्यासो मे राजनीति और रोमास का चित्रण है। उपन्यासकार यशपाल का ध्येय पाठक के हृदय मे कुत्सित भावनाओ को उद्बुद्ध करना नहीं वरन् यथातथ्य चित्रण द्वारा उसके प्रति सचेत और विवेकशील बनाना है। यशपाल का विचार है कि समाज अपने अनुभव और परिस्थितियो के प्रभाव मे अपनी जीवन निर्वाह के साधनो और व्यवस्था मे परिवर्तन करता जाता है। समाज की जैसी जीवन प्रणाली और व्यवस्था होती है वैसे ही समाज की विचारधारा होती है। हमारे विचार नैतिकता मान्यताएँ अथवा आदर्श जीवन की प्रणाली का परिणाम ही होते हैं। इसलिए मानव-समाज विचारधारा और आदर्श को निश्चित करने मे स्वतन्त्र है।

---

निष्कर्षत हम यह कह सकते हैं कि प्रगतिशील उपन्यासकार यशपाल ने अपने उपन्यासो मे भारतीय सस्कृति की मान्यताएँ नये दृष्टिकोण नयी विचारधाराएँ स्त्री जीवन मूल्यो की अवधारणा सामाजिक व्यवस्था वर्ग विहीन समाज की परिकल्पना देश प्रेम आदि की भावनाओ का समन्वय यथार्थवादी धरातल मे प्रस्तुत किया है।

प्रगतिशील लेखक यशपाल ने अपने उपन्यास साहित्य द्वारा समाज की जनवादी और उदारवादी परम्परा को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है जो वर्तमान स्थिति मे मनुष्य या व्यक्ति के सामने सामाजिक उपयोगिता का समाधान करता है।

## (घ) मार्क्सवाद और यशपाल की नारी परिकल्पना

मार्क्सवाद मे नारी के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण था एक स्वस्थ भावना थी। स्त्रियॉ भी पुरुषो की तरह मनुष्य हैं और उनके कन्धो पर भी समाज का उतना ही उत्तरदायित्व है जितना की पुरुषो के कन्धो पर। स्त्री जननी है। जब तक स्त्री का शारीरिक और मानसिक विकास न होगा तब तक सन्तान का पूर्ण विकास नही होगी। मार्क्सवाद स्वीकार करता है सन्तान उत्पन्न करना केवल स्त्री ही का उत्तरदायित्व नहीं बल्कि यह काम सम्पूर्ण समाज के कामो मे एक महत्त्वपूर्ण काम है मनुष्य समाज का अस्तित्व इसी पर निर्भर करता है। यह महत्त्वपूर्ण कार्य ठीक रूप से होने के लिए परिस्थितियॉ अनुकूल होनी चाहिए। स्त्री सन्तानोत्पत्ति एक उत्तरदायी स्वतन्त्र अग समझकर अपनी इच्छा से सन्तान पैदा करे। सन्तान पैदा करने के लिए समाज की सभी स्त्रियो के लिये ऐसी परिस्थितियॉ होनी चाहिए कि वह अपना स्वास्थ्य ठीक रख सके और स्वस्थ सन्तान को जन्म दे सके।[१]

मार्क्सवाद यह मानता है कि "स्त्री पुरुष की पूँजी नहीं है उसकी भोग्या भी

---

१ मार्क्सवाद – यशपाल पृष्ठ ८६

नही है। दोनो इस पृथ्वी पर जन्म लेकर समान अधिकार रखते हैं। स्त्री को माता बनने के कारण पुरुष के समक्ष आत्मसमर्पण करने की कोई आवश्यकता नहीं। विवाह के सम्बन्ध मे मार्क्सवाद समाज के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विचार से पूर्ण स्वतन्त्रता देता है परन्तु उच्छखलता और गडबड को पेशा बना लेने और इसके साथ अपनी वासना के लिए दूसरे व्यक्तियो और समाज की जीवन-व्यवस्था मे अडचन डालने को वह भयकर अपराध समझता है।[१]

समाजवादी व्यवस्था मे स्त्री भी समाज मे बराबर का अग है। वह स्त्री का स्थान समाज के प्रत्येक क्षेत्रो मे होना मानता है। वह पुरुष की तरह एक स्वतत्र बौद्धिक इकाई और महत्त्व की समभागी है उसका अस्तित्व हर तरह स्वतत्र है उसे स्वाधीन होना है। इन्ही विचारो की पुष्टि यशपाल ने अपने समस्त कथा साहित्य मे की है।

भारतीय समाज मे चाहे वह हिन्दू अथवा मुस्लिम नारी की स्थिति हमेशा दयनीय रही है। उत्पादन पर जैसे ही पुरुष वर्ग का आधिपत्य हुआ नारी की स्थिति क्रमश गिरती गयी। समय के परिवर्तन पर भले ही स्त्री की स्थिति मे थोडा बहुत अन्तर रहा हो लेकिन उसका मूल भाव एक ही था नारी साधन है साध्य नही। पुरुष ने उसके स्वतत्र व्यक्तित्व के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया बल्कि बहुपत्नीत्व और सती प्रथा के प्रचलन तथा विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध लगाकर उसे और भी निरीह और परोपजीवी बना दिया। जन्म से ही स्त्री पुरुषो द्वारा घर की चहारदीवारी मे कैद कर दी गयी किन्तु उच्च वर्गीय नारियो की वासनाओं को कैद नहीं किया जा सका बल्कि प्रतिबन्ध ने उन्हे काम-कुण्ठाये ही दी। 'सामाजिक सन्दर्भो मे देखा जाता है कि निम्नवर्गीय नारी पात्रो को भोगवादी वृत्ति या तो उनकी

---

१ मार्क्सवाद – यशपाल ६०

आर्थिक व्यवस्था का परिणाम है या फिर एक प्रकार से उनकी ग्राम्य सस्कृति का ही एक अग है।[१]

सभ्यता के आरम्भ से ही स्त्रियो की स्वतन्त्रता के ऊपर अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये। उसे कदम-कदम पर अन्य लोगो पर आश्रित रहना पडा। स्त्री की स्वतत्रता का पक्ष मार्क्सवाद का एक मुख्य उद्देश्य रहा। मार्क्सवाद नारी के आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर देखना चाहता है। मार्क्सवाद के विचार मे- अपने पतियो के दुराचार के अभ्यास को स्त्रियॉ इसलिए सहती आयी हैं क्योकि उनके आगे अपनी जीविका का और विशेषकर अपने बच्चो के भविष्य का प्रश्न था। अब यदि इन आर्थिक विचारो का अन्त हो जाये तो उससे स्त्री-पुरुषो मे समानता की स्थापना होगी।[२] समाजवादी समाज मे नारी के लिए आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर रहना अत्यन्त आवश्यक है। स्त्री को पैदावार के साधनो मे पुरुष के समान ही भाग लेना चाहिए। समाज के पूर्ण विकास के लिए समाज के आधे भाग स्त्री का सहयोग आवश्यक है। यशपाल ने भी इसी मान्यता को आधार माना है और उनका कहना है कि समाज मे सबका बराबर का अधिकार होना चाहिए। स्त्री को घर के भीतर कैद कर के रखना केवल इसलिए कि बाहर उनकी सुरक्षा नही तो घर मे भी क्या सुरक्षा हो सकती है ? इस तरह से उनकी महत्त्वाकाक्षा को दबाना ही है। समाज मे प्रत्येक प्राणी जगत् के अपना समाज राज्य व राष्ट्र के विकास के लिए प्रगति का अवसर प्रदान किया है तो फिर इसमे भेद के लिए स्त्री को अलग स्थान देना उसे केवल घर की वस्तु समझना उसके विवेक को शून्य बना देना ये सब बाते समझ से परे हैं। उन्हे केवल आर्थिक कारणो की वजह से पुरुषो की गुलामी सहनी पडती है। यशपाल की भी मान्यता यही है कि – 'स्त्री की आर्थिक स्वतन्त्रता स्त्री का मानवी अधिकार है।

---

**१ स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामती जीवन–विजय कुमार अग्रवाल पृ स १०८**

**2 With the disappearance of the economic considerations which compelled women to tolerate the customary inffidelity of the men the anxiety about their own livlihood and even more about the future of their children the equality of women thus achieved will, Judging from, all previous experiences result for more effectively K. Marx F ntels selected works vol II, P 240**

आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना स्वतन्त्रता का कुछ अर्थ नही वह ढोग मात्र है। पूँजीवादी मनोवृत्ति स्त्री की आर्थिक स्वतन्त्रता का विरोध करके स्त्री को अपने भोग की वस्तु बनाये रखना चाहती है।[१] उनके विचार मे 'स्त्री की आर्थिक स्वतन्त्रता समाजवाद की प्राप्ति और स्थापना मे सहायक होगी। इसीलिए पूँजीवादी व्यवस्था स्त्री की गुलामी या पर्दे के आधार पर जमाई गई प्रतिष्ठा की धारणा से उसे कोमल और दयनीय बताकर उसे आर्थिक सघर्ष से दूर रखना चाहती है।[२] यशपाल इसके पक्ष मे नही उनके विचार मे तो समाजवादी सस्कति मे ही नारी का अपना अस्तित्व है वह समाज मे अपनी अलग पहचान बना सकती है। स्त्री का महत्त्व केवल किसी एक ही बनकर अपना जीवन समाप्त कर लेने मे नही होना चाहिए। वह अमुक की ही कुछ न होकर स्वय की भी कुछ होती है। समाज के एक व्यक्ति के नाते समाज का महत्त्वपूर्ण अग भी बन सकती है यहॉ स्त्री को चौके और बिस्तरे के लिए उपयोगी बनाकर सुरक्षित नही रखा जाता। यशपाल की सभी नायिकाऍ इसी आदर्श को अपना कर चलती है। वे पुरुष का दमन अथवा उसकी गुलामी स्वीकार नही कर सकती इसीलिए दिव्या उपन्यास की नारी पात्र दिव्या सामन्तवाद के प्रतीक रुद्रधीर से कहती है कुल वधू का सम्मान कुल-माता का आदर और कुलमहादेवी का अधिकार आर्य पुरुष का प्रश्रय मात्र है। वह बारी का सम्मान नही उसे भोग करने वाले पराक्रमी पुरुष का सम्मान है।[3] और वह इस राज-पुरुष का आश्रय छोडकर साधारण व्यक्ति मारिश को अपना साथी चुनती है।

यशपाल ने मार्क्सवादी विचारधारा के अन्तर्गत नारी के जिस रूप की कल्पना की है उसके लिए वे समस्त रूढिबद्ध सस्कारो नैतिक धारणाओ और विश्वास के बन्धन को कमजोर कर देना चाहते हैं। नारी की पराधीनता से क्षुब्ध होकर वे कह

---

१ बात–बात मे बात – यशपाल पृ स ५६
२ बात–बात में बात – यशपाल पृ स ५६
३ दिव्या – यशपाल पृ स २१५

उठते हैं क्या नारी अपनी वासनापूर्ति तथा सम्पत्ति के लिए औरस उत्तराधिकारी प्राप्त करने वाले को पति मानकर पतिव्रत धर्म का पालन करती रहे ? क्या आत्मरक्षा आत्मनिर्भरता जो मानव धर्म हैं वे नारी के धर्म नही है ? [१]

नारी के लिए आत्मनिर्भरता की पक्षधरता (वकालत) यशपाल दृढता से करते हैं। नारी शिक्षा नारी अधिकार के प्रति वे सदैव से सजग रहे। उनकी मान्यता थी कि जीवन मे हर कोई अपने मस्तिष्क से स्वतत्र है यदि स्त्री अपने प्रति होने वाले अन्याय को चुपचाप सहती रहेगी तो उसका शोषण युगों-युगो तक होता रहेगा। वह अन्याय सही नही बल्कि उसके प्रति आवाज उठाये। आत्मनिर्भर नारी अपने प्रति शोषण नहीं सह सकती क्योकि उसे अपने ऊपर दृढ विश्वास रहता है कि वह अपने जीवन का भार स्वय उठा सकती है। यशपाल की दृष्टि मे क्योकि वह ईमानदार है और उसमे आत्मनिर्भरता का साहस और विश्वास है वह जानती थी कि वह पुरी से तृप्ति सन्तोष और प्रसन्नता नहीं पा सकती थी न उसे दे सकती थी पुरी पुरुषत्व की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए छल कर रहा था कनक ऐसे छल मे सहयोग नही देना चाहती थी। यदि कनक चाहती तो कानूनन पुरी से बेटी के लिए खर्च ले सकती थी। उसने ऐसा भी नहीं किया क्योकि उसमे आत्म विश्वास था और आत्मनिर्भर रहना चाहती थी। [२]

यशपाल का विचार था कि आर्थिक रूप से स्वतत्र रहने पर नारी सामाजिक बन्धनो के सकुचित दायरे मे बन्द दाम्पत्य-जीवन की कृत्रिम नैतिकता एव अत्याचार और दमन के विरूद्ध तीव्र कदम उठा सकती वह अन्याय के प्रति लड सकती है व्यक्तित्व की ओर अधिक निखार कर समाज की प्रगति मे सहायक सिद्ध हो सकती है। समाज मे बुद्धिजीवी वर्ग मे अपने विचारो को रख कर समाज के विकास मे एक

---

**१ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ स २१५**

**२ झूठा–सच (देश का भविष्य–२) – यशपाल ३२५**

नयी किरण दे सकती है। यशपाल नारी को आर्थिक रूप से ही नहीं पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर और स्वतन्त्र देखने के पक्षपाती है। उनके विचार मे अमीर श्रेणी की स्त्रियो को धन की कमी न होने पर भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं होती। वह घर मे फूलो मे लगे उस गुलदस्ते के समान है जो शोभा तो बढा सकते हैं लेकिन उपयोग मे नही लाये जा सकते। ऐसी स्त्रियो का अपना अलग अस्तित्व कुछ भी नहीं होता। अमीर श्रेणी की औरते पुरुष के मनबहलाव और सन्तान प्रसव करने के अतिरिक्त कुछ नहीं करती। इस समाज की स्त्रियॉ यदि छतरी और बटुआ हाथ मे लेकर मनमानी साडियॉ और जेवर खरीदने की स्वतन्त्रता पा जाती हैं तो वे अपने आपको स्वतत्र समझती है परन्तु स्वतन्त्रता से अपना घर बसाना चाहे या स्वतन्त्रता से सन्तान पैदा करना चाहे तो क्या वे कर सकती है।[१] यशपाल के विचारो में यह नारी स्वतन्त्रता नहीं पराधीनता है। पराधीन नारी को पैसे खर्च करने की स्वतत्रता हो सकती है लेकिन स्वय निर्णय लेने की स्वतन्त्रता नहीं होती। नारी आर्थिक रूप आत्मनिर्भर रहने के साथ-साथ अन्य अधिकारो की भी स्वतत्रता उसे होने चाहिए। उसे स्वय निर्णय का अधिकार भी होना चाहिए। यशपाल की दृष्टि मे नारी को स्वतत्रता देने का अभिप्राय यह नहीं कि नारीत्व का दुरूपयोग किया जाये बल्कि नारी मे स्वय इतना साहस और सुबुद्धि होनी चाहिए कि वह सही-गलत का निर्णय कर सकें। साथ ही उसे प्रेम करने का भी अधिकार और स्वतत्रता होनी चाहिए। "पुरूष स्त्री को स्वय प्रेम करने का अधिकार नहीं देना चाहता। इसका अर्थ है हमारा समाज स्त्री-पुरुष के प्रेम मे विश्वास नही करता। जो समाज स्त्री को स्वत प्रेम करने का अधिकार नहीं देना चाहता वह स्त्री को सामन्ती युग की तरह केवल भोग और उपयोग की वस्तु नही समझता।[२]

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृ स १०१–१०२

२ जग का मुजरा – यशपाल पृ स ४७

यशपाल नारी को भोग और उपयोग की वस्तु नही बनाना चाहते। यही कारण है कि उनके साहित्य मे नारियॉ अपनी स्वतत्रता और आजादी के लिए परम्परागत मान्यताओ को तोडते हुए एक नवीन आधुनिक विचारधारा के लिए हुए दिखलायी देती है। यशपाल नहीं चाहते कि 'स्त्री को देवी या माता का स्थान देकर गृह-मन्दिर मे प्रतिष्ठित कर दिया जाए जिससे कि मन्दिर का मालिक पुजारी पुरुष उस पर अपना अधिकार और शासन चलाता रहे।[१] नारी की ये स्वतत्रता के व्यक्तित्व के विकास मे बाधक सिद्ध होती है। वह अपने मार्ग मे कोई भी रूकावट सामने नहीं आने देना चाहती है।

नारी सम्बन्धी स्वतन्त्रता तथा समानाधिकार की बात यशपाल रूस की समाजवादी दृष्टि से कहते हैं। यशपाल का कहना है कि – यहॉ पुरुष के प्राप्य सभी अवसर नारी के लिए भी सुलभ हैं। जैसे पुरुष बाप बनने के साथ ही प्रोफेसर इजीनियर और डॉक्टर बन सकते हैं वैसे ही रूस मे नारी मॉ बनने के साथ ही समाज के एक व्यक्ति के नाते समाज का महत्त्वपूर्ण अग भी बन सकती है। वहॉ स्त्रियो को केवल चौके और बिस्तरों के लिए उपयोगी बनाकर सुरक्षित नहीं रखा जाता।[२]

नारी के लिए ही पतिव्रत धर्म-अर्थात् स्त्री का एक पुरुष से सम्बन्ध रखना-स्त्री का सबसे बडा धर्म बताया गया ताकि व्यक्तिगत सम्पत्ति के आधार पर बना हुआ परिवार और समाज तहस-नहस न हो जाये। इस कारण पुरुष और समाज के हाथ मे जितने भी साधन धर्म रीति-रिवाज आदि के रूप मे थे उनसे स्त्री को पुरुष के आधीन होकर चलने की शिक्षा दी गयी।[३]

सारे नियम स्त्री के क्षेत्र मे डालकर पुरुष वर्ग उस पर मनमानी करता है। नारी की स्वतन्त्रता तथा समानाधिकार के इस युग मे यशपाल नारी के आदर्श 'सती

१ चक्कर क्लब – यशपाल पृ स ६७

२ बात बात में बात – यशपाल पृ स ५१

३ मार्क्सवाद – यशपाल पृ स ८१

रूप की कल्पना करना भी व्यर्थ समझते हैं। उनकी दृष्टि मे 'सती प्रथा घोर अत्याचार तथा भीषण अन्याय का ही प्रतीक है। "मैं आज पति के वियोग मे पत्नी के चित्तारोहण मे सौन्दर्य नहीं विभीषिका ही अनुभव करता हूँ। मैं उस आदर्श को सुन्दर बनाने का प्रयत्न नहीं कर सकता। मैं अतीत मे भी किसी पति को पत्नी के वियोग मे चिता पर चढने के लिए व्याकुल होने के उदाहरण नही देख पाता तो स्त्री-पुरुषो की समता के विचार के इस युग मे मुझे पति के सती होने के आदर्श के प्रति रागात्मक सहानुभूति उत्पन्न करना भीषण अन्याय ही जान पडता है।[१] नारी विषयक इसी दृष्टिकोण की अभिव्यजना उन्होने अपने उपन्यासो मे की है।

कोई अन्य व्यक्ति समझेगा कि वह वैधव्य और अकेलेपन मे बिलखती बिसूरती रहती तो तुम्हे सतोष होता। जीवन की असह्य यत्रणा से आत्म-हत्या की इच्छा मे तडपती रहती तो तुम उससे सहानुभूति रख सकती थीं। वह सुरक्षा और सतोष अनुभव कर रही है यह सुनकर तुम क्षुब्ध हो रही हो।[२] बारह घण्टे की विनी का अपने जीवन निर्वाह के लिए फेटम के साथ रहने का निर्णय इसी तथ्य की पुष्टि करता है।

यशपाल आधुनिक समाज और परिस्थितियो के अनुकूल नारी को पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर देखना चाहते। उनकी दृष्टि मे नारी भी मनुष्य है उसका भी अपना व्यक्तित्व है अपनी आकाक्षाये हैं उसे पूर्ण रूप से पारिवारिक या सामाजिक बन्धनो मे बाधकर नही रखा जा सकता। उसे पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए उसे भी समाज मे सक्रिय अग के रूप मे देखना चाहिए। उसके लिए सबसे अधिक आवश्यक है उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता जो उसे पुरुष-समाज के सम्मुख पगु और निर्बल बनाने की अपेक्षा आत्मविश्वास की भावना और आत्मनिर्णय के अधिकार से पुष्ट

---

१ ओ भैरवी – यशपाल भूमिका से।

२ बारह घण्टे – यशपाल १०६

करती है।[१]

यशपाल के विचार मे इन्ही आदर्शो को लेकर नारियॉ जीवन मे जूझती दिखायी देती हैं। इतना ही नहीं उनकी नारियॉ आधुनिक समय मे बिल्कुल खरी उतरती है। इतना ही नही उनकी नारी विषयक विचारधारा इसीलिए परम्परागत न होकर आधुनिक है जो आज के प्रगतिशील युग मे राजनीति क्षेत्र मे पदार्पण कर गृहस्थ की सकीर्ण परिधि से निकल खुली हवा मे सास लेते हैं इतना ही नही उन्होने नारी को आगे बढने के लिए प्रोत्साहित किया और मानो पद निर्देशक करते हुए परम्परागत रूढियो के सकीर्ण दायरे को तोडकर बाहर आने का प्रशस्त मार्ग दिखाया।

यशपाल ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार प्रेम को भी द्वन्द्वात्मक दृष्टि से देखा और सब चीजो की तरह जीवन मे प्रेम की गति भी द्वन्द्वात्मक है। यदि प्रेम बिल्कुल छिछला रहे तो वह असयत वासना मात्र बन जाता है और यदि जीवन मे प्रेम या आकर्षण का सयम विवेक से न हो तो वह जीवन के लिए घातक भी हो सकता है।[२] ऐसा ही रूप यशपाल ने मनुष्य के रूप उपन्यास मे मनोरमा और सुतली वाला के प्रेम विवाह से स्पष्ट किया है मनोरमा विवेक और बुद्धि से विचार न करके केवल आवेश मे आकर सुतलीवाला से विवाह कर लेती है परन्तु अन्त मे उसे सुतलीवाला से उपेक्षा सहन करनी पडती है। घर पर सुतलीवाला और मनोरमा मे बातचीत बन्द हो गयी। खाने का समय दोनो का अलग-अलग हो गया। १५वे दिन सुतलीवाला बैरे के पास उसके लिए लिफाफा छोड जाता है जिसमे सौ रुपये थे।[3] दोनो में टकरार बढता ही जाता है जिसका अन्त मनोरमा सम्बन्धविच्छेद करके पाती है। वह जीवन मे अन्याय सहन करने की विरोधी है।

---

१ यशपाल व्यक्तित्व और कतित्व – डॉ सरोज गुप्त पृ स ६५

२ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ ८०।

३ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ स २२७

यशपाल जी ने प्रेम को जीवन की उदात्त और सबसे ऊँची भावना तो माना है तथा वह भी कहा है कि इस भावना के अपूर्ण रहने पर व्यक्ति का जीवन व्यर्थ और बोझ बन जाता है। परन्तु यह नहीं कहा कि यह प्रेम जीवन मे पार्थिव या इन्द्रियजन्य प्रेम के अतिरिक्त भी कोई वस्तु है अर्थात् वे प्रेमभावना को आत्मिक अथवा आध्यात्मिक भावना मानने को तैयार नही। आधुनिक काल मे ही नहीं प्राचीन काल की सावित्री सत्यवान की पौराणिक गाथा के माध्यम से तर्क के आधार पर उस प्रेम को भी इन्द्रियजन्य तथा पार्थिव माना है। 'सावित्री ने सत्यवान के अपने प्रेम की पूरी कर सकने के लिए यम से आग्रह किया। इसमे ऐसे प्राण डाल दो कि सौ पुत्र उत्पन्न कर सकने तक जवान बना रहे क्या आत्मिक प्रेम से सौ पुत्र हो जायेगे ? सावित्री की निष्ठा मे आत्मिक प्रेम की कल्पना थी या पार्थिव आवश्यकता।[१] इसी आधार पर यशपाल जी ने प्रेम को पार्थिव और इन्द्रियजन्य आकर्षण बताया है न कि अतीन्द्रिय। इनकी दृष्टि मे आध्यात्मिक प्रेम नपुसक प्रेम है वासना को पूरी करने की जब सामर्थ्य न हो तो मन को बहलाने का तरीका है स्वयम् जो कुछ कर सकने का अवसर नही भगवान के नाम से उसकी कल्पना कर मन को बहला दिया।[२] मे यशपाल विश्वास नहीं करते। प्रेम जीवन की माग होता है और प्रेम पात्र उस मार्ग को पूरा करता है। प्रेम पात्र कोई भी व्यक्ति हो सकता है। प्रेम पात्र यह व्यक्ति प्रेम का उन्मेष पूरा कर सकने के कारण ही अच्छा या प्यारा लगता है।[३]

अत स्पष्ट है कि यशपाल की प्रेम-सम्बन्धी भावना नितान्त आधुनिक है। परम्परागत प्रचलित मान्यताओ को उन्होने तर्क के आधार पर निर्मूल सिद्ध कर दिया है समाज मे जिस विषमता तथा प्रवचना ने नारी को पकड रखा है उसके

---

१ बारह घटे – यशपाल पृ १०६
२ चक्कर क्लब – यशपाल पृ १६

प्रति आज की नारी मे उसको मचलती भावनाओ मे विस्फोट विद्रोह हैं। यही आत्मनिष्ठा उन्हे स्वनिर्मित स्वालम्बन पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। उपन्यासो मे नारियो मे शैलबाला (दादा कामरेड) चन्दा (देशद्रोही) दिव्या (दिव्या) और तारा कनक (झूठा सच) इत्यादि सभी जीवन सघर्ष करते रहने के अन्त मे समाज की मिथ्या मान्यताओ और लोक लाज के अपार सागर से बाहर कूद पडने को विवश हो जाती है। [१]

भारतीय समाज मे स्त्री सदैव शक्ति का प्रतीक रही है उसे ही भविष्य का निर्माता कहा गया है। जागरूक होती महिलाओ ने यह सीख लिया है कि अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन और गोष्ठियॉ तो होती रहेगी पर अपने आस-पास की समस्याओ का समाधान आपस की छोटी सी कोशिश मे भी तलाशा जा सकता है। [२]

आधुनिक नारियॉ अबला से सबला बनती नजर आ रही हैं। वे अपने ऊपर किसी भी प्रकार का अन्याय बन्धन सहन नही कर सकती ये उनकी मुक्ति चेतना का सबसे बडा उदाहरण है। यशपाल के उपन्यासो मे विभिन्न नारी पात्रो का जो चित्राकन मिलता है वह समाजवादी व्यवस्था पर आधारित नारी की स्वतन्त्रता का पक्षधर है। नारी यह दुनियॉ तुम्हारी है। इस दुनियॉ मे तुम अपनी इच्छा से जिओ। यह दुनियॉ यदि एक नदी हैं तुम उस पूरी नदी मे तैरती रहो। यह दुनियॉ यदि एक आकाश है तुम पूरे आकाश मे विचरण करती फिरो। जीवन यदि तुम्हारा है जो दरअसल तुम्हारा ही है तो वह जीवन तुम जैसी इच्छा हो जिओ। नारी तुम अपना हक खुद हासिल करो। यह देखो मैं सारे दु खो को झाडकर खडी हो गयी हूँ।

---

**१ यशपाल के उपन्यासो का मूल्याकन – सुदर्शन मेलहोत्रा।**

**२ अमर उजाला अबला से सबला बनती महिलाए – लेख अलका आर्य ७ मई २०००**

मैंने किसी अश्लीलता किसी भी तरह की अस्वस्थता के साथ समझौता नही किया।[1]

इस प्रकार यशपाल ने अपने कथा साहित्य मे नारी विषयक दृष्टिकोण को आधुनिकता के रूप मे अभिव्यजित किया है। जो नारी के प्रगति के मार्ग मे विकासोन्मुख होते हैं।

□

---

**१ औरत के हक में – तसलीमा नसरीन पृ स १२७ वाणी प्रकाशन प्रथम सस्करण १६६४**

# तीसरा अध्याय

# उपन्यासो मे विशिष्ट नारी पात्रो का आधुनिकता के स्वरुप का अनुशीलन -

## क प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासो मे नारी के पारम्परिक आयाम

हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्द ने जिस विचारधारा की पृष्ठभूमि समाज के लिए तैयार की थी वह समानता सन् १६०५ ई से सन् १६३६ ई तक विद्यमान रही। प्रेमचन्द के जाते-जाते ही हिन्दी उपन्यास ने एक नया और स्पष्ट मोड लिया। सामान्य जन-जीवन की दिन-प्रतिदिन की घटनाओ से उपन्यास अलग होता गया उसका झुकाव मनुष्य के मन स्थिति की सम्पूर्ण प्रक्रियाओ के उद्घाटन की ओर एव आन्तरिक सम्भावनाओ की ओर होता गया।

प्रेमचन्द ने जिस सशक्त परम्परा का नेतृत्व किया था वह आगे गतिशील रही। सन १६३६ के बाद हिन्दी उपन्यास का मुख्य विषय धन-लालसा और यौन भुभुक्षा रहा है यही दो कथा-वस्तु के आधार हैं जिन पर उपन्यास खोलते ही दृष्टि पडती है प्रेमचन्दोत्तर काल के उपन्यासो मे नारी के विवाहोत्तर जीवन की समस्याओ का मुख्य रूप से वर्णन हुआ है। यद्यपि इस काल मे जीवन के प्रत्येक पहलुओ मे स्त्री पुरुष की समानता की भावना बदले हुए समाज मे फैल चुक थी। फिर भी उपन्यासकारो ने अनुभव किया कि भारतीय स्त्री पढ लिखकर भी अपनी आजादी तथा मानवीय अधिकारो के लिए व्याकुल होने पर भी अपने सरक्षक से वे अधिकार नही पाती जो वह स्वतत्र ले लेता है।

---

स्त्री की सबसे प्रमुख विडम्बना यह है कि प्रत्येक अवस्थाओ मे उसे पुरुष सरक्षण की अनुभूति समाज द्वारा दिलायी जाती है। बाल्यावस्था मे वह पिता की सरक्षिता मे पली होती है यौवनावस्था मे भाई का सरक्षक उस पर हावी होता है फिर उसे सात फेरो के बन्धन मे बधकर आजीवन पति की सरक्षिता मे जीवन व्यतीत करना होता है और वृद्धावस्था मे पुत्र की सरक्षिता मे जीवन की सध्या का अन्त हो जाता है। इसलिए इस युग के प्राय सभी उपन्यासो मे पुरुष द्वारा नारी के शोषण की समस्या का चित्रण मुख्य रूप से हुआ है। अपने विकसित व्यक्तित्व के कारण नारी अब पुरुष के शोषण व सरक्षिता को सहज रूप मे स्वीकार नही कर पाती। वह अब मौन रह कर अत्याचारो को नही सह सकती बल्कि उसका खुलकर विरोध करती है। अत विकसित अहम युगल की टकराहट के दाम्पत्य जीवन मे विसगतियॉ उत्पन्न होने लग गयी। जिनका उपन्यासो मे चित्रण होना अनिवार्य था। दूसरी ओर नारी के इसी व्यक्तित्व विकास के कारण उसकी रुचि और भावना का महत्त्व बढ गया और समाज एव साहित्य मे घर-बाहर अथवा पर पुरुष के प्रति प्रेम की समस्या व्यापक रूप मे खडी हुई।

प्रेमचन्द युग मे नारी का व्यक्तित्व अपेक्षाकत कम विकसित होने के कारण नारी का प्रेम भी प्राय परम्परागत मार्ग पर ही विकसित होता था। वह अत्याचारो को सहती थी घुटती थी और अपनी जीवन-लीला समाप्त कर देती थी। दोषारोपण फिर भी उनके ऊपर होता था। बदलते युग मे नारी की इन समस्याओ ने एक नवीन मोड लिया और इसके पश्चात हिन्दी उपन्यासो मे जो चित्रण हुआ। वह जीवन का मुख्य अग बना।

प्रेमचन्दोत्तर युग मे जो मुख्य प्रभाव नारी पर पडा वे दो नवीन विचारधाराओ के कारण पडा। पहला प्रभाव मार्क्स की विचारधारा और फ्रायड का मनोविश्लेषण। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार समाज व्यक्तियो और परिवारो का समूह है। परिवार मे स्त्री-पुरुष दोनो की अहम भूमिका निहित है समाज इन्हीं दो पहलुओ से विकसित होता है। फिर क्यो पुरुष कमाएँ स्त्री खाएँ जब दोनो का महत्त्व समान है तो स्त्री को भी अपने विचारो को समाज मे लाने का पूरा अवसर मिलना चाहिए।[१] इन्ही विचारो के फलस्वरूप स्त्री घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर समाज के बहुयामी क्षेत्रो मे प्रवेश किया। आज ऐसा कोई भी क्षेत्र अछूता नही जहॉ नारी ने कदम न रखा हो यही विचारधारा फ्रायड के मनो- विश्लेषणवाद मे दिखायी देती हैं। अन्तर केवल इतना है कि फ्रायड के अनुसार मनुष्य के अन्दर मुख्य रूप से काम-भावनाओ को महत्त्व देते हुए मनुष्य के अवचेतन मन मे पडी दमित कामवासनाओ के औचित्य की मुख्य एव गौण मन स्थिति का विश्लेषण करता है।[२]

इन्ही विचारधाराओ के फलस्वरूप पूँजीवाद समाज व्यवस्था मे दो वर्ग होते हैं एक शोषक तथा दूसरा शोषित। इन दो वर्गों मे आपस मे सघर्ष चलता रहता है। नारी शोषित है और पुरुष शोषक। समाज की उन्नति एव कल्याण के लिए नारी की आर्थिक स्वतन्त्रता एव उसके जीवन का विकास अत्यन्त आवश्यक है। स्त्रियॉ भी पुरुषो के ही समान मनुष्य है समाज की उन्नति बिना स्त्री के सहयोग से पूर्ण नही हो सकती।

नारी मुक्ति के दिग्दर्शक जॉन स्टुअर्ट–मिल ने सन् १८५६ ई मे अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "सब्जेक्ट आफ वुमन मे नारी स्वतत्रता का प्रतिपादन किया था।

---

**१ मार्क्सवाद – यशपाल पृष्ठ सख्या – ७६**

**२ हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद – डॉ त्रिभुवन सिह पृष्ठ स–३०**

जिसको पढकर उस समय की पुराण पथियो मे खलबली मच गयी किन्तु मार्क्स-एगेल्स ने पहली बार नारी सम्बन्धो का ऐतिहासिक विश्लेषण किया और उन परिस्थितियो और सामाजिक कारणो का उपाहस किया जिनके कारण समाज मे नारी अपने सम्मान और स्वतन्त्रता से वचित हो गयी। एगेल्स ने कहा जिसका उत्पादन के साधनो मे अधिकार होगा समाज मे उसी का सम्मान होगा उसी के हाथ मे सत्ता होगी। उन्होने कहा नारी की मुक्ति तभी सम्भव हो सकती है जब वह सामाजिक स्तर पर उत्पादन के योग्य हो। यही कारण है कि मार्क्स के अनुयायियो ने नारी का घर से बाहर लाकर सामाजिक स्तर पर कार्य करने एव सामाजिक समानता प्राप्त करने पर बहुत बल दिया।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास साहित्य मे नारी की अनेक सामाजिक समस्याओ पर भी तर्क अकन प्रस्तुत किया है। इन समस्याओ मे जैसे वेश्या समस्याओ मे नारी की अतिसोचनीय स्थिति पर हमारा समाज प्रश्न चिह्न लगाता है यदि हम वेश्याओ के प्रति यह भाव रखे कि वे हमारी ही माताएँ एव बहने हैं जो वेश्या बन गयी हैं तो कभी भी यह दूषित कोढ जिन्दा रह ही नही सकता। वास्तव मे वेश्याएँ जन्म से वेश्या नही होती बल्कि सामाजिक एव आर्थिक परिस्थितियो द्वारा बनायी जाती है। दूसरी मुख्य समस्याओ के अन्तर्गत विधवा समस्या है। हिन्दी उपन्यासो के अन्दर यह प्रेरणा आर्य समाज के द्वारा आयी। प्रेमचन्द युग मे इन प्रथाओ के कुपरिणाम का कारुणिक चित्र प्रभूत मात्रा मे मिल जाता है परन्तु प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासो मे यह समस्या पुन विवाह का प्रतिपादन करती है।

नारी की अन्य समस्याओ मे वृद्ध विवाह बाल विवाह दहेज वेश्यागमन तथा अनमेल विवाह आदि कुरीतियो हिन्दी उपन्यासकारो के मुख्य विषय बन गये।

---

जिनका उत्तर प्रेमचन्दोत्तर युगीन उपन्यासकारो मे मिलता है उन्होने नारी के अबला रूप को नहीं बल्कि सबला रूप का प्रतिपादन किया। [१]

निष्कर्षत हम यह कह सकते हैं कि प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास साहित्य मे नारी की उठती मनोदशा एव मनोविचारो को एक नया आयाम देखने को मिलता है जो आधुनिकवाद की ओर इगित करता है।

## ख आधुनिकतावाद की बोधगम्यता

आधुनिकता अग्रेजी के (माडर्निटी) का हिन्दी रूपान्तरण है आधुनिकता एक जटिल प्रक्रिया है जो विश्व साहित्य के अन्तर्गत विवादाग्रस्त बनी हुई है। वर्तमान युग मे सर्वत्र परिवर्तनाकाक्षी प्रवृत्तियो का उद्भव एव विकास हुआ है अर्थात् आधुनिकता में ठहराव एव स्थिरता के स्थान पर निरन्तर बदलाव ही इसे आधुनिकतावाद की ओर ले जाते हैं।

आधुनिकता के मूल मे यह प्रश्न है कि क्या आधुनिकता का सारा अधिकार पाश्चात्य विचार को एव उनके अनुयायियो के ही हाथ मे है। क्या हम जो कुछ सोचते लिखते हैं पढते हैं उसका आधुनिकता से कोई सम्बन्ध नही है। हॉ शायद नहीं है क्योकि अभी हम इतने पिछडे हुए हैं कि अभी हमे आधुनिक नहीं माना जा सकता न तो हमारा देश और न ही उसका साहित्य आधुनिक बना है। यहॉ पर ये विचार उठना स्वाभाविक हो जाता है कि हम किस आधुनिकता की बात कर रहे हैं। इतिहास साक्षी है कि हम पुरातन बेडियॉ तोड चुके हैं नये विचारो के फलस्वरूप हमारा साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। आज न रामायण की सीता अपने ऊपर चारित्रिक दोष स्वीकार करती है और न ही वह बिना जाने अपना दोष सुनकर

---

**१ हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद – डॉ त्रिभुवन सिह पृष्ठ स १३५**

निकल जाती है और न ही कोई अहिल्या पत्थर की बुत बनती है। बिना अपने ऊपर दोषारोपण जाने वह अपने आप को दोषी नही मानती यदि हम ईमानदारी से सोचे तो यह सत्य प्रतीत होगा कि आधुनिकता के तथाकथित पुरोधा जिस दिखावटी मुखौटे को पहनकर भारत रूपी नवोदित शिशु को सजाना चाहते हैं वह उसके लिए सौन्दर्य का साधन बनने के बजाय असहाय बोझ बनता जा रहा है।

हम पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण मे अपनी भारतीय सभ्यता सस्कृति को भूलते जा रहे हैं। अपने आप को अति आधुनिक कहलाने की होड मे हम दूसरो का अनुकरण तो करते हैं लेकिन वह मात्र अपनी सभ्यता की तिलाजलि देना होता है। आशा की जा सकती है कि २१वी शदी के अन्त तक हमारी आधुनिकता भी बढकर वैसी ही हो जायेगी जैसी आज पाश्चात्य आधुनिकता है। हमारी अपनी आधुनिकता का विकास भी बिल्कुल पाश्चात्य गतिविधियो के अन्धानुकरण के रूप मे ही होगा। इस बात की कोई गारण्टी नही हो सकती है कि हमारी उपलब्धियॉ और उनके साधन हमारे अपने हो स्वतत्र हो फिर हम पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण क्यो करने लगे। "वैसे आज हम विगत सस्कारो की पुरातता और अत्याधुनिक सस्कारो के बीच सघर्ष पाते हैं जिससे अनुभव सम्प्रेक्षण मे अतिक्रमण की चेतना का प्रगल्भ मुखरित होता है यही सामाजिक सम्बन्धो की यथार्थता मे मानव के सार तत्व की प्रतिष्ठा का नवीनीकरण है।[१]

आधुनिकता की इस अवधारणा को आधुनिक साहित्य जगत् मे भी स्वीकार किया। सर्वप्रथम आधुनिकता उपन्यासो मे दृष्टिगोचर होती है। यदि हिन्दी उपन्यासो पर सरसरी नजर डाली जाय तो लगता है कि आधुनिकता की बोध की शुरूआत मुशी प्रेमचन्द कत गोदान (१६३४-३६) से मानी जा सकती है। इसमे हिन्दी उपन्यास

**१ आधुनिक युग के वातायन से – अशोक कुमार गुहा पृष्ठ स – १६**

आधुनिकता दृष्टि से नया मोड लेता है। आधुनिक प्रक्रिया के प्रशस्त मार्ग मे बौद्धिकता ने जीवन को प्रभावित ही नहीं किया है अपितु जीवन को स्पन्दित भी कर रहा है।

भौतिक यथार्थ को भोगने की क्षमता और वर्तमान और भविष्य के बीच निष्कासित जैसी मन स्थिति आधुनिकता के अर्थ सन्दर्भ है। आधुनिकता वस्तुत सभ्यता की मार्मिक वेदना है। सभ्य होने की भावना मे प्रताडित व्यक्तित्व की सघर्ष स्थिति है। आधुनिकता बौद्धिक स्तर पर जीवन उसका विकासशील प्रक्रिया का रक्तचाप है और जितनी भी इस विकासशील जीवन के क्रम मे यातनाएँ हैं वे आधुनिकता का श्रेय हैं। [1]

आधुनिक लेखक और कवि भी इन्ही अनुभूतियो और सनसनाहटो के इर्द–गिर्द चक्कर काटते है जो शहरी लोगो के भीतर जागती है।

आधुनिक उपन्यासो मे नारी को उपन्यास की अहम् भूमिका मे चित्रित किया। आज का उपन्यासकार इन्हीं के माध्यम से एक नये परिवेश की अवधारणा करने मे सफलता प्राप्त करता है। उपन्यासो मे नारी के प्रेम सम्बन्धी आकर्षण विकर्षण के बढते हुए पगचिन्हो को देखकर किसी प्रभाव विशेष की गन्ध अनुभव होने लगती है। वह पुरातन सस्कति से हटकर फैशन परस्त और ऐश्वर्य प्रधान नारी का रूप धारण किये हुए है।

आज उपन्यासो मे सेक्स प्रदर्शन आधुनिक अस्तित्व बोध की पुष्टि करता है। यह मात्र उसमे वासना के प्रति आकर्षण निर्माण करता है तथा पुसत्वहीन सकल्पहीन और सुविधाकामी नायको की अवधारणा भी है। उपन्यासो की वर्णवस्तु

---

१ नये प्रतिमान पुराने निकष – लक्ष्मीकान्त वर्मा पृष्ठ स – ११

पूर्ण रूप से यौन भावना ही है। आधुनिक युग का साधारण मनुष्य विशेषता नयी पीढी की मनोवृत्ति का आयाम है। उपन्यास के बढते हुए चरण मे नारी के प्रेम प्रसगो मे स्वच्छन्दता उन्मादकता के क्षणो मे नारी के मॉसल चित्रणो तक का रूप पहना देती है। हिन्दी के उपन्यासकार नारी के रूप सौन्दर्य और आगिक भगिमा मे उलझी रहती है। आधुनिकता नारी की मासल देह का चित्रण करना ही नही है लेकिन हमारा बदलता समाज चलचित्रो पत्र-पत्रिकाओ विभिन्न दूरदर्शन चैनलो द्वारा इसी रूप मे बोध कराता है। हमारी अपनी परम्परा मे बहुत सी चीजे ऐसी है जो हमारी थी हमारी है पर अन्धानुकरण की दौड मे हम उन्हे भूल गये।

निष्कर्षत समग्र रूपो पर चिन्तन करते हुए हम यह कह सकते हैं कि आधुनिकता एक सतत् प्रवाहमान प्रक्रिया है जो अतीत के माध्यम से वर्तमान का आकलन करते हुए आगत को भी अनुरेखित करती है।

## ग प्रगतिशील उपन्यासकार यशपाल और नारी के प्रतिमान

प्रगतिशील कथाकार यशपाल का नाम उपन्यास साहित्य जगत् मे सुप्रसिद्ध है जिन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से यथार्थवाद का सम्पुष्ट विवेचन अपने उपन्यासो मे नारी पात्रो के द्वारा अकन किया है जो आधुनिकता का बोध कराती है जैसे दादा कामरेड की शैल मनुष्य के रूप की सोमा देशद्रोही की राजदुलारी झूठा सच की तारा कनक बारह घटे की बिनी अप्सरा के श्राप की मेनका आदि उल्लेखनीय नारी पात्र हैं जिनके माध्यम से उपन्यासकार यशपाल ने अपने प्रगतिशील विचारधारा का परिचय दिया।

यशपाल का सम्पूर्ण साहित्य रूढिवादी परम्पराओ को तोडता हुआ जनमानस पर विजय की घोषणा करता है तथा भारतीय नारी की समर्थक जीवन मे नयी दिशा प्रदान करने की ओर सकेत करता है। यशपाल नारी स्वतन्त्रता के पक्षधर हैं। वे नारी की समस्या के मूल मे उसकी आर्थिक परतन्त्रता को स्वीकारते हैं। उन्होने विवाह और परिवार के सम्बन्ध मे भी अपनी कतियो के माध्यम से मार्क्सवादी विचारधाराओ मे मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया है। यशपाल का आग्रह प्रेम विवाह और परिवार के प्रति इतना सबल है कि उनके औपन्यासिक पात्र प्रवृत्ति से विवाह विरोधी है। वे जानबूझकर अनजाने मे विवाह से कतराते हैं और यदि वैवाहिक बन्धन मे पड जाते हैं तो उसे तोड फेकने के लिए छतपटाते हैं। जैसे झूठा-सच की कनक मनुष्य के रूप की मनोरमा आदि द्रष्टव्य हैं। इनके उपन्यास साहित्य मे अनैतिक मूल्यो सामाजिक व्यवस्थाओ का विरोध मिलता है जो स्वस्थ समाज के विकास मे बाधक है। भारत मे क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता आन्दोलन चित्रण किया है जो एक द्रष्टा और सहयोगी के चरित्र का अकन भी करता है। यशपाल जी के विचारो मे राजनीतिक आवेश नही है बल्कि है एक मर्म गहराई। उनमे प्रभाव के नाम पर एमोशनल एटैचमेट नही है आज जबकि इसी का बोलबाला है। यही कारण है कि हिन्दी उपन्यास पाठकों मे वे अत्यन्त प्रिय है।[१]

हिन्दी उपन्यासकारो मे यशपाल एक नवीन नारी विषयक विचारो को लेकर मजबूत कडी के रूप मे स्वीकार किये जाते हैं। ये रति स्वतन्त्र के प्रबल समर्थक हैं। इसके लिए वे विवाह जैसे पवित्र सस्कार को भी नहीं मानते उनका विचारणीय सोच है कि जब स्त्री को किसी की बनकर ही रहना है तो नारी स्वतन्त्रता का कोई मूल्य नहीं। प्राय उनके सभी उपन्यासो मे नारी स्वाधीनता को इसी विचार के

---

**१ मासिक वीणा फरवरी १६४६ ई**

अन्तर्गत निरूपित किया है। स्त्री का समाज मे स्थान स्त्री स्वातन्त्र्य स्त्री शिक्षा प्रेम विषयक दृष्टिकोण आदि विषयो पर यशपाल जी का मत आरम्भ से अन्त तक एक जैसा है।[१] इनके विचारो मे नारी चरित्रो मे स्त्री स्वातन्त्र्य का सघर्ष अपेक्षाकत अधिक तीव्र देखा जा सकता है। उनके उपन्यासो की नारियॉ प्राय अभिजात्य वर्ग तथा मध्यवर्ग की है इनमे से अधिकाश तो कालेज की छात्राएँ हैं जो राजनीतिक चेतना सम्पन्न है और साम्यवादी पार्टी का कार्य करती हैं। यशपाल के नारी चरित्रो के सामने दोहरा सघर्ष है। पहला एक तो उन्हे पुरानी जर्जर रूढियो से मुक्त होना है और दूसरे उन्हे पूॅजीवादी शोषण तथा साम्राज्यवादी शासन को भी समाप्त करना है। इसके लिए ये नारियॉ राजनैतिक सगठनो ओर कार्यो मे खुलकर भाग लेती है। वस्तुत आधुनिक भारतीय स्त्रियो के सामने सघर्ष का रूप दोहरा था। रूढिवादी समाज से सघर्ष तथा पूॅजीवादी व्यवस्था से सघर्ष। इन्ही सघर्षो के मध्य नारियो की वस्तु स्थिति का वर्णन उपन्यासकार ने किया है। मार्क्सवादी विचारधारा के होने के कारण यशपाल ने स्त्री को केवल उपयोग और भोग की वस्तु बनाकर रखना मनुष्य के जन्म के स्रोत को बिगाडना है। समाज की उन्नति और वृद्धि के लिए स्त्रियो के मानसिक और शारीरिक विकास तथा समाज मे स्त्रियो के समान अधिकार के लिए उन्हे भी पैदावार के कार्यो मे भाग लेकर उसका फल पाने का समान अवसर होना चाहिए।[२] इन्ही विचारो की अभिव्यक्ति यशपाल ने अपनी नारी विषयक दृष्टिकोण मे दी है। मनुष्य के रूप मे मुख्य नायिका सोमा न जाने क्या से क्या हो जाती है पर उन सब रूपो मे एक आन्तरिक साम्य है। कह सकते है कि परिस्थितियो के साथ सगति बैठा देना उसके चरित्र की विशेषता है। इसी क्रम मे झूठा सच उपन्यास मे नारी की मुख्य चेतना जॉति-पॉति एव धार्मिक भेदभाव

---

१ यशपाल के उपन्यासो मे सामयिक चेतना – डॉ ह श्री सोन पृष्ठ स–१६१

२ मार्क्सवाद – यशपाल पृष्ठ स – ८४

लोकतत्र की दुर्गति गाधीवादी सिद्धातो का खोखलापन आदि बातो का सागोपाग चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। दादा कामरेड की शैल भी रूढिवादिता का विरोध करती हुई दादा के साथ निकल पडती हैं जो स्वतन्त्र विचारो के परिचायक हैं। इस प्रकार यशपाल जी का नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण प्रगतिशील सामयिक चेतना से अद्‌भुत और युगीन प्रगति का द्योतक बनकर व्यक्त हुआ।

## घ० उपन्यासो मे नारी का चित्राकन

उपन्यास की कथावस्तु का आधार स्तम्भ विभिन्न पात्रो के चारित्रिक उत्थान-पतन से होता है। चरित्र-प्रधान उपन्यासो का सारा-ताना बाना चरित्रो के आधार पर बुना जाता है विभिन्न पात्रो का चरित्र-चित्रण करना ही उपन्यासकार का प्रथम उद्‌देश्य रहता है। चरित्र–चित्रण के द्वारा एक और उद्‌देश्य को सिद्ध की जाती है। चरित्र-चित्रण के बल पर पात्र को व्यक्तित्व प्राप्त होता है। चरित्राकन के द्वारा लेखक पात्र के व्यक्तित्व के गुप्त आन्तरिक पक्ष का उद्‌घाटन करता है अतएव व्यक्तित्व को पूर्णत प्रदान करने के लिए लेखक चरित्र-चित्रण की प्रत्यक्ष विधि का आश्रय ग्रहण करता है।

यशपाल ने अपने उपन्यासो मे सामाजिक पीठिका से जिन पात्रो का उदय किया है उनके माध्यम से लेखक ने सामाजिक रूढियो एव परम्परागत मान्यताओ मे जकडे और घुटन के शिकार पात्रो को प्रस्तुत किया। इन्ही सामाजिक पात्रो मे कुछ ऐसे भी हैं जो एक ओर सामाजिक रूढियो के बन्धन के कारण अनेक प्रकार की विवशताएँ अनुभव करते हैं तो दूसरी ओर उन्हे तोडकर नये जीवन मूल्य की स्थापना भी करते हैं। नैतिक सन्दर्भ मे लेखक ने कुछ ऐसे पात्रो की रचना की है

जो आज के समय की परम्परागत नैतिक धारणाओ के विस्फोटक रूप को प्रकट करते हैं। इसके विपरीत यशपाल के उपन्यासो मे कुछ ऐसे पात्रो का चित्रण भी मिलता है जो नैतिक रूढियो पर आघात कर उन्हे ध्वस्त कर देने मे चरितार्थता मानते है। प्रगतिवाद के पोषक होने के कारण इन्होने अपने उपन्यासो का मुख्य विषय नारी की गतिशीलता व परिवर्तनशीलता को बनाया। इनके उपन्यासो मे नारी एक नवीन विचारधारा को प्रस्तुत करती दिखायी देती हैं।

अब हम लेखक के प्रत्येक उपन्यासो के विशिष्ट नारी पात्रो का चरित्र विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

# नारी पात्र

## (दादा कामरेड)

## शैल

दादा कामरेड की मुख्य नारी पात्रो मे हम शैल को रख सकते हैं जो आधुनिकता की कसौटी पर खरी उतरती है। शैल बदलते हुए समाज की एक नये ढग की लडकी है पढी-लिखी व बौद्धिक स्तर पर तर्क-वितर्क करने वाली स्त्री है। घर का वातावरण भी आधुनिकता से अतिरजित था और पिता ने भी पुत्री को पर्याप्त स्वतत्रता दे रखी थी।

शैल उपन्यासकार की एक ऐसी चरित्र सृष्टि है जिसके माध्यम से लेखक ने पूँजीवादी व्यवस्था की विसगतियो और अन्तर्विरोधो का यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत

करने का प्रयास किया है। शैल कुछ इस तरह रहती है कि जैसे उसकी मन स्थिति पर दु ख के बादल छाये हो। लोग सुख तो बॉट लेते हैं पर दु ख बाटने को कोई भी तत्पर नही होता। शैल इसीलिए हमेशा बाहर से प्रसन्नचित्त रहने की कोशिश करती है। शैल के जीवन मे प्रेम ही प्रेम हैं वह प्रेम को ही जीवन मानती है। मेरे तो होश सम्भालने के दिन से ही मेरे जीवन मे प्रेम रहा है और शायद जीवन रहते उससे छुटकारा भी ना होगा। जब छोटी थी अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रेम किया। समझ आने पर प्रेम का क्षेत्र भी बढा अर्थात् प्रेम को अधिक देने से उससे अधिक पाने की इच्छा होने लगी। जब वह पूरी नही हो पाती निराशा और क्लेश होने लगता।[१] शैल अपनी इसी इच्छा की पूर्ति के लिए सदैव तत्पर रहती है। पर उसका दर्शन खोखला है। प्रेम मे जब प्राप्य की इच्छा होती है तो वह स्वयम् बन जाता है। प्रेम मे होती है पवित्रता और उसके साथ ही होता है परस्पर विश्वास। पर जहॉ प्रेम मे वासना या शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा आ जाती है वहीं प्रेम नीचे गिर जाता है। शैल भी एक के बाद एक से प्रेम करती है और शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित करती है। उसका पहला सम्बन्ध अपनी सहेली के भाई से होता है जो शारीरिक सम्बन्ध स्थापित होने के पश्चात भाग चलने को कहता है। पर पिताजी का मोह शैल को ऐसा न करने के लिए मजबूर कर देता है फिर वह उसे एक दवाई देता है जिससे कोई अनिष्ठ न हो। इस प्रकार महेन्द्र और फिर खन्ना से हरीश से वह अपने प्रेम का विस्तार करती है। शैल जो कुछ भी करती है भारतीय समाज मे मान्य नही है इसीलिए शैल को ऐसे समाज से शिकायत है। जीवन के सब मार्ग समाज मे बन्द पाकर मुझे सबसे अधिक खिजलाहट समाज के प्रति होती है।[२] शैल के जीवन मे इतने अधिक लडके पुरुष कदापि न आते यदि हरीश जैसा

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – ३५

२ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – ११०

व्यक्ति जो शैल के विचारो से पूरी तरह मेल खाता है जो नारी को पुरुष की सम्पत्ति न समझकर नारी को साथी मानता है पहले ही उसके जीवन मे आ गया होता या फिर शैल स्वयम् तत्कालीन भारतीय जीवन मे उभरती हुयी प्रगतिशील चेतना से सम्पन्न न होता उसका चरित्र भी भारतीय सभ्यता के अनुकूल शीशे की तरह चमकता। यह सच है कि जब तक स्त्री-पुरुष मे विचारो का मेल नही बैठता तब तक स्त्री-पुरुष दोनो का ही जीवन एक अनचाही राहो मे भटकता रहता है क्योकि स्त्री-पुरुष जीवन के दो पहिए है जो सदैव एक दूसरे के चलने से ही सुचारु रूप से जीवन की अतिम सन्ध्या तक पहुँचते हैं। शैल के जीवन मे इतना अधिक उतार चढाव मात्र इसलिए आया क्योकि वह प्रगतिशील चेतना से सम्पन्न है। शैल विवाह क्यो नही करती ? इसके स्पष्ट कारण है। वह अपने आपको पुरुष के अधीन नहीं मानना चाहती। शैल उन लडकियो मे से है जो अपनी वासना की तृप्ति के लिए विवाह जैसी दकियानुसी परम्परा से घृणा करती है। वह जीवन मे रोज नयी ताजगी चाहती है और विवाह कर एक सीमित दायरे मे रहना शैल जैसी विचारो वाली लडकियॉ पसन्द नहीं करती। हरीश के साथ एक विवाद मे शैल कहती भी है "सन्तान और वश की रक्षा के अलावा और भी बहुत कुछ जीवन मे हैं।[1] और वह बहुत कुछ जीवन मे क्या है ? सिर्फ नये व्यक्तियो से रोज के सम्पर्क और उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध यह शैल के कृत्य स्वयम् ही सिद्ध कर देते हैं। शैल की सबसे बडी समस्या यह है कि वह रूढिग्रस्त सस्कारयुक्त भारतीय नारियो की भॉति वह अपने आपको किसी ऐसे पुरुष के हाथो नहीं सौंप सकी। जो स्त्री को मनचाहे ढग से भोगने की वस्तु और अपनी सम्पत्ति समझता हो।

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – २२

शैल भारतीय जीवन मे आ गये नये परिवर्तनो के बीच के उभरी है। वह अपना निजी महत्त्व चाहती है। अपनी स्वतत्रता चाहती है। अपने आप पर किसी का भी रोक-टोक उसे नागवार है। शैल के माध्यम से लेखक ने आधुनिक नारी का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है। भारतीय समाज मे नारी की स्थिति हमेशा से सोचनीय रही है शैल ने उस दयनीयता को अपने जीवन मे लेशमात्र भी स्थान नही दिया।

हरीश के पूर्व शैल के जीवन मे जितने भी पुरुष आते हैं वे सब पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। नारी पर अपना अधिकार जमाने वाले उसे अपनी निजी सम्पत्ति मानने वाले भोग की और मात्र भोग की वस्तु समझने वाले और एक ऐसी दासी बनाकर रखने वाले जिसका अपना स्वतत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व कहीं भी सामने नही आता। शैल इन सब मान्यताओ से अपने आप को बिल्कुल अलग रखती हैं। वह जीवन यौवन का वह स्वतत्रता का दिल खोलकर स्वागत करती है। यही कारण है कि कुछ आलोचको ने शैल की दुश्चरित्रता की ओर सकेत किया है।

स्वयम् लेखक भी उपन्यास के प्रारम्भ मे कहते हैं   आचरण के कुछ प्रेमियो को शैल के व्यवहार मे नग्नता दिखायी देगी। इस प्रकार का चरित्र प्रस्तुत करना वे आदर्श की दृष्टि से घृणित समझेगे। हो सकता है शैल उनकी सहानुभूति न पा सके परन्तु यह शैल है कौन ? दादा कामरेड की शैल स्वयम कुछ न होकर घृणा से नाक-भौं सिकोडने वालो की अतिरिक्त परन्तु जागरुक सक्रिय प्रवृत्ति ही है।[1] इस प्रकार यशपाल ने नारी सम्बन्धी अपने इस नग्न चित्रण का दोषारोपण समाज के कतिपय नाक-भौं सिकोडने वाले अतृप्त एव जागरूक लोगो के माथे मडकर

---

**१ दादा कामरेड – यशपाल (भूमिका से) पृष्ठ सख्या–८**

अपने को निर्दोष सिद्ध करना चाहा है। किन्तु यशपाल का यह नग्न चित्र श्रेष्ठ साहित्य के लिए किसी भी प्रकार वाछनीय नहीं है।[१] शैल जीवन भर अपने विचारो से मेल खाते व्यक्ति को खोजती रहती है और जब उसे अपने विचारो से मेल खाते हरीश मिलता है जो अनावश्यक बन्धनो से मुक्त होकर जीने और जीने दो मे विश्वास करता है। तो वह उसे अपना लेती है और इस रूप मे अपना लेती है जिसके बाद फिर उसके जीवन मे किसी के आने का प्रश्न ही नही उठता शैल के चरित्र की सबसे बडी विशेषता यही पर उजागर होती है कि वह हरीश के गर्भ को लेकर पिता को समाज की बदनामी से बचाने के लिए सहजता से घर छोड देती हैं और अपने पिताजी से कहती है कि पिताजी मुझे कुछ नही चाहिए। स्त्री होने के नाते मेरा जो प्राकतिक अधिकार है उससे कुछ अधिक मैंने नही किया है। मैं मनुष्य हूॅ, मनुष्य बनी रहना चाहती हूॅ।[२] वह हरीश को उसकी क्रान्ति को उसकी निशानी के रूप मे जो उसके गर्भ मे पल रहा होता है जीवित रखना चाहती है। यहीं पर उसके सोच मे बदलाव आया है जो शैल मातृत्व को बोझ समझती थी। वही मातृत्व की इस निशानी को अपने भीतर समेटती दिखायी पडती है। यदि उसमे केवल सेक्स ही आनन्द का चरम उद्देश्य होता तो वह इस बार भी पहले की भाति अपने गर्भ को गिरा देती। लेकिन उसने ऐसा करना उचित नही समझा वह हरीश के लघुरूप को समाज मे फिर से लाना चाहती है।

प्रसिद्ध मार्क्सवादी राल्फ फाक्स के अनुसार समाजवादी यथार्थवादी चरित्र वही हो सकता है जिसके माध्यम से विसगतियो से भरी हुई पूॅजीवादी व्यवस्था का यथार्थ चित्रण भी हो साथ ही जो कही न कही अपने भीतर सामाजिक दायित्वो को समझता हुआ ऐसी दिशा की ओर अग्रसर हो जहॉ से आशापूर्ण भविष्य झॉकता

---

१ हिन्दी उपन्यासों में नारी – डॉ शैल रस्तोगी पृष्ठ सख्या– २२३

२ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या–१३५

हो। शैल के चरित्र मे ये सारी विशेषताएँ दिखायी देती हैं। वस्तुत शैल के इस आचरण पर परम्परावादी आलोचक कहते है कि यह भारतीय सस्कति और सामाजिक मर्यादा के विरुद्ध है। पूँजीवादी दकियानुसी समाज मे प्रेम और उससे भी आगे बढकर शारीरिक सम्बन्ध गुप्त रूप से चाहे जितने भी किये जा सकते है पर हमारा समाज इसे हमेशा अनुचित ही मानता आया है। हम चाहे जितने भी प्रगतिशील हो जाये लेकिन हमारे रूढिग्रस्त सस्कार अभी भी चारो तरफ हमे जकडे है। जिसका उदाहरण उप यासकार ने अन्त मे शैल को घर मे जगह न देकर दिखाया है।

हमारे समाज मे विवाह से पूर्व सन्तान प्राप्ति आज भी अनुचित माना जाता है। यही कारण है कि कुछ आलोचको की दृष्टि मे शैल का चरित्र उज्ज्वल न होकर कलकित हो गया। नारी स्वतत्र की समर्थक शैल के चरित्र के ये पक्ष जहॉ उसे एक सशक्त आधार प्रदान करते हैं वहॉ कतिपय ऐसी बाते भी है जो उसके चरित्र की सीमा बन गयी है परम्परागत प्रेम विवाह के विकत स्वरूप के प्रति उसकी तीखी प्रक्रिया स्वाभाविक है किन्तु उसकी यह प्रतिक्रिया अतिवादी स्तरो तक पहुँच गयी हे। लेखक ने एक साथ उसके चरित्र मे कई वेचारिक आसगतियो को गुथ दिया हे। एक मार्क्सवादी लेखक होने के नात यदि यशपाल ने उसे भी सही वेचारिक पीठिका पर नारी स्वातत्र्य की प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया होता तो शैल का चरित्र न केवल पाठक के सम्मान एव प्रशसा का अधिकारी बनता वरन वह अपने विद्रोही रूप को भी वास्तविक सार्थकता दे पाने मे समर्थ होता। शैल अतिवादी भूमिका पर चलने वाली एक ऐसी विद्रोहिणी के रूप मे दिखायी देती है जिसका सारा विद्रोह अपनी गलत समझ के कारण अर्वाछित दिशाओ मे ही भटक जाता है।

---

नि सन्देह ऐसे प्रसगो मे न जाने कितने प्रगतिशील पाठको को उत्तेजित किया होगा और शैल जैसी स्वच्छन्द त्यागशील और ममतामयी अपने प्रेमी के लिए कुछ भी कर सकने वाली लडकी की तलाश मे अपना सिर फोड लिया होगा। [1] यशपाल की कल्पनाओ का समाज वास्तव मे बहुत ही प्रगतिशील व आधुनिक रहा होगा। जहॉ पुरुष किसी नारी से नग्न होने को कहेगा और नारी उसकी विवशताओ को ध्यान मे रखते हुए उसकी इच्छा की पूर्ति करेगी शैल को शरीर से कपडे उतारना अपनी त्वचा उतारने के समान कठिन जान पडा परन्तु हरीश के निराशा से सिर लटका लेने की बात सोचकर वह स्वयम् अपने ऊपर जबरदस्ती करने के लिए विवश हो गयी। मृत्यु के मुख मे फसा हुआ यह लडका जो बात कहता है उसकी उपेक्षा कैसे किया जाय ? [2] उनके समाज मे ऐसा निरन्तर होगा क्योकि काम वासना की भावना तो प्राकतिक है और प्रत्येक मनुष्य भी पुरुष किन्ही न किन्ही विवशताओ मे फॅसा रहता है फिर प्रेमी की किसी भी इच्छा को कैसे ठुकराया जाये प्रेम कलकित न हो जायेगा ?

यशपाल ने दादा कामरेड मे शैल के चरित्र के माध्यम से जो चित्र प्रस्तुत किया है वह आज के सन्दर्भ मे नवीन आधुनिकता का बोध कराती है जैसे शैल के अनुसार विवाह स्त्री स्वातत्र्य के मार्ग मे सबसे बडी बाधा है आज की पढी-लिखी शिक्षित नारियॉ भी विवाह जैसे सस्कार को नही मान रही है बल्कि स्वच्छन्द रूप से विचरण करना चाहती है और जो इस सस्कार को मान भी रही है वो वैचारिक स्तर पर सामञ्जस्य न बैठने के कारण विवाह विच्छेद भी कर रही हैं घर की चहारदिवारी से बाहर निकलने के कारण सामाजिक राजनैतिक व आर्थिक क्षेत्रो मे एक से अधिक पर पुरुषो से सम्बन्ध भी स्थापित हो रहा है और सम्बन्ध स्थापित होने के

---

**१ हिन्दी उपन्यासो मे नायिका की परिकल्पना – डॉ सुरेश सिन्हा पृ स – १४५–१४६**
**२ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या–८८**

कारण पारिवारिक कलह होने के डर से वह विवाह से भयभीत है यही कारण है कि शैल जैसी आधुनिक भारतीय नारी का चित्रण लेखक ने करके शेल के माध्यम से जो आधुनिक नारी का चित्र बहुत पहले ही (सन १६४३ ई) अपनी लेखनी द्वारा प्रस्तुत कर दिया था वह आज के सन्दर्भ मे बिल्कुल ठीक उतरता है।

# यशोदा

यशोदा दादा कामरेड की दूसरी प्रमुख नारी है शैल के चरित्र की अपेक्षा यशादा का चरित्र उतना ही अधिक विवश पराधीन दिखाया है। शैल के चरित्र मे विचारो मे जहॉ एक ओर उन्मुक्ता और स्वतत्रता पाते है वही दूसरी ओर यशोदा का चरित्र रुढिग्रस्त मान्यताओ घर की चहारदिवारी के बीच रोता बिलखता दीख पडता है। ऐसा क्यो है कि सामाजिक मान्यताओ पति की पराधीनता के बीच स्त्री का जीवन इतना विवश है उसमे उसका स्वयम् का व्यक्तित्व ही दब सा जाता है यशोदा के चरित्र के माध्यम से लेखक ने यही दर्शाने का प्रयत्न किया है। यशोदा अमरनाथ की सती साध्वी पत्नी है जो एक रात हरीश को अपने घर मे शरण देकर उसकी प्राण रक्षा करती है। बाद मे शैल के आग्रह से वह भी घर से बाहर निकलती है अमरनाथ की दृष्टि मे स्त्रियो का स्थान घर के भीतर है। एक मर्यादा के भीतर रहने से काम ठीक चलता है।[१] यशोदा अपने पति से कहती है यदि आप समझते हैं कि स्त्रियॉ इस विश्वास के योग्य नही है कि वे घर से बाहर निकल सके तो घर मे ही उनका क्या विश्वास है ? यदि आपको मुझ पर विश्वास नही तो कहिए ।[२]

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या– १२४
२ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – १२५

यशोदा के जीवन मे बदलाव शैल की स्वतत्रतापरक बातो व नारी का अपना भी कुछ वजूद है नारी अपने-आप मे भी कुछ कर सकती है समाज मे उसका भी अपना स्थान है आदि बाते सुनकर आता है इसके पूर्व वह घर के भीतर ही अपनी दुनिया जानती है यदि वह कुछ है तो एक भोग्या दासी अथवा अपने पति की व्यक्तिगत सम्पत्ति मात्र। प्रगतिशील चेतना से वह प्रभावित अवश्य होती है किन्तु पति की प्रताडना से अपने जीवन को स्त्री-स्वातत्र्य की ओर मोड पाने मे वह असमर्थ रहती है। उसका जीवन भीतर ही भीतर घुटता रहता है। परम्परागत मान्यताओ और आदर्शो के बोझ से दबी वह अत्यन्त सयम और शान्ति से भारतीय नारी के आदर्श का बोझ ढोती रहती है। यशोदा एक ऐसी गृहिणी के रूप मे हम सबके सामने आती है जहॉ स्त्री ने अपना अधिकार अपने पति को सौंप दिया है। अविश्वास की डोर जीवन पर्यन्त उनके साथ चलती रहती है। तभी यशोदा हरीश के बारे मे अपने पति को कुछ भी नहीं बताती जबकि वह उसको रात-भर अपने घर रखती है उसको सुबह बाहर निकलने मे पूरा सहयोग देती है। उस अजनबी के लिए उसके दिल मे पूरी तरह सहानुभूति है। तभी वह आधी रात मे आये हुए शरणार्थी को न केवल शरण देती है अपितु उसके साथ एक मेहमानो जैसा व्यवहार करती है उसके लिए पानी खाना बिस्तर आदि की पूरी तरह व्यवस्था करती है और भीतर ही भीतर इस बात से भी भयभीत है कि कही अगर घर मे उसकी सास या पति को पता चल गया तो वह क्या जवाब देगी ? इस अविश्वास की डोर यही पर समाप्त नही होती बल्कि इतनी बढ जाती है कि पति-पत्नी के बीच का सम्बन्ध ही खत्म हो जाता है। यशोदा कई दफे खूब रोई थी उसे केवल दु ख था आठ बरस मे इन्होने मेरा ऐसा कौन काम देखा कि यह मुझ पर सदेह करने लगे।[१]

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – ६२

अमरनाथ अपनी पत्नी पर अविश्वास भरी विभिन्न कल्पना करके अपना गृहस्थ जीवन स्वयम् विनष्ट करता है परपुरुष से अपनी स्त्री के शारीरिक सम्बन्ध की बात सोचते ही सिर चकराकर उनकी ऑखो मे खून उतर आता है। इसके बाद केवल एक ही बात दिखायी देती मृत्यु यशोदा की अपनी दोनो की।[१]

मूलत अमरनाथ के मन मे यह विचार यशोदा के घर से बाहर निकलने के कारण ही मस्तिष्क पर छा जाता है। लेखक ने शैल के चरित्र को जहॉ एक ओर इतना आधुनिक दिखाया है वहीं दूसरी ओर यशोदा के चरित्र के माध्यम से पुरातन रूढिग्रस्त महिला का चित्र प्रस्तुत करके उसको घर के भीतर ही छटपटाते विलखते आधुनिक विचारो की सीमाकन को छूटे हुए अर्द्धविकसित नवीन समाज की ओर उन्मुख होते दिखाया है।

दादा कामरेड की अन्य नारी पात्रो मे नैनसी और फ्लोरा आती है। ये भी आधुनिक विचारो की पारितोषक है नैनसी राबर्ट की बहन है राबर्ट के मित्र हरीश की ओर उन्मुख होती है। पुरुष मित्रता से उसे कोई परहेज नहीं है यही कारण है कि वह हरीश को अपनी ओर आकष्ट करना चाहा लेकिन हरीश की तरफ से कोई जवाब न पाकर उसका नारी मन पूरी तरह से टूट कर बिखर जाता है। नैनसी ने कई बार हरीश की ओर देखा परन्तु उसे अपने ध्यान मे मग्न पाया सब ओर से उपेक्षा की चोट खाकर वह कहीं दूर भाग जाना चाहती थी[२] इस तरह नैनसी अपने प्रेम की चाह हरीश मे न पाने से दुखी रह जाती है।

इस उपन्यास की अन्य नारियो मे फ्लोरा का स्थान भी मुख्य है। वह राबर्ट की पत्नी है। वह एक धर्म-परायण स्त्री है। जो राबर्ट के धर्मोपदेश के कारण ही उसके

---

१ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – ६३
२ दादा कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या–७०

प्रति आकष्ट होती है। राबर्ट भी उसका आदर करने लगा। लेकिन जब उसका पति राबर्ट नास्तिकता के मार्ग पर अग्रसर हो गया तो फ्लोरा के लिए स्थिति असहाय हो जाती है और वह उससे अलग रहने लगती है और वह कॉगडा जिले मे अछूतो मे ईसाइयत का प्रचार करने वाले मिशन मे चली जाती है। पत्नी होने के अधिकार से जब उसका पति उसको मनीआर्डर से पैसे भेजता है तो फ्लोरा उसका मनीआर्डर इस उत्तर के साथ लौटा देती है नास्तिको के पैसे पर मुझे श्रद्धा नही ।

इस तरह लेखक ने अपने उपन्यास मे अनेक नारियो को रखकर जैसे शैल के चरित्र के माध्यम से नवीन विचारधारा को धारण करने वाली नारी का चित्र यशोदा के माध्यम से रूढिग्रस्तता को तोडने की चाह मे छटपटाती हुई नैनसी के माध्यम से अपने विचलित जीवन मे विराम पाने की ललक व फ्लोरा का धर्म के प्रति आस्था के कारण अपने पति तक को छोड देना इत्यादि बाते उपन्यासकार ने नारी चरित्रो के माध्यम से उन्हे अपने उपन्यास मे विशिष्ट स्थान प्राप्त कराया।

वस्तुत उपन्यास मे लेखक ने मूलत राजनीतिक और सामाजिक समस्याओ को एक यथार्थ के रूप मे उभारा है। सामाजिक समस्याओ के प्रति लेखक का रुख पूर्णत विद्रोहात्मक है। रूढिवादी दकियानूसी मान्यताओ एव परम्परागत आदर्शों तथा मूल्यो का बोझ ढोने वाला आज का समाज किस प्रकार एक स्वस्थ भूमि की ओर अग्रसर हो सकता हैं। उपन्यास के अन्तर्गत विभिन्न नारी चित्रणो के माध्यम से लेखक ने इस ओर सकेत किया है।

---

# चन्दा (देशद्रोही)

यशपाल कत देशद्रोही (१६४२ ई ) की चन्दा पुरातन रूढिग्रस्त नारी है। उसके चरित्र के माध्यम से लेखक ने भारतीय स्त्री के परम्परागत मान्यताओ को बोझ को ढोते हुए दिखाया है। भारत मे नारी की स्थिति का उसके नवीन वैचारिक चिन्तन और सस्कारग्रस्त क्रमागत के द्वन्द्व का चित्रण प्रस्तुत किया है। चन्दा शिक्षित है पर उसकी सारी शिक्षा बिल्कुल अर्थहीन है क्योकि वह एक ऐसे पुरुष की अर्द्धागिनी बन जाती है जो पूँजीवादी सभ्यता का प्रतीक है और जिसके लिए अन्य वस्तुओ की तरह स्त्री भी एक वस्तु है। गृहिणी होने के नाते वह राजाराम की गृहस्थी का सचालन पति के इच्छानुसार करती हे। डॉ खन्ना जो राजदुलारी का पति है। अचानक एक दिन चन्दा पुन जीवित देखकर उसे न केवल सम्भालती है बल्कि उसकी पग-पग मे सहायता करती है। चन्दा मे नैतिकता की भावना सदा जागरूक रहती है। उसमे स्वाभाविक वृत्तियो और सस्कारो के सघर्ष के कारण तनाव उत्पन्न होता है। जिससे वह खन्ना की बाते सुनकर भी सदा एक दूरी एक सीमा बनाये रखती है। खन्ना के सामीप्य के कारण उसके चरित्र मे बदलाव आता है। ये बदलाव खन्ना और चन्दा के रोमास मे परिवर्तित हो जाता है। चन्दा की दृष्टि मे डॉ खन्ना केवल भाई है बच्चे की तरह है। अपनी बेहोशी की स्थिति मे वह ऐसा ही व्यक्त करती है। डॉ खन्ना के यह पूछने पर की हमे बच्चो मे जगह मिलेगी या नही। चन्दा कहती है तुम उससे बहुत आगे हो।[1] खन्ना को लेकर पति की नजरो मे वह शक का कारण बनती है। मिथ्याभिमानी पूँजीवादी पुरुष इतना अहकार विडम्बित है कि चन्दा की उस अगाध ममत्व और विराट वात्सल्य को भी नही पहचान पाता। डा खन्ना चन्दा की गोद मे सिर रखकर सहारा और विश्राम

---

१ देशद्रोही – यशपाल पृष्ठ सख्या – २६२

समाज मे स्त्री को पुरुष अपनी सम्पत्ति मात्र समझता है उसे जीवन मे कर्त्तव्य तो बहुत निभाने पडते हैं लेकिन अधिकार उसके बहुत सीमित है। चन्दा के अन्दर की नारी रह-रहकर पुरुष के अत्याचारो का विरोध करने को तडपती है। पर अपनी विवशता देखकर उसे हर बार मौन हो जाना पडता है। प्रारम्भ मे चन्दा के जीवन मे जो दृढता दिखायी पडती है वह अन्त तक कायम नही रह पाती। पर उसकी सारी मनुष्यता को निगल जाती है पूँजीवादी पाशविकता। पूँजीवादी समाज मे नारी के आर्थिक परावलम्बन के कारण घर की सकीर्ण दिवारो मे बन्द हो जाने के लिए विवश हो जाती है। अपने पति राजा राम के रगोडा पहुँचने पर तभी उसे डॉ खन्ना को मरणासन्न अवस्था मे छोडकर अपने पति के साथ जाना होता है। इस तरह उपन्यास मे चन्दा के माध्यम से ऐसी स्त्री का चित्रण प्रस्तुत किया गया है जो भारतीय सामाजिक दृष्टि से नारी की उन पीडाओ और टीस को व्यक्त करता है जो अपने पति के समक्ष पराधीन है और बिना उनकी अनुमति से वे अन्य किसी की दूषित जीवन की सहारा न दे सकने मे असमर्थ है।

चन्दा के चरित्र का विकास आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य मे बिल्कुल धुँधला सा जान पडता है। चन्दा के चरित्र के माध्यम से लेखक ने शोषित नारी की करुण गाथा को प्रस्तुत किया है लेखक के निम्नलिखित कथन मे चन्दा की दयनीय पराधीन और घुटनभरी जिन्दगी का स्पष्ट परिचय मिल जाता है वह घर के बाग की बेल थी और पति माली पति की पसन्द के प्रतिकूल फूट पडने वाले स्वभाव और प्रवृत्ति की कोपलो को काट-छाटकर पति की पसन्द और गृहस्थी की परिस्थितियो के अनुकूल शाखाओ को बढाना ही स्त्री के जीवन का क्रम है कभी उसे अनुभव होता कि स्त्री होना ही अपराध है। [१]

---

१ देशद्रोही – यशपाल पृष्ठ सख्या – १२५

आज की पूँजीवादी व्यवस्था मे नारी का यह शोषण अत्यन्त घृणास्पद है इसे चन्दा के चरित्र के माध्यम से प्रस्तुत कर लेखक ने नारी की स्वतत्रता और उसकी भावनाओ तथा इच्छाओ को कुचलकर तथा उसे मात्र अपनी ही वस्तु के रूप मे घर की चहारदीवारी के अन्दर बन्द करके रखना यह पुरुष का मिथ्याभिमान है। वस्तुत पति की उपेक्षा ही उसे डॉ खन्ना की ओर झुकाती है क्योकि खन्ना के द्वारा ही उसे अपने आत्मसम्मान का अनुभव होता है। अपने पति की दृष्टि मे वह अपना महत्त्व केवल एक भोग्या के रूप मे पाती है। हर स्त्री अपने आत्मसम्मान को पाना चाहती है और ये चाहत जब उसे अपने पति से नहीं मिल पाती तो उसका अन्यत्र झुकना स्वाभाविक है।

चन्दा का चरित्र मध्यवर्गीय सस्कारो से ग्रस्त एक भारतीय नारी का चित्र है जो पति द्वारा किये जाने वाले शोषण अपमान को सहने के बावजूद भी पूर्णत समर्पित और इच्छानुकूल चलने को बाध्य है। चन्दा अपने घुटन भरे जीवन से निकलकर एक स्वतत्र और आत्मसम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए छटपटाती है किन्तु वह साहस नहीं कर पाती। आधुनिकता की प्रासगिकता पर प्रकाश चन्द गुप्त ने कहा कि वह महिला मानो जीवन से परास्त होकर कठोरता को ही अपना श्रृगार बना चुकी है। ऐसे पराजित प्राणी हमे पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत निरन्तर मिलते हैं लेकिन समाजवाद व्यक्तित्व को इस प्रकारण कुण्ठित नहीं करता।

---

# राज दुलारी

उपन्यास की दूसरी मुख्य नायिकाओ मे हम राजदुलारी को रख सकते है। राज दुलारी का चरित्र नारी जीवन के एक दूसरे ही पहलू पर प्रकाश डालता है। यह खन्ना की पत्नी है और पतिव्रता नारी का प्रतीक है जो पति के मृत्यु का समाचार पाकर आत्महत्या तक करने का प्रयत्न करती है। डॉ खन्ना के अपहरण के पूर्व राज अपने प्रेम को जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध मानती है। पति की मृत्यु का समाचार सुनते ही मानो उसका अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है वह घोर अन्धकार मे डूब जाती है। इसके पूर्व राज खन्ना के परिवार की सुलक्षणा लक्ष्मी और लाडली के रूप मे पूरे परिवार की चहेती बहु रहती है। जो विधवा हो जाने पर वही परिवार की उपेक्षा और तिरस्कार की वस्तु बन जाती है उसकी यह स्थिति उसे मानसिक यत्रणाओ का शिकार बना देती है। ऐसे नाजुक स्थिति मे बद्री बाबू के माध्यम से उसके चरित्र मे बदलाव आता है बद्री बाबू के सम्पर्क मे आने के बाद उसके विचारो मे भी परिवर्तन आता है जो पति की मृत्यु के पश्चात् अपनी जीवन लीला समाप्त करने को आतुर होती है। जीवन मे यही से उसके बदलाव आता है। धीरे धीरे वह समझती है कि गृहस्थ जीवन की सीमित परिधि के बाहर विशाल ससार मे बहुत कुछ करने को पडा है। नि सन्देह इसके लिए उसे एक साथ की आवश्यकता थी और बद्री बाबू के रूप मे वह उसे प्राप्त भी होता है। [१]

बद्री बाबू की आत्मीयता उसे एक नवीन जीवन की ओर ले जाती है और ये जीवनधारा विवाह की परिणति मे बदल जाती है। विधवा हो जाने के पश्चात बद्री बाबू से विवाह तक की राज की मन स्थितियो को लेखक ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया है। स्त्री अपने भीतर तमाम गुणो को समेटे हुए भी एक साथी की

---

१ यशपाल का कथा साहित्य – प्रकाश चन्द्र मिश्र पृष्ठ सख्या – ५४

आवश्यकता के महत्त्व को पाना चाहती है तभी उसकी बहन चन्दा बद्री बाबू से कहती है कि आप ने राज का बहुत ख्याल किया वरना यह पागल तो मर जाती। देखिए इसका क्या हाल हो रहा है ? मैं डर रही हूँ। इसे कुछ हो न जाये।[१]

इस तरह राज विधवा स्त्री की कठिनाई को झेलते हुए बद्री बाबू से विवाह करने की जो वैचारिक बदलाव आया है वह आधुनिकता की ओर ले जाता है। वह हमारे समाज की नैतिक धारणाओ मे अति विरोध को प्रगट करती है। वह पति के जीवित रहते दूसरी विवाह भी करती है। लेकिन अन्जाने मे और दो बार पतिव्रत धर्म को निभाती है। पहली बार जब पति डॉ खन्ना की मृत्यु का समाचार मिलता है तो वह आत्महत्या तक करने को आतुर होती हैं। वहीं राज के जीवन मे जब बद्री बाबू पति रूप मे आते हैं तो वह अपने पहले पति डॉ खन्ना को भी अपने घर मे शरण नहीं देती और जब मरणासन्न अवस्था मे चन्दा डॉ खन्ना को राज के घर लेकर पहुॅचती है तो राज कहती है बहन क्षमा करना मैं क्या कर सकती हूँ मैं बडी पापिन हूँ, अपराधिन हूँ, पर अब कुछ नहीं कर सकती। घर मे नौकर चाकर हैं मॉजी हैं मैं क्या कर सकती हूँ ? वे जेल मे हैं। कहो अपने पाप के लिए जान दे दूँ ? पर प्रसाद के लिए कलक कैसे लगा लूँ ?[२] इस तरह जो राज पहले पति की मृत्यु मे आत्महत्या करने को तत्पर रहती है उसके बिना उसका जीवन सूना हो जाता है वही राज डॉ खन्ना के पुन जीवित होने पर उसे अपनाने मे अपने आप को असमर्थ पाती है। लेखक ने राज की चरित्र के माध्यम से यह भी व्यजित किया है कि प्रेम प्राकृतिक आवश्यकता है जिसकी तृप्ति से इन्कारा नहीं जा सकता। राज के प्रेम का बद्री बाबू पर सत्रण इसी आवश्यकता की मॉग का प्रमाण है। वे

---

१ देशद्रोही यशपाल पृष्ठ सख्या – ४६
२ देशद्रोही – यशपाल पृष्ठ सख्या – २२४

नारी को सकीर्ण विचारधाराओ की परिधि से निकालकर विस्तृत धरातल पर स्वतत्र कर देना चाहते हैं। राज ओर बद्री बाबू के माध्यम से यशपाल विधवा प्रथा के आधार पर ही प्रहार करती है विधवा प्रथा का आधार पतिव्रत धर्म तथा निरपेक्ष प्रेमतत्व है। यह अपेक्षा भारतीय नारियो से की जाती है कि पति की मृत्यु के पश्चात भी विधवा पत्नी अपने मृत्यु पति से प्रेम करती रहे तथा पतिव्रत धर्म का पालन करे। यह भुला दिया जाता है कि विधवा नारी भी एक जीवित प्राणी है। यह कैसे सम्भव है कि मृत्यु पति के प्रति उसका प्रेमभाव स्थिर तथा अचल रहे। अत विधवा के लिए पतिव्रत धर्म एक खोखला सामाजिक एव नैतिक मूल्य है। [१]

यही उपन्यासकार यशपाल का दर्शन है जिसका उद्गार उन्होने राज चरित्र के माध्यम से प्रक्षेपित करते हुए उसे आज के नवीन नारी दृष्टि की ओर अग्रसर होते दिखाया है।

## ( दिव्या ) दिव्या

दिव्या उपन्यास मे यशपाल ने नारी शोषण की समस्या पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। यह उपन्यास एक समस्या प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास है। जिसकी गम्भीर समस्या है नारी के महत्त्व की। उसकी शान्ति और उन्नति तथा सुरक्षा की समस्या। दिव्या मे बौद्धकालीन भारतीय नारी का वर्णन है तत्कालीन समाज मे नारी भोग की वस्तु थी उसकी बाह्य स्वाधीनता इस सत्य को छिपा न सकती थी। दिव्या ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया।

प्राचीन काल मे नारी आज की अपेक्षा अधिक स्वतत्र थी किन्तु स्त्री की

---

१ हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्रीय विवेचना – डॉ चण्डी प्रसाद जोशी पृष्ठ सख्या–३६५

स्वच्छन्दता का चित्रण तो सस्कत नाटको मे भी नहीं मिलता। दिव्या का चरित्र चित्रण यशपाल की असाधारण विजय है। इसके पूर्व के यशपाल के उपन्यासो की नारियॉ या तो मध्यवर्गीय है या निम्न मध्यवर्गीय है। निसन्देह उनका भयानक शोषण उन रचनाओ मे देखने को मिलता है पर हमारे समाज की मात्र निम्न मध्यवर्गीय या मध्यवर्गीय नारी ही शोषित नही रही है अभिजात वशीय नारीयो को भी शोषण चक्र वैसे ही पीसता रहा है। दिव्या अवश्य ही हिन्दी उपन्यास की नायिकाओ मे प्रमुख स्थान पायेगी। महापण्डित धर्मस्थ देवशर्मा की प्रपौत्री दिव्या का लालन पालन अभिजात्य पूर्ण वातावरण मे हुआ। यौवनावस्था मे ही प्रवेश करते ही उसका परिचय मधुपर्व के आयोजन के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ खडकधारी पृथुसेन के वीरत्व पर मोहित होकर हाता है। उसी क्षण वह पृथुसेन को अपना ह्दय अर्पित कर देती है। गतरात्रि मधुपर्व उत्सव मे विलम्ब हो जाने के कारण प्रात दिव्या अपने शयनकक्ष से भी विलम्ब से निकली सुखद आलस्य मे कभी काम विलम्बित गति से हो रहे थे। गतिसध्या उसकी शिविका मे कन्धा देने के गौरव के लिए आचार्य पुत्र आर्य रुद्रधीर ने खडग खीच ली थी।[१]

इसी आकर्षण के फलस्वरूप केन्द्रस्थ के आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए युद्ध स्थल मे जाने से पूर्व पृथुसेन को दिव्या अपना नारीत्व समर्पित कर देती है और विवाह किये बिना ही वह पृथुसेन के अश को अपने गर्भ मे धारण कर लेती है दिव्या का प्रणय व्यापार उसके भावी जीवन के लिए भयकर दुख का कारण बनता है विवाह के विधि से पृथुसेन को पाये बिना अपने शरीर में उपस्थित पृथुसेन के अश की रक्षा वह विरोधी दृष्टियो से किस प्रकार करे पृथुसेन से उसका विवाह होगा।[२] इस तरह दिव्या बिना विवाह किये ही गर्भधारण करती है। गर्भवती दिव्या

---

१ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या – २२–२३
२ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या – ६०

पृथुसेन के द्वारा तिरस्कत होने पर समाज मे अपने लिए कही स्थान न पाकर एक रात दासी धाता के साथ परिवार समाज और सागल की वैभव सम्पन्न नगरी को छोडना पडता है ये स्त्री के सबसे बडी विडम्बना है कि इन अवसरो पर केवल उसे ही पाप का भागी बनना पडता है लेकिन बदलते परिवेश मे केवल उसे ही दोषी नही माना जाता लेकिन उपन्यासकार ने उपन्यास मे दिव्या का जीवन तमाम यत्रणाओ से भर दिया है वह दास व्यापारी प्रतुल के हाथो मे पडकर वह वर्ण वस्तु बन जाती है।

दिव्या का अथाह दुख उसकी विषम स्थिति उस क्षण और भी दर्दनाक हो उठती है जब पुरोहित चक्रधर द्वारा उसकी सन्तान शाकुल को छिनकर उसे अन्यत्र बेच देने की योजना बनायी जाती है। मॉ का हृदय दिव्या के चरित्र को हिलाकर रख देता है। वह अपने पुत्र शाकुल को गोद मे छिपाये अन्यत्र शरण पाने के लिए भाग निकलती है। परन्तु दुखियो को शरण देने का दम भरने वाला अभिधर्म भी उसे आश्रय प्रदान नही कर पाता। [1] अत चारो ओर से दु खी दिव्या यमुना की गोद मे चिरशान्ति पाने का मार्ग खोजती है। पर यहॉ भी उसे शान्ति नही मिलती भविष्य मे और अधिक दु ख सहने के लिए वह बच जाती है।

आत्महनन का यह कदम उसे स्थिविर का कथन कि वेश्या स्वतत्र नारी है देवी। [2] उसके मस्तिष्क मे घुमता रहता है इसीलिए वह पुत्र सहित यमुना मे कूदती है। पुत्र शाकुल तो मृत्यु को प्राप्त हो जाता है लेकिन दिव्या वेश्या रत्नप्रभा द्वारा बचा ली जाती है। यहॉ पर उसे नया नाम मिलता है। अशुमाला सागल मे राजनृत्य की मल्लिका से सीखी हुई नृत्य कला यही उसके काम आती है। लेकिन अशुमाला की मुस्कान केवल कला का कर्त्तव्य मात्र रहती है। स्वमेव उसका जीवन

---

**१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारसनाथ मिश्र पृष्ठ सख्या–१८०**
**२ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या – १२७**

कुछ भी शेष नहीं बचता समाज से पृथक होते ही नि सग और तटस्थ हो जाती है जैसे जल से बाहर निकल आने पर हस शावक अपने पर झाडकर जल की बूँद से रहित हो जाता है उसका मन दारुण और वीभत्स स्मृतियॉ के दुर्भेद्य आवरण मे लिपटा हुआ था उसके मन मे शाकुल का वियोग अन्दर तक समाया हुआ था। रत्नप्रभा के यहॉ आकर उसकी पूर्व परिचय मारिश से होता है। मारिश कलाकार और साथ ही नास्तिक भी है। मारिश का नास्तिक होना शागलवासियो की दृष्टि मे एक भारी अवगुण बन जाता है। मारिश से महापण्डित धर्मस्थ के निधन का समाचार सुनकर दिव्या सोचती है। सम्पन्न परिवार अनुरक्तपति सुन्दर सतान ? वह सब पाया और नही रहा और उस सबके [1] परिणाम मे पाया दुख।[2] अत दिव्या मे विवाह पूर्व पतिभावना ही दिव्या को हमेशा सालती रही है। पृथुसेन को पति रूप मे पाने के लिए वह सीरो के साथ सहपत्नीत्व स्वीकार करने के लिए भी प्रस्तुत है। यह उसकी उदारता है क्या सीरो भी मेरे साथ आर्य की पत्नी नही बन सकती ? एक वृक्ष की छाया मे अनेक प्राणी विश्राम पाते हैं। गजराज की अनेक पत्नियॉ होती हैं। उसी प्रकार आर्य की भुजा के आश्रय मे हम दोनो ही रहेगी ।[3] परन्तु दिव्या के भाग्य मे यह भी होना नहीं लिखा। भाग्य का चक्र उसे दासी वेश्या तक बनाने को मजबूर करता है। भाग्य चक्र से दिव्या पुन सागल लौटती है। मल्लिका की उत्तराधिकारिणी के रूप मे पर सागल का अभिजात्य समाज विप्र कन्या को वेश्या के स्थान पर नहीं बैठने देता। क्योकि वर्णाश्रम की व्यवस्था निकाल सत्य है। दिव्या फिर एक बार निराश्रिता हो गई पर इस बार उसे आश्रय देने वालो की कमी नहीं। आचार्य रुद्रधीर दिव्या को पत्नी बनाने को उत्सुक है पर दिव्या को यह स्वीकार नहीं। बौद्ध भिक्षु के रूप मे पृथुसेन भी दिव्या को प्रताडित नारी के शरण

---

**१ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या – १४६**

**२ दिव्या – यशपाल पृष्ठ स १४६**

**३ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या – ६३**

देने मे आगे आते हैं लेकिन दिव्या का स्पष्ट मत है नारी का धर्म निर्वाण नही सृष्टि है।

मारिश आता है और दिव्या को अपनाने के लिए कहता है कि कुछ और दे या न दे पर सन्तति के रूप मे मानव की अमरता दे सकता है। भूमि पर बैठी दिव्या विचार मे ग्रीवा झुकाए रही फिर उसने सहसा भित्ति का आश्रय छोड दोनो बाहो का फैलाकर उसका स्वर आर्द्र हो गया आश्रय दो आर्य।[१]

मारिश के साथ दिव्या का जाना इस बात का प्रतीक है कि मानव की परम्परा और परिवार की अक्षुणता सन्तान प्राप्ति द्वारा सम्भव है। दिव्या के चरित्र के माध्यम से लेखक ने समाज मे व्याप्त वेश्याओ को सामाजिकता के दायरे मे पुन लाकर उसे एक स्वस्थ भाव-भूमि द्वारा फिर से सम्मानित होने का परिचय मारिश के द्वारा दिया है जो आज के सन्दर्भ मे जीवन्त है। दिव्या उस समाज व्यवस्था की सजीव नारी है जो अपने गुणो को लेकर भी उसका कोई मूल्य नहीं पाती। वस्तुत यशपाल ने वेश्या के जीवन का अन्त वेश्यावृत्ति मे ही निहित न दिखाकर उन्हे एक गृहस्थ ग्रहिणी के रूप मे पुन अवलोकित दिखाया है।

दिव्या के व्यक्तित्व एव चरित्र की सराहना जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने इन शब्दो मे की है दिव्या व्यक्तिमूलक अहवाद की प्रतीक है। उसने आद्यान्त अपने व्यक्तित्व से प्रेम किया है। विचार-ऊहापोह और दृढतापूर्वक जीवन की पिच्छल भूमि पर पैर बढाये हैं। अपनी साधना मे रस का अनुभव किया है। रुद्रधीर का आभिजात्य प्रेम दिव्या के जीवन को पतोन्मुखता बनाने का प्रधान कारण था। कुल-गृह के विच्छेद से ही सूखे पत्ते की भॉति उसे जीवन मे इधर-उधर उडते रहना पडा था। व्यक्ति

---

१ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या –२१७

स्वातत्र्य को उच्छिन्न कर देने वाला यह अमानवीय पाखण्डवाद पूर्णतया अहवाद का समर्थक था और व्यक्तिमूलक नारी के स्वत्व सम्मान को स्वीकार नही करता था । इस उपन्यास मे स्वत्व और व्यक्ति-स्वातत्र्य की लिप्सा से अभिभूत नारी की प्रतिहिसात्मक भावना का प्रतीक दिव्या है।[१]

दिव्या अपने स्वत्व को नष्ट नही करना चाहती। वह पुरुष के सम्मुख अपने को दुर्बल नही मानती। वह अभिजात-वश के वैभव और विलास को तुच्छ समझकर ठोकर मार देती है। कोमलागी दिव्या बौद्धिक-रूप से दृढ और सबल है। वह सघर्षशील आत्मनिर्भर व्यक्ति मूलक अहवाद की प्रतीक है। वह भिक्षु पुथुसेन की शरण मे भी नही जाती। उसके विचार मे भिक्षु का धर्म निर्वाण है। नारी प्रवृत्ति का मार्ग है। भिक्षु के धर्म मे नारी व्याज्य है।[२] इसलिए वह धूल-धूसरित मार्ग के पथिक सन्तति की परम्परा के रूप मे मानव की अमरता देने वाले भौतिकवादी प्रगतिशील पात्र चार्वाक मारिश का आश्रय ग्रहण कर लेती है। दिव्या कर्म मे ही नारी जीवन की सार्थकता मानती है। वह समाज से भयभीत नही होती न ही समाज के सम्मुख नीची बनती है। वह नारीत्व की सुकुमारता और भावकुता जैसे कोमल गुणो से अभिभूत है जो बौद्धिकता और तार्किकता के आधार पर समाज को परास्त करने की क्षमता रखती है। शान्तिप्रिय द्विवेदी का कथन है "सभी पात्र-पात्रियो के ऊपर दिव्या का व्यक्तित्व अनुरागिनी उषा और विषादिनी सध्या की तरह शोभयमान है। उसी की आत्मा अमृतलोकवासिनी जान पडती है। शेष प्राणी तो इस मर्त्यलोक मे सासारिक जीव हैं। दैहिक प्रवृत्तियो से परिचालित होकर भी दिव्या की चेतना का पतन नही हुआ।[३]

---

१ आलोचना अक्टूबर। १९५७।
२ दिव्या – यशपाल। स २१५
३ साकल्य पृ २०३

अत यह कहा जा सकता है कि दिव्या आत्म-सम्मान एव आत्म-निर्भरता की भावना से परिपूर्ण सामान्ती युग की वह नारी है जिसने अत्याचारो को सहन करके शारीरिक शक्ति के बल से नियति की क्रूरता का ध्वस किया। वह क्रूर मानव की नृशसता उसकी अहवादी प्रवृत्ति एव स्वत्व की भावना को प्रतिहिसा की दाहक ज्वाला मे भस्म करके आत्म-निर्णय के अधिकार से सबला नारी का आदर्श प्रस्तुत करती है। अतीत की नारी को भी यशपाल ने आधुनिक दृष्टिकोण से चित्रित किया।

## सीरो

सीरो मद्र के परम भटटारक गणपति की पौत्री गणपरिषद् के सम्वाहक की पुत्र वधु और महापराक्रमी पृथुसेन की अर्द्धागिनी थी। वह गर्व स मस्तक उठाकर चलती थी। समाज मे सबसे सम्मानित आसन की वह अधिकारिणी थी और उससे अधिक की स्पर्द्धा उसके मन मे थी। वह सबसे अधिक काम मे भोगो को भोगती और सागल के सबसे अधिक सुन्दर युवा पुरुषो से आदर की आशा करती। उसके राग-रजित ओठ केवल मदिरा से घुलते।[१] इस प्रकार उपन्यासकार ने सीरो को अति उच्श्रृखल नारी के रूप मे चित्रण किया है। उसके चरित्र मे वासना की उच्श्रृखलता और इच्छाओ का उद्दामवेग दिखायी पडता है। सीरो इतनी असहिष्णु नारी है कि पृथुसेन पर अपना एकाधिपत्य स्थापित करने के लिए दिव्या को उसके पास तक नही आने देती। नारी सुलभ ईर्ष्या के गुण उसमे विद्यमान है। सीरो को वासना पृथुसेन से भी तृप्ति न पाकर अन्यत्र सौन्दर्य और परिणय की खोज मे व्याकुल रहती है। वास्तव मे उसके जीवन मे जैसे भोगवादी समाया हुआ हे। इस तरह की नारी प्रगतिशील चेतना के विकास मे बोधक प्रतिक्रियावादी व्यक्ति ही सिद्ध होती है।

---

**१ दिव्या – यशपाल पृष्ठ सख्या** – १७७

सीरो और पृथुसेन के विवाहोपरान्त जीवन के वर्णन के माध्यम से भी यशपाल मे सामाजिक सुविधाओ से परिपूर्ण और भौतिक आकर्षणो से बधे शक्ति सम्पन्न लोगो के परिवार मे पलने वाले खोखलेपन मूल्यहीनता और चरित्र शून्यता का चित्रण किया है।

समाज मे स्त्रियॉ दो तरह की होती है एक वो जो पति की आज्ञा को अपना कर्त्तव्य समझकर पूरा करती है दूसरी वह जो पति की अवहेलना करना उच्श्रृखला मानती है सीरो उन्ही नारियो मे से है। स्वयम वह कहती है मैं तुम्हारी क्रीत-दासी नही हूँ। तुम मेरे आश्रित हो मै तुम्हारे आश्रित नही हूँ। मै तुम्हारे पिजरे मे बन्द सारिका नही हूँ। केवल तुम्हारी अग सेवा के लिए दासी नही हूँ मेरे लिए भी ससार मे केवल तुम्ही एक पुरुष नही हो। तुम जैसे अनेक और तुमसे श्रेष्ठ अनेक।[१]

इस तरह सीरो उन नारियो मे से नही है जो एक ही पुरुष के बन्धन मे अपना जीवन स्वीकार हो। आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे सीरो जैसी ही सर्वत्र नारियॉ दिखायी पडती है जो पति को कुछ भी नही समझती उनकी बातो की अवहेलना करना ही अपना परम कर्त्तव्य समझती है। सीरो आज की नारी जगत् मे अपना स्थान मुख्य रूप से समाज मे जमाये हुए है।

दिव्या उपन्यास के अन्य नारी पात्रो मे मल्लिका आती है जो नृतकी रूप मे चित्रित हुई है। नारी सुलभ सभी उच्च भावनाऍ विद्यमान है। उसका सागल नगरी मे अत्यधिक प्रभाव है। वह कला की श्रेष्ठ अराधिका थी और अनेक शिष्याओ के रहते हुए भी वह अपनी कला की रक्षा के लिए पर्यटन करती है और योग्य शिष्या दिव्या को अशुमाला के रूप मे सूरसेन प्रदेश मे प्राप्त करती है। अन्त मे षडयत्र कर बॉहो और दासो का नाशकर मद् मे फिर से वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठा करती है।

१ दिव्या – यशपाल – पृष्ठ सख्या १७७

# गीता (पार्टी कामरेड)

पार्टी कामरेड की गीता साधारण युवती के रूप मे तत्कालीन यूगीन (१६४६ ई) विशेष की नवयुवती का प्रतिनिधित्व करती है जो पार्टी की स्वयसेविका एव सदस्या है। उच्च कुलीन परिवार से सम्बन्धित होने पर भी वह पार्टी के लिए समाचार पत्र बेचती है। कालेज के अध्ययन करने पर भी चन्दा इकटठा करती है। जुलूस मे भाग लेती है और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समस्त इच्छाएँ और आशाएँ बलिदान कर देती है।

गीता समाजवादी चेतना सम्पन्न कम्यूनिस्ट पात्र है जिसके माध्यम से लेखक ने एक साथ ही राजनीतिक और सामाजिक दोनो समस्याओ पर विचार किया है। गीता कम्यूनिस्ट पार्टी की नीति के अनुसार जनहित को आधार बनाकर काग्रेस का उसके पूँजीवादी राजनीतिक सिद्धान्तो का डटकर विरोध करती है। पर उसकी सबसे बडी लाचारी यह है कि जनकल्याण का कार्य उसे पूँजीवादी सस्कारो वाले समाज मे करना पडता है। नारी कार्यकर्त्ता को पार्टी के कार्यों मे अवसर न देने के लिए पूँजीवाद का नारी समर्थको का पार्टी मे कार्य करने के लिए उसके चरित्र पर लाछन लगाना होता है। अधिक-से-अधिक जागरूक नारी भी अपने चरित्र पर लाछन लगाने पर परास्त ही होगी। गीता भी जो शोध छात्रा भी है अत्यन्त जागरूक है पूँजीवादियो के इस वार से लडखडा जाती है। पूँजीवादी समाज मे नारी के स्वतत्र व्यक्तित्व का कोई अर्थ नही होता। स्त्री का व्यक्तित्व चाहे जितना सशक्त और बलशाली हो। उसे पुरुष की आड चाहिए ही भले ही वह पुरुष दुर्बल हो कमजोर हो [1] गीता का यह कथन पूँजीवाद के इसी विडम्बनापूर्ण आचरण को

---

१ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ पारसनाथ मिश्र पृष्ठ सख्या – १८४

अनावृत्त करता है। भाई की भोली और उत्तेजनापूर्ण बाते गीता के लिए कितने सतोष का कारण थी। उसने एक बॉह का सहारा अनुभव किया। वह बॉह देखने मे कितनी दुबली-पतली और कमजोर है पर है तो मर्द की बॉह। वह अकेली नहीं है। शामू छोटा है तो क्या ? है तो लडका मर्द। उसके सहारे वह खडी हो सकेगी [1] इसमे गीता अपने प्रेम से भावरिया जैसे बदमाश एव लखपति के जीवन मे भी उसके सम्पर्क मे आती है। उसके जीवन मे गीता नयी मोड लाती है तथा भावरिया का जीवन सुधारने मे अपनी अग्रणीय भूमिका निभाती है। भावरिया के जीवन मे उसके चरित्र की सरलता और स्थिरता से एक ऐसा परिवर्तन आता है जो उसे शहीद की उपाधि प्रदान करके ही छोडता है।

गीता लगनशील और जीवट लडकी है और अनेक बाधाओ का सामना करके भी वह पार्टी का कार्य करती है। उसका परिश्रम सराहनीय है। जब बम्बई मे दगे मे कम्यूनिस्ट पार्टी का दफ्तर तोड-फोड दिया जाता है तो उसके लिए फड की अपील हुई। गीता के पास रूपया न था उसने गले से लाकेट उतार कर दे दिया और दो सौ रूपया चन्दा मागकर देने का वचन दिया। गीता चुप रह गई और उसे याद आया आग से पार्टी के प्रेम को नुकसान पूरा करने के लिए उसने दो सौ रूपया इकटठा करने का वायदा किया था। [2] वही गीता के मानसिक परिवर्तन का द्योतक है जो अपनी आयु से अधिक गम्भीरता और अधिकार से बात करती। गीता मे उच्श्रृखलता नहीं बल्कि सयम दिखलायी पडता है। वह कम्यूनिस्ट पार्टी मे कुशलता के साथ कार्य करती हुई। अनेक लोगो के विभिन्न व्यवहारो का उत्तर बडी बुद्धिमत्तापूर्ण ढग से देने मे सक्षम होती है। भाई के साथ बहन का स्नेह उडेलती है और मॉ के साथ पुत्री का व्यवहार। [3] गीता का चरित्र सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के

---

**१ गीता पार्टी कामरेड पृष्ठ सख्या–७०**

**२ गीता पार्टी कामरेड – यशपाल पृष्ठ सख्या – ४४–४५**

**३ यशपाल और हिन्दी कथा साहित्य – सुरेन्द्र तिवारी पृष्ठ सख्या १०४**

लिए अनुकरणीय है और उसके निर्माण मे यशपाल ने दादा कामरेड की शैल से अधिक सफलता पायी है। गीता का चरित्र शैल की अपेक्षा अधिक सयमित और प्रभावित करने वाला है।

गीता के चरित्र के माध्यम से कम्यूनिस्ट दृष्टिकोण पर आक्रमण कर एक ओर जहा यशपाल प्रतिबद्धता की परवाह बिना यात्रिक जडता के दोष से बच गये हैं। वही दूसरी ओर कलाकार की कलात्मक निस्सगता और तटस्थता का प्रमाण भी प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभायी है। गीता जनकल्याण के कार्यो मे हाथ बटाती हुई पूँजीवादी सस्कारो से लडती हुई जागरूकता का प्रतीक बनती है जो आधुनिकता का बोध भी कराती है। उपन्यास मे गीता ऐसी नारी है जिसमे पर्याप्त आधुनिक चेतना है नवीनता है पर इसके बावजूद भी उसमे जीवनगत सम्वेदनाएँ है। यशपाल की सभी नायिकाओ मे एक गीता ही अपवाद स्वरूप जैसी अपना नारीत्व बोझ नहीं प्रतीत होता है और जो नारी स्वतत्रता की स्वाभाविक रूप से पूर्ण पक्षपाती हुए थी मूल्य मर्यादा रहित नारी जीवन को प्रभावहीन समझती है। उसे दूर से ही प्रणाम करती है। लेखक का कथन इस प्रसग से उद्‌घाटित नारी के प्रति सम्वेदनात्मक झन्नक जो गीता नारी समाज की सम्बल बनती हैं। अपने दैनिक जीवन मे आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करती है।

---

# हिता

उपन्यास मे हिता बालिका अमिता की दासी व सरक्षिता के रूप मे सामने आती है। उपन्यास मे उसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। दासी होने पर भी अमिता पर उसका अत्यधिक प्रभाव है। वह एक माता की तरह अमिता को हट करने पर बहलाती एव फुसलाती है। अमिता की अभिन्न अन्तरग होने के कारण उसका महत्त्व उपन्यास मे अमिता के समान ही है। हिता का अमिता की विशेष सरक्षिता होने का आदेश महारानी नन्दा के आदेश से विशेष सेवा के लिए किया था। हिता और उसकी प्रौढा मॉ वापी को महारानी के आदेश से युगराज्ञी अमिता की विशेष परिचर्या के लिए नियुक्त कर दिया गया था।[१] हिता को अमिता उपन्यास मे शोषित वर्ग के चरित्र की प्रतिनिधि कहा जा सकता है उसका दासी होने के कारण स्वतत्र अस्तित्व कुछ भी नही रहता और प्रसाद मे जब महाराजा का स्वर्गारोहण हो जाता है तो हिता को आतक अनुभव होने लगा था कि अब उसे दूसरे लोगो की विनोद वासना का पीडा जनक भार उठाना पडेगा।[२]

हिता प्रसाद मे चित्रकार और मिटटी के खिलौने बनाने वाले मोद से प्रेम करती है अमिता को उन मिटटी के खिलौनो को दिखाकर प्राय युवराज्ञी के आनन्द और विनोद का साधन बनाती है। इसका मुख्य कारण यह था कि वह इसी बहाने अपने प्रेमी मोद से मिलने का अवसर पा जाती है। वह उत्साह से प्राय नित्य ही मूर्तिकार मोद के समीप पहुँच जाती और उसके साथ हिता भी।[3] हिता और मोद एक दूसरे से विवाह करना चाहते हैं पर दास होने के कारण उन्हे विवाह करने का कोई अधिकार प्राप्त नही है। वे विवाह तभी कर सकते हैं जब वे दास जीवन से मुक्ति पा जाये। हिता और मोद के माध्यम से लेखक ने शोषण का जो चित्र उकेरा

१ अमिता – यशपाल पृष्ठ सख्या–५२
२ अमिता – यशपाल पृष्ठ सख्या–५२
३ अमिता – यशपाल पृष्ठ सख्या – ५३

है वह उपन्यास मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आदमी जानवरो की तरह खरीदा बेचा जाता था दासो का जीवन बिल्कुल नरकीय था इच्छा नाम की चीज उनके लिए बनी ही न थी। हिता मोद से एकनिष्ठ भावना से प्रेम करती है लेकिन विवाह न करने को मजबूर है। लेकिन हिता स्वामीभक्ति मे अपने-आपको निहित कर प्रेम की पराकाष्ठा पर पहुँचना चाहती है। इस नियति से वह महारानी नन्दा की सेवा से उसे प्रसन्न भी कर लेती है लेकिन महारानी के वाक्य उसे अन्दर तक चोट पहुँचाते हैं महारानी ने हिता को सम्बोधन किया तुझे क्या दे ? हम तेरे ऋणी हैं। तू दासी है। तूझे स्वर्ण दे तो उसे धारण नहीं कर सकेगी। हम सबसे पहले तुझे ही अदास कर देते परन्तु तू स्त्री है स्त्री का स्वतत्र होना दोष है। वह पत्नी होती है अथवा दासी। कोई नागरिक तेरा वरण करना चाहे अथवा तू स्वतत्र नारी बनना चाहे तो हम तूझे अदास कर दे। तू जब चाहे हमसे वर का ऋण मॉगना। इस तरह हिता सोचती है यदि मोद दास न होता तो वह महारानी से अदास किये जाने की वरदान भाग लेते परन्तु मोद दूसरे का दास था वह हिता का स्वामी कैसे हो सकता था।

हिता का चरित्र विवशताओ से घिरा होता है वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकती। इस तरह लेखक ने उसको समाज मे हिता जैसी विवशताओ से घिरी नारी का चित्राकन करके तत्कालीन समाज शोषित वर्गीय नारी की स्थिति को बडे ही मार्मिक ढग से द्रष्टव्य किया है। वस्तुत हिता के चरित्र में कर्त्तव्यपरायणता स्वामीभक्ति के उत्तरदायित्व का निर्वहन सम्पूर्ण उपन्यास मे करती हैं। जो आज के सन्दर्भ मे प्रासगिक है।

---

# सोमा (मनुष्य के रूप)

सोमा मनुष्य के रूप की नायिका है। वह एक विधवा है। हिन्दू समाज मे विधवाएँ किस प्रकार कठोर और उपेक्षापूर्ण व्यवहार पाती रही है। लेखक ने सोमा के उदाहरण द्वारा इसे भली भॉति स्पष्ट कर दिया है। सोमा एक ऐसी स्त्री है जो पारिवारिक सकटो से ऊबकर घर की उपेक्षा करके युवक धन सिह के साथ भाग जाती है। यहि से उसके चारित्रिक पतन की कहानी प्रारम्भ होती है। यदि वह घर से न भागती तो उसके सास-ससुर उसे दूसरे व्यक्ति के हाथ बेच देते। ऐसे मे एक स्त्री क्या करे ? घरवालो की उपेक्षा नवयुवको की वासना उसे कहॉ से कहॉ पहुँचा देती है। सोमा को अनेक पुरुषो की कामवासना की तृप्ति न चाहकर भी करनी पडती है। एक भारतीय स्त्री के लिए उसका सतीत्व ही सब कुछ होता है। परिस्थितिवश वह अपने सतीत्व की रक्षा करने का अवसर नही नहीं पाती। वह पाप भावना से ऐसा नहीं करती। प्रत्युत उसका आदम्य मनोवेग उसे ऐसा करने को विवश करता है। अत वह पाप की मलीनता से बच जाती है। ह्रदय एक पुरुष को देते हुए आवश्यकता वश शरीर अनेक पुरुषो को अर्पित करने में कुण्ठित नही होना चाहिए। युगो से हमने जिन मान्यताओ की स्थापना की वर्तमान परिवेश मे भौतिकता प्रधार विचारधाराओ से टकराकर वह टूटती जा रही है। कल का सत्य आज का असत्य बन गया है। नारी के यौन सम्बन्ध के बन्धन ढीले पडते जा रहे है। परिस्थितियो के अनुकूल वह स्वयम् को अपने अनुरूप ढाल ले रही है।

सोमा का चरित्र इतना कलकित न होता यदि उसे अपने घर (ससुराल) मे पूर्ण सुरक्षा मिलती। एक स्त्री का सब कुछ उसका पति ही होता है। यदि साथ निभाने वालो व्यक्ति अधर मे छोड जाये तो स्त्री कमजोर पड जाती है। यह सत्य है कि

प्रत्येक व्यक्ति दूसरे की विवशता का लाभ उठाता है यहि विवशता धनसिह पुलिसकर्मी बैरिस्टर जगदीश सलोरा बरकत आदि पुरुषो के द्वारा दिखाया गया है।

सोमा एक उपयुक्त साथी की तलाश मे अनेक की वासना तृप्ति का साधन बनती है। सोमा के पास जीवन के दो ही रास्ते शेष हैं या तो वह निरन्तर परिस्थिति से समझौता कर ले या फिर वह अपना जीवन समाप्त कर ले। यशपाल ने समाज से जूझते हुए उसकी एक विशेष रूप को चित्रित किया है। वह रूप है सिने स्टार अभिनेत्री पहाडन जो न जाने कितनो की भोग्या बनकर इस मुकाम तक पहुॅचती है। गॉव की एक सीधी सादी भोली-भाली स्त्री कहॉ से कहॉ तक पहुॅच गयी। धनसिह से जब उसकी मुलाकात होती है और जब वह दुबारा नहीं मिलता तो सोमा अपने भाग्य को कोसती है। मुसीबत से बचाने के लिए भगवान ने एक भला आदमी भेजा था। उसकी बात मैंने न सुनी दिन बुरे आते हैं तो ऐसा ही होता है।[१] इस तरह सोमा धनसिह को अपने जीवन का सहारा बनाने के लिए व्यग्र होती है। सोमा निरन्तर पुरुषो द्वारा छली जाती है। वह इस आशा से कदापि अपने ससुराल से नही भागती कि उसको अपना सब कुछ दॉव पर लगाना होगा। यदि उसको अपना शरीर ही बेचना होता तो अपने घर मे सास-ससुर द्वारा बात सुनकर भयभीत होकर धनसिह के साथ न भागती। उसका यह कदम उसके चरित्र को उज्ज्वल बनाता है। फिर वह धनसिह के साथ इसलिए जाती है कि उसको पत्नी का दर्जा देकर इज्जत की जिन्दगी उसे समाज मे दिलायेगा उसे स्वयम् लगता है कि औरत ने मजदूरी करके पेट भरा तो क्या जिन्दगी ? औरत तो घर सम्भालती ही भली लगती है।[२]

---

१ मनुष्य के रूप यशपाल पृष्ठ स २८

२ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या – ६६

सोमा के इस कथन से आशय यही निकलता है कि औरत की शोभा घर है और पुरुष का दायित्व औरत का खर्च वहन करना है उसको जीवन मे ये खुशियॉ थोडे ही दिन मिलती है कि उसका पति चल बसता है। पति के मृत्यु के उपरान्त भी वह बडे सयम और धीरज से सारे दुखो को सहती हुई अपने ससुराल मे रहती है लेकिन वहॉ पर भी उसकी कोई कद्र नहीं होती। "सास द्वारा यह कहने पर कि मेरे शेर जैसे लडके को भी खा गयी। बुढिया अपने युवा पुत्र के लिए बहुत रोई थी।[1] ससुराल की अथह पीडा को सहन न करते हुए वह श्रेष्ठतर जीवन की तलाश मे घर से निकलती है न कि काम तुष्टि के लिए। यदि वह काम-वासना को ही महत्त्व देती तो वह घर से भागती ही क्यो अपने आपको जानते हुए बिक जाने देती। उसको क्या मालूम था कि वह जिस नर्क से भाग रही है भाग्य मे उसके वही सब कुछ लिखा है। प्रथम बार वह पुलिस के वहशीपन का शिकार होती है। जो रक्षक वही एक अबला स्त्री के स्त्रीत्व का भक्षक बन जाते हैं। ऐसे मे सोमा क्या करती ? ये उसकी विवशता ही रहती है। यहीं से उसके चरित्र मे नया मोड आता है उसे ज्ञात होता है कि जिस सतीत्व और शरीर की रक्षा के लिए उसने घर छोडा था बाहर तो उससे भी अधिक असुरक्षा है। धीरे-धीरे वह उसे अपना भाग्य मान बैठती है। न तो वह आर्थिक रूप से मजबूत है और न ही शिक्षिति रूप से सोमा अपने शैशव काल से ही गरीबी तगी और अभाव मे पलती आयी है। उसके पिता ने भी उसका सौदा चार सौ रूपये मे तय करके उसे बेचा था। यह सौदा उसे वैवाहिक परिणति मे उसे बाधता है वह पति के साथ सतुष्ट भी रहती है। उसकी खुशी अधिक दिनो तक नहीं टिकती। पति की मृत्यु के बाद परिवार मे उसका रहना सभी को खलता था। इसलिए पुन उसे बेचकर अपनी रकम ब्याज सहित उसके

---

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या–२६

सास-ससुर वसूल करना चाहते हैं स्वयम् सोमा ने कभी नहीं चाहा कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने। मनोरमा शोभा को नर्स का काम सीखने का उपदेश देती जरूर है परन्तु सोमा जब घर सम्भालने का ही इरादा व्यक्त करती है तो मनोरमा बात वही पर खत्म कर देती है। घर से भागने के उपरान्त वह बैरिस्टर जगदीश के घर की रखैल बनकर जी रही थी। सोमा ने सदैव शरण का मूल्य चुकाया वह धनसिह के पत्नी के रूप मे भी नहीं स्वीकारी जाती। वह बैरिस्टर के घर मे रखैल बनती है और वही पर उसके घर वालो द्वारा उसका चार मास का गर्भ गिराया जाता है सध्या होते-होते सोमा का चार माह का गर्भ गिर गया। वह मुँह छिपाये हृदय और शरीर की वेदना से रो रही थी।[१] सोमा जब सिने स्टार बन जाती है तो फिर वह अपना इतिहास पलटकर नहीं देखती। इसका सबसे बडा प्रमाण अन्त मे मिलता है। जब वह धनसिह तक को पहचानने से इन्कार कर देती है। धनसिह की याद भी सोमा को कठिनाई से आती है "सोमा मे शरीर ही शरीर है मन जैसे है नहीं बरकत के साथ जाते हुए उसके मन मे क्या चलता है ? धर्म और छुआछूत का विचार" निम्न श्रेणी से ऊँची श्रेणी मे और वहॉ से नीचे लुढकते हुए सोमा के आत्मक्रन्दन का पता भी नहीं लगता। जीवन की नयी घटना या परिस्थिति के साथ समझौता करते-करते पिछली तमाम जिन्दगी को ऐसे भुला देती है कि लगता है उसका मन इतना स्थूल है।[२]

सोमा के चरित्र से कहीं भी यह आभास नहीं होता कि उसे अपनी शारीरिक भूख की चाहत है। परिस्थितियो के कारण अपनी वह निष्ठा को कायम नही रख पाती नियति ने उसे नित्य नये-नये पुरुषो के साथ सम्बन्ध स्थापित करने को मजबूर किया। यद्यपि दुख के आवेग मे कई बार जीवन को समाप्त कर देने के

---

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या–७८

२ उपन्यास स्थिति और गति – चन्द्रकान्त बान्दी बडेकर पृष्ठ सख्या–३०२

विचार उसके मन मे उठते है। लेकिन वह इसका अन्त न कर पायी परिस्थितियो की दासी जो ठहरी वेश्या जीवन बिताने के लिए समाज उसे विवश करता है और समाज मे वह एक प्रसिद्ध अभिनेत्री के रूप मे सामने आती है। मनुष्य की बदली हुई परिस्थितियाँ आदर्शो को भी बदल देती है। मनुष्य के सामने सबसे बडी समस्या जीवन रक्षा तथा उसके सुविधापूर्वक निर्वाह की रहती है। यही जीवन का सत्य है। साम्यवादी भूषण सोमा की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहता है तुम उसे छोड गये थे तो उसके लिए कोई दूसरा सहारा नही था उन लोगो ने (बैरिस्टर जगदीश सलोरा) उसे बदनाम करके घर से निकाल दिया था। तुम जानते हो जवान औरत का सहारा न हो तो दुनिया उसके पीछे पड जाती है। तुम थे तभी लोग उसे परेशान करते थे। तुम्हारे पीछे क्या हालत हुई होगी। रोटी कपडे की परेशानी रहने की जगह नहीं दर-दर की ठोकरे खाती रहती जन-जन के हाथ बिकती फिरती। [१] स्वयम् लेखक यह स्वीकार करते हैं कि स्त्रियो की सुरक्षा घर है परन्तु मार्क्सवादी विचारधारा के अन्तर्गत स्त्रियो को घर की चहारदीवारियो के भीतर भी कैद नही करना चाहते यदि वह ऐसा चाहते तो सोमा को अभिनेत्री बनाने के बजाय ड्राइवर धनसिह की पत्नी बना देते और अन्त मे लेखक ने सोमा के माध्यम से परिस्थितियो का दास नहीं अपितु परिस्थितियो का निर्माता के रूप मे हमारे सामने एक चुनौती के रूप मे ला खडा किया है। वह जो कुछ करती है उसके लिए वह स्वयम् जिम्मेदार नहीं है बल्कि समाज जिम्मेदार है जो उसकी रक्षा नहीं कर सका। यदि स्त्री इस डर से घर की चहारदीवरियो मे कैद रहे तो उसकी बौद्धिकता घुन खाए अनाज की तरह होगी जो उसको भीतर ही भीतर खोखला कर देगी। सोमा को सिने स्टार अभिनेत्री बनाना और बाद मे धनसिह को न पहचानना अतीत के प्रत्येक

---

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या–५०

पहलू से वर्तमान बोझिल होने का डर उसमे समाया हुआ हैं। आज वह एक प्रसिद्ध अभिनेत्री है। वह अपनी पिछली जिन्दगी भूलकर वर्तमान मे जीना चाहती है। निम्नवर्गीय सोमा का चरित्र इसी प्रगतिशीलता का सूचक लगता है।

मनुष्य की रूप मे सोमा जैसी नारी का चित्रण यशपाल की प्रगतिशीलता विचार धारा का सजग रूप है। सोमा को समाज ने कुचला भ्रष्ट किया उसे अमानुषिक अत्याचार सहन करने पडे तो भी वह विचलित नही हुई। सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए वह बलपूर्वक प्रत्येक परिस्थिति का साना करती रही। मध्यवर्ग की स्त्री को तो समाज एक बार सम्मान की दृष्टि से देखता भी है किन्तु सोमा निम्न वर्ग की विधवा है समाज ने जैसा चाहा उससे व्यवहार किया। 'उसने धनसिह की मार सही।[१] सास–ससुर के अत्याचार सहे[२] बैरिस्टर साहब की कपादृष्टि का फल भुगता[३] बरकत के असहनीय व्यवहार को भी सहा'[४] यह सब सह कर भी सोमाकी आत्मा भटकती ही रहती है। ये लेखक की सूक्ष्म दृष्टि ही है जो सोमा के अन्तर्मन को जानते हैं। सोमा के सहारे की आवश्यकता है वह सहारे के लिए भटक रही है। वह स्त्रीत्व के बल पर सिने–अभिनेत्री पहाडन' बन कर भी सोचती है मेरा प्रेम दुनिया भर के लिए बजारू चीज है। मन मे टीस–सी उठी। बैरिस्टर से गुप्त प्रेम की बात स्मरण करके उसने एक गहरी सास खींची यह भी कितने दिन चलेगा ? उसे क्या मिल रहा है ? पैसा ! पर पैसा तो सतोष के लिए होता है सतोष कहा था ? क्यो न सब कुछ छोड कर किसी के सथ बस जाय ? दुनिया मेरे गले मे बॉह डाल कर खेलना चाहती है परन्तु बॉह थाम कर सहारा देने के लिए कोई तैयार नहीं।[५]

यशपाल सोमा की व्यथा की वेदना को उसके मर्म को जानते हैं फिर भी नारी

---

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ सं ८८
२ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ स ४१–४२
३ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ सं १७३
४ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ स २२६–२७–२२८
५ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ सं २४६–४८

के प्रति उनका सशक्त दृष्टिकोण कहता है कि नारी परिस्थितियो से सघर्ष करे उसका सामना करे जब तक क्षमता हो सामर्थ्य हो तब तक वह सक्रिय होकर समाज से बुझती रहे। समाज के कुत्सित और घिनौने रूप के सम्मुख भी पराजित न होकर उसमे कुछ कर दिखाने का साहस हो। सोमा दिल मे रोने परे भी बाहर से मुस्करा सकती थी। [१]

इस तरह लेखक ने सोमा को परिस्थिति का दास नहीं परिस्थितियो का निर्माता भी है। वह जो कुछ करती है वह अप्रत्याशित भले ही हो परन्तु असम्भव नही। सोमा को साधारण स्त्री से पहाडन मे परिवर्तित हो जाना उसके चरित्र का सामाजिक विकास ही कहा जायेगा न कि नैतिक और चारित्रिक पतन। यशपाल नारी का यही असाधारण रूप समाज मे प्रयुक्त करना चाहते हैं। नारी केवल गृहस्थ तक ही सीमित रहे यह आवश्यक नहीं। निम्नवर्गीय सोमा भी इसी रूप मे चित्रित हुई है। साधारण स्त्री यह सब करने मे असमर्थ होती है। जो उसने कर दिखाया। सोमा जैसी नारी के उन्नयन का चित्रण लेखक की प्रगतिशीलता या दार्शनिक मान्यताओ का ही नहीं बल्कि उसकी सामाजिक चेतना का दृढ प्रतीक है।

## मनोरमा

मनुष्य के रूप की दूसरी मुख्य नारी मनोरमा पढी लिखी व एम ए उत्तीर्ण है। वह कम्यूनिस्ट नेता भूषण से प्रेम करती है। पचहत्तर रूपये पाने वाले भूषण के मन मे सामाजिक विषमता के प्रति सामुहिक सघर्ष करने के विचार उत्पन्न होते हैं। मनोरमा उससे शादी का प्रस्ताव रखती है लेकिन वह आर्थिक तालमेल न बैठने के कारण इन्कार कर देता है क्योकि वह एक सम्पन्न घर की एक मात्र लडकी है।

---

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ स २३२

चार पुत्रो के पश्चात् एक मात्र कन्या होने के कारण वह अत्यन्त लाडली है।

उपन्यासकार ने उसका परिचय इन शब्दो मे दिया है मनोरमा लाहौर कालेज मे एम ए मे पढ रही थी और विलायत जाने का अरमान रखती थी मनोरमा पतलून पहने नगे सिर खूब बडे कुत्ते को चमडे की रस्सी से थामे लाठी लिए सूनी सडको पर-शैर करती फिरती थी यह बहुत कुछ वैसे ही था जैसे अग्रेजी राज मे दूसरो के पुत्र को देशभक्ति के दण्ड मे जेल जाते या फॉसी चढते देख भारतवासी उसके नाम की जय पुकारते थे और स्वयम् अपनी सन्तान को यह सब करते देख दुख और व्यथा से सिर पीट लेते थे।[1]

धनी परिवार से सम्बन्ध रखने पर भी उसके स्वभाव मे तनिक भी घमण्ड नही है। वह निराश्रिता सोमा को अपने घर आश्रय देती है। सोमा के साथ हमेशा समानता का व्यवहार किया उसे अपनी बहन की तरह रखा तभी एक दिन मनोरमा सोमा से कहती है कि मनोरमा ने अपनी तरह साडी पहनने के लिए कहा था।[2] इसी उदारता प्रेम और स्नेह द्वारा वह सोमा को सदैव दिलासा दिलाती रहती।

प्रेम के सम्बन्ध मे मनोरमा के व्यक्तिगत विचार है। वह सोचती है "सभी स्त्रियॉ आश्रय का मूल्य प्रेम का मूल्य अपने शरीर से चुकाती है। आत्म-निर्भर प्रेम तो वही है जो मूल्य मे आश्रय न मॉगे। प्रेम के मूल्य मे जीवन भर का आश्रय पाया या कुछ रूपये। प्रेम करने का अधिकारी वही है जो आश्रय न मॉगे जो अपने पॉव पर खडा हो।[3] इस तरह मनोरमा अपने प्रेम का स्वरूप अलग तरह से प्रदर्शित करती है। साम्यवादी विचारो से वह पूरी तरह प्रभावित है। यही कारण है कि वह परम्पराओ तथा रुढ़ियो के प्रति उसका रुख विद्रोहात्मक है। आधुनिकता की वह पोषक है किन्तु अतिवादी एव उच्छृखल नहीं है। वह अत्यन्त सयत एव गम्भीर है।

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या ८२

२ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या– ८०

३ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या – ३२१

भूषण के प्रति वह आकर्षित ही नही होती उससे विवाह करने की भी इच्छा रखती है। भूषण की उदासीनता उसे फिल्म एजेण्ट सुतलीवाला से विवाह करने को बाध्य करती है। पुरुष जाति का मिथ्या दम्भ उसे सहन नही। यही कारण है कि सुतलीवाला की दुर्बलताओ का बोध उसे भीतर ही भीतर आन्दोलित करता है। जीवन मे उसने एक ही भूल की और वह थी निराशा और उन्मेष मे सुतलीवाला के विवाह कर लेने की। वह पुरुष पुसत्व खोये हुए था मनोरमा सोचती क्वॉरे जीवन मे वह कौन अभाव था जो अब पूरा हो रहा है ? दूसरी लडकियॉ विवाह के बाद कैसी हॅसी भरी गुदगुदाई-सी जान पडती ।[1] इसके बावजूद भी वह पति की नपुसकता को भी सहना चाहती लज्जा की अनुभूति उसे होती थी वह शिथिल और उदास रहती घर उसे पिंजडा मालूम होता था जीवन असह्य था पति के विचारो के साथ उसकी कहीं भी अनुकूलता नहीं थी।[2] विवाह को निबाहने को प्रस्तुत थी पर वह स्वय घृणा कर जीवित रहना नहीं चाहती थी। घर के वातावरण से ऊबकर वह पार्टी का काम करना चाहती है। धन लोलुप सुतलीवाला पत्नी मनोरमा को सेठ की अकशायिनी बना रूपया ऐठना चाहता है। मनोरमा ये अन्याय बर्दाश्त नहीं करती परन्तु प्रत्युत्तर मे सुनती है तुम क्या अब तक परदे मे रहती आई हो ?[3] मनोरमा के लिए अब एक छत के नीचे जीवन बिताना कठिन जान पडता लेकिन अपने मायके भी नहीं लौट सकती क्योकि विवाह उसने स्वय अपनी इच्छानुसार किया था वह दोष अपने घर वालो को भी नही दे सकती। वह समझ नहीं पाती है कि वह क्या करे ? घर वापस जा नहीं सकती पति उसको अपने प्रयोजन का न समझ कर मुझ पर कुलटा होने का लाछन लगा देने का उपाय कर रहा है। वाह रे समाज का कुचक्र! मुझसे चाहे जो भी भूल हुई हो यहॉ से निकलना मेरे लिए मुक्ति ही है। लेकिन जाऊॅ भी तो कहॉ ? बहुत सोच विचार के

---

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या – १४७

२ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या १५४

३ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या–१६६

बाद उसे तलाक मे ही अपनी मुक्ति का मार्ग नजर आता है।[1] मनोरमा का चित्रण यौनाक्रान्त रमणी के रूप मे नही किया गया न उसके जीवन के समस्या यौन-अतृप्ति के कारण ही उग्र होती है। वह अपनी बेचैनी से मुक्त होना चाहती है। जीने की ललक उसमे विद्यमान है। अपने जीवन मे सतोष प्राप्त करने की भावना से वह कम्युनिस्ट पार्टी का कार्य करने लगती है। सुविधापूर्ण परिवेश को त्याग कर सहर्ष एक सघर्षशील भूमिका मे आने वाला मनोरमा के चरित्र का ये पक्ष कम महत्वपूर्ण नहीं है। नारी होने के नाते मनोरमा का दृष्टिकोण आदर्शवादी एव भावुकताजन्य भूमिकाओ का परिचय देता है। वह धनसिह और सोमा को एक-दूसरे से मिलाने के लिए भूषण को उत्प्रेरित करती है और भूषण इसी क्रम मे घायल होकर अपने प्राण दे देता है। उपन्यास के अन्त मे उसकी स्थिति मार्मिक और करुण बनकर रह जाती है। उसे जीवन मे सब कुछ मिलकर भी कुछ नहीं मिला। अन्त मे हम भी लेखक के साथ कह उठते हैं कि जाने वह कब उठेगी या न ही[2] मनोरमा फिर अचेत हो गयी उसे कब होश आयेगा ? आयेग भी या नहीं ?

इस तरह मनोरमा का चरित्र उस आधुनिकता के धरातल मे खडा दिखायी देता है जहॉ नारी पति का चुपचाप शोषण बर्दाश्त नहीं करती। पत्नी पुरुष की सम्पत्ति नहीं जिसे जैसे चाहे खर्च करो वह एक जीती-जागती प्राणी है अपने ऊपर अन्याय चारित्रिक दोष वह क्यो बर्दाश्त करे। उसकी यही विचारधारा उसे सम्बन्ध-विच्छेद की ओर कदम उठाने के लिए विवश करती है। इस प्रकार "मनुष्य के रूप मे तलाक की व्यवस्था को वैवाहिक जीवन की विसगति से मुक्ति पाने का सही मार्ग माना है। जो आधुनिक विचारो की ओर नारी को एक नयी दिशा के रूप मे ले जाता है।

---

१ मनुष्य से रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या १६७

२ मनुष्य के रूप – यशपाल पृष्ठ सख्या–२४०

# अमिता (अमिता)

अमिता उपन्यास की बालिका अमिता ही उपन्यास की नायिका है। यह उपन्यास के नामकरण से ही स्पष्ट हो जाता है। अमिता हमे अलिद मे क्रीडा करती हुई उछलती-कूदती अपने प्रिय कुत्ते बभ्रू के पास आती हुई रगमच पर स्पष्ट दिखाई देती है।

अमिता महामहिमामय प्रजापालक धर्म रक्षक कलिग राज की पुत्री है। अमिता की आयु छ वर्ष की थी कि कलिग राज की मृत्यु अशोक के आक्रमण के विरुद्ध युद्ध मे पाए घावो मे हुई। महाराज के अन्तिम श्वास लेने के पूर्व ही राजकुमारी अमिता को राज्यसिहासन की उत्तराधिकारिणी घोषित कर दिया था। अमिता की माता महारानी नन्दा ने ससार से विरक्ति ले ली थी। अमिता ने बौद्धधर्मानुयायी अपनी माता नन्दा से प्राप्त होने वाले नित्य के उपदेश-"किसी को मारो किसी से छीनो मत किसी को डराओ मत को अपने व्यक्तित्व का विशेष अग बना दिया था। उसका सम्पूर्ण चरित्र इसी उपदेश के अनुकूल होता हुआ दिखायी देता है। जहाँ कहीं भी उसे कोई छीनता डरवाता या मारता हुआ दिखायी देता है उसकी करुणा बाल सुलभ वाणी मे गुँजरित हो उठती है और वह उसको दण्ड देने के लिए तत्पर हो उठती है। अपने कुत्ते बभ्रु को जब कबूतरो पर आक्रमण करती देखती है तो उसे भी दण्ड देती है मामा यह बभ्रु बडा दुष्ट है। यह निरीह कपोतो से छीनता है उन्हे मारता है उन्हे डराता है। अम्मा कहती हैं- किसी से छीनो मत किसी को डराओ मत किसी को मारो मत। हम इसे दण्ड देगे। इसे जजीर से बॉध कर बन्दी बना दो।[1] इस तरह अमिता जहॉ भी किसी को मारते छीनते डराते देखती है उसको दण्ड देने के लिए व्यग्र हो जाती है। यूथय स्कन्द के साथ भी वह ऐसा ही

१ अमिता – यशपाल पृ स ६६

व्यवहार करती है। इतना ही नही जब कलिग पर पुन आक्रमण होने के भय से सैनिक कर अपनी तैयारी करते हैं तो अमिता भी वहॉ पहुँच जाती है। यह पूछने पर कि ये लोग क्या कर रहे हैं जवाब मे जब उसे ये खेल है' का उत्तर मिलता है तो वह भी कहती है कि मैं भी यह खेल खेलूँगी और जब कोई उसकी बात नहीं मानता तो कुण्ठित होकर बोली अच्छा तो हम अपने आप खेलेगे। अमिता ने कोडे को दोनो हाथो से अपनी पीठ पर मारने के लिए उठाया वह चोट से तिलमिला उठी। [१] परिणामत वह चोट से कराह उठती है। इस प्रकार अमिता का चरित्र बाल सुलभ व बौद्ध दर्शन के आधार पर उज्ज्वल हो उठता है। अमिता के चरित्र का दूसरा पहलू है उसकी निर्भयता स्वभावगत उन्मुक्तता सकोचहीनता और खुलापन एक बार अशोक पुन पराजित कलिग पर आक्रमण करने को तैयार है और कलिग राज्य पर आत्मरक्षा के लिए दुर्ग-निर्माण का प्रयत्न हो रहा। महारानी नन्दा को बौद्ध धर्म मे अगाध निष्ठा है। इसलिए अमिता के बाल सुलभ मन मे भी ये निष्ठा अन्दर तक समायी हुई है। परिस्थितियो ने उसे ऐसे वातावरण में रखा है कि सकोच भय और दब्बूपन के लिए वहॉ कोई अवसर नहीं है। इसी का परिणाम है कि वह दिग्विजयी सम्राट अशोक तक से भी निस्सकोच निर्भयता और धडल्ले से बात करती है—उसे बभ्रु की तरह जजीर मे बाध देने तक की बात कह डालती है। इतनी निर्भयता बाल सुलभ मन स्थिति पर बौद्ध के धर्म के कारण ही अमिता पर दिखायी पडती है। अमिता का चरित्र यशपाल ने प्राय बडे ही स्वाभाविक रूप मे विकसित किया है। अमिता के राजतिलक के अवसर पर अपने विचार से सामाजिक रूढि की आसगतियो को बालिका की सरल स्वाभाविकता द्वारा स्पष्ट किया है। "बालिका महारानी को बहुत देर तक निश्चल राजसिहासन पर बैठने की अपेक्षा दासी हिता की उगली पकडकर ऑगन मे उछल—कूद करना या बभ्रु के पीछे उद्यान मे दौडना

---

१ अमिता — यशपाल पृ स २६।

ही अधिक रुचिकर था। उसे न कलिग की राजेश्वरी बनने मे और न सिहासनारूढ होने मे कोई सुख जान पडता। न उसका कोई लोभ ही था। महारानी अमिता के राज्याभिषेक के उपचार रीति कर्म किये जा रहे थे तो उसे लग रहा था कि महामात्य महासेनापति राजगुरु और दूसरे बडे बुढे उनका खेल बनाकर उसी प्रकार अपना मनोविनोद कर रहे हैं। जैसे वह स्वयम् दूसरी बालिकाओ के साथ पुतली का ब्याह करके खेलती थी। यह उसे अच्छा न लगा उसने हट किया हम राजेश्वरी नहीं बनना चाहती हिता को राजेश्वरी बनाओ।

इस प्रकार लेखक ने बालिका अमिता के चरित्र मे बाल सुलभ नारी भावना का रूप विकसित किया है।

वह अशोक से भी निर्भय होकर बात करती है और किसी से छीनो मत डराओ मत मारो मत के उपदेश से अशोक का हृदय भी परिवर्तित कर देती है जिससे अशोक जैसा विजयी सम्राट द्रवित होकर यह प्रतिज्ञा कर बैठता है कि वह किसी से छिनेगा नही मारेगा नहीं डरायेगा नहीं। अब अशोक हिसा और युद्ध से विजय की कामना नहीं करेगा। वह कलिग की विजयी महारानी की भॉति निश्छल प्रेम से ससार के हृदयो की विजय करेगा।[१]

इस प्रकार लेखक ने अमिता के चरित्र के माध्यम से विश्वशान्ति एव विश्वबन्धुत्व की भावना को बालनारी पात्र अमिता द्वारा मुखरित मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सम्राट अशोक जैसे क्रूर अत्याचारी निर्दयी व्यक्ति के हृदय परिवर्तन को भी बदलने मे अपनी अहम् भूमिका निभाती है जो आधुनिक समय मे विश्वशान्ति प्रेम सद्भावना एव मैत्री का बोध कराती है। कहना न होगा कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अमिता का चरित्र हिन्दी कथा साहित्य मे अनूठा और अपूर्व है।

---

१ अमिता – यशपाल पृ सं १६६

# अन्य स्त्री पात्र

## सुनन्दा

महाराजा करवेल के मृत्यु के पश्चात् उनकी पत्नी महारानी नन्दा ससार से विमुख होकर अभिधर्म मे शान्ति और सतोष पाती हैं। महास्थिविर जीवक की चमत्कारिक सिद्धियो के प्रति उनके मन मे अटूट विश्वास है। महास्थिविर की इच्छा के विरुद्ध वह कोई भी कार्य नहीं करना चाहती। महास्थिविर के परामर्श से ही वह आचार्य द्वारा प्रसारित नगर मे महाबलि यहा को भी बन्द करवा देती है।

महारानी सुनन्दा के चरित्र मे अहिसा करुणा और ममता के रूप देखने को मिलते हैं उसमे बौद्ध और गाधी दर्शन का सम्मिलित रूप मिलता है। उनकी वेशभूषा मे सादगी झलकती है "सोने कलशा लिए दासी के पीछे डयोढी मे कलिग की राजेश्वरी सुनन्दा राजहसिनी के समान मन्द गति से आती दिखायी दी। महारानी का शरीर रूखे काले केशों से कमर तक हिम के समान श्वेत दुशाले से ढका था। कमर से पॉव के नखो तक भी श्वेत रेशमी वस्त्र का अन्तरवासक लिपटा हुआ था। महारानी माथे को तनिक झुकाए हाथ जोडे मत्र पाठ करती हुई चल रही थी। [१]

महारानी प्रज्ञा वत्सल हैं तटस्थ होकर वे प्रजा की प्रत्येक बाते सुनती और अपने विश्वास के विरुद्ध वे महामात्य या अन्य किसी की भी बात न सुनती। अशोक के आक्रमण से पूर्व उत्तर द्वार पर दुर्ग की आवश्यकता होते हुए भी वे प्रजा का कष्ट नहीं देख सकती। वे दुर्ग के लिए भूमि छीनना पाप समझती है। वे अमात्य से

---

१ अमिता – यशपाल पृ स १०

कहती हैं अशोक जो कल करेगा उसे वे आज ही करना नही चाह रहे हैं। यदि अशोक पाप करेगा तो उसका फल भी वही पायेगा।[1] उनके विचार मे इहलोक और परलोक दोनो ही लोको का लोभ आसक्ति है। यह कर्मयोग नही बन्धन है।

महारानी सुनन्दा का चरित्र वस्तुत धर्म के प्रति अन्ध श्रद्धा का प्रतीक है इसीलिए उनमे प्रतिक्रियावादी शक्ति ही कार्यरत दिखायी पडती है। सुनन्दा बौद्धधर्मानुयायी होते हुए आस्था व विश्वास की वह मजबूत कडी हैं जो उपन्यास मे अनवरत रूप से प्रक्षेपित करते हुए अपनी पुत्री अमिता के जीवन मे किसी से छीनो मत मारो मत डराओ मत के रूप मे पल्लवित होते दिखायी देती है।

## तारा (झूठा–सच)

तारा यशपाल की अत्यन्त सजीव और प्रगतिशील चरित्र सृष्टि है। प रामलुभाया की पुत्री और जयदेवपुरी की बहिन है। तारा के जीवन की सबसे बडी समस्या उसका प्रगतिशील होना है। सामाजिक आर्थिक विषमताओ और रूढियो से ग्रस्त परिवार मे पली बढी होने के कारण उसका मन हीन भावना से ग्रस्त है तारा उपन्यास मे एक परम्परावादी सामाजिकता को लेकर उपस्थित होती है। वह मध्यवर्गी य आदर्श चतुर तीव्र बुद्धि और गम्भीर नारी की प्रतीक है जिसका जीवन कचन अनेक कठिनाइयो की अग्नि मे तपकर अन्त मे प्रदीप्त हो सबको प्रकाश दिखाता है कालेज मे तारा एम ए पढने का विचार करती है उसकी तीव्र इच्छा है कि पढ लिखकर विद्वान और योग्य पुरुष से विवाह करे उसके विचार मे स्त्री अपने से कम योग्य अथवा हीन व्यक्ति के प्रति कभी भी श्रद्धा या प्रेम नहीं कर

---

१ अमिता – यशपाल पृ स ४४

सकती विवाह कभी करूगी तो खूब विद्वान प्रतिभावान व्यक्ति से ही अपनी अपेक्षा हीन आदमी से क्या विवाह ? स्त्री अपनी शोभा अपने से बढकर पुरुष को पाने मे ही समझ लेती है स्त्री स्वयम् अपने योग्य पुरुष से हीन क्यो रहना चाहती है।[1]

रूढिवादी परिवार मे जन्म लेने के कारण उसके ये विचार टूटकर बिखर जाते हैं उसको नहीं आगे पढने का अवसर प्राप्त होता है और न ही उसका विवाह योग्य पुरुष से होता है। जातिगत भेद-भाव उसमे नही दिखायी पडता वह हिन्दू होकर भी मुसलमान युवक असद से न केवल प्रेम करती है बल्कि उससे विवाह भी करना चाहती है। उसका विवाह जब दुराचारी लम्पट पुरुष सोमराज से तय होता है तो वह असद से विवाह करने के लिए कहती है परन्तु परिस्थितिवश वह सोमराज से विवाह करने को बाध्य होना पडता है। यहीं से तारा के व्यक्तित्व पर बदलाव आता है और उसके दुर्भाग्य की कहानी शुरू होती है। तारा का सहज जीवन विकास उस समय अचानक अवरुद्ध हो जाता है जब वह चारो ओर रूढिवादिता जाती है वह स्वयम् निर्णय लेने मे अपने आपको असमर्थ पाती है। कोई भी उसका समर्थन करने के लिए आगे नहीं आता। जिस भाई पर उसने भरोसा किया वह भी उसका साथ नहीं देता विवश प्रेमी भी इस विवाह से उसे बचा नही सकता। जिसकी परिणति एक निकम्मे उच्छखल व्यक्ति सोमराज से होता है। तारा के विवाह के सुनहले सपने चूर-चूर हो जाते हैं परन्तु विवाह हो जाने पर वह एक भारतीय पत्नी की भॉति विवाह की प्रथम सध्या मे पति से प्रथम परिचय की कल्पना से रोमाचित हो उठती है अनेक मधुर-भावनाओ को लिए वह सोमराज की प्रतिक्षा करती है "उसके कधो पर लाल शिफान का झीना दूपटटा था। सोचा घूँघट कर ले उस घूँघट मे दिखता

---

**१ झूठा—सच – यशपाल पृ स ६१**

क्या नही है ? सोचा उनके आने की आहट पाकर घूँघट कर लेगी। कहेगे तो हटा देगी। यह हटा लेने देगी। तारा के कान उन शब्दो के लिए आतुर थे जैसे सीप स्वाति नक्षत्र की बूँद पा लेने के लिए अपने पटु खोल देती है।[१] लेकिन उसके स्वप्न चकनाचूर हो जाते हैं जब सोमराज उसे प्रेम के बदले गालियॉ देता है उसे पीटता है इस कारण क्योकि पहले सोमराज को यह मालूम होता है कि तारा उसे अपने योग्य नही समझती तारा अपने सम्मान की रक्षा के लिए एक ही वाक्य बोलती है खबरदार हाथ उठाया तो।[२]

सोमराज की बलिष्ठ भुजाओ के आगे उसका वश नहीं चलता और उसकी विवशता उसकी शिसकियो और ऑसूओ मे बदल जाती है। उसी समय साम्प्रदायिक दगा होने से घर मे आग लग जाती है उसका पति सोमराज तारा को छोडकर भाग जाता है और तारा विवश होकर किसी तरह बाहर निकलती है यहीं से जीवन की राह कटिली हो जाती है। वह अन्त तक परिस्थितियो का सामना एक साहसी स्त्री की तरह करती है। उसे जीवन के नये-नये अनुभव होते हैं। वह एक गुण्डे नब्बू के हाथो मे पड जाती है नब्बू के हाथो उसे जो यत्रणा सहनी पडती है उसे पढकर हृदय दहल जाता है मर्द ने तारा को कोठरी मे ले जाकर उसे विवाह के समय पहनायी गई। सोने की चूडिया और गले का हार उतार लिया मर्द ने सिगरेट समाप्त करके खाट से उठा उसने ऑगन मे रखे घडे से पानी पिया। जले सिगरेट को नीचे ईटो के फर्श पर रगडकर बुझा दिया और तारा की ओर करवट लेकर पुकारा। यहॉ आ चारपाई पर।[३] नब्बू ने तारा का विरोध समाप्त कर देने के लिए उसकी सलवार फाडकर परे फेक दी। कमर पर सलवार का केवल ऊपर का कुछ भाग ही नाले से बधा रह गया इस पर भी तारा ने आत्मसमर्पण नहीं किया

---

१ झूठा–सच – यशपाल पृ स ४०१

२ झूठा–सच – यशपाल पृ स ४०२

३ झूठा–सच – यशपाल पृ स ४०१

उसके इस हट से चिढकर नब्बू ने तारा की बाहे को पीठ के पीछे कधे की ओर इतने जोर से मरोडा कि वह तडपकर और चीखकर बेहोश हो गयी।[१] इसके पश्चात् इतनी यातनाओ को सहते हुए उसे एक मुस्लिम परिवार मे आश्रय मिलता है। मुस्लिम हाफिज के यहॉ उसे स्नेह और प्यार तो मिलता है लेकिन इस्लाम धर्म न स्वीकार करने के कारण उसको यहॉ भी निराशा मिलती है। शारीरिक यत्रणा से भी अधिक मानसिक क्लेश होता है नब्बू और सोमराज ने उसे शारीरिक यत्रणा दी परन्तु हाफिज तो उसका हृदय मस्तिष्क और धर्म तक बदल देना चाहते हैं। मनुष्य के पास यहीं दो वस्तुऍ उसकी अपनी होती है जिसके कारण वह अपने आप को स्वतत्र कह सकता है। यह विचार करके वह अपना दृढ निश्चय हाफिज जी को सुनाती है। ताया जी आपकी और काजी के मुझ पर बहुत एहसान है लेकिन अपनी समझ और दिमाग को क्या करुँ अल्लाह ईश्वर की इच्छा से जैसे-पैदा हुई हूँ वैसे ही मरने दीजिए आप मेहरबानी करके मुझे हिन्दुओ के कैम्प मे पहुॅचा दीजिए। फिर आगे मेरी किस्मत होगी।[२]

कैम्प पहुॅचने से पूर्व बन्ती सतवन इत्यादि की भॉति काल कोठरी मे उसकी दुर्दशा का चित्रण अतिरजितपूर्ण जान पडने पर भी असम्भव और अविश्वसनीय नही। पारस्परिक घृणा द्वेष और सघर्ष की ऑधी मे लाखो हिन्दुओ व मुस्लिम नारियो को इस प्रकार के असीम दुख सहने पडे थे। नारी जाति के प्रति असीम करुणा उसमे भरी पडी है तभी तो वह बती को उसके घर पहॅुचाने के लिए जाती है और रात वापस न आ सकने के कारण कैम्प की अन्य स्त्रियॉ उसके चरित्र पर दोष लगाने से भी नहीं चूकती

---

१ झूठा–सच – यशपाल पृ सं –४०२

२ झूठा–सच भाग एक – यशपाल पृ स ४०६–४१२

कहॉ गई थी तू ? रात कहॉ रही ? निहाइदेई ने धमकी से प्रश्न किया।[1] तारा को अपने ऊपर दोषारोपण का कोई दुख नही था। दुख था तो बती के सर पटक-पटक कर मर जाने का उसका तो घर था पति था बच्चा था लेकिन चरित्र के ऊपर लाछन लगाने के कारण उसे पुन घर मे शरण नही मिलती। वह स्त्री होने के नाते एक स्त्री का पीडा को समझ सकती है। तारा जीवन मे अनेक प्रकार के अनुभव पाती है। वह शिक्षित होने के कारण कैम्प मे लिस्ट बनवाने का कार्य करती है। वह मिसेस अग्रवाल के घर खूब काम करती है परन्तु जहॉ उसके चरित्र पर सन्देह किया जाता है वह उस घर को छोड कर किराये का अलग कमरा लेकर रहने लगती है। तारा का हृदय अत्यन्त विशाल होने के कारण तथा अपने कार्य तथा सुशील व्यवहार के कारण वह सबकी आदर्श बनती है तभी तो खुशीराम मेहता ने तारा के सामने हाथ जोडकर प्रार्थना की "हमारी माताजी की आपसे विनती है कि आप ही बच्ची का नाम रखे।[2] तारा इतना सम्मान पाने के कारण ऑखे भीग आयी और जब बच्ची का नाम उसी के नाम पर तारा रखा जाता है तो वह मन मे सोचती है नही जो मैंने भोगा है कोई न भोगे।[3] तारा ने अपने आपको सम्भाला। कण्ठ रुध जाने के कारण मुख से केवल इतना कह सकी- "सुखी हो। उसका कल्याण हो।[4]

डॉ प्राण नाथ और तारा का सम्बन्ध धीरे-धीरे घनिष्ठ और आन्तरिक होता जाता है और एक ऐसा अवसर भी आता है जब तारा से उसका विवाह हो जाता है। वैचारिक स्तर पर यह विवाह तारा के लिए अत्यन्त सफल होता है उसने अपने पति के विषय मे जैसा सोचा था अन्त मे उसी सोच का मिल जाने के कारण तारा अपने जीवन की तमाम यातनाओं को भूल जाती है। इस तरह उपन्यास मे तारा के

---

१ झूठा-सच भाग एक - यशपाल पृ स ४०२
२ झूठा-सच भाग दो - यशपाल पृ सं २६१
३ झूठा-सच भाग दो - यशपाल पृ स २६१
४ झूठा-सच भाग दो - यशपाल पृ स २६१।

चरित्र के साथ सहृदय पाठको का पूर्ण तादात्म्य हो जाता है और वह उसके साथ हॅसता है रोता है यही चरित्र-चित्रण की सबसे बडी सफलता होती है जो यशपाल जी ने तारा के माध्यम से उपन्यास मे दिखायी है।

तारा के चरित्र के माध्यम से उन नारियो की विवशता का प्रतिकार ढूॅढने का उपक्रम किया गया है जो परम्परा से विच्छिन्न हो प्रगति के मार्ग पर अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। आधुनिक धरातल पर तारा का चरित्र आज की नारी की प्रगति के सन्दर्भ मे एक अनूठा उदाहरण है।

## कनक

कनक उपन्यास की दूसरी प्रमुख नारी है जो अपनी विशिष्टताओ के कारण नारी जीवन के दूसरे पहलू पर प्रकाश डालती है। कनक उच्चवर्गीय रूढियुक्त परिवार की नारी है और स्वतत्र आधुनिक नारी के रूप मे प्रस्तुत हुई है जो आत्मनिर्णय तथा आत्म सम्मान के भाव को सदैव बनाए रखती है। कनक जयदेवपुरी को हृदय से चाहती है। पुरी ने जब कनक के सामने अपनी हीन आर्थिक स्थिति स्पष्ट की तो वह उत्तर देती है कि वह पुरी की ओर उसकी महानता के कारण आकर्षित है। धन के कारण नहीं कनक ने फिर ऑखो मे ऑसू भरकर प्रतिवाद किया। पैसे का क्या है ? मैं पैसे की भूखी हूॅ। आप की कला और व्यक्तित्व की महत्ता को कौन नही जानता।[1]

कनक कल्पना मे पुरी के प्रेमचन्द शरद गोर्की जेसे महान लेखक के स्वप्न देखती है। व्यक्ति के आर्थिक हैसियत के स्थान पर वह मनुष्यत्व को महत्त्व देती है। यही कारण है कि वह गरीब पुरी से प्रतिभा और गुणो के कारण अपने सम्पन्न

१ झूठा—सच – यशपाल पृष्ठ स ५३

परिवार घर–बार सब कुछ छोडने को तत्पर है जयदेव की नौकरी के लिए वह स्वयम सक्रिय होती है। पारिवारिक विरोधो के बावजूद भी वह पुरी को अपने जीवन मे पाना चाहती है अनेक बाधाओ को सहते हुए वह पुरी के उपन्यास के दूसरे भाग देश का भविष्य मे एक समाचार पत्र का सम्पादक के रूप मे पाती है। लेकिन पुरी का उर्मिला के साथ सम्बन्ध देखकर उसको फिर से स्वीकार करने के लिए राजी नही कर पाती है। किन्तु पुरी का आकर्षण उसे विवाह के बन्धन मे बाधता है। विवाह के पश्चात् एक पत्नी और एक मित्र दोनो रूपो मे जयदेव के जीवन मे प्रवेश करती है परन्तु जयदेव के विचार जब उसके आत्मसम्मान को तोडते दिखायी देते हैं तो अपने को मात्र भोग्या और दासी के रूप मे ही खडी पाती है। जिस पुरुष के सुसस्कृत उच्च विचारो के लिए घर के सभी लोगो से विरोध करती है। उसी को अपनी आशाओ के विपरीत पाकर उसके आत्मसम्मान को गहरा धक्का लगता है। पति का दबाव भी उसे साथ रहने के लिए विवश नहीं कर पाता। स्वतत्र अस्तित्व की चाह से उसके दाम्पत्य जीवन मे बिखराव आता है अत वह पति से अलग हो जाना चाहती है। विवाह किया था तो दासी रखैल या कीर्तदासी तो नहीं हूँ मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं।[1] वह पति का ग्रह त्यागकर पिता के घर आ जाती है पिता कनक के लिए चितित है परन्तु बेटी पर अपने विचार लादना नहीं चाहते।

कनकपुरी से वैचारिक सामञ्जस्य न मिलने के कारण उसे तलाक देती है और गिल से पुनर्विवाह कर लेती है। कनक मे आत्महत्या या आत्मपीडन की प्रवृत्ति नहीं है। क्यो उसमे नारी का स्वतत्र व्यक्तित्व झाकता है। वह जीवन की भूलों पर बलिदान नहीं करना चाहती। उससे ऊपर उठना चाहती है और इस प्रयत्न मे वह सफल भी होती है। अपनी पुत्री जया को वह अपने साथ ही रखती है।

---

१ झूठा–सच – यशपाल पृ स ५७५

यशपाल ने कनक के चरित्र के माध्यम से समाज मे उन नारियो का वर्णन किया है जो अन्याय के विरुद्ध झुकती नही। प्रेम को अपना लक्ष्य नहीं मानती बल्कि एक सीमित मार्ग तक उसे स्वीकार करती है।

प्रेम जब हदे पार करने लगता है तो वह ये अन्याय बर्दाश्त नही करती। कनक का दाम्पत्य जीवन पुरी के काम सम्बन्धो की अतिशय मार्ग के कारण वह उसके विचारो मे भ्रष्टाचार और दुराचार का बदलाव ही वैचारिक तालमेल न बैठने के कारण सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति तक उसे पहुँचाता है। वह आजीवन पुरी की यादो मे अपना जीवन नष्ट भी नही करना चाहती और गिल से विवाह करने के लिए समाज के सामने आती है।

इस तरह कनक के चरित्र के माध्यम से लेखक ने प्रगतिशीलता की जो लहर नारी जीवन मे दौडायी वह आज तक अनवरत गति से चलायमान है।

# अन्य नारी पात्र

## शीलो

इस उपन्यास मे शीलो तारा की तैयरी बहन के रूप मे चित्रित होती है जो अधिक पढी-लिखी नही है। सगाई होने के बाद भी वह रतन से न केवल प्रेम बल्कि शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित करती है। परन्तु माता-पिता की इच्छानुसार उसका विवाह मोहन से हो जाता है। परन्तु शीलो प्रेम और विवाह को अलग-अलग दायरे में रखती है उसका प्रेम का दायरा अत्यधिक विस्तृत है जिसका परिणाम रतन का

बच्चा है। मोहब्बत का धर्म अपनी जगह है घर-बार का धर्म ब्याह अपनी जगह मोहब्बत की तो रीति ही ऐसी चली आयी है। बडो ने भी वही किया है कष्ण जी का गोपियो से राधा जी से प्रेम था तो उनके लिए रुक्मणी जी को छोड दिया था ?[१]

इस तरह लेखक ने शीलो के चरित्र के माध्यम से भी मुख्य बातो पर दृष्टि डाली है पहली प्रेम विषयक दृष्टिकोण जिसमे शीलो प्रेम की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए पाश्चात्य सस्कति की द्योतक है जबकि विवाह को भारतीय सस्कति की परम्पराओ को निभाते हुए मोहन के साथ विवाह करने को अपने दूसरे धर्म का निबाह करती है। इस प्रकार शीलो पाश्चात्य व भारतीय सस्कति के रूप को स्वीकार करते हुए दोनो का समन्वयित रूप समाज के सामने उपन्यासकार यशपाल ने प्रस्तुत किया है।

## उर्मिला

उर्मिला का चरित्र अपेक्षाकत अधिक महत्त्वपूर्ण है। उपन्यास के प्रारम्भ मे उसकी उच्श्रृखलता और काम पीडित भूमिका उसके चरित्र को उद्घाटित करती है। जीवन मे तमाम उतार-चढाव आने के कारा कलान्तर मे परिस्थितियो के घात-प्रतिघात से निरीह और असहाय जीवन पर जीने के लिए उसे विवश होना पडता है।

उर्मिला जयदेव पुरी के पत्नी रूप मे रहती है। लेकिन पारम्परिक विधि से पुरी उससे विवाह नही करता और एक दिन उसके मॉ बनने की खबर सुनकर उसे

---

१ झूठा–सच – यशपाल पृ स २०८

विधिवत् रूप से पत्नी बनाने के लिए विचार करता ही है कि अचानक पूर्व प्रेमिका कनक के आ जाने पर वह उसे असहाय अवस्था मे छोड देता है। उर्मिला का परिवार बटवारे के कारण छिन्न-भिन्न हो गया था और उर्मिला लाहौर मे विधवा हो गई। बार-बार आत्महत्या का प्रयत्न करने पर भी वह पुरी की मदद से बच तो जाती है लेकिन जीवन भर के लिए पुरी के जीवन मे उसे पनाह नही मिलती।

पुरी के शब्दो मे उर्मिला का यह परिचय कि वह वचिता निराश्रय और अकेली नही है।[1] जीवन की ओर जीने के लिए नयी राह दिलाती है। उर्मिला की स्थिति तब और भी कारुणिक हो जाती है जब जयदेव के प्रति इस विश्वास के साथ कि वह उससे विवाह करेगा पूर्णत समर्पित हो जाती है और जयदेव के ठुकरा दिये जाने पर वह विवश और लचार बनकर इस दुर्भाग्य को स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाती है। यहीं से उसका चरित्र एक नया मोड लेता है। एक बार गिरकर वह गिरती ही चली जाती बल्कि परिस्थितियो के सामने साहसपूर्वक आ खडी होती है। यहाॅ पर अपनी विषमताओ को सहते हुए उसे यह अहसास हो जाता है कि आत्मनिर्भरता ही नारी की अत्याचारो से मुक्ति दिला सकती है अत नर्स बनकर और तत्पश्चात् डॉ मोगिया से विवाह कर वह अपने भाग्य की निर्मात्री स्वय बन जाती है और अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करती है। इस तरह उर्मिला के चरित्र के माध्यम से लेखक ने सजीव व आत्मनिर्भर नारी का चित्र समाज मे प्रस्तुत किया है। उपन्यास की अन्य नारी पात्रो मे बती का चरित्र भी बडा मार्मिक बन पडा है। देश के विभाजन के समय मुसलमानो द्वारा अपमानित भूखी-प्यासी बती अपने पति व पुत्र की खोज मे उन्हे ढूॅढती फिरती है और अन्त मे उन्हे प्राप्त कर के भी नही प्राप्त कर पाती। उसका पति उस पर चारित्रिक दोष का आरोप लगाते हुए

---

**१ झूठा–सच – यशपाल पृ स ३०५**

उसे पुन घर मे प्रवेश करने नही देता और उसके मातृत्व के हक को भी उसके पुत्र छीन कर देता है।

बती अपने पति द्वार पर ही सिर पटक-पटक कर मर जाती है रूढिवादी समाज मे पति को ही परमेश्वर मानने वाली स्त्रियॉ की दशा का वर्णन लेखक ने बती के चरित्र के माध्यम से किया है। बती का चरित्र जहॉ एक ओर पाठक के हृदय पर गहरा प्रभाव डालता है। वही दूसरी ओर पुरुषो की रूढिवादिता स्वार्थी वृत्ति एव शोषण के प्रति एक तीखी प्रतिक्रिया भी उत्पन्न करता है। बती समाज उन नारियो का प्रतिनिधित्व करती है जो दोष रहित होते हुए भी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करने मे असमर्थ है।

अन्य पात्रो मे मर्सी और डॉ श्यामा का भी उल्लेख किया जा सकता है जो प्रेम और विवाह की समस्या तक ही सीमित प्रतिक्रिया करके रह जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नारी पात्र भी सामाजिक जीवन के विभिन्न वर्गो का प्रतिनिधित्व करते है। इन नारी पात्रो मे स्वतत्र विचारो एव आधुनिक विचारो वाली नारियॉ हैं। जो भारतीय समाज मे नारी की स्थिति और समस्याओ पर भी प्रकाश डालते हैं।

# विनी (बारह घटे)

बारह घटे उपन्यास की नायिका विधवा विनी है। ग्यारह महीने पूर्व अपने पति रोमी के साथ नैनीताल आयी थी। यही पर उसका पति झील मे डूबकर मर गया था। पति की मृत्यु के बाद विनी को अपना जीवन कठिन जान पडा पति की यादे ही उसको अकेलेपन से छुटकारा दिलाती। लखनऊ से पति की कब्र पर फूल चढाने वह नैनीताल आती है। यही पर उसकी बडी बहन जेनी रहती है। फूल मुरझा न जाय ये सोचकर वह तुरन्त ही समाधि पर जाने के लिए व्यग्र रहती है। नैनीताल के कब्रिस्तान के फाटक से पति की समाधि की ओर बढते हुए विनी की ऑखे छलछला आयी परन्तु पति की समाधि पहचान लेने मे कोई असुविधा नही हुई। समाधि के सिरहाने की ओर दायें हाथ अन्य कब्रो के लिए स्थान अब भी खाली थे। [१]

विनी अपने एकाकीपन से उब गयी है। वह स्वयम् ही मरने की सोचती है इस तरह की बाते उसकी बहन जेनी को चितित कर देती हैं। विनी अपने गहरे शोक को किसी से नही बाटती थी। शोक मे डूबी वह न दूसरो को देखना चाहती थी और न अपना अभ्यन्तर दूसरो को दिखाना चाहती थी। [२] यहीं पर उसकी मुलाकात फेटम से होती है अपनी पत्नी शैल की समाधि पर फूल चढाने आता है अचानक वर्षा होने के कारण विनी और फेटम दोनो को ही कब्रिस्तान मे रुकना पडता है। फेटम और विनी दोनो ही अपने दर्द से पीडित हैं। यहि कारण है कि दोनो की सहानुभूति एक दूसरे के साथ है। विनी जो अब तक अपने पति की स्मृतियो मे खोई रहती है। वहीं विनी फेटम के दुख से द्रवित हो उठती है। फेटम की व्यथा उसको इस कद्र द्रवीभूत करती है कि वह जेनी के घर न जाकर फेटम के घर चली जाती

---

१ बारह घटे – यशपाल पृ स १०

२ बारह घटे – यशपाल पृ स १२

है और एक-दूसरे के लिए सहारा बन जाते हैं। विनी मार्क्सवादी यशपाल की ऐसी सर्जना है जिसके माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि प्रेम इतनी प्रबल अनिवार्य पार्थिव आवश्यकता है जिसकी उपेक्षा किसी भी तरह सम्भव नही। प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे प्रेम जीवन जीने का सहारा है बिना सहारे के अभाव मे जीवन टिके नही रह सकते। प्राचीन सस्कारो वाली विनी के साथ यह घटना घटित हुई है पहले वह पति की मृत्यु के साथ ही मर जाना चाहती है लेकिन जब फेटम उसे अपनी पत्नी शैल के वियोग मे तडपता दिखायी देता है तो उसके प्राचीन सस्कार धूमिल पड जाते हैं। वह सोचती है कि यदि वह मर गयी होती तो उसका पति भी इसी तरह दुखी होता। इसी तरह विनी के हृदय मे परिवर्तन दिखाकर उसे फेटम की ओर आकर्षित करते हैं। इस प्रकार बारह घण्टे उपन्यास मे विनी के माध्यम से आधुनिक परम्पराओ को अपने ऑचल मे समेटती हुई विधवा पुनर्विवाह की ओर उन्मुख करने मे अपनी अहम् भूमिका निभायी है।

## जेनी

बारह घटे की जेनी परम्परावादी रुढिग्रस्त भारतीय समाज की बुर्जूआ को मान्यताओ को ढोती हुई उपन्यास मे चित्रित हुई है। विनी का घर लौटने मे देर होना उसे चिन्ता का कारण बनाता है। लेकिन विनी का पत्र पाते ही जेनी का दूसरा रूप देखने को मिलता है यहि नारी का पारम्परिक रूप है। जो चाहता है कि वह वैधव्य भोगे परन्तु दूसरा विवाह न करे पति की मृत्यु के बाद भी सामाजिक बन्धन पत्नी का पीछा नहीं छोडता। सारे कर्त्तव्य उसी के हिस्से आते हैं। इस पत्र से जेनी की मान्यताओ को चोट पहुँचती है। वह कहती है मर जाये डाइन क्या सन्देशा

भेजा है। उफ इन्सान भी क्या है ? सुबह किस हालत मे गयी थी और बारह घटे मे ही बदल गयी लानत है ऐसे लोगो पर।[१]

विनी यदि पति की याद मे रोती रहती उदास रहती तो जेनी जैसी स्त्रियो के लिए करुणा का पात्र बनती है। लेकिन विनी का विधुर फेटम के साथ रहना जेनी जैसी परम्परावादी स्त्रियो को कबूल नही। जेनी के आचरण मे दिखायी पडने वाला अन्तर्विरोध भारतीय समाज मे व्याप्त अन्तर्विरोधो का सूचक हैं। आचरण के स्तर पर वह अपने लिए हर तरह की छूट पाती है। पर दूसरे के सन्दर्भ मे अत्यन्त कठोर और जड है। अपने पति पामर के रहते हुए भी वह लारेंस से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने मे कोई आपत्ति नही मानती लेकिन नि सहाय बेसहारा विनी जब अपना सहारा ढूँढ लेती है तो उसे औचित्य और निष्ठा का महानाश दिखायी पडने लगता है। जेनी जैसी कई महिलाएँ समाज मे विद्यमान है जो रूढिवादिता को तो स्वीकार करती है लेकिन स्वय उसमे बध कर नही रहना चाहती प्रगतिशीलता अपने मे देखना चाहती है लेकिन दूसरो को आगे बढना नहीं देख सकती। विनी यदि पति के वियोग मे आत्महत्या कर लेती तो जेनी के लिए वह महान बन जाती। विनी ने जब अपना सहारा ढूँढ लिया तो वह कुतिया तक बन जाती है। इस तरह यशपाल जी ने जेनी व विनी के चरित्र के माध्यम से ये दर्शना चाहा है कि समाज मे रूढिवादिता और प्रगतिशीलता दोनो ही है हम जब तक रूढिवादिता को एक सीमा तक छोडेगे नहीं तब तक प्रगतिशीलता की ओर नहीं जा सकता। विधवा विवाह की ओर उन्होने समर्थन ही नहीं बल्कि विनी को हृदय मे परिवर्तन लाना ही मुख्य उद्देश्य है।

---

१ बारह घटे – यशपाल पृ स ६७

यशपाल ने जेनी के चरित्र के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि प्रेम आत्मिक सम्बन्ध नही भौतिक आवश्यकता की पूर्ति का साधन है। जेनी अपने पति पामर से पूर्णत पार्थिव सन्तुष्टि नही पाती इसीलिए तो वह लारेस के प्रति आकष्ट है। यदि प्रेम का सम्बन्ध आत्मिक होता तो वह लारेस के प्रति आकष्ट ही क्यो होती ? इस तरह जेनी जब पति रहते अन्य पुरुष की ओर आकष्ट हो सकती है तो विनी को पति की मृत्यु के पश्चात् आकष्ट होता देख क्यो उसे कुतिया बनाती है।

हमारे समाज की नारी स्थिति की यही सबसे बडी विडम्बना है कि वह स्वय ही एक-दूसरे के मार्ग की बाधक बनती है। आधुनिक परिवेश मे यह आवश्यक नही रह गया है कि पत्नी सदैव स्मृतियो को लेकर जिये। विनी का फेटम के साथ रहना तर्क सगत है। जेनी जो विनी की बहन होते हुए भी इस बात को समझकर भी नहीं समझना चाहती। यही उसके चरित्र की सबसे बडी दुर्बलता का सूचक है।

## (अप्सरा का श्राप) मेनका

अप्सरा का श्राप मे मेनका लेखक के विचारो और नवीन दृष्टिकोणो का वहन करने वाली मनुष्य नारी पात्रो मे से है। लेखक ने उसे आधुनिक व्यावहारिक मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर प्रगतिशील चेतना की प्रतीक दिव्यागना के रूप मे चित्रित किया है। वह किसी भी ऐसे धर्म का पतिव्रत धर्म का भी खुलकर विरोध करती है। मेनका की दृष्टि मे व्रत अथवा धर्म तभी तक मान्य है जब तक वह व्यक्ति के आत्मोत्थान मे सहायक है। यहि व्रत अथवा धर्म जब आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाए तो वह त्यागने योग्य हो जाता है इसी की सृष्टि सम्पूर्ण उपन्यास मे मेनका द्वारा उत्पन्न पुत्री शकुन्तला को भी देती है। मानवी सतान के रूप मे वह

पुत्री शकुन्तला के प्रति दुष्यत की क्रूरतापूर्व व्यवहार सुनकर दुख से विहवल हो जाना और पुत्री के लिए मात्र सत्तात्मक समाज की व्यवस्था करना उसके आधुनिक मानवीय दृष्टिकोण एव प्रगतिशील व्यक्तित्व का द्योतक है।

मेनका अपनी पुत्री शकुन्तला के प्रति मोह ही उसे बॉधे रखता है। इसीलिए मेनका ने मानवीय सतान शकुन्तला की अवस्था और गतिविधि का ध्यान रखने के लिए अप्सरा सानुमती मृत्युलोक की ओर दृष्टि लगाये रहती थी। [१] इस तरह मेनका अपनी पुत्री की क्रिया कलापो का समाचार सानुमती द्वारा प्राप्त करती रहती है। माता के कर्त्तव्य मे मेनका का चिन्तित होना स्वाभाविक चरित्र की सृष्टि करता है। दुष्यन्त द्वारा तिरस्कत शकुन्तला जब पुन आश्रम मे चली जाती है तो उसे बडा दु ख होता है। मेनका अपनी कथा के प्रति दुष्यत के दुर्व्यवहार से विरक्ति के कारण राजा के सम्मुख तथा समीप न गई। वह नही चाहती थी कि पुरुष नारी पर निरकुश शासन करे या उसे केवल अपने भोग की वस्तु मानकर धन सम्पत्ति की भॉति उसकी रक्षा करे और उस पर एकाधिकार रखे। इसीलिए वह दुष्यन्त के व्यवहार के प्रति आक्रोश कर बैठती है। मेनका मे आत्मसम्मान की भावना बलवती है। मानवीय न्याय की भावना से ओतप्रोत मेनका पति के रूप मे पुरुष की अनैतिकता को कदापि स्वीकार नहीं करती और न ही स्वीकार करने वाली नारी को उचित मानती है। इसीलिए जब वह सुनती है कि उसकी पुत्री शकुन्तला पति के पश्चाताप से द्रवित होकर शकुन्तला पति द्वारा ठुकराये जाने पर भी उसकी गल्ती को क्षमा करके हस्तिनापुर लौटने को तैयार है तो उसे गहरा आघात पहुँचता है और उसी समय वह पृथ्वी पर अवतरित होकर शकुन्तला के इस कत्य की भर्त्सना करती है। पति का आदेश मानने वाली शकुन्तला से वह पूछती है कि पति ?

---

१ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ स १७

उसका छल प्रपच पहचानकर उससे पशुवत निरादर पाकर भी उसे पति कहती है। तूझे अपनी वासनापूर्ति तथा सम्पत्ति के लिए औरस उत्तराधिकारी प्राप्त करने का साधन मात्र मानने वाले को पति कहती है। तूने उसकी स्वभाव और प्रकति नही पहचाने ?[१]

मेनका नारी के उस पतिव्रत धर्म को श्रेष्ठ नही समझती जिसके आधार पर नारी को अपने व्यक्तित्व तथा आत्मा का हनन करना पडता है। वह अन्य मानवीय धर्मों यथा आत्मरक्षा आत्मनिर्भरता और आत्म सम्मान को नारी के धर्म मानती है। जिसके अनुसार नारी अपना बहिर्मुखी विकास कर सकती है। शकुन्तला के यह कहने पर की पतिव्रता नारी व्यक्ति अथवा मानव नही पतिव्रता मात्र होती है वह आत्मा का नहीं पति का ध्यान करती है।[२] तो वह उसके इस धर्म से क्षुब्ध होकर श्राप देकर उसे दण्डित करती है। इस तरह लेखक ने रूढिग्रस्त परम्परावादी और विवेक शून्य अन्धविश्वासो के बीच मेनका का चरित्र प्रगतिशीलता की वाणी देकर गुजरित कराया है। मेनका को दिव्य नारी का रूप देकर भी उसकी आत्मा को आधुनिक मानवीय भावनाओ से परिपूरित किया है।

## शकुन्तला

अप्सरा के श्राप की दूसरी नारी पात्रो मे हम शकुन्तला को रख सकते हैं। लेखक ने शकुन्तला को एक ऐसी बेबस नारी के रूप मे चित्रित किया है जो शास्त्रो मे वर्णित पतिव्रत धर्म की महत्ता के बोझ से दबी हुई है पति को ही अपना सब कुछ मानती है पुरुष की वासना का शिकार होते हुए भी नैतिक मान्यताओं को न तोडने के लिए विवश है। पति दुष्यन्त द्वारा न अपनाने पर भी वह कोई विरोध नहीं करती

---

१ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ स १२७

२ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ स १२७

और चुपचाप पुन आश्रम मे चली जाती है।

अपने वश बेल की रक्षा करने के लिए जब वही पुरुष केवल इसी आशय से उसे अपनाता है तो वह चुपचाप ये कह कर चली जाती है कि - महाराज पतिव्रता दासी तो सभी प्रकार पति की अनुगत है। वह पति के दोष को देखती नही सुनना नही चाहती।[१] इस तरह शकुन्तला धर्मपरायण भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है वह पति की निन्दा भी सुनना पसन्द नहीं करती स्वामी इस अभागी को ऐसे शब्द न सुनाये। यह अभागी बहुत सह चुकी है। पति निन्दा सुनने के पाप का फल जाने क्या पायेगी।[२]

इस तरह शकुन्तला शास्त्रो मे वर्णित उस नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो पति को परमेश्वर मान कर उनकी उचित अनुचित सभी बातो को मानने के लिए विवश है। शकुन्तला के विचार हमे आदर्श की ओर तो ले जाते हैं लेकिन ये आदर्श आज की धरातल मे धुधला नजर आता है। नारी अपने प्रति अन्याय सहना आप समझती है जिसका प्रतिनिधित्व लेखक ने मेनका के चरित्र के माध्य से किया है।

## मोती (क्यो फॅसे ? )

क्यो फसे ? उपन्यास मे मोती एक ऐसी स्त्री पात्र है जो अपने जीवन मे खुशी की तलाश मे भटकती फिरती है। वह एक मध्यमवर्गीय घर की गृहस्थ गृटिणि के रुप मे हमारे सामने आती है। उपन्यास का नायक भास्कर उसकी सुन्दरता को देखकर ही उस पर मोहित होता है। मोती भास्कर के प्रति आकर्षित अपनी प्रशसा सुनकर ही मोहित होती है। इससे पहले इस तरह की प्रशसा उसने अपने पति से

---

१ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ स १२४
२ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ स १२५

भी नही सुनी होती है। हर स्त्री अपनी प्रशसा सुनकर निहाल होती है तो फिर मोती ही क्यो इसका अपवाद बने। वह भी भास्कर की ओर आकर्षित हो जाती है। दोनो का सम्बन्ध शारीरिक स्तर तक पहुँच जाता है लेकिन मोती मे सस्कार गत लज्जा होने के कारण वह भास्कर के समक्ष समर्पित हो कर भी नहीं समर्पित हो जाती। मोती का मन इससे खिन्न हो जाता है। लेकिन फिर भी भास्कर से प्रेम का मोह वह अन्त तक नहीं छोड पाती।

अन्त मे जब वह भास्कर से पुन मसूरी मे मिलती है तो उसके जीवन मे फिर से बहार आ जाती है और वह नारी सुलभ सारी लज्जा मर्यादा को ताक मे रखकर भास्कर से कहती है तुम्हे ऐसी खुद पसर जाने वाली बेहया पसन्द है। [1]

इस तरह उपन्यासकार ने इस उपन्यास के माध्यम से नर–नारी मे बारम्बार आकर्षण को ही तीव्र बनाया है। मोती के चरित्र के माध्यम से ये दर्शाना चाहा है कि स्त्री–पुरुष का आकर्षण ही उसे एक–दूसरे के समीप लाता है। मोती के जीवन मे यह बदलाव भी उन्होने इसलिए व्यजित किया है कि वह अपने पति से सन्तुष्ट नही थी। शरीर की चाह से शरीर की भूख ही बढती है। ये उपन्यास मे मोती के माध्यम से चित्रित होते दिखाया है। मोती अपने परिवार और बच्चे में खुश रहती है लेकिन उसकी खुशी मे भास्कर नाम का व्यक्ति आकर उसे नैतिकता को दायरे से निकालकर प्रबल आकर्षण की ओर से जाता है। मोती अन्त मे समर्पण करती है। लेकिन भास्कर उसे छोडकर पुन दिल्ली आ जाता है। लेखक ने मोती के इस कृत्य को यह कह कर उचित ठहराया है कि नियत राशन से पेट भर सकता है मन नहीं अर्थात स्त्री पुरुषो की यह इच्छा स्वाभाविक है कि वह एक से ही बधे रहने मे एकरसता या मानसिक क्रान्ति का अनुभव करे।

---

१ क्यों फसे ? – यशपाल। पृ स १००

इस तरह मोती की माध्यम से उन्होने आधुनिक युग की उन नारियो का दृश्य प्रस्तुत किया है जो अपने जीवन मे स्त्री–पुरुष के प्रबल आकर्षण को ही सब कुछ मानती है। मोती के अकन मे यशपाल ने सामयिक चेतना के जितने पहलू उद्घाटित किए हैं उतने अन्य किसी प्रसग मे नहीं। शायद मोती की सामाजिक परिस्थितियाँ अधिक सश्लिष्ट है। परिणामत उसकी दुविधा अधिक गहरी है और चेतना का सघर्ष अधिक गहरा गया है। विवाहिता और अविवाहित पुरुष का सम्बन्ध ा सामाजिकता के सन्दर्भ मे निश्चित रुप से अवैध अनैतिक है। इसलिए मोती और भास्कर के सम्बन्ध की समस्या सामाजिक मान्यताओ को अधिक पीडा देती है।

मोती सात वर्षो से दाम्पत्य जीवन मे थी। नियत राशन से पेट भर सकता है मन नही उन्नीस वर्ष से पूर्व लडकियो के मन–मस्तिष्क आकर्षण और चाह के सवेदन से शून्य नहीं रहते नवीं–दसवीं श्रेणी मे पढते समय ही लडके आकर्षण और अनाकर्षण लगने लगे थे और अपनी ओर उनकी नजरो की परख और चाह पिता के सामर्थ्य स्थिति अपनी आकर्षकता के विश्वास से समय पर विवाह का पूरा भरोसा था। विवाह के पश्चात्–आकति रुप और सौन्दर्य की पारखी और प्यासी उसकी ऑखे और मन यह कैसे मान लेते कि पति रुप मे पाये नरपुगव से अधिक आकर्षण अन्य पुरुषो का अस्तित्व नहीं है। परन्तु अपने वचन और कर्म से ऐसे आकर्षण का सन्देह न होने देने के लिए सतर्क थी।[१]

वैयक्तिक और सामाजिक चेतना के स्तर पर यशपाल यहॉ मोती के चरित्र मे निम्न बाते उठाते हैं। मोती के सस्कार मोती की परम्परा का मान सामाजिक नीति की कायल मोती के मन के विरुद्ध मस्तिष्क की दुविधा मे फसी मोती तथा

---

१ क्यों फसे ? – यशपाल पृ स ५१–५२

वैयक्तिक स्तर पर लडकियो की सवेदनशीलता और मनोविज्ञान। मोती के सस्कार ही है जो उसे बार–बार भास्कर के पास लाकर दूर कर देते हैं। मोती का भास्कर के प्रति आकर्षित होने का कारण भी स्पष्ट दीख पडता है। स्वय भास्कर मोती के पति को देखकर सोचता है   पति जैसे शरीर से छोटा है वैसे ही मन से भी ओछा बेचारी के परिवार द्वारा बेटी के लिए मर्द की व्यवस्था कर देने का परिणाम। ऐसे मर्द से क्या सन्तोष पाती होगी ?   पति का किशोरो जैसा अपूर्ण शरीर पसलियॉ झलकाता निर्लोभ सीना मोती की कल्पना का सुपुरुष नही हो सकता। (मोती अच्छी चित्रकार है) ऐसी सगति से क्या स्फूर्ति और तुष्टि पाती होगी। बेचारी के साथ कितना अन्याय। [१]

स्त्री के मन से विपरीत उसे पति मिलने की बात यहॉ है जिसे मोती की अपने पिता की आर्थिक तगी के कारण स्वीकार करती है। परिस्थितियो की चक्की मे पिसना मोती की नियति है। एक ओर पति और परिवार तथा दूसरी ओर नौकरी पेशा–स्त्री की कठिनाइयॉ। परिवार चलाने के लिए उसे विद्यालय मे अध्यापिका की नौकरी करनी पडती है। मोती को नौकरी के निमित्त घर से बाहर निकलना पडता है इसलिए भास्कर से बेखटके से मिलने मे वह सकोच नहीं करती। सकोच करती है तो भास्कर के समीप्य मे पहल करने मे। उसमे भारतीय स्त्री के कुछ सस्कार है जी उसे ऐसा करने को रोकते है। लेकिन उपन्यास के अन्त मे मोती के चरित्र मे परिवर्तन दिखलायी देता है। वह सारी लज्जा त्याग कर भास्कर के समक्ष स्वय आत्म–समर्पण कर देती है।

मोती के चरित्र मे भारतीय स्त्री के परम्परागत सस्कार व नर–नारी के परस्पर

---

**१ क्यों फसे ? – यशपाल पृ स ५६**

आकर्षण के द्वारा तुष्टि की चाह मे भटकती स्त्री का रूप यशपाल ने क्यो फसे ? उपन्यास की नायिका मोती के माध्यम से दर्शाया है।

## ऊषा (मेरी तेरी उसकी बात)

मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास मे ऊषा मुख्य नारी पात्र है। सम्पूर्ण उपन्यास की धूरी ऊषा ही है जिसके इर्द-गिर्द उपन्यास चक्कर काटता है। इस उपन्यास मे ऊषा की सामाजिकता एव राष्ट्रीयता की झलक प्रस्फूटित होती है जो पूरे परिवेश को सघर्ष बनाए चलती है। ऊषा प्रगतिशीलता और आधुनिक विचारो की पोषक है। ऊषा मे नारी द्वारा सामाजिक-जर्जर रुढियो का अजन धर्म और जाति की सकीर्णताओ को लाघना परिवार ओर पति के बन्धनो से मुक्त होकर राजनैतिक कार्यों मे भी हाथ बटाती है। "साइमन कमीशन के विरोध मे दूसरे दिन स्टेशन पर प्रदर्शन। पिछली सध्या जुलूस विरोध प्रदर्शन की तैयारी भर थी अब वास्तविक विरोध। इसी प्रकार ऊषा नारी के पारम्परिक भावनाओ को उद्वेलित करती है। ऊषा नारी की वास्तविक आजादी के लिए वह हर प्रकार के कठिनाइयो को उठाने के लिए तैयार रहती है। निर्मल पत से सगाई टूटने का एक गहरा सदमा जहाँ समाज की जर्जर रुढियो के प्रति उसे विद्रोही बनाता है वहीं आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा भी देता है। ऊषा आत्मसम्मान के लिए पुरुष के एकाधिकार और अहकार के विरुद्ध विद्रोह करती है। नारी की वास्तविक आजादी के लिये समय-समय पर सघर्ष करती है। ऊषा मे स्वदेश प्रेम की भावना भी जागृत होती है जबकि सम्भ्रान्त मध्यवर्गीय एग्लो इडियन परिवार (ईसाई) से सम्बन्धित है फिर उसके रगो-रगो मे देश-प्रेम की भावना उजागर होती है ऊँचे बास काग्रेस के तिरगे के नीचे ऊषा

---

ने भारत छोडो सग्राम मे योगदान के लिए आह्वन किया ऊषा के बाद भोजपूरी मे बिरजू की ललकार। जवानो के ऊँचे समवेत स्वर मे 'सरफरोशी की तमन्ना की गजल।[१] इस प्रकार राजनीतिक भूमिका मे ऊषा का चरित्र विशेष रूप से निखर आया है। वह स्वतत्रता सग्राम की एक जीती-जागती प्रेरणा के रूप मे सामने आती है।

ऊषा के व्यक्तित्व मे स्वतत्रता की मॉग है। अपने स्वतत्र अस्तित्व के लिए ऊषा जितनी तेजी से घर-परिवार माता-पिता धर्म-जाति समाज का विरोध करके पति का चुनाव करती है। "ऊषा ने दोनो बॉहे पति के गले मे डाल उसका सिर अपने सीने पर दबा लिया ऑखे पोछी। स्वप्न के भूत को मन से निकाल दो। मैं तुम्हारी हूँ, तुम मेरे हो। मन से सदेह निकाल दो। तुम्हारे लिये सब कुछ न्योछावर कर सकती हूँ।[२] इसके बावजूद भी परी द्वारा ऊषा के स्वतत्र व्यक्तित्व पर आक्षेप एव बन्धन लगाए जाते हैं तो उतनी ही तेजी से वह पति विवाह सस्था को तोडने के लिये तत्पर हो जाती है। ऊषा का नरेन्द्र से मेलजोल उनके दाम्पत्य जीवन मे दरार ला देता है। अमर कहता है "तुम माया की तरह पति और मित्र दोनो चाहती हो।[3] अमर के निवेदन पर ऊषा के सामने जब पुन एक बार चुनाव का प्रश्न आता है तो वह दृढ निश्चय से कहती है इट इज नाट यू इसी तरह मानसिक तनाव मे ऊषा घर छोड जाती है और अन्तर्द्वन्द्व मे छटपटाता अमर दुर्घटनाग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। तदुपरान्त ऊषा पुन परिवार और बच्चे से जुडती है। अपने स्वतत्र व्यक्तित्व के लिए वह समाज मे द्वन्द्वरत रही है।

पति विवाह एव परिवार सस्था की परम्परागत मान्यताओ को विच्छिन्न कर वह अपना व्यक्तित्व राष्ट्र के प्रति अर्पित कर देती है।

---

**१ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ स ४५७**
**२ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ स ३७६**
**३ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ सं ४१०**

इस प्रकार लेखक ने ऊषा को अनेक रूपो मे उभारा है और हर रूप एक महत आदर्श को लेकर प्रत्यक्ष हुआ है। श्री विवेकीराय के शब्दो मे-

परम्परा और प्रगति के छाया प्रकाश मे ऊषा यशपाल की एक अनूठी सृष्टिपालक है। वह नारी के बन्धन और मुक्ति की दारुण व्यथा-कथा है। समाज धर्म और परम्पराओ से परे उसमे शुद्ध मानवीय स्तर का राष्ट्रीय नारी व्यक्तित्व है। उसमे विप्लवकारिणी युवा आग की ध्वसोन्मुखता है तो सृजनशील नारी का अपार वात्सल्य भी है। राष्ट्र को देखते वह क्रान्तिकारिणी है समाज के लिए विद्रोही सहयोगियो के लिए प्रेरकशक्ति पति के लिए पहेली और पुत्र के लिए शुद्ध माता है।

उपन्यास मे ऊषा का चरित्र विकासशील है अपनी सघर्षशील जीवन यात्रा मे वह नारी की सम्पूर्ण तेजस्विता के साथ निरन्तर बढती जाती है और वह उपन्यास के अन्त मे कहती है कि निरर्थक मान्यताओ और सस्कारो को स्वीकार नही कर रही हूँ परन्तु समाज को एक झटके से नहीं बदल दे सकती क्रान्ति लोगो को तोडना नही मोडना है।[१]

अन्य नारी पात्रो में माया घोष चित्रा और गौरी है जिसके माध्यम से लेखक ने नारी की किसी न किसी समस्या को उबारा है।

---

१ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ स ५७६

# माया घोष

माया घोष के माध्यम से प्रेम और विवाह की समस्या को उठाया गया है। माया घोष रूढिवादी सस्कारो एव सकीर्णताओ से मुक्त एव स्वछन्द प्रकति एव आधुनिक विचारो की नारी है। परम्परागत सामाजिक मान्यताओ एव आदर्शो की उसे कोई चिन्ता नही और न ही पुरुष के एकाधिकार मे ही रहना उसे स्वीकार है। पति के होते हुए भी वह पाठक से अपने प्रेम सम्बन्ध को पूरी घनिष्ठता के साथ बनाये रखती है यहॉ तक कि पाठक के समक्ष अपने आपको समर्पित कर देने मे उसे कोई हिचक नही क्योकि इसे वह अपनी व्यक्तिगत सन्तोष और इच्छा की पूर्ति समझती है।

इस प्रकार माया घोष का चरित्र सम्पूर्ण उपन्यास मे सामाजिक नैतिक परम्पराओ के आदर्शो पर प्रहार करने वाला एक विद्रोही और स्वछन्द नारी का चरित्र है।

# चित्रा

चित्रा के चरित्र में सहिष्णुता का अभाव और परम्परा के विचारो को प्रेम सम्बन्ध ी दृष्टिकोण को लेकर सम्पूर्ण उपन्यास मे सम्पुष्टि तब किया गया है। चित्रा का पति तेज नरायण टिक्कु एक दूसरी महिला सलूजा से प्रेम सम्बन्ध बनाये हुए है। माया घोष के प्रेम को सम्बन्ध मे उसका पति घोष जिस प्रकार की सहिष्णुता का परिचय देता है उस प्रकार की सहिष्णुता का चित्रा के चरित्र मे अभाव है। यही कारण है कि वह अपने पति के प्रेम सम्बन्ध की सहन नहीं कर पाती और उसका जीवन कटुता एव घुटन से भर जाता है।

---

# गौरी

गौरी रूढिवादी सस्कारिक और धर्मभीरू नारी के रूप मे चित्रित की गयी है उसमे शिक्षा के अभाव मे रुढियो एव सस्कारो से मुक्त होने की हिम्मत तक एकत्र नही कर पायी और विधवा रूपी अपनी जीवन को पूरी निष्ठा के साथ निभाते हुए ही उसे अपना एक निष्ठ धर्म मानती है पुनर्विवाह की विरोधी है पुरानी मान्यताओ परम्पराओ एव रुढिवादिताओ को अपने नारी जीवन मे समवेत करती है।

मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास मे गौरी का चरित्र मानवीय समस्याओ जीवन की नैसर्गिक उमगो आवश्यकताओ और सस्कारो के छन्दो के बीच उलझी हुई दिखायी पडता है।

❐

# चौथा अध्याय

# यशपाल के उपन्यासो मे स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सम्बन्ध

मानव जीवन मे स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है जो एक दूसरे के बिना अधूरा है। स्त्री-पुरुष की घनिष्ठता उतनी ही प्राचीन है जितना कि मानव जीवन। स्त्री समाज की उत्पत्ति का स्त्रोत है परन्तु इसके साथ ही वह कई तरह से शारीरिक रूप मे पुरुष से कमजोर भी है।

यशपाल ने अपने उपन्यासो मे जिस समस्या को ज्वलत और गम्भीर रूप मे देखा वह स्त्री-पुरुष सम्बन्ध तथा नारी पराधीनता से सम्बन्धित है। 'स्त्री-पुरुष सम्बन्धो मे यशपाल के उपन्यास नारी शोषण करने वाली प्रवृत्तियो का विरोधकर उसे सामाजिक सकीर्णता से इतर एक ऐसे स्थल पर प्रतिष्ठित करते हैं जहॉ यौन-सम्बन्ध भौतिक आवश्यकता से भिन्न नहीं है तथा उनमे पूर्ण स्वतत्रता एव आत्म निर्णय की प्रवृत्ति का समावेश है।[१]

यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है और मार्क्सवाद के अनुसार 'स्त्री पुरुष के सम्बन्ध को पुरुष की सम्पत्ति और धर्म के भय से जकड देने के पक्ष मे नहीं। वहॉ स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को स्त्री-पुरुष की प्राकतिक आवश्यकता और कर्त्तव्य का सम्बन्ध मानता है। इसके लिए वह दोनो मे से किसी का एक दूसरे का दास बन जाना आवश्यक नहीं समझता इसके साथ ही वह स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध मे उच्छ्रृखलता भी उचित नहीं समझता। किसी स्त्री या पुरुष का दूसरो के शारीरिक भोग के लिए अपने शरीर को किराये पर देना वह अपराध समझता है।

---

१ स्वातत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में मानव मूल्य और उपलब्धियाँ डॉ भगीरथ बड़ोले पृ ५५-५६

जीविका के लिए समाजवादी समाज मे अपनी योग्यता के अनुसार सभी को साधन प्राप्त होगे इसलिए जीविकोपार्जन के लिए उस समाज मे स्त्री को व्यभिचार से जीविका कमाने की आवश्यकता न होगी। जो लोग पूँजीवादी समाज के सस्कारो के कारण ऐसा करेगे वे अपराधी समझे जायेगे।[१]

स्त्री-पुरुष और विवाह के सम्बन्ध मे मार्क्सवाद समाज के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विचार से पूर्ण स्वतत्रता देता है। परन्तु उच्श्रृखलता और गडबड या योग को पेशा बना लेने और इसके साथ अपनी वासना के लिए दूसरे व्यक्तियो और समाज की जीवन व्यवस्था मे अडचन डालने को वह भयकर अपराध समझता है।

उपरोक्त मत से स्पष्ट है कि मार्क्स वैश्यावृत्ति को प्रोत्साहन नही देता वह नारी को वेश्या बना देने के पक्ष मे भी नही क्योकि भोग को पेशा बना लेने को वह भयकर अपराध मानते हैं।

लेनिन भी स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध को भूख-प्यास नींद की तरह आवश्यक मानता है और इसमें मनुष्य को पूर्ण स्वतत्रता होनी चाहिए। किन्तु साथ ही लेनिन यह भी कहता है कि प्यास लगने पर शहर की गन्दी नाली' मे मुँह डालकर पानी पीना उचित नही है। गन्दी नाली' का आशय वेश्यावृत्ति से है जिसे लेनिन के भयकर अपराध मानते हैं और ऐसा करने वाले को अपराधी।[२]

फ्रायड ने भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो की घनिष्ठता उतनी ही प्राचीन मानी है जितना कि मानव जीवन। आदिम काल से नर-नारी परस्पर आकर्षित होते रहे इसके साथ ही दाम्पत्य सम्बन्धो की समस्या और व्यवस्था पर विचार किया जा रहा

---

१ मार्क्सवाद यशपाल। पृ स ८५

२ मार्क्सवादी लेनिनवादी सिद्धान्त के मूल तत्व प्रगति प्रकाशन पीपुल्स पब्लिशिग हाउस प्राईवेट लि ५ ई झासी रोड नई दिल्ली--पृ स २६०–६१

है। मनोविश्लेषणवादियो ने मनोविक्षिप्तता का मूल कारण ही नर-नारी सम्बन्धो की आसम्बद्धता माना है। डॉ फ्रायड का विचार है कि नारी मे पुरुषो की अपेक्षा अधिक आत्मप्रेम होता है। उनमे सास्कतिक कार्यो को करने के प्रति उत्साह कम होता है उनके उदात्तीकरण मे वे असमर्थ रहती है। वह परिवार मे लैंगिक जीवन से सम्बन्धित हितो का प्रतिनिधित्व करती है। सभ्यता के विकास का उत्तरदायित्व पुरुषो पर ही होता है। वह नारी की अधिकार सीमा से बाहर होता है। इसमे अनेक कठिनाइयॉ उत्पन्न होती है तथा नैसर्गिक प्रवृत्तियो के उदान्तीकरण की नितान्त आवश्यकता होती है। जिसे कार्यान्वित करने मे नारियॉ असमर्थ होती हैं और पुरुषो के प्रयास द्वारा उसे सम्भव बना दिया जाता है सभ्यता के विकास का कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है और इसीलिए पुरुष उसे सम्पादित करता है क्योकि उसमे प्रखर चेतना शक्ति होती है और सारे महत्त्वपूर्ण कार्य वहीं करता है नारियॉ उसे नहीं कर सकती है। अत सभ्यता के विकास मे पुरुषो की अपेक्षा अपने को अपेक्षणीय पाकर उसके प्रति उसमे ईर्ष्या और द्वेष की भावना व्युत्पन्न हो जाती है। [१]

स्पष्ट है कि फ्रायड स्त्री को शारीरिक एव मानसिक स्तर से कमजोर बताकर उसे पुरुषो के आधीन बता रहे हैं और विवाह को ही एक मात्र कार्य मानते है। यशपाल के उपन्यासो मे मार्क्सवाद फ्रायड और लेनिन के विचारो का मिला-जुला स्वरूप हमे प्राप्त होता है। वास्तविकता यह है कि प्रगतिवादी होते हुए भी वह यथार्थ से विमुख नहीं है। यशपाल अच्छी तरह जानते हैं कि भारतवर्ष मे स्त्रियो की यथेष्ट प्रगति हुई है। किन्तु आज भी वह पतिव्रता दासी होने का मोह औ गौरव नहीं छोड सकी। अत उनके उपन्यासो मे अधिकाश स्त्रियॉ अपने लक्ष्य के लिए भटकती हैं। साथ ही यशपाल ने स्त्री मुक्ति और स्त्री–पुरुष समानता को मानसिक स्तर पर

---

**१ हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण बिन्दु अग्रवाल। पृ स १८०**

नही उठाया बल्कि राजनैतिक सामाजिक परिवर्तन मे अपेक्षित बुद्धि विवेक तर्क और विज्ञान के स्तर पर उठाया। यशपाल का विचार भी सम्भवनीय परिवर्तन का सकेत करने का है। इसलिए कि इस समस्या से यशपाल व्यथित है। मनुष्य की यह वृत्ति उसे वासना से क्लेषित करती रहे। इसका क्या कोई उपाय मनुष्य नहीं कर सकता। [१]

स्त्री-पुरुष मानसिक स्तर पर सहयोग और विज्ञान की सहायता से शारीरिक सहयोग के परिणामो से सरक्षण के स्तरो पर यशपाल सम्बन्ध को स्वीकार करते हैं। जिसे समाज बौद्धिक स्तर पर लाख स्वीकार करे परन्तु आचरण के स्तर पर स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए कि नैतिकता का प्रभाव कार्यरत रहता है। यशपाल बुद्धिनिष्ठा और वैज्ञानिकता को नैतिकता से तरजीह देते हैं उसी तरह क्रान्ति कार्य के क्षेत्र मे थी।

स्त्री का समाज मे स्थान स्त्री-पुरुष सम्बन्ध स्त्री शिक्षा प्रेम विषयक दृष्टिकोण आदि विषयो पर यशपाल का मत आरम्भ से अत तक एक जैसा है। वे सामान्य रूप से तर्क और दलीले उपस्थित करते है। व्यक्ति स्वाधीनता बुद्धिनिष्ठा वैज्ञानिक निकर्ष और प्राप्त परिस्थितियो के सन्दर्भ मे यशपाल ने स्त्री सम्बन्धी विचारो को उपस्थित किया। [२]

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की समस्या व्यक्तिगत समस्या होने से इसमे बाह्य सघर्ष की अपेक्षा मानसिक सघर्ष अधिक महत्त्व का होता है। इसी कारण स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की समस्या दोहरी-दोमुखी हो जाती है। समाज के कानून की दृष्टि से और समाज की नैतिकता की दृष्टि से भी विशिष्ट होती है।

---

१ दादा कामरेड यशपाल। पृ स ७

२ यशपाल के उपन्यासों में सामयिक चेतना डॉ ह श्री साने पृ स १६१–६२ सरस्वती प्रकाशन १२८/१०६ जी किदवई नगर कानपुर–११

समाज व्यक्तियो और परिवारो का समूह है। समाज की व्यवस्था मे आने वाला कोई भी परिवर्तन व्यक्तियो और परिवारो के गठन पर प्रभाव डाले बिना नही रह सकता। परिवार-स्त्री पुरुष का सम्बन्ध समाज का केन्द्र है।[१]

# सामाजिकता के स्तर पर नर-नारी सम्बन्ध

सामाजिक जीवन मे नर-नारी दोनो की अहम् भूमिकाएँ हैं और जीवन के विकास मे दोनो का महत्त्व समान है। फिर प्रश्न यह उठता है कि समाज मे नारी इतनी पीडित विवश असहाय और अपमानित क्यो है ? हमारा समाज आज भी नारी को हेय दृष्टि से देखता आ रहा है। विवाहपूर्ण यही वो मातृत्व का बोझ उठाती है तो उसे ही अकेले क्यो दोष दिया जाता है क्या इसमे पुरुष वर्ग का कोई दोष नही ? वस्तुत हमारा समाज पुरुष शासित हैं और पुरुष वर्ग का स्वार्थ नारी को मात्र दासी के रूप मे ही देखना चाहता है। नारी शदियो से शोषित रही हैं अत आज भी पुरुष वर्ग इसी रूप मे देखना चाहता है पुरुष वर्ग हमेशा यही चाहता है कि स्त्री उसके पॉव की जूती है इसलिए उसे नारी स्वतत्रता और समानाधिकार उसे असहनीय है। पुरुष वर्ग भयभीत है कि यदि ये एकाधिकार समाज हो गये तो उसका प्रभुत्व समाप्त हो जायेगा। पुरुषो के एकाधिकार की भावना ही नारी की स्वतत्रता मे सबसे बडी बाधा है। "सबसे बडी समस्या यह है कि पुरुष कभी भी स्त्री के दृष्टिकोण से समस्या को नहीं देखता। जिसका कारण उसका अहम् होता है वह अपना अधिकार स्त्री पर रखना चाहता है और स्त्री की सबसे बडी मुसीबत यह है कि उसे सतान पैदा करनी है। इसलिए पुरुष-जमीन के टुकडे की तरह उस पर मिल्कियत जमाने के लिए व्याकुल रहता है।[२]

---

१ मार्क्सवाद–यशपाल पृ स ७८–७६ विप्लव कार्यालय लखनऊ पाँचवाँ सस्करण १६७१

२ दादा कामरेड यशपाल। पृ स २२

नारी की इच्छाओ तथा उसके आत्मसम्मान को कुचलने वाले पुरुष वर्ग के अहम भाव को यशपाल एक सामाजिक अपराध मानते हैं इसलिए वे नारी की स्वतत्रता के पूर्ण समर्थक रहे हैं। उनका मानना है कि "स्त्री को किसी न किसी की बनकर रहना ही है तो उसकी स्वतत्रता का अर्थ ही क्या हुआ ?[1] समाजवाद मे झूठी नैतिकता को न मानकर यशपाल ने नारी की सामाजिक एव आर्थिक समानता को महत्त्व दिया। इसके लिए यह आवश्यक भी नहीं कि नारी एक पुरुष से बधकर रहे। जब स्त्री को एक आदमी से बध जाना है और सामाजिक अवस्थाओ के अनुसार उसके अधीन रहना है उस पर निर्भर करना है उस सम्बन्ध को चाहे जो नाम दिया जाय वह है स्त्री की गुलामी ही।[2]

स्त्री-पुरुष सम्बन्धो मे यशपाल के उपन्यास नारी-शोषण करने वाली प्रवृत्तियो का विरोधकर उसे सामाजिक सकीर्णता निकालकर युगीन चेतना के अनुरूप एक स्वस्थ भावभूमि पर लाना चाहते हैं जहॉ स्त्रियो का अपना स्वतत्र व्यक्तित्व हो और पुरानी मान्यताएँ नयी आदर्शों पर प्रगति के विकास एक नयी बात अपने शरीर और मस्तिष्क मे अनुभव कर रहा था। एक बार क्रान्तिकारी जीवन ग्रहण करने के बाद स्त्री को उसने अपने मार्ग से परे की वस्तु समझा था। इधर अनेक बार शैल के समीप आने पर भी उसे युवती न समझ केवल पार्टी का सहायक सदस्य ही समझा था जो केवल रूप–वेष मे उसके दूसरे साथियो से भिन्न था। परन्तु आज बार–बार उसका मन उसे सचेत कर रहा था। वह युवती है जीवन की मृदुलता सहृदयता और तुष्टी का स्त्रोत लिये। तू क्या उसे नहीं पहचानता उसका मन कह रहा था तू केवल क्राति की मशीन ही नहीं मनुष्य है पुरुष है।[3] और अपने इन्हीं विचारो के परिवर्तन से वह शैल के समीप ही नहीं आता बल्कि शारीरिक सम्बन्ध भी

---

१ दादा कामरेड यशपाल। पृ सं २१

२ दादा कामरेड यशपाल। पृ सं २२

३ दादा कामरेड – यशपाल पृ २३

स्थापित करता है और शैल भी अन्त मे अपने आपको पूर्ण रूप से हरीश को समर्पित कर देती है।

स्त्री–पुरुष सम्बन्ध का महत्त्वपूर्ण आयाम हार्दिकता को स्पर्श करता है वह पारस्परिक प्रेम का यशपाल सह–जीवन मे विचारो का मेल आवश्यक समझते है व्यक्ति की न्याय बुद्धि को समस्त सामाजिक व्यवधाओ की अपेक्षा की ओर अग्रसर रहे। इन्हीं विचारो की पुष्टि यशपाल ने बारह घण्टे की विधवा विनी द्वारा विधुर फेन्टम की ओर आकर्षित होना नयी मूल्य मर्यादा की सूचक है। लारेस इस सम्बन्ध को प्राकृतिक आवश्यकता मानता हुआ समर्थन देता है तथा कहता है हमारी औचित्य और अनौचित्य सम्बन्धी धारणाएँ ही नैतिकता होती है। परस्पर सहारा बनना ही प्रेम होता है उसे स्वार्थ या धोखा नहीं कहा जा सकता। जहाँ स्वार्थ और धोखा नही उसे अनैतिकता नहीं कह सकते।[१] इस प्रकार प्रेम सम्बन्धी नर-नारी के सम्बन्ध को परम्परागत स्वरूप से निकालकर नई-नैतिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित किया।

यशपाल ने विवाह को अनिवार्य नहीं माना लेकिन स्त्री-पुरुष को एक दूसरे का पूरक आवश्य माना। 'दादा कामरेड' मे यशपाल ने उपन्यास के नायक हरीश जो एक क्रान्तिकारी है उसकी मान्यता है कि क्रान्तिकारियो के लिए नारी परे की वस्तु है किन्तु जब वह शैल के सम्पर्क मे आता है तो उसे यह अनुभव होने लगता है कि नारी के अभाव मे पुरुष अपूर्ण है। नारी पुरुष के मार्ग मे बाधक ही नहीं साधक भी है और स्त्री-पुरुष बिना एक दूसरे के अधूरे हैं। लेखक ने अत्यन्त सुन्दर शब्दो मे इस प्रतिक्रिया को व्यक्त किया है। "हरीश एक नयी बात अपने शरीर और मस्तिष्क में अनुभव कर रहा था। एक बार क्रान्तिकारी जीवन ग्रहण करने के बाद

---

१ बारह घण्टे यशपाल। पृ स ११२

स्त्री को उसने अपने मार्ग से परे की वस्तु समझा था। इधर अनेक बार शैल के समीप आने पर भी उसे युवती न समझ केवल पार्टी का सहायक सदस्य ही समझा था जो केवल रूप-वेष मे उसके दूसरे साथियो से भिन्न था। परन्तु आज बार-बार उसका मन उसे सचेत कर रहा था वह युवती है जीवन की मृदुलता सहृदयता और तुष्टी का स्रोत लिए। तू क्या उसे नही पहचानता उसका मन कह रहा था तू केवल क्रान्ति की मशीन ही नही मनुष्य है पुरुष है। और अपने इन्ही विचारो के परिवर्तन से वह शैल के समीप ही नहीं आता बल्कि शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित करता है और शैल भी अन्त मे अपने आपको पूर्ण रूप से हरीश को समर्पित कर देती है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का महत्त्वपूर्ण आयाम हार्दिकता को स्पर्श करता है वह पारस्परिक प्रेम का। यशपाल सह-जीवन मे विचारो का मेल आवश्यक समझते हैं। व्यक्ति की न्याय बुद्धि को समस्त सामाजिक व्यवधाओ की अपेक्षा वे श्रेष्ठ समझते हैं। [१] परन्तु स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को स्थिर बनाने वाली सामाजिक अनुज्ञा हर एक सम्बन्ध को हितकारी नहीं समझती। इस स्थिति मे व्यक्तिगत और समाजगत मान्यताओ में खाई-निर्माण हाती है। सुखी जीवन के साधनो पर समाज के उच्च वर्गों और श्रेणियो के लोगो का अधिकार होता है जिनके स्वार्थ के अनुकूल विशिष्ट स्त्री-पुरुष सम्बन्ध न होने पर स्त्री और पुरुष दोनो के लिए जीवन-कष्टमय हो जाता है। इसी को लक्ष्य करके यशपाल समाज के कुचक्र की बात कहते हैं। मनोरमा के जीवन की यही दर्दनाक कहानी है और सोमा के जीवन की थी। सोमा का जीवन एक समस्या है सामाजिक समस्या का उदाहरण है मनुष्य के रूप की सोमा वैवाहिक जीवन की सार्थकता मे स्त्रीं जीवन की सफलता स्वीकार करती है।

---

१ मनुष्य के रूप यशपाल पृ सं २००

सोमा उन स्त्रियो का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने जीवन मे पुरुष का सरक्षक प्राप्त करना चाहती है और कहती है कि    औरत ने मजदूरी करके पेट भरा तो क्या जिन्दगी औरत तो घर सभालती ही भली लगती है।[1]

सोमा के इस कथन से आशय यही निकलता है कि औरत की शोभा घर है और पुरुष का दायित्व औरत का खर्च सम्भालना। सोमा के जीवन मे प्रेम मे एक निष्ठा का महत्त्व अनन्य रहा। परिस्थितियो के फेर मे फॅसकर पुरुष प्रवृत्ति की स्वार्थता से परिचित होने के बाद भी वह बार-बार नये-नये पुरुषो पर विश्वास करती चलती है। मात्र स्त्री होने के नाते जिन अत्याचारो का उसे सामना करना पडता है उन्हे भुलाकर जीवन को सुखमय बनाने की कामना लिए वह जीवित है।

स्त्री का क्वारापन और युवा विधवापन दोनो समाज मे निन्दा के विषय रहे हैं। मनोरमा (मनुष्य के रूप) का क्वारापन उसकी भाभियो को अखरता है और उस पर पर-पुरुष सम्बन्धी विभिन्न लाछन वे लगाती हैं। मनोरमा को वैवाहिक जीवन से तृप्ति और सतोष नही है  इससे अच्छा तो क्वारापन था फिर भी श्रीमती सुतलीवाला (मनुष्य के रूप) होने का वैज्ञानिक और सामाजिक पिजरा बाधे था। फिल्म उद्योग के साथ अवैध सम्बन्ध रखने के लिए मनोरमा को जाल मे फॅसाने की कोशिश भी सुतलीवाला करता है परन्तु भाग्य से मनोरमा मुक्ति पाती है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की स्थापना जितनी वैज्ञानिक और सामाजिक समाज वैज्ञानिक घटना है उतनी स्त्री-पुरुष सम्बन्ध विच्छेद थी। इसलिए मनोरमा को सुतलीवाला से अलग करने के लिए अदालत का आश्रय लिया जाता है और पार्टी कार्यकर्त्ता  कार्यकर्तीयो के आपसी सम्बन्धो को पार्टी परखती रहती है।

---

१ मनुष्य के रुप  यशपाल। पृ स  २००

मनोरमा सुतलीवाला को तलाक देने मे जल्दबाजी न करे। इस तरह की सलाह भूषण इसलिए देता है कि मै नही चाहता अखबारो मे मोटे अक्षरो मे खबर छपे कि कम्यूनिस्ट युवती द्वारा नपुसक पति की तलाश।[१]

इस तरह यशपाल ने सम्बन्ध विच्छेद के माध्यम से स्त्री–पुरुष के वैमन्वस्य को भी दर्शाया है। स्त्री मन के विपरीत उसे पति मिलने की बात भाग्यवाद के सहारे छोडकर उसी निर्दयता को न बर्दाश्त करना स्त्री स्वातत्र्य की पोषक है।

मार्क्सवादी विचार दर्शन के अनुसार यशपाल भाग्यवाद जैसी किसी शक्ति को नही मानते। उन्हे न तो ईश्वर की विधायक शक्ति मे विश्वास है और न ही वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि जीवन और जगत् का प्रत्येक कार्य उसी परम सत्ता के सकेत पर होता है। भाग्यवाद के सम्बन्ध मे उनका मत आदर्श के शब्दो मे इस प्रकार व्यक्त हुआ है। भाग्य का अर्थ है विवशता। भाग्य का अर्थ है असामर्थ्य। असामर्थ्य का अर्थ है प्रयत्न और चेष्टा न करना। प्रयत्न और चेष्टा जीवन का स्वभाव और गुण है जब तक जीवन है प्रयत्न और चेष्टा का रहना स्वाभाविक है असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है जीवन मे प्रयत्नशील हो जाना जीवन से उपराम हो जाना।[२] आशय यह कि भाग्य मे विश्वास करने वाला व्यक्ति प्रयत्नशील हो अपने और समाज को अदृश्य पर छोड देता है। लाहौर से आये हुए शरणार्थियो के स्वावलम्बी बनने के प्रयास को देखकर यशपाल ने भाग्य पर व्यग्य किया है-"वे भाग्य को अँगूठा दिखाकर हॅस रहे थे। भाग्य उन्हे कुचल नहीं सका वे चिन्ता करके थक गये थे अब उन्हे किसी बात की चिन्ता न थी।[३]

इस प्रकार उपन्यासकार यशपाल प्रत्यक्ष जीवन और जगत मे विश्वास करते हैं तथा किसी परलोक अथवा स्वर्ग की कल्पना रचमात्र नहीं करते। यशपाल जिस

१ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ स २१०

२ दिव्या यशपाल। पृ स १५३–१५४

३ झूठा–सच (देश का भविष्य) यशपाल। पृ सं १२२

चेतना को जगाना चाहते हैं वह भविष्यलक्ष्मी अधिक है वर्तमान सम्बद्ध कम है। परन्तु वह भूतगामी भी है। अभिप्राय यह है कि यशपाल अपने इतिहास बोध और ऐतिहासिक कल्पना के कारण वर्तमान की हर चीज को भूतकाल का नतीजा मानकर या भविष्य के लिए निरुपयोगी कहकर नकारते हैं।

# नर–नारी के पारस्परिक आकर्षण

नर-नारी के पारस्पर आकर्षण की मूल प्रेरणा सेक्स को मानते हुए भी यशपाल इस बात को मानने के लिए आवश्यक नहीं मानते कि स्त्री के सह-जीवन मे पुरुष का पूर्ण योगदान है। स्त्री का जन्म केवल पुरुषो की आधीनता के लिए ही हुआ है इस बात से यशपाल पूरी तरह से सहमत नहीं है। दिव्या उपन्यास की नायिका दिव्या सामाजिक बन्धनो को तोडकर नर्तकी बन जाती है और अत मे निश्चय करती है कि वैश्या ही स्वतत्र नारी है। यशपाल का विचार है कि नर-नारी दोनो ही वासना के कारण एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। वासना की प्रबलता केवल नारी मे ही नहीं होती। पुरुष में ही होती है उपन्यास क्यो फॅसे मे पुनैया नर-नारी की आकर्षण की व्याख्या करते हुए कहता है "सुनो नर-नारी मे परस्पर आकर्षण प्यार होता क्या है ? तुष्टी की चाह मे तुष्टी की सम्भावना और आशा से एक दूसरे की चाह उसके लिए प्रयत्न या कुछ और सुनो ! नारी को देखती है तुम्हारी ऑखे उसका स्वर सुनते हैं कान। तभी तो उसकी बातो से मन-मस्तिष्क रिझेगे अवसर होता तो उसके बोल सुनने से सामीप्य से उसके केशो या शरीरो के गन्ध और उसे छू सकने से रीझ बढेगी जो कुछ देखोगे सुनोगे सुघोगे या छुओगे सब उसका शरीर है। उसके शरीर के सम्पर्क मे आने वाली तुम्हारी ज्ञानेन्द्रियो की प्रक्रियाए भी शारीरिक है। शरीरो के मेल की इच्छा प्रेम है और

---

उनका मेल तुष्टी है। [१]

क्यो फॅसे उपन्यास मे यशपाल मुख्यत प्रेम और आकर्षण के सन्दर्भ मे स्त्री-पुरुष सम्बन्ध को लेकर स्थापित चेतना को अकित करते हैं तथा चेतना का स्वरूप कैसा होना चाहिए इसे भी बताते हैं। प्रेम और आकर्षण के सम्बन्ध मे यशपाल समस्त आयामो को उद्घाटित करते हैं-पहला प्रेम और आकर्षण के सम्बन्ध मे वैयक्तिकता बनाम समाजिकता दूसरा मार्क्सवादी समाज मे नारी बनाम पूॅजीवादी समाज मे नारी। तीसरा प्रेम और आकर्षण की सच्चाई उसके स्वत और स्वतत्र होने मे है। चौथा नारी की स्वाधीनता खासकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी। पॉचवॉ-प्रेम और आकर्षण के सम्बन्ध मे मानसिक शारीरिक मिलन या मात्र मानसिक या मात्र शारीरिक छठॉ नौकरी पेशा युवतियों की इस सन्दर्भ मे विवशताऍ। सातवॉ लडकियो के मन की सवेदनशीलता परम्परागत विवाह पद्धति लडकी दिखाना आदि। आठवॉ विवाहित स्त्री से अविवाहित पुरुष का स्नेह आदि विभिन्न विचार यशपाल ने नर-नारी के पारस्परिक सम्बन्ध मे रखे है।

कलाकार यशपाल की यही खूबी है कि वे ऐसे ही परिवेश और पात्रो को गढते हैं। अवैध-वैध नैतिक—अनैतिक सम्बन्धो के मामलो मे समाज मन जितनी रोचकता दिखाता है उतनी शायद अन्य किसी सम्बन्ध के बारे मे नहीं। अब नारी के प्रति उसका भाव उतना अमूर्त रोमाटिक कल्पना लोक की प्रेम प्रतिमा आराध्यदेवी के प्रति निष्काम स्मरण और समर्पण का नहीं रहा था ऐसे वातावरण और सगति के प्रभाव से उसका दृष्टिकोण व्यावहारिक मासल पारस्परिक मानसिक शारीरिक सामीप्य से तुष्टी की इच्छा का हो गया था। [२] अपने ही कार्यालय मे काम करने वाली बदरुन्निसा के सम्बन्ध मे उपन्यास के नायक भास्कर के मन मे उठने वाले

---

**१ क्यों फँसे यशपाल। पृ स ५६–६०**

**२ क्यों फँसे ? – यशपाल पृ स ४६**

ये विचार हैं।

यही बदरुन्निसा है कि अपने अधिकारियो के साथ सगति रखना उसकी विशेषता है तथा इस सम्बन्ध को वह निजी मामला मानती है। बदरुन्निसा पार्टी मेम्बर थी और पार्टी के किसी अधिकारी के साथ उसका सम्बन्ध था पार्टी मेम्बरर्स के अनुसार पार्टी पर उसकी उच्श्रृखलता से ऑच आती है परन्तु बदरुन्निसा है कि उसके अपने व्यक्तित्व का दमन सहाय नहीं था। मामला उसकी रुचि भावना और सतोष का था। यह रूढिगत असहिष्णुता है। प्रम या आकर्षण की सच्चाई उसके स्वत और स्वतत्र होने मे है।[१]

यहीं नर-नारी का परस्पर आकर्षण झूठा-सच शीलो और रतन के सम्बन्ध मे दिखलाई पडता है शीलो विवाह सुनिश्चित होने जाने के बाद भी रतन से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। "रतन शीलो को दोनो बाहो मे लिये था।[२] ये मात्र आकर्षण ही है जिसे स्त्री-पुरुष बीच दिखाकर यशपाल ने विवाह जैसी सामाजिक मान्यता को अस्वीकारा है। परस्पर आकर्षण से अगर सगति हो जाती है तो विवाह के बन्धन मे फॅसने की आवश्यकता न मानते हुए यशपाल एक प्रकार मुक्त सगति का समर्थन ही करना चाहते हैं।

क्यो फसे उपन्यास मे भास्कर की विवाह की इच्छा नहीं परन्तु नारी के प्रति नर के प्राकतिक झुकाव से भी वह मुक्त या विरक्त नही। "राजधानी मे सफल पत्रकारो की युवतियो के दर्शन या बातचीत की सगति के अवसर के लिए तरसना नहीं पडता चार-पॉच युवतियॉ है जो भास्कर के साथ उठने-बैठने बातचीत के अवसर की प्रतीक्षा करती हैं। पत्र के दफ्तर मे दो नव युवतियॉ है युवक-पत्रकारों को 'रेस्तारॉ या सिनेमा में सगति देने मे उदार।[३]

---

१ क्यों फसे ? यशपाल पृ स २२–२३
२ झूठा–सच वतन और देश। पृ सं १३
३ क्यों फंसे ? यशपाल पृ स ४८–४६

इस प्रकार नर-नारी के पारस्परिक आकर्षण को मानव जीवन मे व्याप्त प्रेम की प्राकतिक आवश्यकता को लेखक (यशपाल) ने स्वीकार किया हैं। प्राकतिक आकर्षण जन प्रेम मे यशपाल के पात्र तृप्ति आवश्यक मानते हैं प्रेम के प्राकतिक स्वरूप के सम्बन्ध मे लारेसे ने कहा है नर-मादा का आकर्षण प्राकतिक बात है मैं तो कहूँगा पशुओ का प्रेम अधिक निश्छल केवल प्रकति की पुकार का परिणाम होता है। किसी अन्य प्रलोभन का विचार उनके आकर्षण को प्रभावित नही करता।[१]

इसी तरह का विचार उपन्यास देशद्रोही मे डॉ खन्ना कहते हैं शरीर तो केवल साधन मात्र है उससे तो अच्छे बुरे सभी स्पर्श होते हैं।[२] उपन्यास दादा कामरेड मे शैलवाला भी अपने व्यक्तित्व और सतोष प्राप्ति के नाम पर ही एक के बाद दूसरे पुरुष के सम्पर्क मे अपने शरीर को प्राकतिक आकर्षण के रूप मे प्रयुक्त करती है। यशपाल प्रेम के आकर्षण को जीवन मे सहायक वस्तु के रूप मे स्वीकार करते हैं मनुष्य के रूप मे भूषण मनोरमा से कहता है प्रेम तो जीवन मे सहायक वस्तु है जीवन मे अडचन बनकर प्रेम चल नहीं सकता जब प्रेम नित्य जीवन मे असहाय स्थिति पैदा करने लगता है तो वह जीवन का बाधक होकर स्वय समाप्त हो जाता है। उसकी जगह घृणा पैदा हो जाती है।[३] और सब चीजो की तरह यशपाल जीवन मे प्रेम मे आकर्षण की गति को भी द्वन्द्वात्मक मानते हैं। उनका स्पष्ट मत है प्रेम जीवन की सफलता और सहायता के लिए है यदि प्रेम बिल्कुल छिछला या थिथला रहे तो वह असयत वासना मात्र बन जाता है और यदि जीवन मे प्रेम या आकर्षण का विवेक से सयम न हो तो वह जीवन के लिए घातक हो सकता है।[४]

---

१ बारह घण्टे ? यशपाल पृ स ६७
२ देशद्रोही – यशपाल पृ सं २०७–२०८
३ मनुष्य के रूप – यशपाल पृ स ८६–८७
४ मनुष्य के रूप – यशपाल स ८६

यशपाल जीवन मे रोमाश को स्वाभाविक मानते है उनकी नायक-नायिकाए इस आकर्षण से ही नर-नारी के प्रति आकर्षित होते हैं।

यशपाल नर-नारियो के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए आधुनिक परिस्थिति बोध से उत्पन्न चिन्तन की कसौटी लेकर आरम्भ करते है। परन्तु बीच-बीच मे ऐसे कथन देते हैं कि पाठक भ्रमित हो जाता है। प्रेम और आकर्षण की शारीरिक एव भौतिक स्तर पर व्याख्या का दावा करते समय भावात्मक या विश्वासमय कथन चितन की दुविधा उलझन और अस्पष्टता को ही बताते हैं। प्रेम के हमेशा के त्रिकोणात्मक सदर्भ को भी यहॉ ध्यान मे रखा जा सकता है परन्तु हर चीज का बाजार बनाने वालो को इसकी चिन्ता उतनी नहीं जितनी तात्कालिक उपयोगिता की है। जिससे मनुष्य का मानसिक जीवन नष्ट होकर मात्र कल-पूर्जे जैसा यात्रिक जीवन जीने के लिए वह बाध्य हो जाता। भगवान तो नर नारियो के जीवन को सार्थक और सफल बनाने के लिए प्रेम की शक्ति उत्पन्न कर देता है और प्रेम की शक्ति चरितार्थ होने के लिए अपनी आवश्यकता पूर्ति का यत्न करती रहती है।[१]

यशपाल ने प्राचीन मान्यताओ का खण्डन ही नही किया है अपितु नवीन मान्यताओ के अनुरूप अपने स्त्री पात्रो का निर्माण भी किया है। पार्टी कामरेड की गीता मनुष्य के रूप की सोमा प्रतिकूल परिस्थितियो को विजित करते हुए जीवन सघर्ष मे सफलता प्राप्त करती है। झूठा-सच मे कनक इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि "हम लोगो की रुचि और प्रकति एक दूसरे के अनुकूल नही है। लोक लाज के लिए जितना निभा सकती थी निभा दिया अब नहीं निभा सकती।[२] यशपाल की नारी मे अब इतना साहस आ गया है कि वह खुले आम पुरुष के अत्याचारो का विरोध कर सके और जीवन सघर्ष में अपने पैरो पर खडी हो सके। यशपाल ने

---

**१ बारह घटे – यशपाल पृ सं १२२**

**२ झूठा–सच (वतन और देश) यशपाल। स ५४८**

अत्याचारो के विरुद्ध विद्रोह न करने के लिए और अपनी दयनीय स्थिति के लिए नारी को भी कुछ हद तक उत्तरदायी ठहराया है। स्वय स्त्रियॉ ही इस सामाजिक व्यवस्था को जिसमे स्त्री की गुलामी और उसका पुरुष पर निर्भर रहना अनिवार्य है मजबूत बनाये रखने की चेष्ठा करती है। [१]

यशपाल स्त्री को समाज मे भोग्या नही अपितु सहकर्मिणी का स्थान देते हैं। समाजवादी समाज मे समाजवादी विचारधारा के अनुसार स्त्री को सम्पत्ति नहीं समझा जा सकता उसका दान नही किया जा सकता वह किसी भी प्रकार की सम्पत्ति नही स्वतत्र आत्मनिर्भर व्यक्ति है। [२] पुरुष को स्त्री का सम्मान करना चाहिए और उसे उचित स्थान देना चाहिए। स्त्री शोषण के कतिपय तरीको के रहते हुए यशपाल ने सिर्फ एक ही स्त्री-पुरुष सम्बन्ध तरीके को अपना लक्ष्य बनाया।

यशपाल समाज के विकास के लिए नारी की स्वतत्रता और सामाजिक समता को आवश्यक मानते हैं। परम्परागत सामाजिक नैतिकताये और रूढियॉ आज की परिस्थितियों मे विशेष महत्त्व नही रखती है और उनमे युगानुकूल परिवर्तन अनिवार्य है। [३]

स्त्री का उत्कर्ष स्त्री होने मे ही है यशपाल स्त्री को जैविक गुलामी से बाहर निकालना चाहते हैं। स्त्री यह मानकर चलना चाहती है कि कुछ शारीरिक भेदो को छोड दिया। जाय तो उसमे और पुरुष मे कोई फर्क नहीं है। आधुनिक स्त्री सबसे पहले अपने स्त्रीत्व को भूल जाना चाहती है। वह स्त्रीत्व से परे जाना चाहती है। [४]

यशपाल स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की चेतना के सन्दर्भ मे सामाजिक मान्यता का

---

१ चक्कर क्लब – यशपाल पृ स ८७

२ बात–बात में बात यशपाल। पृ स ६२

३ हिन्दी उपन्यास युग चेतना और पाठकीय सम्वेदना डॉ मुकुन्द द्विवेदी। पृ सं ६७

४ स्त्री–पुरुष कुछ पुनर्विचार – राजकिशोर पृ ६० वाणी प्रकाशन सस्करण– २०००

सम्बन्ध अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं और चाहते हैं व्यक्ति प्रयत्न करके समाज को प्रेरित कर अपने साथ चलने के लिए शक्ति प्रदान करने वाले हो। यशपाल ने अपने उपन्यासो मे विभिन्न जाति श्रेणी वर्ग और धर्म के पात्रो के माध्यम से स्त्री–पुरुष सम्बन्धो की व्याख्या की।

समाज मे सामाजिक मान्यताएँ क्रमश धीरे-धीरे प्रवर्तित होती है। मनुष्य के स्वभाव मे परिवर्तन की गति आचरण गति परिवर्तन की तुलना मे अधिक होती है। जब तक आचरण मे परिवर्तन नहीं होता तब तक वैचारिक प्रवृत्ति परिवर्तन के लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए। इस तरह के प्रयत्न यशपाल ने अपने कतियो के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं। स्त्री-पुरुष समानता नारी मुक्ति स्त्री-पुरुष सम्बन्धो मे आये परिवर्तन और कुल मिलाकर वर्तमान समाज मे स्त्री की स्थिति को देखते हुए इसे स्वीकार किया जा सकता है और यशपाल अपने प्रयत्न मे सफल हुए।

यशपाल ने मेरी तेरी उसकी बात' मे स्त्री-पुरुष सम्बन्ध की चेतना को पात्रो के व्यक्तिगत स्तर पर उतना नहीं उठाया जितना सामूहिक स्तर पर या सैद्धान्तिक स्तर पर यौवन के आरम्भिक उन्मेष मे विद्रोही विचारो का सम्मोहन। अल्हड उम्र का उन्मादक आकर्षण। सभी दुर्दम ऐसे वैचारिक विद्रोह की समस्या किस देश मे नहीं यह विज्ञान की शिक्षा को उच्श्रृखल दृष्टिकोण से देखने का परिणाम इसका उपाय दमन नही विश्वास परक तर्क की प्रेरणा ही कर सकती है।[१] कवि इस उन्मादक आकर्षक को धर्म और रूढियो के विचार से नियत्रित रखा जैसे सेठ इशा सम्बन्ध मे कभी तटस्थ विवेक ने जैसे उषा–पाठक सम्बन्ध मे। इस चेतना का सैद्धान्तिक आयाम इस कथन से स्पष्ट होता है। इशा की सगति से सेठ जी को विश्वास हो गया औलाद और गृहिणी को सम्भालने के लिए व्याहता औरत चाहिए

---

**१ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ ३०५**

पर मोहब्बत और दिलजमाई का हुनर घरेलू औरतो के बस का नही। [१] व्यक्ति स्तर पर अपने पात्रो के माध्यम से यशपाल ने स्त्री की दुर्दशा का काफी अकन किया - भारतीय नारी का अर्थ रूढिग्रस्त ब्राह्मण क्षत्रिय बनना कायस्थ विधवा। हिन्दू विधवा का केवल एक तक धर्म-निष्ठा मे रडापा निभाना विधवा के मृत्यु पति के साथ जल मरने के धर्म से इस देश का माथा ऊँचा। यहाँ पुरुषो की लम्पटता से देश का माथा झुकता नहीं। हिन्दू वह नही तो भारतीय नारी नही। सब सित्तो और मन्नी नही है कि मुटठी मे लेकर मिटटी के ढेले की तरह भीचकर फेक दे। [२]

रजा और गेती के प्रसग पर यशपाल ने रसैल की मैरेज एण्ड मारल्स' किताब का प्रसग देकर कहा है कि नर-नारी मे सम्यक परिचय के लिए विवाह से पूर्व काम सम्बन्ध हो। दम्पत्ति से असमजस्य की निरन्तर यातना से युक्त नैतिकता की अपेक्षा रसैल के सुझाव पर अपराध भावना के बिना सदाशय से विचार किया जाना चाहिए। [३]

मेरी तेरी उसकी बात' मे यशपाल में स्त्री पुरुष सम्बन्ध की चेतना के उन्हीं मापदण्डो का अकन किया है जिनका वे अपने पूर्ववर्त्ती उपन्यासो मे अकन कर चुके हैं। नर-नारी के प्रेम का दृश्य स्वरूप शारीरिक है तथापि उससे प्राप्ति तुष्टी मे मन-मस्तिष्क के सहयोग पर परस्पर आदर और स्थायित्व के बिना कोई रस नही। इसका प्रतिवाद क्यो फसे उपन्यास मे पुन्नैया के मुख से करते हुए यशपाल शारीरिक आवश्यकता के स्तर पर नर-नारी के आकर्षण को प्रेम के रूप मे ले जाते हैं। "उत्तराधिकारी या शादी का स्वप्न नहीं है तो आदर और स्थायित्व की बात बेकार है जो औरत कभी–कभार रुपये माग ले उसकी बिरादर उम्र भर निचोडती रहे उसक आदर अजीब समझ है। नर-नारी के रति सम्बन्ध मे स्थायित्व का अर्थ

---

१ मेरी तेरी उसकी बात यशपाल पृ २३
२ मेरी तेरी उसकी बात – यशपाल पृ स ६२६
३ मेरी तेरी उसकी बात यशपाल। पृ सं ४५५

है विवाह बन्धन या अन्यत्र इच्छापूर्ति के निषेध के नियम के अतिरिक्त और क्या है ? इस बन्धन या नियम का प्रयोजन है नारी और सतान की सुरक्षा। अब तक नारी सुरक्षा चाहती थी आर्थिक आवश्यकता और गर्भ की आशका से ऐसी स्थिति मे नारी को पूर्ण आरक्षण दिये बिना उससे इच्छापूर्ति अन्याय और अनैतिकता था। अब परिस्थितियॉ बदली हैं। अब नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं। [1]

नर-नारी सम्बन्ध विशेष सामाजिक नैतिक मान्यता नारी के पतिव्रत धर्म की होती है। उपन्यास अप्सरा के श्राप मे यशपाल ने इसी प्रसग को उठाया है उपन्यास के अत मे मेनका की उपस्थिति मे जो वार्तालाप प्रस्तुत किया है उसका व्यग्यार्थ ही महत्त्व का है। शकुन्तला नारी के जिस पतिव्रत धर्म का समर्थन करती है वह यशपाल को जरा भी मान्य नहीं है। फिर भी भारतवर्ष मे नारी के ही पतिव्रत धर्म की दुहाई कायम है। वह नारी के शरीर के धर्म की प्रेरणा भी अनुभव करेगी उसी से उसका नारी जीवन सार्थक होगा। देवताओ की कपा से वह अपने जीवन-धर्म को चरितार्थ करे। [2] दूसरी और प्रजापति कश्यप के मुर्ख से यशपाल ने यह कहलवाया है - आयुष्मान पति-पत्नी का सम्बन्ध तथा ततसम्बन्धी अधिकार स्वत्व से नहीं पारस्परिक प्रेम से तथा अनुरागजन्य अनुमति होते हैं। नर-नारी के प्रेम मे प्राकृतिक न्याय यही है। पति-अनुराग से रक्षा तथा आश्रय देकर अधिकार प्राप्त करता है स्वत्व से नही। निरादर निर्दयता तथा स्वत्व का अहकार प्रेम के नहीं विरोध के भाव हैं। ऐसे भाव और व्यवहार प्रेमभावना तथा पति-पत्नी सम्बन्ध को समाप्त कर देते हैं। पुरुष—पत्नी के प्रति निर्दयता से स्वत्व का व्यवहार करने पर प्रेमी और पति नहीं रहता बल्कि शत्रु और अपराधी बन जाता है। [3]

नारी-धर्म की प्रेरणा क्या है? शकुतला के अनुसार पतिव्रता नारी व्यक्ति अथवा

---

१ क्यों फसे – यशपाल पृ स ७४–७५

२ अप्सरा का श्राप – यशपाल स १२६

३ अप्सरा का श्राप – यशपाल पृ सं १२६

मानव नही पतिव्रता मात्र होती है।[१] शकुतला के लिए अप्सरा धर्म अर्थात आत्मनिर्भरता का धर्म मजूर नही है भारतवर्ष मे नारी इसी मान्यता पर चलती है कि पति ही सर्वस्व है यशपाल इस मान्यता का खण्डन करते हैं तभी मानो वह अप्सरा मेनका के द्वारा नारी जाति को श्राप देते हैं। परन्तु तब भी शकुन्तला का निश्चय है अपने व्रत और धर्म को निभाने का। भले उसके लिए आत्म हनन भी उसे क्यो न करना पडे। उपन्यास के अतिम वाक्य को पढकर भ्रम होता है कि यशपाल ने समस्या का समाधान न देकर सामाजिक कठोर यथार्थ का निर्वाह किया है परन्तु उपन्यास की नायिका का आत्महनन के लिए उद्यत है लेकिन धर्म का त्याग करने के लिए नही तब वही अधिक प्रभावशाली लगती और यशपाल का यह कहना कि व्रत तथा धर्म का प्रयोजन आत्मोत्थान कोई मतलब ही नही रखता निरर्थक हो जाता है। नारी समर्पण मे ही अपने जीवन की सार्थकता समझे तो यशपाल भी क्या कर सकते हैं परन्तु अपवादात्मक रूप से दिखायी देने वाले नारी पात्रो को जब यशपाल ही स्वय चित्रित करते हैं तब कोई क्या कर सकता है। परन्तु इसका परिणाम शायद यशपाल को बाधित नहीं है। परम्परा ही सदा श्रेय नहीं होती। यशपाल की कतिपय मान्यताओ मे से एक यह भी है। बुद्धिवाद या बुद्धिनिष्ठा का बढता प्रभाव ही इस विचारधारा का कारण है। आर्थिक समस्याए सामाजिक सुधार स्त्री-पुरुष समानता राजनीतिक स्वाधीनता आन्दोलन व्यक्ति स्वातत्र्य कानून का राज्य आदि कई बातो के साथ नई बाते जुडी थीं। नीति या अनीति पाप-पुण्य श्लील-अश्लील आदि जिन्हे जीवन मे विशेष महत्त्व प्राप्त था अत परम्परा ही सदा श्रेय नहीं होती। कहकर बुद्धि विकासवाद उत्क्रान्तिवाद परिस्थिति के सहारे प्राचीन मूल्यों के विरुद्ध साहित्य के स्तर पर आन्दोलन उपस्थित किया गया। परिवर्तित

---

**१ अप्सरा का श्राप – यशपाल। पृ सं १२८**

चुनौतियो की परिस्थिति मे सामाजिक मान्यताओ का श्रेय परम्परागत सस्कारो के प्रभाव को हटाकर वैयक्तिक स्तर पर सामाजिक समस्या का नवीन दृष्टिकोण से विवेचना करना ही यशपाल का मुख्य उद्देश्य माना जा सकता है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध मे यशपाल के सामने सबसे बडी कठिनाई मानसिक दुराचार की अपेक्षा शारीरिक दुराचार को मुख्य मानने पर है। मानसिक दुराचार स्वीकार और शारीरिक दुराचार अस्वीकार क्यो ? इसी बात पर यशपाल को आपत्ति है। शारीरिक सम्बन्धो के कारण जो सामाजिक अथवा समाज मे अस्वीकति परिणाम होते है उनका निराकरण यशपाल विज्ञान की सहायता से करना चाहते है इसी समस्या पर यशपाल जनता को अधिक उदार और विज्ञान निष्ठ बनाने का पाठ सिखाते रहे। समाज को अमान्य स्त्री–पुरुष सम्बन्ध के कारण स्त्री और पुरुष दोनो को बेइज्जत होना पडता है इसी बेइज्जती को सहने की साहस व्यक्ति मे नही होता विज्ञान की सहायता के बावजूद व्यक्ति निर्भय नहीं बनता। स्त्री-पुरुष की सगति के लिए परस्पर स्वीकृति मात्र काफी नहीं मानसिकता मे भी परिवर्तन आवश्यक है।

निष्कर्षत हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द के समक्ष मे नारी के प्रेम को आदर्शवाद के कवच से ढाक दिया गया था त्याग समर्पण और सेवा के विशेषणो से विभूषित कर नारी के स्वाभाविक प्रेम यथार्थ स्वतत्र से दूर रखने की चेष्टा की गयी थी। परन्तु प्रेमचन्दोत्तर काल मे नारी के प्रेम पर कोई ऐसा आरोप नहीं मिलता। अब यह माना जाने लगा कि स्त्री और पुरुष की वृत्तियॉ समान है। दोनो ही अपनी प्रेरणा से एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं नारी भी अपनी काम-भावनाओ से प्रेरित होकर उसी प्रकार आकर्षित होती है जिस प्रकार पुरुष नर और नारी का

चिरन्तर सम्बन्ध है सदैव से स्त्री-पुरुष को प्यार करती है और पुरुष-स्त्री को देखकर रीझता है। [1] डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी भी नर-नारी के सम्बन्ध मे कहते हैं कि पुरुष नि सग है स्त्री आसक्त पुरुष निद्वन्द्व है स्त्री द्वन्द्वोमुखी पुरुष मुक्त है स्त्रीबद्ध। [2] इस आशय का खण्डन यशपाल जी ने भी अपने उपन्यासो मे किया है। जबकि यशपाल ने स्त्री-पुरुष दोनो की स्वतत्र विचारो को आमुख बनाकर परिवर्तनशीलता एव गतिशीलता का रूप दिया है।

आधुनिकतावादी समाज मे स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध के बिना नवो-मेष समाज का निर्माण नहीं हो सकता। 'स्त्री और पुरुष एक ही डाल के दो फूल हैं दोनो के स्वतत्र प्रस्फूटन से न केवल उनकी अपनी शोभा बढती है। बल्कि डाल की भी। [3]

---

१ चढती धूप – रामचन्द्र शुक्ल अचल पृ स १६०

२ वाणभटट की आत्मकथा डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी। पृ स ११०

३ स्त्री–पुरुष कुछ पुनर्विचार राज किशोर पृ ४६

# पाँचवाँ अध्याय

# यशपाल का व्यक्तित्व और कृतित्व –

**जीवन यात्रा** –यशपाल प्रेमचन्दोत्तर कथा साहित्य के एक अत्यन्त समर्थ रचनाकार हैं एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप मे उन्होने प्रेमचन्द परम्परा मे ऐसा बहुत कुछ मौलिक विचार जोडा जिससे उनकी प्रगतिशील भावशैली का पता लगता है। युग के सामाजिक यथार्थ को मार्क्सवादी दृष्टि से प्रस्तुत करने वालो मे उनका स्थान अप्रतिम है। यशपाल के जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह रहा है कि सघर्षि एव अभावो के बावजूद उन्होने पलायनवादी भावना का परिचय न देकर दृढ–आस्था का परिचय दिया। कालान्तर मे उन्होंने सक्रिय राजनीति के क्षेत्र मे भी प्रवेश किया और आतकवादी क्रातिकारी दल के सदस्य के रूप मे भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। यशपाल ने साहित्य को एक सामाजिक वस्तु स्वीकार किया । कलावादी दृष्किोण तथा व्यक्तिवादी साहित्य की कटु आलोचना करते हुए यशपाल ने कला जीवन के लिए सिद्धान्त का पोषण किया। इनके उपन्यासो मे जर्जर भारतीय नर–नारी समाज का जीवन मुखरित हो उठा है। कहानी साहित्य मे वस्तु तत्त्व उनमे निहित समस्याएँ उनकी विचारधारा एव उनके मर्म को अपने अध्ययन का मुख्य केन्द्र बिन्दु बनाया। "प्रगतिवादी कथाकार होने के नाते

शोषित मनुष्यता के प्रति गहरी आत्मीयता यूँ तो उनके समूचे कथा साहित्य मे विद्यमान है किन्तु उनकी कहानियो मे विशिष्ट रचनातत्र के कारण उनकी यह विशेषता अत्यन्त प्रभावशील और मार्मिक बनकर सामने आई है। जिसके माध्यम से मानव जीवन को इतनी समग्रता से देखने परखने तथा विश्लेषित करने वाला कहानीकार प्रेमचन्द के पश्चात हिन्दी मे यदि कोई है तो यशपाल ही हैं।[१]

यशपाल का पुश्तैनी निवास स्थान कागडे का मनोहर पहाडी इलाका था। यशपाल के जन्म से पूर्व इनके माता–पिता अपने कुछ सम्बन्धियो के साथ पजाब आये यहिं फिरोजपुर छावनी मे ३ दिसम्बर १६०३ को यशपाल का जन्म हुआ। यशपाल के पिता हीरालाल ब्याज का धन्धा करते है वे एक स्वतत्र प्रकति के व्यक्ति थे जिसके कारण वे स्थायी व्यापार या बॅधीं–बधॉई नौकरी करना उन्हे रुचिकर नही था। यशपाल की माता श्रीमती प्रेमदेवी एक सम्भ्रात परिवार की महिला थी। पिता की स्वतत्र प्रवृत्ति के कारण जब परिवार बिगडता हुआ दिखायी दिया तब मॉ ने यशपाल के भरण–पोषण का भार अपने ऊपर ले लिया।

इसके लिए यशपाल की मॉ को उनके कठिनाइयों का सामना करना पडा परन्तु इन कठिनाइयो से तनिक भी विचलित न होकर सर्वप्रथम उन्होंने अक्षर ज्ञान की प्राप्ति की और जीविकोपार्जन हेतु फिरोजपुर छावनी के एक

[१] यशपाल का कथा साहित्य–प्रकाश चन्द्र मिश्र पृ स ६–१०

अनाथालय मे एक अध्यापिका का कार्य किया। श्रीमती प्रेमदेवी की आर्थिक स्थिति यद्यपि बहुत अच्छी नही थी फिर भी एक सामान्य स्तर का जीवन बिताने के साथ ही उन्होने यशपाल के जीवन को एक समुन्नत दिशा देने का हर सम्भव प्रयास किया। यशपाल की मॉ ने आर्य समाज का तेजस्वी प्रचारक बनाने की दृष्टि से शिक्षार्थ गुरुकुल कागडी डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर भेज दिया। गुरुकुल के राष्ट्रीय वातावरण मे बालक यशपाल के मन मे विदेशी शासन के प्रति विद्रोह की भावना भर गयी। लाहौर के नेशनल कालेज मे भर्ती हो जाने पर उनका परिचय भगत सिह और सुखदेव से हो गया वे भी क्रान्तिकारी आन्दोलन की ओर आकर्षित हुए। उनमे जहॉ एक ओर भारतीय सस्कृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ वहॉ दूसरी ओर अग्रेजी शासन के प्रति विकर्षण जिसका सक्रिय रूप आगे चलकर उनके क्रान्तिकारी जीवन मे स्पष्ट रूप से दिखायी पडा।

'सन् १९२१ ई० के बाद तो ये सशस्त्र क्रन्ति के आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने लगे। सन् १९२९ ई० मे वाइसराय की गाडी के नीचे बम रखने के लिए घटना स्थल पर उनको भी जाना पडा।

वहॉ घटना स्थल पर यशपाल गोली का शिकार होते बाल--बाल बच गये। तत्पश्चात चन्द्रशेखर आजाद के शहीद हो जाने पर वह हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातत्र के कमाडर नियुक्त हुए। इसी समय दिल्ली और लाहौर मे

---

षडयन्त्र के मुकदमे मे प्रधान अभियुक्तो मे से थे। १६३२ ई० मे पुलिस मुठभेड हो जाने पर इनको गिरफ्तार कर लिया गया। तत्पश्चात १६३८ ई० मे उत्तर प्रदेश मे जब काग्रेस मत्री मण्डल बना तो अन्य राजनीतिक बन्दियो के साथ उनको भी मुक्त कर दिया गया। जेल से मुक्त हो जाने पर विप्लव मासिक पत्रिका लखनऊ से निकाला। विपल्व पत्रिका की तैयारी मे यशपाल जी तन–मन से जुट गये। पत्रिका का मैटर तैयार किया विपल्व पत्रिका का पहला अक नवम्बर सन् १६३८ ई० मे प्रकाशित हो गया पत्रिका के अधिकतर लेख यशपाल जी ने अलग नामो से लिखे। चक्कर क्लब सेक्रेटरी चक्कर क्लब चाय की चुस्कियाॅ दुर्मुख नाम से तथा मार्क्सवाद की पाठशाला विचक्षण के नाम से लिखते थे।[१]

विप्लव प्रकाशन थोडे ही दिनो मे काफी प्रसिद्ध हो गया। विप्लव प्रकाशन की लोकप्रियता के बाद सन् १६४१ ई० मे उनको गिरफ्तार हो जाने पर विप्लव प्रकाशन बन्द हो गया। किन्तु अपनी विचारधारा के प्रचार मे उन्होने विप्लव का खासा अच्छा उपयोग किया विभिन्न जेलो मे पढने लिखने का जो अवकाश मिला था उसमे उन्होने देश–विदेश के बहुत से लेखको का मनोयोग पूर्ण अध्ययन किया। पिजडे की उडान' कहानी सग्रह व 'वो दुरियाॅ की कहानीयाॅ जेल मे लिखी गयीं विप्लव के प्रकाशन के साथ ही बागी पत्रिका का भी सम्पादक यशपाल ने किया। ये पत्रिका उर्दू सस्करण पर आधारित थी।

---

**१ लाहौर से लखनऊ तक–प्रकाशवतीपाल पृ ६७**

आर्थिक तगी के कारण विप्लव और बागी का प्रकाशन बन्द हो गया। विप्लव का प्रकाशन १६४७ मे फिर आरम्भ हुआ। इसी बीच काग्रेस सरकार ने यशपाल जी का लखनऊ रहना असम्भव कर दिया। शासन को यशपाल जी के विचारो एव गतिविधियो पर सदेह हो गया–यशपाल जी किसी भी पार्टी के बकायदा मेम्बर नही थे और प्रगतिशील विचारो से उनकी सहमति थी।[1]

यशपाल का विवाह ६ अगस्त १६३६ ई० मे बरेली जेल मे प्रकाशवती पाल से हुयी । यशपाल जी कोर्ट मे आने से इन्कार कर दिया क्योकि वह बेड हथकडी पहनकर जेल मे विवाह नहीं करना चाहते थे लेकिन फिर बाद मे डिप्टीकमिश्नर पैडले ने जेल के कार्यालय मे शादी करा दी। काफी कठिनाईयो व शारीरिक अस्वस्थता के कारण २ मार्च १६३८ ई० मे जेल से रिहा कर दिये गये। जेल से छुटते समय यशपाल जी को सरकारी खर्च पर गर्म सूट और नये जूते भी पहनाये गये। इसके बाद उन्होने अपनी जीवन यात्रा लखनऊ में ही व्यतीत की।

१६ जुलाई १६४१ मे पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम उन्होने किरण रखा और २७ जुलाई १६४४ मे पुत्र आनन्द का जन्म हुआ। इस तरह सम्पूर्ण जीवन साहित्य सृजन व प्रकाशन मे व्यतीत करते हुए २६ दिसम्बर १६७६ ई० की मनहूस घडी के अतिम समय मे यशपाल सदा सर्वदा के लिए इस ससार से विदा हो गये।

---

**१ लाहौर से लखनऊ तक – प्रकाशवती पाल पृ०–११७**

इस समय वह सिहावलोकन के चौथे भाग के कुल चालीस पृष्ठ ही लिख पाये थे। न जाने कितना कुछ अभी उन्हे कहना था। उनकी ख्याति हमारे स्मृति पटलपर प्राणो मे सदा–सदा के लिए बनी है वह अमिट रहेगी। यशपाल भले ही अतीत के सहगामी हो गये परन्तु भविष्य के प्रेरणा स्रोत के रूप मे वे सदैव स्मरण किए जाते हैं। यशपाल का निधन होने पर एक तूफान सा आ गया। देश विदेशो से सदेशो की बाढ आ गयी। शायद ही कोई दैनिक साप्ताहिक समाचार पत्र या मासिक पत्रिका हो जिसने हमारे दुख मे साथ न दिया हो। पूरा वर्ष दुखद सदेशो को सम्भालने और यशपाल की चर्चा मे व्यतीत हो गया। [१]

## साहित्य यात्रा –

साहित्य मूलत जीवन की व्याख्या है। साहित्य यात्रा के विकास मे यशपाल ने साहित्य जीवन की झाकी प्रस्तुत करते हुए जीवन के विविध पक्षो एव परिस्थितियो का उदघाटन और विवेचन अपने साहित्य सृजन के माध्यम से समाज मे प्रस्तुत किया है।

यशपाल आधुनिक युग के श्रेष्ठ लेखक हैं। उन पर कम्यूनिष्ट विचारधारा का प्रभाव दिखलायी पडता है। इन्होने साहित्य लेखन के क्षेत्र मे जैसे कहानी सग्रह–अभिशप्त वो दुनिया तर्क का तूफान पिजरे की उडान भस्मावृत्त

---

**१ लाहौर से लखनऊ तक–प्रकाशवती पाल पृ स १९९**

चिन्गारी फूलो का कुर्ता एव धर्मयुद्ध आदि है तथा हास्य निबन्धो जैसे चक्कर क्लब बात–बात मे बात न्याय का सघर्ष तथा जग का मुजरा एव कथात्मक निबन्धो मे देखा सोचा समझा बीबी जी कहती हैं एव मेरा चेहरा रोबीला है तथा सस्करणो मे सिहावलोकन भाग १ से भाग ३ तक लोहे की दीवार के दोनो ओर एव राहबीती आदि है। इन्होने अपनी साहित्य लेख मे सूक्ष्म से सूक्ष्म सवेदनाओ को बडी सजीवता और चित्रमयता से उभारा है।

साहित्य का उद्देश्य भावो का उदात्तीकरण होता है और यह तभी सम्भव है जब हम सद्‌गुणो का विकास करें इसके विपरीत कम्यूनिस्ट साहित्य भावो के उदात्तीकरण पर विश्वास नहीं करता है। परिणाम यह होता है कि साम्यवादी लेखक सही अर्थों मे यथार्थवादी लेखक नहीं हो पाते हैं। इस दृष्टि से विश्लेषण करने पर यशपाल जी मे दोहरा व्यक्तित्व दिखाई पडता है।

प्रकृति से तो वह कलाकार और यथार्थवदी हैं लेकिन व्यावहारिक रूप मे साम्यवादी है।[1] साम्यवाद का पहला सिद्धान्त यह है कि रूढिवादी विचारो को पूर्णतया नष्ट कर दो तभी नये विचार पनप सकेगे । गॉधीवाद और समाजवाद मे प्रमुख अन्तर यह था कि गॉधीवाद व्यक्ति को लेकर चला और जबकि समाजवाद समाज को लेकर चला। एक व्यक्ति प्रधान था तो दूसरा समाज प्रधान था।

---

**१ यशपाल का व्यक्तित्व एवं कतित्व–एक सर्वेक्षण–डॉ मधुजैन पृ ३६५**

यशपाल मे लेखन की प्रवृत्ति विद्यार्थी जीवन से ही थी पर उनके क्रान्तिकारी जीवन मे उन्हे अनुभव प्राप्त कराते हुए अनेकानेक सघर्षो से जूझने पर बल दिया। सामाजिक राजनैतिक एव सास्कतिक क्षेत्रो मे वे क्रान्तिकारी विचारो को लेकर साहित्य सृजन मे चले हैं। उनके लिए राजनीति समाज तथा साहित्य ये तीनो साधन है और एक ही लक्ष्य की पूर्ति मे सहायक है। साहित्य के माध्यम से वैज्ञानिक क्रान्ति की भूमिका तैयार करने का प्रयास किया है। विचारो से यशपाल काफी दूर मार्क्सवादी है। पर कट्टरता से मुक्त होने के कारण इससे उनकी साहित्यकता को प्राय क्षति नही पहुँची है। बल्कि लाभान्वित ही हुए हैं।

यशपाल जी पहले कहानीकार के रूप मे हिन्दी साहित्य जगत् मे आये अब तक उनकी लगभग सोलह कहानी सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यशपाल मुख्यत मध्यवर्गीय जीवन के कलाकार है और इस वर्ग से सम्बद्ध उनकी कहानियॉ बहुत ही मार्मिक बन पडी है। मध्यवर्ग की असगतियो कमजोरियो विरोधाभासो रूढियो आदि पर इतना प्रबल कराघात करने वाला कोई दूसरा कहानीकार नही है। दो विरोधी परिस्थितियो का वैसम्य प्रदर्शित कर व्यग की सर्जना उनकी प्रमुख विशेषता है। यर्थार्थ जीवन की नवीन प्रसगोद्रभावना द्वारा वे अपनी कहानियो को और भी प्रभावशाली बना देते है। मध्यवर्ग अपनी रूढियो मे जकडा हुआ कितना दयनीय ववश हो जाता है इसका अच्छा खासा

उदाहरण कहानी चार आने है। झूठी और कत्रिम प्रतिष्ठा के बोझ को ढोते–ढोते मध्यमवर्ग अपने दैन्य और विवशता मे उजागर हो उठा है। ग्वाही और सोमा का साहस मे समाज के ग्लीच नकाम और कत्रिमता की तस्वीरे खीची गयी है। इस वर्ग के वैषम्य मे निम्नवर्ग को रखकर उसके अहकार और अमानवीय व्यवहार को बहुत ही मार्मिक ढग से अभिव्यक्त करने मे यशपाल की लेखनी खूब कुशल है। एक राज मे मालकिन और नौकर की मनोवृत्तियो की विषमताओ को इस तरह उभारा गया है कि पाठक नौकर की सहानुभूति मे तिलमिला उठता है।

हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला मे सन् १६७८ ई० मे यशपाल के जन्म–दिवस पर हिमाचली लेखको द्वारा विचार गोष्ठी मे यशपाल के लेख पढे गये और शिमला पर ही सध्या समय रिज पर स्थित बडे हाल मे हिमाचल के कलाकारो द्वारा यशपाल कत नाटक नशे–नशे की बात मे गुडबाई दरदे दिल का मचन हुआ।[१] इस नाटक मे रिक्शे वाले के प्रति की गयी अमानुषिकता के मन मे गहरी कचोट पैदा करती है। इस प्रकार की विषमता को अकित करने के लिए यशपाल ने प्राय उच्च मध्यवर्गीय व्यक्तियो को सामने रखा है क्योकि सामान्य मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी उलझनो से ही खाली नही हो पाता।

---

१ लाहौर से लखनऊ तक–प्रकाशवती पाल। पृ स २००

और अत्यन्त मार्मिक तथा रोचक वर्णनो के कारण कहानी की श्रेणी मे भी गिनी जा सकती है। ये कहानियॉ या निबन्ध लेखक के व्यक्तित्व उसके राजनैतिक विचारो को समझाने और पहचानने मे बहुत सहायक सिद्ध होती है।

यशपाल की कहानियो विकासात्मक की दृष्टि से कहानी कला स्थान महत्त्वपूर्ण है जिन्होने भारतीय समाज जीवन का यथार्थ चित्र खीचकर अनगिनत समस्याओ रूढियो अन्यायो से समाज को मुक्त करने की कोशिश की है। यशपाल ने कुल १६ सग्रहो मे १०० कहानीयॉ प्रकाशित की है। समय–समय पर प्रकाशित और असग्रहीत कहानियो को मिलाकर वे २२५ से अधिक होती है। यशपाल की प्रथम कहानी सग्रह १६३६ ई० मे पिजरे की उडान है। इनकी अनेक कहानियो का निर्माण जेल मे हुआ है।

यशपाल जी देश की राजनीतिक तथा प्रगतिशील गतिविधियो से सदा ही जुडे रहे। प्रगतिशील विचारो और कम्यूनिस्ट पार्टी के कई कार्यक्रमो मे उन्होने अपनी सहमति दी यशपाल साहित्य के प्रशसक बूढे जवान भारत के कोने–कोने से अपनी समस्याऍ लेकर आते थे। पत्रो के माध्यम से यशपाल जी उनकी समस्याओ का समाधान बताते और उत्तर देते।

---

## यशपाल उपन्यास के रूप मे —

उपन्यास एक ऐसा कल्पित विशालकाय तथा गद्यमय अध्ययन है जिसमे एक ही कथानक के अन्तर्गत यथार्थ जीवन के निरूपण का प्रयास करने वाले पात्रो का चित्रण है।[१] वेब्स्टर की उपन्यास की इस परिभाषा मे उपन्यास का जो आधुनिक स्वरूप बताया है वह भले ही न हो फिर भी प्राचीन भारतीय साहित्य मे उपन्यास विधि का उद्भव हुआ ही नहीं ऐसी कोई बात नही है। प्राचीन कथा साहित्य हितोपदेश पचतत्र सरिप्तसागर बैताल पच विशति वासवदजा आदि मे उपन्यास के कई तत्व विद्यमान थे।

आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रादुर्भाव भारतेन्दु के आगमन से माना जाता है। बीसवी सदी की दूसरी शताब्दी मे उपन्यास–साहित्य मे प्रेमचन्द के पद चिन्हो ने उपन्यास क्षेत्र के अन्तर्गत नया मार्ग प्रशस्त किया। इतना ही नहीं उपन्यास के लिए इन्होने भारतीय जीवन और भारतीय परिवेश प्रदान किया। प्रेमचन्द ने किन्ही उपन्यास को स्वतत्र चेतना दी। सेवासदन कर्मभूमि गोदान गबन निर्मला प्रेमाश्रम कायाकल्प जैसे उपन्यासो की रचना कर प्रेम रोमास कल्पना मे फसे हिन्दी उपन्यास को ऊँचा उठाकर मानव जीवन का सच्चा प्रतिबिम्ब बना दिया। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का कथन द्रष्टव्य

---

**१ A fictitious prose tole if considerable length in which characters and coutions professing to represent those of real life one portroyed in plot-(Webster) New International Dictionery of English Language (1945) P 1670**

है कि प्रेमचन्द शताब्दियो से पद दलित अपमानित और उपेक्षित कषको की आवाज थे पर्दे मे कैद पद–पद लाक्षित और असहाय नारी जाति की महिमा के प्रवाहक थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार भाषा–भाव रहन–सहन आशा–आकाक्षा दुख–सुख और सूझ–बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक आपको नही मिल सकता। झोपडियो से लेकर महलो खुनचे वालो से लेकर बैको गॉव से लेकर धारा–सभाओ तक आपको इतने कौशलपूर्वक और प्रामाणिक भाव से कोई नही ले जा सकता।[1] प्रेमचन्द ने उपन्यास को सोद्देश्य बनाकर उसकी उपयोगितावादी दृष्टिकोण से निर्मित की।

जयशकर प्रसाद शिवपूजन सहाय चतुरसेन शास्त्री विश्वम्भर नाथ कौशिक बेचन शर्मा 'उग्र' प्रताप नारायण मिश्रा वृन्दावन लाल वर्मा इसी युग के जाने माने उपन्यासकार हैं जिनकी रचनाओ मे हिन्दी उपन्यास मे कथा–वस्तु पात्रो मे सन्तुलन का निर्माण किया कथा मे स्वाभाविकता लायी। इस युग की सबसे बडी उपलब्धि आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। फिर भी प्रेमचन्द उपन्यासयुग मे तटस्थता की कमी घटना बहुलता स्वानुभूति दर्शन का आभाव बौद्धिकता की कमी जैसी त्रुटियो को पूर्ण करने की क्षमता लेकर प्रेमचन्दोत्तर युग की उद्भावना हुयी।

---

**१ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी–हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ –डॉ. शिव कुमार शर्मा पृ स ६१६**

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास देश–काल सीमित दायरे से उपर उठे। परिणामस्वरूप प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास जिसे आधुनिक उपन्यास भी कहा जाता है मनोवैज्ञानिक फ्रायडियन राजनीतिक तथा मार्क्सवादी विचारधाराओ को लेकर प्रकट हुआ। हिन्दी उपन्यास की इस पृष्ठभूमि पर यशपाल मार्क्सवादी चिन्तन को लेकर उतरे। अपने स्वानुभूति दर्शन बौद्धिकता सामाजिकता प्रतिबद्धता के कारण युगीन उपन्यास धारा से हटकर उन्होने सर्वथा अलग विचारधारा का हिन्दी उपन्यास मे निर्माण किया ।[1] यशपाल ने जो मौलिकता के दर्शन कराये अपने आप मे स्वतत्र–चेतना कलाकार का परिचय दे जाते है। हिन्दी उपन्यासो मे यशपाल एक सशक्त एव मजबूत कडी के रूप मे स्वीकार किये जाते है। यशपाल ने अपने उपन्यास साहित्य मे विभिन्न पात्रो का निर्माण कर समाज का प्रतिरूप ही साकार किया है। इस सन्दर्भ मे यह कथन तो अपने आप मे प्रमाण बनकर उपस्थित है कि– यशपाल एक मात्र हिन्दी उपन्यासकार है जिन्होने आतकवादी–क्रन्तिकारी युग से स्वतात्र्य युगीन काल तक देश के राजनीतिक जीवन के वैचारिक मथन को औपन्यासिक यथार्थ का रूप दिया है।[2] स्वतत्रता आन्दोलन क्रान्तिकारी पार्टी की गतिविधियॉ साम्यवादी दल के आन्दोलन मजदूर सगठन काग्रेस दल का गठन एव विघटन ऐसी ही विषय है जो हिन्दी

१ यशपाल – एक समग्र मूल्याकन सुनील कुमार लवटे पृ स १५१

२ हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव–डॉ भारत भूषण अग्रवाल पृ स ३१८

उपन्यास के लिए सर्वथा नवीन थे। यशपाल ने युग को देखा था। स्वय वे इससे अनुभूत भी थे यही कारण है कि इन विषयो मे जो सजीवता प्राप्त हुयी वे देखते ही बनती है। यशपाल प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढा ले चलने वाले यथार्थवादी कलाकार है जिनके उपन्यासो मे आज का जर्जर भारतीय समाज और भारतीय जीवन मुखरित हो उठा है। किन्तु प्रेमचन्द के उपन्यासो मे जहॉ यथार्थ पर आदर्श की गहरी चादर है वहॉ यशपाल के उपन्यासो मे रोमान्स की गहरी धारा देखने को मिलती है। यशपाल के उपन्यास मे इनके कथानको के बीच प्रेम सम्बन्धो की भी जमकर चर्चा हुयी है। प्रेम सम्बन्धो के पीछे प्रमुख कारण यशपाल का यह था कि वे आर्थिक असामनता की खाई को पाटना चाहते थे।

हिन्दी उपन्यास को यशपाल की देन है कि उन्होने सामाजिक समस्याओ के आध्यात्मिक समाधान की जगह वास्तविक समाधान करने वाले मार्ग अपनाये और उपन्यास को विशुद्ध यथार्थ रूप दे दिया। प्रेमचन्द पश्चात् यशपाल ही दूसरे क्रान्तिकारी उपन्यासकार हैं। जिन्होंने सतीत्व जैसे प्राचीन सस्कारो से मुक्त करने की सामाजिक बुराईयो आदि के प्रति अपनी असहमति प्रकट की है। मार्क्सवादी उपन्यासकार होने के नाते यशपाल ने जीवन के हर पक्ष को नयी दृष्टि दी। यशपाल ने विशुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि कोण से विषमता शोषण

---

अत्याचार चारित्रिक पतन उत्थान आदि की व्याख्या की जो हिन्दी उपन्यास मे अपना विशेष स्थान रखती है। यशपाल ने गॉधीवाद को कालवाद्य मानकर उसके विरोध मे मार्क्सवाद की स्थापना की जो आधुनिक जीवन दर्शन से निश्चित रूप से हिन्दी उपन्यास को प्रभावित किया।

विकास क्रम की दृष्टि से दादा कामरेड यशपाल जी का सर्वप्रथम उपन्यास है यह उपन्यास मई सन् १६४१ मे प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास मे पहली बार राजनीतिक सिद्धान्तो तथा रोमास का सम्मिश्रण देखने को मिलता है। इस उपन्यास मे यशपाल ने हिसात्मक विप्लव तथा सशस्त्र डैकतियो का स्पष्ट विरोध किया। दादा और हरीश आदि की राजनीतिक और क्रान्तिकारी कहानी के साथ–साथ सामाजिक क्रान्तिकारी शैली की कहानी भी चलती है। इस उपन्यास के माध्यम से उन्होने स्त्री और पुरूष के पारस्परिक सम्बन्ध मे स्वतत्रता की माग प्रस्तुत की।

सन् १६४३ ई० मे दूसरा उपन्यास देशद्रोही प्रस्तुत हुआ। इसमे भी रोमास ही प्राधान्य है। इस कथानक का आधार है एक अभागा जीवन और उसकी दुख दर्द भरी कहानी जो विधि के हाथ की कठपुतली है। वह उसे कई नाच नचाता है वह उपर उठने का प्रयत्न करता है परन्तु अन्त मे धुर्त बदमाश देशद्रोही की उपाधियो से विभूषित किया जाता है जो उसे प्राणो का काल ग्रास लेती है। देशद्रोही" की आलोचना करते हुए डॉ० राम विलास शर्मा ने कहा है

कि– क्या देशद्रोही की कहानी जनयोद्धो के पेचीदा सवाल पर काफी रोशनी डालती है ? हम डॉ० साहब इस वर्ग–सघर्ष और जन–युद्ध पर आधारित आलोचना को सत्य नही मान सकते क्योकि साहित्य की सरिता को जन–युद्ध के खूटे से बाधने की चेष्टा करना हास्यास्पद ही तो है। लेकिन इसमे कोई सन्देह नही कि उनके उपन्यासो मे रोमास की गहरी धारा है। देश–द्रोही का नायक डॉ० खन्ना नरगिस से प्रेम करता है। उसे छोडकर चल देने पर फिर खातून से प्रेम व्यापार चलता है और तब गुलसन तथा चदा के प्रेमपास मे भी उसे फॅसना पडता है। उस पर भी सबसे बडी विशेषता तो यह है कि नजदीक आने पर वह भाग चलता है। किन्तु दूर होने पर प्रेम मे घुलता भी है। [1]

महा पडित राहुल सास्कत्यायन ने कहा था यशपाल की परतूलिका उतावलेपन के लिए नही स्थायी मूल्य की चीजो के लिए है इस उपन्यास को ससार की किसी भी उन्नत भाषा के उपन्यासो की श्रेणी मे तुलना के लिए रखा जा सकता है।

प्रसिद्ध इतिहास भगवत शरण उपाध्याय ने देशद्रोही को टाल्सटाय और शोलोखोव के उपन्यासो की तुलना मे रखा है। यह उपन्यास भारतीय स्वतत्रता प्रगतिशील यशपाल की अनवरत साधना है।

अभागे देशद्रोही का अन्त हुआ परन्तु यशपाल ने सन् १९४५ ई० मे अपनी अमूल्य निधि दिव्या हिन्दी साहित्य को प्रदान की। यह उपन्यास

---

१ विशाल भारतीय– लेख उपन्यास का यशपाल–रामनदंन सिंह पृ० सं० १२६

ऐतिहासिक कल्पना से परीपुष्ट एक ऐसी कलाकति है जो युग–युग तक एक दिव्य आलोक से पाठक तथा समाज ही ऑखो को परितृप्त करती रहेगी। दिव्या उपन्यास मे त्व्यिा त्रस्त नारी की करुण कथा है जो नारी के अन्तर्मन चेतना को उद्घाटित करती है। त्व्यिा इतिहास की नयी सम्भावनाओ का सकेत देने वाला उपन्यास हे। सन् १६४५ ई० मे दिव्या का प्रकाशन हुआ हिन्दी मे प्रगतिवादी आन्दोलन तेज हो रहा था। यशपाल दिव्या मे नारी की दलितावस्था को सामाजिक सरचना से जोडकर देखते है। सारी विपरीत परिस्थितियो मे भी वे उसकी प्रेमानुभूति को जड होने से बचाने पर बल देते है क्योकि वही सृष्टि की नियामिका शक्ति है जो सतति के रूप मे मनुष्य की अमरता का आश्वासन देती है।[१]

दिव्या इतिहास नही ऐतिहासिक कल्पना मात्र है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति का चित्र है। इतिहास के मन्थन से प्राप्त अनुभव के अनेक रत्नो मे सबसे प्रकाशमान तथ्य है–मनुष्य भोक्ता नही कर्त्ता है। मनुष्य से बडा है केवल अपना विश्वास और स्वय उसका ही रच हुआ उसका विधान। अपने विश्वास और विधान के सम्मुख ही मनुष्य विवशता अनुभव करता है और स्वय ही उसे बदल भी देता है। इसी सत्य को अपने चित्रमय अतीत की भूमि पर कल्पना से देखने का प्रयत्न दिव्या है।[२] प्रस्तुत

---

१ दिव्या का महत्व–मधुरेश पृ सं १३६–१३७
२ दिव्या यशपाल ( भूमिका से ) पृ० ६

कति बोद्धकालीन कथानक के आधार पर सर्वदेशीय और सर्वकालीन मान्यताओ तथा उनके कुप्रभाओ का दर्शन कराती है।

उपन्यास क्रम की दृष्टि से पार्टी कामरेड सन् १९४७ ई० का राजनैतिक उपन्यासो की अपेक्षा अधिक प्रोढ है तथा इस कोटि की अन्तिम रचना है। किस प्रकार एक कम्युनिष्ट लडकी गीता के सम्पर्क मे आकर पदम लाल भावरिया एक लखपति लफगा धीरे-धीरे अपनी दशा का सुधार करते हुए अन्त मे अपने का बलिदान कर देता है। यही उपन्यास का मूल कथ्य है। जो उपन्यास की कथा को रोचक एव प्रभावपूर्ण बनाती है।

मनुष्य के रूप १९४९ ई० राजनीतिक उग्रता बहस और विवाद से दूर रहकर लेखक ने यहाँ यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि एक ही मनुष्य परिस्थितियो से प्रताडित हो कितने ही रूप धारण करता है। एक ही समाज मे एक ही घर मे मनुष्य के अनेको रूप दृष्टिगत होते है। मनुष्य के रूप मे सोमा को प्रेम की धारा मे घुमाया गया है और अन्त मे एक सिने स्टार अभिनेत्री पहाडन के रूप समाज मे प्रस्तुत किया।

बालमुकुन्द गुप्त के शब्दो मे यशपाल के पहले उपन्यासो मे मूलाधार कल्पना का वैचित्र रहा है और विकास धरातल के इस छोर पर आकर

---

उपन्यासकार मनुष्य के रूप मे यह आधार प्रकट यथार्थ की अन्तरग परीक्षा बन गया है।

समस्त उपन्यास का वातावरण बौद्धिक है अत आदि से अन्त तक यह यथार्थवादी है। डा सत्यन्द्र का कथन मनुष्य की यथार्थ मनोवृत्ति का चित्राकन करने की यशपाल ने सजग चेष्टा की है। यह उपन्यास लेखक के इस विश्वास को सिद्ध करता है कि परिस्थितियो से विवश होकर मनुष्य के रूप बदल जाते है।

मनुष्य के रूप मे मनुष्य की हीनता और महानता के यथार्थ चित्रण एक विशद प्रयत्न किया है।

दिव्या के कथानक की भॉति अमिता' (१६५६ ई०) भी इतिहास नही ऐतिहासिक कल्पना है। अमिता की पृष्ठभूमि मे तत्कालीन विश्वराजनीति मे दिखायी पडने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाये है। अमिता मे हिसा पर अहिसा की विजय परिलक्षित होती है जिसमे अमिता की सरलता निश्छलता प्रेम से प्रभावित होकर अशोक जैसा पराक्रमी योद्धा भी नतमस्तक हो जाता है। अमिता मे यशपाल मार्क्सवादी सिद्धातो से हटकर विश्वशान्ति के उपायो पर चिन्तन करता दिखलायी पडता है। इस उपन्यास मे यशपाल ने बौद्व दर्शन को प्रतिपाद विषय बनाया है।

---

१ यशपाल अभिनन्दन ग्रथ पृ स ८५

झूठा–सच (१६५८ ई०–१६६० ई०) झूठा–सच के प्रकाशन मे सिद्ध कर दिया कि वहुत विशाल फलक पर जीवन के विविध रूपो आयामो समस्याओ जटिलताओ को अपने ढग से प्रभावशाली रूप मे प्रस्तुत कर सकते है इतनी विशालता इतनी वैविध्य इतने प्रश्न इतनी समस्याये हिन्दी के किसी एक उपन्यास मे नही उठायी गयी है। इसे अपने युग का औपन्यासिक महाकाव्य की सज्ञा दी जा सकती हे यद्यपि इसमे जितनी व्याप्ति है उतनी गहरायी नही है।

उपन्यास दो भागो वतन और देश और देश का भविष्य मे प्रकाशित हुआ है। प्रथम भाग मे देश के सामयिक और राजनैतिक वातावरण को यथा सम्भव ऐतिहासिक यथार्थ के रूप मे चित्रित करने का प्रयास किया गया है। यशपाल जेरी ऐतिहासिक दृष्टि हिन्दी उपन्यासकारो मे कम ही लोगो को प्राप्त है। इसलिए देश विभाजन की भूमिका पर इतनी बडी कृति की परिकल्पना यशपाल ही कर सकते है।

विभाजन के बाद देश के लाखो निरपराध आदमियो को मौत के घाट उतार दिया गया मानवीय यातनाओ के इतिहास मे यह विश्व की क्रूरतम घटनाओ मे से एक घटना मानी जायेगी। "वतन और देश मे जो वतन था वह देश नही रह गया और जो देश था वह वतन नही रह गया। वतन और देश के बीच विभाजक रेखा खीचने की जिम्मेदारी किसकी है ? अग्रेजो की या

स्वार्थपरता से घिरे देशभक्तो की ?[१] यशपाल ने ध्वस्त मूल्यो के साथ–साथ नये मूल्यो का भी चित्रण उपन्यास मे किया है।

दूसरे भाग देश का भविष्य मे दगे से बचे कुछ पात्रो द्वारा देश के भविष्य के सन्दर्भ मे बनते बिगडते

मूल्यो को उजागर किया गया है। इस तरह यह उपन्यास देश के एक दशक का प्रामाणिक दस्तावेज बन जाता है। एक प्रबुद्ध पाठक ने इस उपन्यास को हिन्दी साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि स्वीकार की है– झूठा–सच मे जैसे व्यापक चित्र फलक पर देश के इतिहास की अत्यन्त भीषण घटना का चित्र यशपाल ने उकेर है वह सचमुच उन्ही जैसे कलाकार का काम था उनका प्रयत्न विराट एव प्रशसनीय है। हिन्दी साहित्य मे इस ऐतिहासिक घटना की एकान्त उपेक्षा सचमुच एक खेद जनक तथ्य है। यशपाल ने इस घटना के दर्द को अपनी आत्मा मे अनुभव किया और अपनी कलात्मक सिद्दि के रूप मे उसे हमारी व्यथा बना दिया है। झूठा–सच प्रस्तुत दशक की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमे सन्देह नही।[२]

प्रसिद्व समीक्षक प्रकाश चन्द्र गुप्त की यह समीक्षा झूठा–सच यशपाल का अब तक लिखा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है और निश्चय ही हिन्दी की अमर

---

१ आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ बच्चन सिह पृ स ३७३–३७४
२ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण–महेन्द्र चतुर्वेदी पृ स १४६

कलाकतियो मे इसकी गणना होगी। आधुनिक भारतीय जीवन की अभूतपूर्व झाकी यह उपन्यास प्रस्तुत करता है। इसका कैनवस विशाल है और स्वर्गीय प्रेमचन्द की कति रगभूमि का स्मरण दिलाता है। जीवन की अटल गहराईयो मे कथाकार उतर सका है और इस प्रकार आज के भारतीय जीवन के व्यापक प्रसार और सश्लिष्ट सूक्ष्मता दोनो की ही झाकी हम इस उपन्यास मे पाते है। लगभग बारह सौ पचास पृष्ठो मे फैली यह कथा युग के प्रतिनिधि जीवन से हमे परिचय कराती है। [१]

सन १९६२ ई० मे प्रकाशित अपने लघु उपन्यास बारह घटे मे यशपाल ने मनुष्य के जीवन मे प्रेम को प्राकतिक अनिवार्य आवश्यकताओ के रूप मे स्वीकार किया है। बारह घटे भी उपन्यास की नायिका विनी को केवल सस्कारगत नैतिकता से ही नही आधुनिक परिस्थिति बोध से प्राप्ति चिन्तन से भी देखने का यत्न किया है। बारह घटे उपन्यास के फ्लेप पर छपे श्री मधुरेश का यह विचार भी द्रष्टव्य है। इस रचना से यशपाल के सकीर्ण मना आलोचको के अश्लीलता सम्बन्धी आरोपो का निराकरण ही नही होता बल्कि नर–नारी के पारस्परिक आकर्षण के सम्बन्ध मे नये परिस्थिति बोध के अनुसार आध्यात्मिक–नैतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण भी प्राप्त होता है।

---

**१ हिन्दी वार्षिकी १९६० पृ ८०।**

अप्सरा का श्राप सन् (१९६५ई०) मे भी नारी समस्या प्रधान है शकुन्तला और दुष्यन्त की कथा का सारतत्त्व यही है कि जिसके माध्यम से नारी के पतिव्रत धर्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास दुष्यन्त तथा शकुन्तला की परम्परा से चली आती कथा के प्रति हमारे मोह को तोड देती है। उपन्यास मे यही यशपाल का प्रतिपाद्य विषय है। क्योकि परम्परा से चले आते नारी शोषण को एक केन्द्रीय समस्या के रूप मे अपने पाठको के सम्मुख रखा है उपन्यास मे मेनका लेखक के दृष्टिकोण की प्रवक्ता है जिसके द्वारा यशपाल ने परम्परागत धार्मिक सामाजिक एव नैतिक मान्यताओ पर कई प्रहार किया है। स्वय लेखक के शब्दो मे पुरातन अध्ययन को आधुनिक दृष्टि से प्रस्तुत करने का अभिप्राय– पुरुष द्वारा युग–युग से निरकुश स्वार्थ के प्रमाद मे धर्म और व्यवस्था के नाम पर नारी के निर्दय शोषण के प्रति ग्लानि और आधुनिक नारी की व्यक्तित्व तथा आत्मनिर्भरता की भावना के प्रति सहानुभूति व्यक्त की जा सकी।[१]

मेनका व्यक्ति के सहज विकास की प्रतिगामी है और इसी नाते किसी भी प्रकार के शोषण तथा अदिवाद के खिलाफ अपनी आवाज उठाती है।

उपन्यास क्रम की दृष्टि से क्यो फॅसे उपन्यास मे लेखक ने उनमुक्त प्रेम का सर्मथन किया है। उपन्यास का नायक भास्कर की वासना उन्मुक्त प्रेम की ओर उन्मुख हो जाती है। एक चित्र प्रदर्शनी मे मोती नाम की प्राध्यापिका के

---

**१ अप्सरा का श्राप – यशपाल – भूमिका से**

सम्पर्क मे आता है वह उसके प्रति स्वाभाविक स्वच्छ आकर्षण की अनुभूति करता है। यही आकर्षण उसे वासना तृप्ति के लिए प्रेरित करता है। मोती और भास्कर दोनो समय निकालकर परस्पर मिलते हैं। मोती सद्गृहस्थ नारी है उसका पति एक अच्छा वकील है एक पुत्र की माँ है। उपन्यासकार यशपाल ने मोती की घटना क्रम द्वारा भारतीय परम्परागत दाम्पत्य जीवन पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित किया है। परम्परागत दाम्पत्य जीवन के मूल्य अब परिवर्तित हो रहे है मोती की घटना द्वारा यह तथ्य समाज के समक्ष लेखक ने उपस्थित किया है।[१]

क्यो फँसे उपन्यास मे हमारे नये समाज की पाश्चात्य की नई धारणाएँ भारतीय समाज मे भी अपनी अप्रत्यक्ष जडे जमा रही हैं क्यो फँसे उपन्यास इसका अच्छा उदाहरण है। इसका प्रत्येक पात्र नये विचारो व धारणाओ मे विश्वास रखता है। विवाहिता नारी भी उन्मुक्त प्रेम व अविवाहित युवक भी स्वतत्र प्रेम के पुजारी है।

अतिम उपन्यास की कडी मे यशपाल कत मेरी तेरी उसकी बात सन् १६४०–४२ की राजनीतिक गतिविधियो और भारत छोडो आन्दोलन का विस्फोटक है। इस उपन्यास मे समकालीन इतिहास के मानव अनुभवो का एक ऐसा दस्तावेज हैं। जिसमे सिर्फ व्यक्ति की अनुभूतियो और सवेदनाओ की लीला ही नहीं है बल्कि उन सब सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक ताकतो

---

१ हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य चित्रण–डॉ उर्मिला भटनागर पृ स १२५–२६

का भी खेल है जो इस मानवीय अनुभवो को रूपायित और निर्देशित कर रहा है। इसमे दो पीढियो से क्रान्ति की वेदना को अदम्य बनाते व्यैक्तिक सामाजिक पारिवारिक और साम्प्रदायिक विषमताओ का स्पष्टीकरण भी है।

यह उपन्यास मेरी आपकी सबकी जिन्दगी की किसी भी स्थिति त्रास्दी और घटनाओ परिवर्तनो उद्वेलनो की अन्तरक्रिया और मेरे आपके सबके आचरण चरित्र आपसी रिश्तो और व्यक्तित्व को कितना जोडती–तोडती है यहि मेरी–तेरी उसकी बात की पहचान है।[1]

लेखक ने समकालीन इतिहास के मानवीय प्रभाव की विविधता को अनुभव बिम्ब बनाकर वक्त की नैतिक और राजनीतिक जिन्दगी से जोडकर चरित्रो मे मूर्त किया है तथा रचनाशीलता मे तथ्यो और घटनाओ के वस्तुपरक यथार्थ को स्वीकार कर वास्तविकता के अपने सहज स्वाभाविक अर्थ को पूर्त करता है। पूरा उपन्यास आदि से अन्त तक रोचकतापूर्ण है जो आगामी पचास वर्षों तक भारतीय कथाकारो का मार्गदर्शक रहेगा।

यशपाल के उपन्यासो पर दृष्टि डालने के पश्चात् हम यह कह सकते है कि यशपाल मे कथा कहने की अद्‌भुत क्षमता है पर एक पूर्व निर्मित विचारधारा को रूपायित करने की उत्कट प्रेरणा उनके उपन्यासो की स्थितियो पात्रो

---

**१ लाहौर से लखनऊ तक–प्रकाशवती पाल पृ स १८४–१८५**

विकास और परिणतियो को भी पूर्वनिर्मित बना देती है। जीवन की समस्याओ को यशपाल ने अपने साहित्य मे रोचकता एव कलात्मक ढग से प्रस्तुत किया है। यशपाल ने बहुत से विदेशी साहित्यकारो की रचनाओ का अध्ययन अवश्य किया है जिसके कारण कही–कहीं उनके उपन्यासो पर विदेशी प्रभाव का भ्रम हो जाता है किन्तु उन पर विदेशी साहित्यकार की सचेतन छाप नही पडी है वह पूर्वत भारतीय कलाकार है।

यशपाल के उपन्यासो पर आकलन करने के पश्चात् हम कह सकते है कि हमारी नई पीढी आधुनिक युग के विचारो और मान्यताओ से प्रभावित होने के कारण जीवन मे क्रन्तिकारी परिवर्तन करना चाहती है जबकि पुरानी पीढी लीक पकडे चल रही है परिणामस्वरूप समायोजन की समस्या नई पीढी के लिए जटिलतम बनती जा रही है। ऐसी स्थिति मे उनके समक्ष दो ही रास्ते रह जाते हैं या तो वह अपनी मान्यताओ को तिलाजलि देकर परिस्थितियो से समझौता कर ले या समाज से विद्रोह करे। समस्या तब और भी जटिल हो जाती है जब मनुष्य टूटना स्वीकार कर लेता है किन्तु झुकना नहीं। और सगठित समाज से अकेले ही लोहा लेने को तैयार हो जाता है। यह सत्य है कि दृढता को विजय अवश्य मिलती है और प्राय ऐसे युवक–युवती अपने आदर्शों के लिए विवश कर देते हैं। उनका विद्रोह सफल भी होता है किन्तु

अपने इस विजय के लिए उन्हे बडी भारी कीमत चुकानी पडती है। वह एकाकी बनकर समाज की सवेदना और सहानुभूति और स्नेह खो देते है।

आधुनिक युग के समस्त बुद्धिजीवी सवेदनशील मनुष्य सामाजिक अस्वीकृती के शिकार हो चुके हैं उनकी बौद्धिकता उन्हे परम्परा के अन्धानुकरण से रोकती है और समाज के विरोध करने के लिए उत्प्रेरित करती है। किन्तु समाज उन्हे परम्परा से अलग रूप मे स्वीकार करने को प्रस्तुत नहीं है। फलस्वरूप ईमानदार बुद्विजीवी व्यक्ति निरतर घुटन और उत्पीडन से टूटते जा रहे है। यशपाल ने उपन्यासो मे आर्थिक शोषण के साथ–साथ बौद्धिक शोषण के प्रति रोष–क्षोभ छिपाये नही छिपता। मेरी तेरी उसकी बात उपन्यास के अन्त मे उषा को समाज के सम्मुख झुकते दिखाकर यह स्पष्ट कर दिया है कि जब तक समाज मे दृष्टिकोण नहीं परिवर्तित हो जाते तब तक मुट्ठीभर प्रगतिशील लोग दबने घुटने और सिसकने को विवश है। यशपाल जी इस बात पर कटिबद्ध है कि हम वर्तमान व्यवस्था को उसी परम्परा को मान्यता देगे जो मानव के विकास मे उसके फलने फूलने मे सहयोगी हो। इस प्रकार समाज को महत्त्व प्रदान करते हुए जैसा कि उनकी निम्न पक्तियो से स्पष्ट है कि–

व्यक्तिगत स्वतत्रता की बात करते समय यह बात प्राय भुला दी जाती है कि हमारी या आपकी व्यक्तिगत स्वतत्रता दूसरे के भावो और हित पर तो आघात

---

नही कर रही हमारा अस्तित्व समाज के बिना सम्भव नही तो हमारी व्यक्तिगत स्वतत्रा भी दूसरो के हित एव सतोष से अवश्य सीमित होगी।[1]

यशपाल का अपना विशिष्ट दर्शन होने के बावजूद भी पाठको ने बडे पैमाने पर स्वीकार किया है यह लेखक की सफलता ही है। एक सर्वेक्षण मे यह प्रश्न पूछने पर की आधुनिक जीवित कलाकारो मे चोटी के पाच कलाकार कौन है ? अधिकाश पाठको ने यशपाल को चोटी मे चुना।[2] लेखको ने पाठको का एक ऐसा वर्ग बनाया था जो समाज की ओर विशिष्ट वैज्ञानिक दृष्टि से देखता था। यशपाल ने पाठको को अपने उपन्यासो के जरिये ऐसी दृष्टि दी। जिससे पाठक परम्परावादी नैतिक बातो मे आधुनिकता की प्रस्थापना करने लगे। नारी की समानता मानने लगे। यौन सम्बन्धो का जो भय समाज पर छाया था यशपाल ने उससे मुक्ति दिलायी पाठक सामाजिक समता के लिए लालायित हो उठा। व्यक्तिवादी सकीर्णता को छोड पाठको मे सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना पैदा हुयी।

यशपाल का समूचा उपन्यास साहित्य उनके शिल्पगत उपलब्धियो को लेकर हिन्दी साहित्य मे प्रगट हुआ है। शिल्प विधि के स्वरूप यशपाल के उपन्यासो पर पाश्चात्य प्रभाव तथा यशपाल की देन पर विचारोपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि यशपाल की उपन्यास कला निरन्तर विकसित होती

---

**१ सिहावलोकन भाग एक–यशपाल पृ सं ७७**

**२ यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण–डॉ मधु जैन पृ ४२८**

गयी है। यशपाल के दर्शन के साथ शिल्प भी पाश्चात्य भी प्रभावित रहा है। यशपाल पाश्चात्य साहित्य के अध्येता थे परवर्ति कृतियो मे शिल्प और शैली का परिवर्तन इसी अध्ययन का फल है पाठको की रुचि परिष्करण मे यशपाल कला का योगदान उनके आधुनिक चिन्तन के प्रति आस्था से ही सम्भव हो सका है। यशपाल गम्भीर चिन्तक के साथ ही साथ उपन्यास कला के गहरे अध्येता भी थे। यशपाल के व्यक्तित्व एव कतित्व से प्रभावित साहित्य क्षेत्रो मे अनेक पुरस्कारो से अलकरित किया गया है। रीवॉ सरकार ने देव पुरस्कार (१६५५ई०) सोवियत लैन्ड सूचना विभाग ने सोवियत लैन्ड नेहरू पुरस्कार १४ नवम्बर सन् १६६६ ई० को प्रदान किया तथा भारत सरकार ने पद्मभूषण उपाद्धि २१ अप्रैल १६७० ई० को एव हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने मगला प्रसाद पारितोषिक (१६७१ ई०) उपाद्धि प्रदान कर यशपाल को सम्मानित किया।

# छठा अध्याय

# उपसहार

स्वतत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत दासता की बेडियो मे जकडा था नारी की स्थिति पुरुष से भी दयनीय एव शोचनीय थी। समाज भूल चुका था कि कभी दुर्गा लक्ष्मी अदिति ऊषा इला श्रद्धा जैसी देवियो मार्गी जैसी ब्रह्मवादिनी तथा आपाला लोपामुदा मैत्रेयी भारती जैसी सूक्तो की रचयिता विदुषी स्त्रियॉ भी इसी देश मे जननी थी स्त्रियो की वीरता साहसिकता कर्त्तव्य परायणता एव विद्धता सराहनीय थी।

भारतीय मनीषियो का यत्र नार्यस्ते पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता का उद्घोषक विस्मृतप्राय हो चुका था। इनका स्थान मनु के निम्नाकित श्लोक की भावना ने लिया था।

बाल्ये पितुवर्श तिष्ठे त्पाणि ग्राहस्य यौवने।
पुत्राणाम भर्तरिप्रेते न भजेत्स्त्री स्वतन्त्र ताम्
(मनुस्मृति टीकाकर–हरगोविन्द शास्त्री ३/५६ पृष्ठ ११३)

अर्थात

स्त्री बचपन मे पिता के जवानी मे पति के और पति के मर जाने पर बुढापे के पुत्र के वश मे रहे (उनके आज्ञा और सम्पत्ति के अनुसार कार्य करे स्वतत्र कभी न रहे।

हिन्दी उपन्यास साहित्य प्रारम्भ से ही नारी के प्रति अनुदार दृष्टिकोण लेकर चला। हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यासकारो ने जहॉ नारी के प्रतिष्ठित रूप की ओर दृष्टि डालने की चेष्टा भी की है वहॉ हिन्दू धर्म ग्रन्थो की निन्दात्मक उक्तियॉ उनके सामने आकर खडी हो जाती है।

आधुनिक उपन्यास साहित्य मे (प्रेमचन्दोत्तर कालीन) उपन्यासकारो ने नारी–मुक्ति और नारी स्वतत्रता की बात लेखन द्वारा किया है। अन्तत नारी मुक्ति की अवधारणा मूलत पुरुषवादी सोच पर ही आधारित है।

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है और समाज साहित्य का पुरोधा उससे बडी–बडी अपेक्षाए की जाती है आज कल की भागदौड की जिन्दगी मे बेतहासा भागता हॉफता रचनाकार किसी पीडा टीस कचोट एव सत्रास की अनुभूतियो से उद्वेलित हो उठता है कि उसकी ऑखो से ऑसू झरने लगते हैं तो कभी वह कलम उठाने के लिए बाध्य हो उठता है और साहित्यकार समाज और जीवन से जुडी रचनाओ को कालजयी रचना बना देता है। वास्तव मे साहित्य की सार्थकता सामाजिक कल्याण में है। साहित्य और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध मे लेखक अपने साहित्य मे ऐसे समाज का वर्णन करता है जैसा वह चाहता है या फिर उस समाज के रीति रिवाज मूल्य और मान्यताओ का वर्णन करता है जिसमे वह रहता है। यह पारस्परिक सम्बन्ध निर्विवाद है समाज के रग ही साहित्य मे वितीर्ण होते हैं अत समाज के बदलते हुए स्वरूप का प्रतिफलन साहित्य मे भी हो रहा है सामाजिक विषमताएँ असगतियॉ विकृतियॉ

नारी स्वतत्रता नारी मुक्ति एव नारी का भारतीय समाज के उच्च मध्य और निम्न की समस्याओ को साहित्यकारो (उपन्यासकारो) ने निकट से देखा और समझा है।

नारी और समाज का भी अन्योन्याक्रित सम्बन्ध रहा है नारी समाज की केन्द्रबिन्दु है पुरुष और नारी इसके दो ध्रुव है। समाज को नारी से प्रेम प्रेरणा सृष्टि और शक्ति मिलती है तो समाज से नारी को प्रतिष्ठा भी और अवमानना भी नारी के सामाजिक मूल्यो की परख समाज और साहित्य के पल–पल परिवर्तित परिवेशो से ही हो सकती है। नारी देवी है श्रद्धा की पात्री है। नारी के जीवन मूल्यो का निरुपण उपन्यासकारो देश काल और वातावरण के अनुरूप रखते हैं।

प्रेमचन्द युगीन उपन्यासो मे भी नारी के व्यक्तित्व का उत्तोरत्तर विकास होता दिखलायी देता है इनकी रचनाओ उपन्यासो मे नारी के दर्शन होते जो न देवी है न राक्षसी है बल्कि मानवीय है मानवीय मन की दुर्बलताओ से उसका हृदय भरा हुआ है। प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासो की नारी अपेक्षाकृत समझदार है। और उसे अपने अधिकार और कर्त्तव्यो का ज्ञान है तथा नारी सामाजिक जीवन के राजनैतिक सामाजिक सास्कृतिक एव आर्थिक परिस्थितियो से अपना सम्बन्ध जोडा है।

प्रेमचन्द जैसे जागरूक कलाकार की सहानुभुति पाकर भारतीय नारी का जीवन–स्पदित हो उठा किन्तु प्रेमचन्द के आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण नारी का रूप वस्तुत आदर्शवादी ही अधिक रहा।

---

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यासो के क्षेत्र मे अनेक नई–नई प्रवृत्तियो ने जन्म लिया। प्रगतिवादी उपन्यासकारो ने मार्क्सवादी कसौटी पर नारी के शरीर की नाप–जोख को ही विशेषतया अपना उद्देश्य बनाया। समाज भी अनेक समस्याओ की विषमताओ ने आज के उपन्यासकार के मार्ग को जैसे चारो और से अवरूद्ध कर लिया है। आज का हिन्दी उपन्यासकार नारी रूपी समस्या को जितना ही सुलझाने का प्रयास करता है। यह समस्या उतनी ही उलझती जाती है।

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी की प्रगतिशील परम्परा के सबसे बडे कथाकार और उपन्यासकार यशपाल है। जिन्होने सामाजिक विषमताओ असगतियो और विकतियो का पर्दाफाश किया है और उनके उपन्यासो मे जीवन के विविध पहलुओ पर प्रकाश दिखलायी देता है। कुछ समस्याओ पर उन्होने गम्भरता के साथ विचार किया है तो कुछ समस्याओ की ओर सकेत किया है। भारतीय समाज के अभिजात्य एव निम्नवर्गीय समस्याओ एव विषमताओ को यशपाल ने निकट से देखा और समझा है युगीन समाज की सभी समसयाओ जैसे सामाजिक राजनैतिक आर्थिक एव सास्कृतिक पर भी उन्होने अपने उपन्यासो मे दृष्टिगोचर किया गया।

युगीन समस्याओ के सन्दर्भ मे उन्होने पूँजीपतियो और मजदूरो के सघर्ष को प्रमुख रूप से चित्रित किया है। मार्क्स के अनुयायी होने के कारण मार्क्सवादी दर्शन की अभिव्यक्ति अनेक उपन्यासो मे स्थान–स्थान पर देखी जा सकती है। मार्क्सवादी विचार धारा का आधार मजदूर और मिल–मालिको

---

का सघर्ष है यशपाल अपने उपन्यासो मे वर्ग–सघर्ष का भी चित्राकन किया है दादा कामरेड पार्टी कामरेड देशद्रोही झूठासच आदि ऐसे उपन्यास है जिसमे मिल–मालिको और मजदूरो के सघर्ष तथा नारी स्वतत्रता का चित्रण प्रमुख रूप से हुआ है।

यशपाल की दृष्टि सदैव सामाजिक कल्याण की ओर रही है उनकी दृष्टि मे कला की उपयोगिता सामाजिक जीवन की पूर्णतया मे है। यशपाल कृत दादा कामरेड (१९४१ ई ) की भूमिका मे उन्होने कला के सम्बन्ध मे लिखा है

कला को कला के निर्लिप्त क्षेत्र मे ही सीमित न रख कर मैं उसे भाव या विचारो का वाहक बनाने की चेष्टा करता हूँ क्योकि जीवन मे मेरी साध केवल व्यक्तिगत जीवन यापन ही नही बल्कि सामाजिक जीवन की पूर्णतया है। इसलिए कला से सम्बन्ध जोडकर भी मैं कला को केवल व्यक्तिगत सतोष के लिए नही समझ सकता। कला का उद्देश्य है जीवन मे पूर्णतया का यत्न बजाय इसके कि कला का यत्न बहक कर हवा मे पैतरे बदल कर शान्त हो जाए क्या यह अधिक अच्छा नहीं कि वह समाज के लिए विकास और नवीन कला के लिए आधार प्रस्तुत करे।[१]

यशपाल का यह कथन उनके उपन्यासो मे पूर्णरूप से दिखलायी देता है। उनके उपन्यासो की नीव सामाजिक और राजनैतिक समस्याओ पर खडी दिखलायी पडती है। भारतीय समाज मे सामाजिक रूढियो और मान्यताओ के नाम पर नारियो का जो शोषण होता रहा है। यशपाल ने अपने उपन्यासो मे ऐसी समस्याओ को यथार्थ रूप मे प्रस्तुत करके एक ओर जहॉ उस समस्या से परिचित कराया है वहीं दूसरी ओर उस समस्या से पीडित नारी को मुक्ति

---

१ दादा कामरेड यशपाल। पृ स ४

दिलाने का भी प्रयास किया है। यशपाल नारी को समानाधिकार देने के समर्थक है उनके शब्दो मे आज हमारे समाज का आधा भाग यानि नारी समाज की कठिनाई और सघर्ष मे अपने आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक दायित्यो को समझे वे केवल कधो पर बोझ न बनी रहे।[१]

इसी तरह देश–द्रोही उपन्यास की राजदुलारी के माध्यम से लेखक ने विधवा समस्या को नवीन दृष्टि से प्रस्तुत किया है। डॉ खन्ना की मृत्यु के सूचना के पश्चात राजदुलारी बद्री बाबू से शादी कर लेती है। अचानक खन्ना जब लौटकर आता है तो अपनी पत्नी का पुनर्विवाह सुनकर उसे धक्का अवश्य लगता है। किन्तु वह उदार मानवीयता के कारण राजदुलारी को दोषी नही मानता ना ही उसके पास जाता है। राजदुलारी भी अब बद्रीबाबू के प्रति ही निष्ठावान है इसलिए बिमारी की स्थिति मे भी खन्ना को अपने घर मे एक रात के लिए भी शरण नहीं देती। खन्ना के प्रति राजदुलारी का समर्पण एक दिन वास्तविक था लेकिन आज वही समर्पण और प्रेम बद्री बाबू के प्रति है राजदुलारी के चरित्र के माध्यम से इस सत्य की स्थापना की है कि विधवा स्त्री को भी सम्मान से जीवित रहने का अधिकार हैं वास्तव में व्यक्ति समाज और परिस्थितियॉ परिवर्तनशील है। सामाजिक मूल्य भी बदलते रहते हैं। इसलिए विधवाओं के प्रति समाज का दृष्टिकोण भी बदलना चाहिए। यदि कोई विधवा स्त्री परिस्थितियो से समझौता करके नई जिन्दगी की शुरूआत करती है तो समाज को उसका स्वागत करना चाहिए। उसके समबन्ध को अनैतिक नही मानना चाहिए। नारी के विधवा अधिकार के लिए १९वीं शदी मे भारतीय सविधान मे प्रदत्त अधिनियम सन् (१८५६ ई) मे विधवा पुनर्विवाह

---

**१ दादा कामरेड यशपाल। पृ स १०१**

अधिनियम लागू किया गया। जिसमे विधवाओ के लिए अधिकार क्षेत्र दिया गया जो यशपाल के देशद्रोही मे राजदुलारी एव बारह घटे की विनी के माध्यम से विधवा समस्या को प्रस्तुत करके नवीन दृष्टिकोण या नारी जागरण की ओर अनुरेखित किया है।

यशपाल पति पत्नी के बीच से शासक–शासित और मालिक–गुलाम के सम्बन्ध को मिला देना चाहते है और यह तभी सम्भव है जब नारियॉ भी पुरुषो की भॉति अपने सार्वजनिक व्यक्तित्व का निर्माण करे। यशपाल की दृष्टि मे आर्थिक स्वतत्रता ही नारी को दासता से मुक्ति दिला सकती है। इसलिए उनके सभी नारी पात्र सामाजिक एव सास्कतिक मान्यताओ का विरोध करते हैं। वे चाहे दादा कामरेड' की शैल मनुष्य के रूप की मनोरमा देशद्रोही की राजदुलारी झूठा–सच की तारा एव कनक हो ये सभी नारी पात्र प्राचीन मान्यताओ को लाघती हुई स्वय आत्मनिर्भर बनकर समाज मे अपना महत्व स्थापित करती है। इसीलिए उनके उपन्यासो मे ये सभी नारी पात्र जीवन मे दोहरा सघर्ष करते हैं। एक और सभी नारियॉ सामाजिक परम्पराओ रूढियो और मान्यताओ के प्रति विद्रोह करती है तो दूसरी ओर पूँजीवादी शोषक व्यवस्था को समाप्त करने के लिए राजनीतिक क्षेत्र मे भी अहम् भूमिका निभाती है।

दादा कामरेड उपन्यास की नायिका शैलबाला स्वतत्र प्रकति की नारी है उसका दृष्टिकोण सामान्य नारियो से भिन्न है वह शादी का विरोध करती है। शैल का नारी स्वातत्र्य सामाजिक विचारो की अवहेलना के साथ ही सदाचार और व्यवहार की भी उपेक्षा करता है। प्रत्येक देश की अपनी सस्कृति और

---

गरिमा होती है। शैल का आचरण व्यवहार और मानसिकता भारतीय सस्कृति और सभ्यता से भिन्न है। शैल का स्वच्छन्द आचरण देखकर ऐसा। लगता है मानो वह पाश्चात्य सभ्यता और सस्कति मे जी रही है।

यशपाल का समाज के प्रति अपना अलग दृष्टिकोण है उन्होने समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया है वह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था चाहते हैं जिसमे किसी व्यक्ति या वर्ग का शोषण न होता हो। वह सभी सामाजिक रूढियो और सामाजिक सस्थाओ को समाप्त करना चाहते है। क्योकि ये सस्थाए और रूढिया मनुष्य को सहजरूप से नहीं जीने देती सामाजिक शोषण को समाप्त करने के लिए यशपाल विवाह सस्था को ही समाप्त कर देना चाहते हैं। दादा कामरेड (१६४१) से आरम्भ करके मेरी–तेरी उसकी बात १६७३ तक यशपाल ने ११ उपन्यास लिखा है। जिसमे सबसे बडा और महत्वाकाक्षी उपन्यास झूठा–सच है। यशपाल ने झूठा–सच मे अपने निकट के अतीत और वर्तमान को एक प्रमाणिक दस्तावेज के रूप मे प्रस्तुत किया है जो अभी पूर्णतया इतिहास बना नहीं है किन्तु इतिहास बनने की प्रक्रिया मे है। इस उपन्यास मे उस मानव त्रासदी को प्रमाणिक ढग से प्रस्तुत किया गया है जिसमें विभाजन की राजनीति को लेकर यह उपमहाद्वीप गुजरा है। इस त्रासदी को सबसे अधिक एक तो उस गरीब आदमी जयदेव पुरी ने झेला है जिसकी पहचान केवल सम्प्रदाय या धर्म के नाम पर की गयी है तथा दूसरी ओर उस नारी तारा ने झेला है जिसके सम्प्रदाय या धर्म मे ही नही अपितु उसके स्त्रित्व पर भी आक्रमण किया गया है। तारा बटी उर्मिला शीलो कनक आदि तमाम स्त्रियॉ इस त्रासदी को झेलती दिखायी देती है।

---

लेकिन सबसे सशक्त एव प्रभावशाली नारी पात्र के रूप मे तारा है उसकी तुलना मे कोई पुरुष पात्र तो ठहर ही नहीं सकता है कोई अन्य स्त्री पात्र भी ऐसी नही जो उसके टक्कर मे सामने सुना सके। तारा व कनक को माध्यम बना कर यशपाल ने आधुनिक धरातल मे उन नारियो का प्रतिनिधित्व कर स्थापित करना चाहा है जो आज के सन्दर्भ मे प्रत्येक नारी अपने ऊपर किसी का भी दबाव स्वीकार नही करती। तारा सोमनाथ से विवाह नहीं करना चाहती थी क्योकि वह उसके समकक्ष पढा–लिखा नही था यही से तारा के जीवन मे उतार–चढाव शुरू होने लगता है अन्त मे तारा आत्मनिर्भर बन कर स्वय अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है जो आज की युवतियॉ मन–पसन्द युवक न मिलने के कारण कर रही है इसी तरह करक जो आरम्भ मे पुरी के प्रेम मे सारी सामाजिक बन्धन तोडकर विवाह तो करती है लेकिन आपसी ताल–मेल न बैठने के कारण उससे सम्बनध–विच्छेद करके पुन गिल से विवाह करती है और गिल भी विवाहित व एक पुत्री की मॉ से विवाह करने मे कोई आपत्ति नहीं जताता। इस तरह कनक विवाह को बन्धन समझकर उसको बोझ के समान ढोती नहीं बल्कि उसको तोड कर अनय से विवाह करके अपने जीवन को फिर से तलाशती है। आज की नारियॉ भी विवाह तो कर रही है लेकिन आपसी ताल–मेल या अन्य कारणो से पति से विचार–विमर्श न बैठने के कारण उनसे तलाक भी ले रही है इस तरह झूठा–सच उपन्यास मे तारा और कनक के चरित्र मे माध्यम से उस नवीन विचारधारा का जो नया स्वरूप यशपाल ने प्रस्तुत किया वो आज की प्रासगिकता मे बिल्कुल खरा उतरता है और मेरा भी स्वय यह विचार है कि विवाह एक बन्धन नहीं बल्कि साथ–साथ

---

चलने का नाम है और जब साथी उचित न मिले तो जीवन रूपी पहिया लडखडा गिर ही जाती है इस लडखडाने के पहले ही यदि इसे बचाया जा सकता है तो बचा लिया जाये वरना जीवन पर नारी का जीवन घुटन सिसकन और बोझ के रूप मे दवा रहता है जिससे वह व्वय अपने दायित्व के प्रति भी अन्याय करती है। उपन्यास मे तारा और कनक के रूप मे यशपाल ने इन्ही विचारो की पुष्टि की है।

झूठा–सच मे बाह्य का विस्तार ही है अन्तर का द्वन्द्व नहीं है यह सच है तथा इसमे सूक्ष्मता और गहराई न हो विस्तार और वैविध अवश्य है। झूठा–सच की महाकाव्यात्मकता इसी विस्तार और वैविध्य मे निहित है। १६वीं शताब्दी मे नारी जागरण का प्रयास पुरुष द्वारा किया गया था किन्तु बीसवी शताब्दी मे नारी ने स्वय स्वतत्रता का आन्दोलन चला कर अपनी जागरूकता का परिचय दिया है। ऑल इण्डिया वीमेन कॉनफरेश (सन् १६२७ ई) इण्डिया होमरूल लीग (सन् १६२८ ई) इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ युनिवर्सिटी वीमेन्स (१६१७ ई) युनिवेस्टी वीमेनन्स एसोशियेशन कस्तूरबा गॉधी मेमोरियल ट्रेस्ट (१६४४ ई) सती प्रथा निरोधक अधिनियम (१६२६ ई) बाल विवाह प्रतिबन्ध शारदा एक्ट (१६२८ ई) हिन्दु मैरिज एक्ट (१६५५ ई) आदि जैसी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सस्थाएँ स्थापित की गयी इन्हीं सस्थाओ आन्दोलनो अधिनियमो के तहत स्वतन्त्र भारत की आधुनिक नारियो ने अपने चतुर्मुखीय विकास से सिद्ध कर दिया है कि सभी क्षेत्रो जैंसे कार्यालायो विद्यालयो प्रशासनिक सेवाओ राजकीय सस्थाओ निजी सस्थाओ एव खेलकूद मे पुरुष के समान और अन्य कई क्षेत्रो मे की जैसे–रक्षा विभागो चिकित्सा विभागो वायुसेना

विभागो आदि मे भी अधिक योग्यता और उत्तरदायित्व से कार्य कर रही है। जो अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय देखो मे प्रगति की ओर कदम अग्रसर कर रही है। वस्तुत यशपाल के उपन्यासो मे की नारिया भी आधुनिकता से कलेवर मे अपने आपको रगी दीख पडती है। यशपाल की दृष्टि मे नारी भावना पर उनका विचार है यशपाल जी के उपन्यासो मे नारी–पात्रो को अत्यन्त विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है उन्होने नारी के विविध रूपो दिखलाने के लिए उनमे सामाजिक परिवेश के भीतर ज्यो का त्यो चित्रित किया है भारतीय समाज मे नारी की दयनीय स्थिति पुरुष द्वारा उसका शोषण और उसके प्रति किये अत्याचारो को अपने उपन्यासो मे स्थान देने का मुख्य उद्देश्य उनका इन विकृतियो का अन्त करने की प्रेरणा देती है। यशपाल की सम्पूर्ण सहानुभूति नारी वर्ग के प्रति है इसीलिए उनके आदर्श नारी पात्र प्रगतिशील चेतना से युक्त है वह चाहे मेरी तेरी उसकी बात की ऊषा हो या दिव्या की दिव्या या दादा कामरेड की शैल सब इसी प्रगतिशील चेतना से अनुप्रेरित है। वह पुरुष के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर चलती है। युग की मॉगो के अनुसार वह अपने को केवल गृहलक्ष्मी ही नही वरन् समाज का एक महत्त्वपूर्ण अग भी समझती है।

यशपाल की मान्यता है कि समाजवादी समाज मे नारी की आत्म निर्भरता अत्यन्त आवश्यक है। समाज के पूर्ण विकास के लिए समाज के अर्द्ध भाग स्त्री का सहयोग अनिवार्य है। स्त्री की अधिक स्वतन्त्रता समाजवादी व्यवस्था का अनिवार्य अग है क्योकि वह समाजवाद की प्राप्ति और स्थापना मे सहायक होगीं। समाजवादी सस्कृति मे ही नारी का अपना अस्तित्व है वह आमुख की

---

ही न होकर स्वय की भी कुछ होती है। नारी के लिए वह समस्त रूढिबद्ध सस्कारो नैतिक धारणाओ और विश्वास के बन्धन शिथिल कर लेना चाहते हैं। वे नारी को न केवल आर्थिक रूप से ही वरन पूर्णरूप से स्वतन्त्र और आत्म निर्भर देखने के पक्षपाती है। वे कहते हैं कि नारी मे स्वय इतना साहस व सुबुद्धि होनी चाहिए कि वह उचित अनुचित का निर्णय कर सके। उसे प्रेम करने का भी अधिकार और स्वतत्रता भी होनी चाहिए।

यशपाल नारी को भोग और उपभोग की वस्तु नहीं बनाना चाहते। उसे समानाधिकार और समता दिखाकर समाज का एक महत्त्वपूर्ण अग बनाना चाहते हैं। स्वतत्रता और समानाधिकार के इस युग मे यशपाल नारी के आदर्श सतीरूप की कल्पना भी व्यर्थ समझते हैं। क्योकि क्योकि सती प्रथा को वे घोर अत्याचार एव भीषण अन्याय का प्रतीक मानते हैं। तीव्रतम प्रेम के लिए वे पुर्नविवाह का उन्मुक्त हृदय से समर्थन करते हैं। इस प्रकार यशपाल आधुनिक समाज व परिवेश के अनुकूल नारी को पूर्णरूप से स्वतत्र व आत्मनिर्भर देखना चाहते है। नारी भी मुनष्य है उसका भी व्यक्तित्व है उसकी भी आकाक्षाए है। उसे पूर्वरूप से पारिवारिक व सामाजिक बधनो मे बाधकर नही रखा जा सकता। इन सबसे आवश्यक वे नारी की आर्थिक आत्मनिर्भरता समझते हैं जो उसे पुरुष समाज के सम्मुख पगु बनाने की अपेक्षा आत्मविश्वास की भाषा और आत्मनिर्णय के अधिकार से पोषित्त करती है। यह है यशपाल के आदर्शनारी की भावना।

यशपाल के जीवन द्वन्द्व मूलत मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्रेणित है मार्क्सवाद का तात्पर्य समाज मे समता लाने की विधि अथवा वैज्ञानिक

---

विचारधारा है। जिसके अन्तर्गत वर्ग सघर्ष भौतिकवाद द्वन्द्वात्मक भौतिक साम्यवाद और वर्गविहीन समाज की स्थापना करता है। समाजवादी और साम्यवादी विशेषता सामाजिक व्यवस्था का अनुमोदन करते हैं वह चाहते हैं प्रत्येक को अपने विकास उन्नति एव जीवन यापन की उपायो की प्राप्ति के समान अवसर उपलब्ध हो साथ ही वह प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम का फल पाने का भी अधिकार प्राप्त हो। मार्क्सवाद ने पुरुष के विलास लालसा की तृप्ति से भी बढकर स्त्री को समाज मे स्थान दिया है। वह मानता है कि स्त्री समाज की उत्पादक या पैदावार करने वाला अग बन जायेगी ।[१]

मार्क्सवाद की धारणा है कि स्त्रिया भी पुरुष की तरह मनुष्य है उनके कन्धे पर भी समाज का उत्तरदायित्व उतना ही है जितना पुरुषो के कन्धो पर। इस तरह यशपाल जी ने मार्क्स के साम्यवादी व समाजवादी दर्शन को ही मूल रूप से ग्रहण किया है।

अतएव यशपाल की नारी समाज मे अपना अस्तित्व चाहती है वह एक अलग इकाई और अधिकारी के रूप मे अपना हिस्सा चाहती है पुरूष की क्रीतदासी या परिवार की सेविका के रूप मे उसे अपना अस्तित्व स्वीकार नही है वह समय के साथ चलना चाहती है और समाज को नया रूप देना चाहती है। यशपाल की नारी पुरुष की आश्रिता नही बल्कि उसकी सहयोगिनी है। यशपाल जी की नारी विद्रोहिणी है वह आजादी चाहती है समाज मे समता का व्यवहार चाहती है और चाहती है बराबरी के स्तर पर पुरुषो के साथ कदम से कदम मिलाकर सघर्ष करना।

---

**१ मार्क्सवाद यशपाल। पृ स ८४**

स्त्री–पुरुष सम्बन्धो को लेकर मार्क्स और फ्रायड दोनो से प्रभावित यशपाल की जो दृष्टि दादा कामरेड से व्यक्त हुई वह अन्य उपन्यासो तक एक जैसी बनी रही। यशपाल स्त्री–पुरुष के पारस्परिक आकर्षण को धार्मिक–नैतिक मूल्यो से ऊपर मानते हैं। दादा कामरेड की शैल यदि अन्य पुरुष की ओर आकर्षित होती है तो वह राजनैतिक कारण है वह पार्टी के कार्यो मे भाग लेती है और वही से उसकी पहचान खन्ना रार्बट और हरीश से होती है अन्त मे वह हरीश के विचारो से इतना प्रभावित होती है कि उसकी उचित अनुचित सभी बातो को स्वीकार करती है इधर हरीश भी जो अब तक स्त्री को मार्ग की बाधा समझता है शैल के सम्पर्क मे आने के उपरान्त उसके विचारो मे भी परिवर्तन आता है और वह प्रबल आकर्षण मे बध जाता है। झूठा–सच में तारा असत को ओर आकर्षित होती है तो धर्म के बन्धनो से ऊपर उठकर जयदेव पुरी कनक के या जयदेव पुरी ओर उर्मिला के बीच जो आकर्षण जन्म लेता है वह आर्थिक विषमता की उपेक्षा करके। यदि शीलो रतन की बाहो मे आ जाती है और बाद मे दिल्ली मे अपने पति और ससुराल वालो को छोडकर रतन की पत्नी बनकर रहने लगती हैं तो सामाजिक–नैतिक मूल्यो की उपेक्षा करके। बारह घटे की विधवा विनी यदि विधुर फेटम की ओर आकर्षित होती है तो ये स्त्री–पुरुष के मध्य का आकर्षण ही है जो दोनो को एक–दूसरे के समीप लाता है। इस तरह यशपाल के नर–नारी के सम्बन्ध मे मूलत सृष्टि से जुडा हुआ माना है। मानवता अमर रहे इसलिए ये सम्बन्ध परमात्मा ने बनाये। यह तथ्य सम्पूर्ण सृष्टि मे प्रकाश की भॉति उजागर है।

यशपाल ने अपने उपन्यासो मे मूलत इन्हीं विचारो का समर्थन किया है

---

जिसकी विस्तृत व्याख्या उन्होने क्यो फसे ? उपन्यास मे की है। मोती भास्कर हेना आदि के माध्यम से नर–नारी के परस्पर आकर्षण की बात कह कर उन्होने सिद्ध करना चाहा कि स्त्री–पुरुष का सम्बन्ध हमेशा से चला आ रहा है। स्त्री–पुरुष का अनुगामी न होकर सहगामी है समाज की उन्नति एव वृद्धि के लिए स्त्रियो की मानसिक और शारीरिक विकास तथा समाज मे स्त्रियो के समान अधिकार के लिए उन्हे भी पैदावार के कार्य में भाग लेकर उसका फल पाने का अवसर होना चाहिए।

पिछली शताब्दी के प्रौद्योगिक एव आर्थिक परिवर्तनो के कारण न केवल सुस्थापित कार्य प्रणाली ही बदली है बल्कि सोचने तथा कार्य करने की प्रणाली मे भी बदलाव आया है परिणामस्वरूप स्त्री के प्रति दृष्टिकोण मे भी बदलाव आया है। उसकी 'रचना की अवधारणा को बल मिला नारीवाद रचना दृष्टि आधुनिक युग की कुछ ऐसी ही स्थितियो की उपज है।

देश भाषा सस्कति सभ्यता निम्न भिन्न हो सकते हैं परन्तु जो भिन्न नही हैं वह है स्त्री और स्त्री का भाग्य। चाहे वह हिन्दु हो या मुस्लिम भारतीय हो या बागलादेशी सिर्फ वातावरा व स्थान बदल जाने मात्र से स्त्री का भाग्य नहीं बदलता। आधुनिक महिला लेखिका तसलीमा नसरीन ने बचपन से लेकर वर्तमान तक की निर्मम नग्न घटनाओ को बेलाग रूप से अपने साहित्य मे प्रस्तुत कर उसे पुरुष प्रधान समाज तथा विकृत सभ्यता के गाल पर बडे व्यगात्मक अन्दाज मे थप्पड मारा है स्त्रियो को धर्म शास्त्रो सामाजिक रूढियो पुरुषो की निरकुशता और चीता को ध्वस्त कर अपनी शक्ति खुद पहचानी चाहिए।

---

नारी यह भली–भॉति जानती है कि चहारदीवारी के बाहर निकलते ही अपने नारीत्व को कुछ न कुछ कीमत चुकानी पडती ही है। चाहे बेडिया इस्लाम ने डाली हो या हिन्दु धर्म शास्त्रो ने बेडिया तो बेडिया ही होती है। चाहे वह कही न कैसी ही क्यो न हो। कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और शायद इसीलिए महिला लेखिका मृदुला गर्ग ने इस साहित्यिक आइने मे नारी को बदलते स्वरूप का अक्स देखने की कोशिश की है।

नारी के सोच का बदलता जा रहा रूप और बढता जा रहा दायरा निश्चित ही मध्य कालीन सामन्तवादिता के लिए एक चेतावनी है एक प्रहार है। युगो से पीडित प्रताडित नारी द्वारा अपने सम्मान और न्यायसगत समानता के लिए आरम्भ किया यह अभियान या चेतना एक युद्धनाद भी है। नारी जागरण मे नवजागरण और आधुनिकता की शक्तियॉ दिप्तिमान है। नारी अदम्य चेतना शक्ति है अत उसे हारना नहीं है सामर्थ्यवान बनना है।

निष्कर्षत हम यह कह सकते हैं कि आज की आधुनिक नारी चहारदीवारी के भीतर अपने अस्तित्व को खोना चाहती बल्कि अपनी स्थिति को दृष्टि पथ मे रख कर दमदार तरीके से युग को चुनौती देने को तैयार है।

इस प्रकार यशपाल ने अपने उपन्यास साहित्य मे भी नारी उन्नयन की प्रतिष्ठा को अपने साहित्य मे नारी वाद की प्रगतिशीलता परिवर्तनशीलता एव गतिशीलता का समन्वय निरुपित करते हुए उसे आधुनिकता के दौर मे लाकर खडा किए हैं।

यशपाल ने अपने उपन्यासो मे शोषितो के प्रति मानवीय दृष्टिकोण

सहानुभूति व्यक्ति स्वातत्र्य एव उदारता आदि मूल्यो को चित्रित किया है। ये सभी मूल्य समाज के कल्याण और उसके विकास की भावना से सम्बन्धित है। परम्परागत रूढियो एव शोषण का विरोध करते हुए क्रान्ति का आह्वान और स्वस्थ्य मूल्यो का विकास करना ही उनका उद्देश्य रहा है। अमिता उपन्यास की बालिका अमिता द्वारा किसी से न छीनना' किसी को नहीं डराना एव किसी को नही मारना अपनाया गया मत्र समाज सेवा एव कल्याण की भावना से सम्बद्ध है। अमिता उपन्यास मे यशपाल ने युद्ध का विरोध किया है अमिता बडी निर्भीकता से अहिसा की प्रकति का समर्थन करती है। जिसके फलस्वरूप अशोक प्रतिज्ञा करता है वह किसी से नही छीनेगा नही किसी को डरायेगा नही किसी को मारेगा नही अमिता द्वारा इस प्रकार युद्ध का विरोध करना अहिसा तथा विश्वप्रेम का सन्देश देना मानवीय मूल्यो को प्रकट करता है।

पौराणिक कथानको को अपनाने वाले लेखक अक्सर अपने समय की सच्चाइयो से भागते हुए प्रतीत होते हैं या फिर ऐसे कथानको का प्रयोग वे अपनी सकीर्ण दृष्टि को उचित सिद्ध करने के लिए करते हैं। यशपाल ने पौराणिक कथानको और पात्रो को इसके विपरीत प्रगतिशील दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए अपनाया।

अप्सरा का श्राप नामक उपन्यास की भूमिका मे वह कहते हैं प्रश्न तो यह है कि ऐतिहासिक या पौराणिक कथानको को लेखक पौराणिक मान्यताओ के समर्थन के लिए लेता है या उनके माध्यम से वर्तमान को प्रदर्शित करने

तथा उस पर व्यग्य व विद्रूप करने के लिए ? मैंने शकुन्तला की कहानी इसलिए नही लिखी कि मुझे पौराणिक मान्यताओ का समर्थन करना था बल्कि इसलिए कि उसके माध्यम से मैं आधुनिक नारी जीवन के प्रति एक सही दृष्टिकोण पाठको के सामने ला सकूँ। इसलिए उसमे अपने युग की भावना व दृष्टि के अनुसार शकुन्तला के अनुभवो की कल्पना की गई और उसे बिल्कुल आधुनिक जीवन–सन्दर्भ मे देखने का प्रयास किया गया है।[१]

जडता का विरोध तर्क आधुनिक दृष्टि आदि यशपाल के लेखन की विशेषताएँ है। आज अक्सर हम स्त्री विमर्श की चर्चा करते हैं। लेकिन स्त्री की अस्मिता उसके सघर्ष उसको स्वातत्र्य उसके प्रति होने वाले अन्याय के विरोध मे जितना यशपाल ने लिखा है शायद ही किसी ने लिखा हो।

नये ससार के अग्रदूत यशपाल उत्पीडित सघर्षरत विशाल जन समुदाय की आवाज है। यशपाल के व्यक्तित्व और कतित्व के अन्तर्गत जो बर्हिमुखी प्रकृत्ति और विचारधारा को प्रतिबद्ध किया था वह भी समुह या समाज को ही महत्त्व देती है व्यक्ति को नहीं। द्वन्द्व बाहर होता है सामुहिक होता है और उसका चित्रण यशपाल ने इतना अधिक और इतना प्रभावशाली किया है जितना हिन्दी के शायद ही किसी उपन्यासकार ने किया हो।

यशपाल का समाज के प्रति अपना अलग मत है। इन्होने समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया है। वह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था चाहते हैं जिसमे किसी व्यक्ति या वर्ग का शोषण न होता हो व सभी सामाजिक रूढियो और सामाजिक सस्थाओ को समाप्त करना चाहते हैं क्योकि ये

---

१ अप्सरा का श्राप आमुख।

सस्थाए और रूढिया मनुष्य को सहज रूप से जीने नही देती यशपाल की दृष्टि सदैव सामाजिक कल्याण की ओर रही है उनकी दृष्टि मे कला की उपयोगिता सामाजिक जीवन की पूर्णताया मे है।

यशपाल हिन्दी उपन्यास के सजग प्रहरी एव उद्‌भट विद्वान मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति अविचलनिष्ठ समाजिक एव राजनैतिककर्ता के रूप मे विद्यमान है। जो अन्धेरे मे आलोक देने के लिए व्यक्तित्व एव कृतित्व के कथाकार का आत्मबोध कराता है। आज की प्रासगिकता का बोध नारी जागृति के जीवन विकास क्रम मे नारी की सर्वागीण प्रगति व आधुनिकता के स्वरूप मे यशपाल के उपन्यासो दादा कामरेड से लेकर मेरी तेरी उसकी बात आधुनिक दृष्टि का पूर्णतया अनुपालन किया गया है।

**परिशिष्ट**

# पुस्तक सूची

# पुस्तक-सूची

## क मूल-उपन्यास


१ दादा कॉमरेड (१६४१ ई) यशपाल विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ द्वितीय सस्करण १६४४ ई।

२ देशद्रोही (१६४३ ई) यशपाल विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ सातवॉ सस्करण १६६७ ई

३ दिव्या (१६४५ ई) यशपाल लोकभारती प्रकाशन १५–ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद– १

४ पार्टी कामरेड (१६४६ ई) यशपाल विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ पॉचवॉ सस्करण १६६३ ई

५ मनुष्य के रूप (१६४६ ई) यशपाल विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ आठवॉ सस्करण १६७२ ई

६ अमिता (१६५६ ई) यशपाल लोकभारती प्रकाशन १५ ए महात्मा गाधी मार्ग इलाहाबाद–१ – द्वितीय विद्यार्थी सस्करण १६७२ ई

७ झूठा–सच यशपाल क देश और वतन–भाग १ (१६५८ ई)
ख देश का भविष्य–भाग २ (१६६० ई)


---

यशपाल दोनो भाग एकत्रित– चतुर्थ सस्करण १६७६ ई
लोकभारती प्रकाशन १५ ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद

८ बारह घटे (१६६३ ई ) यशपाल–तृतीय सस्करण–१६७३ ई लोकभारती प्रकाशन १५ ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद – १

६ अप्सरा का श्राप (१६६५ ई ) यशपाल–तीसरा सस्करण १६७० ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

१० क्यो फॅसे! (१६६८ ई ) यशपाल–प्रथम सस्करण –१६६० विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

११ मेरी तेरी उसकी बात (१६७३ ई) यशपाल–द्वितीय सस्करण १६७८ ई लोकभारती प्रकाशन १५, ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद

## यशपाल के निबन्ध सग्रह

१ चक्कर क्लब छठा सस्करण १६६६ ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

२ मार्क्सवाद (१६४० ई ) विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

३ न्याय का सघर्ष (१६४० ई ) छठा सस्करण १६६२ ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

४ गॉधीवाद की शवयात्रा सातवॉ सस्करण १६७२ ई। यशपाल लोकभारती प्रकाशन १५ ए महात्मा गाधी मार्ग इलाहाबाद–१

---

५ बात–बात मे बात (१९५० ई ) तीसरा सस्करण १९५६ ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

६ राम राज्य की कथा (१९५० ई ) चतुर्थ सस्करण १९७० ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

७ देखा सोचा समझा (१९५१ ई ) चतुर्थ सस्करण १९७२ विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

८ जग का मुजरा (१९६२ ई ) द्वितीय सस्करण–१९७१ विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

## यशपाल की आत्मकथा

१ सिहावलोकन (भाग एक) १९५१ ई पॉचवॉ सस्करण १९७२ ई लोकभारती प्रकाशन १५ ए महात्मा गाधी मार्ग इलाहाबाद

२ सिहावलोकन (भाग दो) १९५२ ई तीसरा सस्करण १९६६ ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

३ सिहावलोकन (भाग तीन) १९५५ ई तीसरा सस्करण १९७० ई विप्लव कार्यालय २१ शिवाजी मार्ग लखनऊ

नाटक नशे–नशे की बात यशपाल

# (ख) सहायक पुस्तके

१ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान देवराज साहित्य भवन प्रा लि इलाहाबाद प्रथम सस्करण १६५६ ई

२ आधुनिक हिन्दी उपन्यास नरेन्द्र मोहन दि मैक मिलन कम्पनी आबू इण्डिया लि प्रथम स १६७५ ई

३ आधुनिक भारत मे सामाजिक परिवर्तन एम एन श्रीवास्तव राजकमल प्रकाशन दिल्ली सस्करण १६६७ ई ।

४ आधुनिक हिन्दी साहित्य सास्कतिक पृष्ठभूमि डॉ भोलानाथ प्रगति प्रकाशन बैतूल बिल्डिग आगरा सस्करण १६६६ ई ।

५ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास डॉ बेचन सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली प्रथम स १६६५ ई ।

६ आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास इन्द्रनाथ मदान राज कमल प्रकाशन दिल्ली स १६८१ ई ।

७ आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द डॉ बच्चन सिह राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम सस्करण १६८३ ई ।

८ आधुनिकता के सन्दर्भ मे आज का हिन्दी उपन्यास अतुल बीर अरोडा चण्डीगढ पब्लिकेशन ब्यूरो १६७४ ई ।

६ आधुनिकता और हिन्दी साहित्य इन्द्रनाथ मदान राज कमल प्रकाशन दिल्ली १६७३ ई ।

१० आधुनिक हिन्दी साहित्य प्रकाश चन्द गुप्त चम्पालाल रॉका बीकानेर १६५२ ई ।

११ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास विष्णु किशोर झा बेचन सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली १६६५ ई ।

१२ आज का भारत रजनी पामदत्त अनु आनन्द स्वरूप गर्ग दि मैक मिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लि नई दिल्ली।

१३ आधुनिक हिन्दी काव्य मे नारी भावना डॉ शैल कुमारी प्रथम सस्करण प्रयाग

१४ औरत के हक मे – तसलीमा नसरीन वाणी प्रकाशन २१–ए दरियागज नई दिल्ली – ११०००२ प्रथम सस्करण – १६६४ ई

१५ उपन्यास का शिल्प गोपालराय बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना १६७३ ई ।

१६ उपन्यास और लोक जीवन फॉक्स रेल्फ पीपुल्स पब्लिशिग हाउस नई दिल्ली १६५७ ई ।

१७ उपन्यास लेखन शिल्प–व्युरेक ए एस भोपाल मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी १६७३ ई ।

१८ उपन्यासकार चतुरसेन की नारी पात्र सूत देवहस भारतीय ग्रथ निकेतन दिल्ली १६७४ ई ।

१६ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार गोपीनाथ तिवारी साहित्य रत्न भण्डार आगरा १६५८ ई ।

२० ऐतिहासिक उपन्यास प्रकति एव स्वरूप गोविन्द जी साहित्यवाणी इलाहाबाद १६७० ई ।

२१ ऐतिहासिक उपन्यासो मे कल्पना और सत्य चिन्तामणि बी ए चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी १६५६ ई ।

२२ कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा लेनिन प्रगति प्रकाशन मास्को स १६८६ ई ।

२३ नारी का मूल्य (शरद साहित्य) शरद चन्द्र चटटोपाध्याय चौथा सस्करण १६५१ ई । बम्बई।

२४ प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास प्रकाश चन्द्र शर्मा साहित्य सदन देहरादून १६६७ ई ।

२५ भारत वर्तमान और भावी रजनी पामदत्त पीपुल्स पब्लिशिग हाउस नई दिल्ली १६५६ ई ।

२६ भारतीय स्वातत्र्य आन्दोलन और हिन्दी साहित्य कीर्ति लता हिन्दुस्तानी एकेडमी १६६७ ई ।

२७ भारतीय स्वातत्र्य सग्राम और हिन्दी उपन्यास हिन्दी प्रचारक प्रकाशन वाराणसी १६६६ ई ।

२८ मार्क्सवाद यशपाल विप्लव कार्यालय लखनऊ पाचवा सस्करण १६६६ ई ।

२६ मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद १६७२ई ।

३० मार्क्सवादी साहित्य चितन इतिहास शिव कुमार मिश्र मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रथ अकादमी १६७३ ई ।

३१ मार्क्स–एगेल्स कृत कम्यूनिस्ट घोषणापत्र एक विवेचन व सजोनोव प्रगति प्रकाशन मास्को अनुवादक–नरेश बेदी १६८४ ई ।

३२ मार्क्सवादी लेनिन वादी सिद्धान्त के मूलतत्व बोल्कोव बोर्दालाजोव पिरोगोव प्रगति प्रकाशन मास्को स १६८५ ई ।

३३ यशपाल के उपन्यासो का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण डॉ मधु जैन कानपुर अभिलाषा प्रकाशन स १६७७ ई ।

३४ यशपाल के उपन्यासो मे सामाजिक चेतना डॉ ह श्री साने सरस्वती प्रकाशन १२८/१०६ जी किदवई नगर कानपुर–११ प्रथम सस्करण १६८८ई ।

३५ यशपाल का औपन्यासिक शिल्प प्रवीण नायक सरस्वती पुस्तक सदन आगरा १६६३ ई ।

३६ यशपाल और उनकी दिव्या राजपाल शर्मा कला मदिर दिल्ली १६७२ ई ।

३७ यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व सरोज गुप्त अनुराग प्रकाशन अजमेर १६७० ई ।

३८ यशपाल के उपन्यासों का मूल्याकन सुदर्शन मल्होत्रा आदर्श साहित्य प्रकाशन दिल्ली १६७३ ई ।

३६ वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासो मे नैतिकता कमलेश माथुर मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर १६७२ ई ।

४० व्यक्ति चेतना और स्वातत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास पुरुषोत्तम दुबे अनुपमा प्रकाशन बम्बई १६७३ ई ।

४१ साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासो मे नारी के विविध रूप डॉ विमल शर्मा सगम प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम सस्करण १६८२ ई ।

४२ समाजवादी समाज मे व्यक्ति डॉ स्मिर्नोव प्रगति प्रकाशन मास्को (सोवियत सघ) १६८६ ई ।

४३ साहित्य की शैली गणपति चन्द्र गुप्त भारतेन्दु भवन चण्डीगढ १६६३ ई ।

४४ साहित्य की विधाए रालखन शुक्ल अमित प्रकाशन गाजियाबाद १६७२ ई ।

४५ साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका डॉ मैनेजर पाण्डेय हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ प्र स १६८६ ई ।

४६ साम्यवादी विश्व का विघटन और समाजवाद का भविष्य मस्तराम कपूर साराश प्रकाशन प्रा लि १४२–ई पॉकिट–४ मयूर विहार फेज–१ दिल्ली–११००६१

४७ स्त्री की स्थिति चन्द्रावती लखन पाल प्रथम सस्करण

४८ स्त्री स्वातत्र्य और कम्यूनिस्ट नैतिकता पर लेनिन के विचार (हिन्दी अनुवाद)

४६ स्त्री–पुरुष कुछ पुनर्विचार राजकिशोर सस्करण–२००० वाणी प्रकाशन २१–ए दरियागज नई दिल्ली–११०००२

५० हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद डॉ त्रिभुवन सिह हिन्दी प्रचार पुस्तकालय पो बा न ७० ज्ञानवापी प्रकाशन वाराणसी तृतीय सस्करण २०१८ विक्रमी।

५१ हिन्दी उपन्यास का भावना डॉ प्रताप नारायण टण्डन प्रकाशन लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ प्रथम सस्करण १६५६ ई ।

५२ हिन्दी उपन्यासो मे नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण डॉ विमल सहस्र बुद्धे पुस्तक सस्थान १०६/५०ए नेहरू नगर कानपुर सस्करण १६७४ ई ।

५३ हिन्दी उपन्यास सामाजिक सन्दर्भ डॉ बालकष्ण गुप्त अभिलाषा प्रकाशन कानपुर प्रथम सस्करण १६६२ ई ।

५४ हिन्दी उपन्यास उत्तरशती की उपलब्धियॉ डॉ विवेकी राय राजीव प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम सस्करण १६८३ ई ।

५५ हिन्दी उपन्यास उन्नीस सौ पचास के बाद स निर्मला जैन नित्यानद तिवारी नेशनल पब्लिशिग हाउस नई दिल्ली प्रथम सस्करण १६८७ ई ।

५६ हिन्दी उपन्यास मे पारिवारिक चित्रण महेन्द्र कुमार जैन जैन ब्रदर्स नई दिल्ली स १६७४ ई ।

५७ हिन्दी उपन्यासो मे सामाजिक विघटन डॉ धर्मेन्द्र नाथ श्रीवास्तव उमेश प्रकाशन १०० लूकरगज इलाहाबाद प्रथम सस्करण १६६५ ई ।

५८ हिन्दी साहित्य कोश भाग एक स डॉ धीरेन्द्र वर्मा प्रकाशक ज्ञान मण्डल लि वाराणसी तृतीय सस्करण आश्विन सवत् २०४३ (१६८५ ई)

५६ हिन्दी साहित्य कोश भाग दो स डॉ धीरेन्द्र वर्मा प्रकाशक ज्ञान मण्डल लि वाराणसी द्वितीय सस्करण आश्विन सवत् २०४३ (१६८६ ई)

६० हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियॉ डॉ शिव कुमार शर्मा अशोक प्रकाशन २६१५, नई सडक दिल्ली ११०००६ पन्द्रहवॉ सस्करण १६६६ ई ।

६१ हिन्दी साहित्य का इतिहास एच पी सिन्हा एव डॉ जे पी श्रीवास्तव प्रकाशन किताब महल इलाहाबाद १९६४ ई ।

६२ हिन्दी साहित्य का इतिहास स डॉ नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिग हाउस २३ दरियागज नई दिल्ली–११०००२ द्वितीय सस्करण १९८६ ई ।

६३ हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय लोक भारती प्रकाशन १५–ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद

६४ हिन्दी उपन्यास पहचान और परख इन्द्रनाथ मदान लिपि प्रकाशन दिल्ली १९७३ ई ।

६५ हिन्दी कथा साहित्य के विकास मे महिलाओ का योगदान उर्मिला गुप्ता राधा कृष्ण प्रकाशन १९६६ ई ।

६६ हिन्दी उपन्यासो का शिल्पगत विकास उषा सक्सेना शोध साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद १९७२ ई ।

६७ हिन्दी उपन्यासो मे नायक कुसुम वार्ष्णेय शोध साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद १९७२ ई ।

६८ हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास कष्णा नाग लोक चेतना प्रकाशन १९७२ ई ।

६९ हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन गणेशन राजपाल दिल्ली १९६२ ई ।

७० हिन्दी उपन्यास कोश खण्ड–१ गोपालराय ग्रथ निकेतन पटना १९६८ ई ।

७१ हिन्दी लघु उपन्यास घनश्याम मधुप राधाकष्ण प्रकाशन दिल्ली १६७१ ई ।

७२ हिन्दी कथा साहित्य पर सोवियत क्रान्ति का प्रभाव पुरुषोत्तम वाजपेयी पुस्तक सस्थान कानपुर १६७६ ई ।

७३ हिन्दी उपन्यास मे कथा शिल्प का विकास प्रतापनारायण टण्डन हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ १६५६ ई ।

७४ हिन्दी उपन्यास शिल्प बदलते परिप्रेक्ष्य प्रेम भटनागर अर्चना प्रकाशन जयपुर।

७५ हिन्दी उपन्यास मे नारी चित्रण बिन्दु अग्रवाल राधाकष्ण प्रकाशन दिल्ली १६६८ ई ।

७६ हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासो का अनुशीलन ब्रजभूषण सिह आदर्श रचना प्रकाशन इलाहाबाद १६७० ई ।

७७ हिन्दी उपन्यास मे चरित्र चित्रण का विकास रणवीर राग्रा भारती साहित्य मन्दिर दिल्ली १६६५ ई ।

७८ हिन्दी उपन्यास साहित्य का सास्कतिक अध्ययन रमेश तिवारी रचना प्रकाशन इलाहाबाद १६७२ ई ।

७६ हिन्दी उपन्यास कला राम लखन शुक्ल सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली १६७२ ई ।

८० हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासो में नारी चित्रण राम विनोद सिह शोध साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद १६७३ ई ।

८१ हिन्दी उपन्यासो मे नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण विमल सहस्र बुद्धे पुस्तक सस्थान कानपुर १९७४ ई ।

८२ हिन्दी उपन्यास साहित्य ब्रजरत्न दास हिन्दी साहित्य कुटीर बनारस स २०१३ वि

८३ हिन्दी उपन्यास साहित्य मे आदर्शवाद सर्वजीत राय लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद १९६६ ई ।

८४ हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास एक अध्ययन सुशील कान्त सिन्हा चित्र लेखा प्रकाशन इलाहाबाद १९६५ ई ।

८५ हिन्दी उपन्यास सुषमा प्रियदर्शिनी राधा कष्णन प्रकाशन दिल्ली १९७३ ई ।

८६ हिन्दी उपन्यास युग चेतना और पाठकीय सम्वेदना डॉ मुकुन्द द्विवेदी प्रथम सस्करण १९७० ई । लोक भारती प्रकाशन १५–ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद–१

## ग पत्र–पत्रिकाएँ

१ हस सम्पादक राजेन्द्र यादव अक्षर प्रकाशन प्रा लि २/३६ अन्सारी रोड मासिक पत्रिका दरियागज नई दिल्ली अर्द्धशती विशेषाक खण्ड–१ १९९७ई ।

२ आलोचना हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका सहस्राब्दी अक एक २००० प्रधान सम्पादक नामवर सिह) राज कमल प्रकाशन प्रा लि नई दिल्ली–१

३ राष्ट्रभाषा सदेश पाक्षिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन १२ सम्मेलन मार्ग इलाहाबाद।

४ स्त्री दर्पण

५ नयी धारा – स उदयराज सिह

६ सचेतना – स डॉ महीप सिह

७ वागर्थ – अक ७५, सितम्बर २००१ भारतीय भाषा परिषद् प्रकाशन कलकत्ता (मासिक पत्रिका) सम्पादक प्रभाकर श्रोत्रिय।

८ सम्मेलन पत्रिका शोध त्रैमासिक भाग ८४ सख्या ४ सम्पादक–विभूति मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग १२ सम्मेलन मार्ग इलाहाबाद।

६ इन्द्रप्रस्थ भारती सम्पादक डॉ राम शरण गौड (त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका) हिन्दी अकादमी दिल्ली।

१० सन्धान सम्पादक लाल बहादुर वर्मा सुभाष गाताडे।

# अग्रेजी पुस्तके

१ साइकोलोजी आफ वोमन हेलेन डयूश प्रथम स १६४६ ई।

२ पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिइला मिडरत्जस्टिस सन् १६१३ ई कलकत्ता।

३ इण्डियन वोमन हुडटुडे मार्गरेट ई काजिन्स प्रथम सस्करण।

४ वोमेन अगेस्ट मिथ बेरी मिलार्ड प्रथम स १६४६ ई न्यूयार्क।

५ द ओरिजिनल ऑफ द फेमिली फ्रेडिरिक एन्गिल्स प्रथम स १६४८ ई

६ द स्टेटस ऑफ वीमेन इन इण्डिया दयाराम जिदुमल प्रथम सस्करण १८८६ ई।

७ द शार्ट हिस्ट्री ऑफ वीमेन जे एल डेविस सन् १६२० ई लन्दन।

८ वोमन ए विन्डीकेशन प्रथम स १६२३ ई ।

६ पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिवलीजेशन डॉ ए एस अल्टेकर प्रथम सस्करण १६३० बनारस।

१० स्टेटस ऑफ वीमेन इन एन्शियेन्ट इण्डिया डॉ इन्द्रनाथ मदान प्रथम स ।

११ वीमेन्स शेयर इन सोशल कल्चर अन्ना गार्लिन स्पैन्सर द्वितीय सस्करण।

१२ द नेचर एण्ड टाइम्स आव सोशियो–लाजिकल थियरी मार्टिण्डल।

१३ कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो मार्क्स एण्ड एगेल्स

१४ वोमन इज माडर्न इण्डिया सेकण्ड एडिसन का कारा एण्ड को पब्लिश प्राइवेट लि कल्वादेवी रोड बाम्बे १६७७ ई ।